पाठ्यपुस्तक और
कृतिपत्रिका के प्रारूप के
अनुसार पूर्णत: अद्यतन

हिंदी लोकभारती नवनीत

कक्षा दसवीं

- गद्य पाठ
- पद्य पाठ
- पूरक पठन
- अपठित गद्य
- भाषा अध्ययन (व्याकरण)
- उपयोजित लेखन

GET NAVNEET DigiBook FREE + Chapterwise Tests through QR Code

NAVNEET®

प्रचलित पाठ्यपुस्तक तथा बोर्ड की कृतिपत्रिकाओं के अनुसार पूर्णतः अद्यतन

हिंदी

लोकभारती

नवनीत

कक्षा दसवीं

• प्रमुख विशेषताएँ :

1. **कृतिपत्रिका के नवीन प्रारूप, एवं बोर्ड की नमूना कृतिपत्रिका एवं बोर्ड की कृतिपत्रिका के अनुसार पूर्णतः अद्यतन रचना।**
2. सभी पाठों के कठिन शब्दों के सुबोध अर्थ तथा आवश्यकतानुसार टिप्पणियाँ।
3. सभी गद्य-पद्य पाठों के विषय प्रवेश एवं कविताओं के सरल अर्थ।
4. सभी गद्य-पद्य पाठों को उचित परिच्छेद/पद्यांश में विभाजित कर उन पर आधारित पाठ्यपुस्तक के सभी स्वाध्यायों सहित अनेक अपेक्षित कृतियाँ एवं उनके सटीक उत्तर।
5. अपठित गद्यांशों और उन पर आधारित नवीन प्रारूप के अनुसार अपेक्षित कृतियों का स्वतंत्र विभाग।
6. प्रत्येक गद्य-पद्य पाठ में कृतिपत्रिका के प्रारूप के अनुसार 14 अंकों के व्याकरण से संबंधित प्रचुर मात्रा में सटीक एवं सुव्यवस्थित कृतियाँ तथा उनके उत्तर।
7. भाषा अध्ययन (व्याकरण) एवं उपयोजित लेखन विभाग में कृतिपत्रिका से संबंधित सभी कृति प्रकारों का मार्गदर्शन।
8. **मार्गदर्शन एवं अभ्यास** के लिए बोर्ड की मार्च 2020 की कृतिपत्रिका।

6414132

★ ★ ★ **प्रमुख विशेषता :**
इस 'नवनीत' में प्रत्येक पाठ के अनुसार कसौटियाँ **QR Code** पर दी गई हैं। इन कसौटियों तथा उनके आदर्श उत्तरों के लिए प्रत्येक गद्य और पद्य पाठ के नीचे दिया गया **QR Code** स्कैन कीजिए।

: लेखक :
श्री. नवनीत

पूर्णतः संशोधित संस्करण : 2021

Balbharati Registration
No. 2018MH0014

NAVNEET

नवनीत एज्युकेशन लिमिटेड

E0125

मूल्य :
₹ 190.00

प्रस्तावना

'हिंदी लोकभारती' विषय की प्रचलित पाठ्यपुस्तक, बोर्ड के अद्यतन प्रारूप तथा बोर्ड की नमूना कृतिपत्रिकाओं के अनुसार '**हिंदी लोकभारती नवनीत – कक्षा दसवीं**' मार्गदर्शिका का पूर्णतः संशोधित संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस नवनीत की रचना कृतिपत्रिका के नवीन प्रारूप का सूक्ष्म अध्ययन करके की गई है।

इस मार्गदर्शिका में गद्य, पद्य तथा पूरक पठन के सभी पाठों को यथायोग्य गद्यांश/पद्यांश में बाँटकर उन पर पाठ्यपुस्तक की एवं अन्य अनेक कृतियाँ दी गई हैं।

प्रस्तुत नवनीत में दिए गए 'अपठित गद्यांशों' के स्वतंत्र विभाग में पाठ्यपुस्तक में दिया गया एक अपठित गद्यांश तथा अभ्यास के लिए अन्य गद्यांश तथा उन पर आधारित अपेक्षित कृतियों का समावेश किया गया है। इससे विद्यार्थियों को अपठित गद्यांशों एवं उन पर आधारित कृतियों का भली-भाँति अभ्यास होगा।

कक्षा दसवीं की कृतिपत्रिका के प्रारूप में व्याकरण पर काफी जोर दिया गया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत नवनीत में व्याकरण के विविध घटकों पर अनेक कृतियाँ हरएक गद्य-पद्य पाठ में दी गई हैं। पुस्तक के अंत में दिए गए '**भाषा अध्ययन (व्याकरण) विभाग**' में इन विविध घटकों को समझाया भी गया है। इससे विद्यार्थियों का व्याकरण से संबंधित समुचित अभ्यास हो जाएगा।

इस मार्गदर्शिका में उपयोजित लेखन विभाग के अंतर्गत कृतिपत्रिका के प्रारूप के अनुसार हर प्रकार के **उपयोजित लेखन** के घटकों का मार्गदर्शन तथा नमूनों के रूप में उपयोगी सामग्री दी गई है। इससे विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से लेखन करने में सक्षम हो सकेंगे।

6414132

इस बार की कक्षा दसवीं की 'हिंदी लोकभारती' पाठ्यपुस्तक अत्यंत सूझबूझ से तैयार की गई है। इस पुस्तक का भली-भाँति अध्ययन करने के पश्चात प्रस्तुत 'नवनीत' की रचना की गई है। पाठ्यपुस्तक की सभी कृतियों को सूक्ष्मतापूर्वक ध्यान में रखकर तथा पाठों के आशय को लक्ष्य करके कृतियाँ दी गई हैं। इसके अलावा भाषा संबंधी कुशलता में वृद्धि करने वाली कृतियाँ भी दी गई हैं।

प्रत्येक पाठ के अंत में QR Code में दी गई 20 अंक की 'स्वयं अध्ययन कसौटी' उत्तर सहित दी गई है। स्वयं मूल्यांकन के लिए यह विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगी।

इस पुस्तक के अंत में अभ्यास के लिए बोर्ड की मार्च 2020 की कृतिपत्रिका भी दी गई है। इससे विद्यार्थी लिखित परीक्षा के स्वरूप से भली-भाँति परिचित हो सकेंगे। इस कृतिपत्रिका को हल कर विद्यार्थी अर्जित ज्ञान तथा परीक्षा संबंधी अपनी तैयारी का आकलन कर सकेंगे।

हमें पूरा विश्वास है कि यह नवनीत जहाँ विद्यार्थियों के लिए सहायक सिद्ध होगा, वहीं यह शिक्षक बंधुओं तथा अभिभावकों के लिए भी सहायक होगा।

इस पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि करने की दृष्टि से सुझावों का स्वागत है।

– प्रकाशक

कृतिपत्रिका का प्रारूप

समय : 3 घंटे] (अंक वितरण सहित) [कुल अंक : 100

विभाग 1 : गद्य (20 अंक)

प्र. 1 (अ) पठित गद्यांश (लगभग 130 से 150 शब्द) : 8 अंक

प्र. 1 (आ) पठित गद्यांश (लगभग 130 से 150 शब्द) : 8 अंक

प्र. 1 (इ) अपठित गद्यांश (लगभग 80 से 100 शब्द) : 4 अंक

कृति के अनुसार प्र. (अ) तथा (आ) का 8 अंकों का विभाजन

(1) आकलन कृति (2 घटक, प्रत्येक के लिए 1 अंक अथवा 4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(2) आकलन कृति (2 घटक, प्रत्येक के लिए 1 अंक अथवा 4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(3) शब्द संपदा (4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(शब्द संपदा कृति में अनेकार्थी शब्द, शब्द-युग्म, समानार्थी/पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, लिंग, वचन, कृदंत, तद्धित, तत्सम, तद्भव तथा विदेशी शब्द आदि पूछे जा सकते हैं।)

(4) अभिव्यक्ति (25 से 30 शब्द) 2 अंक

प्र. 1 (ई) अपठित गद्यांश (लगभग 80 से 100 शब्द) : 4 अंक

6414132

(1) आकलन कृति (2 घटक, प्रत्येक के लिए 1 अंक अथवा 4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(2) अभिव्यक्ति (25 से 30 शब्दों में) 2 अंक

विभाग 2 : पद्य (12 अंक)

प्र. 2 (अ) पठित पद्यांश (8 से 10 पंक्तियाँ) 6 अंक

प्र. 2 (आ) पठित पद्यांश (8 से 10 पंक्तियाँ) 6 अंक

(1) आकलन कृति (2 घटक, प्रत्येक के लिए 1 अंक अथवा 4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(2) शब्द संपदा (4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(शब्द संपदा कृति में अनेकार्थी शब्द, शब्द-युग्म, समानार्थी/पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, लिंग, वचन, कृदंत, तद्धित, तत्सम, तद्भव तथा विदेशी शब्द आदि पूछे जा सकते हैं।)

(3) सरल अर्थ (25 से 30 शब्दों में) 2 अंक

विभाग 3 : पूरक पठन (8 अंक)

प्र. 3 (अ) पठित गद्यांश (80 से 100 शब्द) : 4 अंक

(1) आकलन कृति (2 घटक, प्रत्येक के लिए 1 अंक अथवा 4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(2) अभिव्यक्ति (25 से 30 शब्दों में) 2 अंक

प्र. 3 (आ) पठित पद्यांश (6 से 8 पंक्तियाँ) : **4 अंक**

(1) आकलन कृति (2 घटक, प्रत्येक के लिए 1 अंक अथवा 4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 2 अंक

(2) अभिव्यक्ति (25 से 30 शब्दों में) 2 अंक

विभाग 4 : भाषा अध्ययन (व्याकरण) (14 अंक)

प्र. 4 सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **14 अंक**

(1) शब्दभेद – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पहचानना (1 घटक, 1 अंक) 1 अंक

(2) अव्यय प्रयोग – दो अव्यय शब्दों में से किसी एक शब्द का वाक्य में प्रयोग करना (1 घटक, 1 अंक) 1 अंक

(3) संधि – (दो में से कोई एक पहचानना, विच्छेद करना, संधि शब्द बनाना) (2 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 1 अंक

(4) सहायक क्रिया – (दो में से कोई एक सहायक क्रिया पहचानना तथा उसका मूल रूप लिखना)
(2 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 1 अंक

(5) प्रेरणार्थक क्रिया – दो में से किसी एक प्रेरणार्थक क्रिया का प्रथम तथा द्वितीय रूप लिखना
(2 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 1 अंक

(6) मुहावरे – मुहावरे का चयन अथवा मुहावरे का अर्थ और वाक्य में प्रयोग करना 1 अंक

(7) कारक – पहचानना और भेद लिखना (2 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 1 अंक

(8) विरामचिह्न – वाक्य में प्रयोग (2 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक) 1 अंक

(9) काल परिवर्तन – तीन में से दो वाक्यों का काल परिवर्तन (2 घटक, 1 अंक प्रत्येक के लिए) 2 अंक

(10) वाक्य के भेद – (i) रचना के आधार पर वाक्य का भेद पहचानना 2 अंक
(ii) अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन करना

(11) वाक्य शुद्ध करना (4 घटक, प्रत्येक के लिए ½ अंक, दो वाक्य, प्रत्येक वाक्य में दो अशुद्धियाँ) 2 अंक

6414132

विभाग 5 : रचना विभाग (उपयोजित लेखन) (26 अंक)

प्र. 5 (अ) (1) पत्र लेखन [अनौपचारिक/औपचारिक (दो में से एक)] (विकल्प अंक 5) 5 अंक

(2) गद्य आकलन (अपठित गद्यांश पर आधारित 4 प्रश्न तैयार करना) (100 से 120 शब्द) 4 अंक

प्र. 5 (आ) (1) वृत्तांत लेखन (70 से 80 शब्दों में) अथवा
कहानी लेखन (मुद्दों के आधार पर) (70 से 80 शब्दों में) (विकल्प अंक 5) 5 अंक

(2) विज्ञापन लेखन (50 से 60 शब्दों में) 5 अंक

प्र. 5 (इ) **निबंध लेखन :** (तीन में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में) 7 अंक

(पाँच प्रकारों में से तीन प्रकार के विषय दिए जाएँगे। विद्यार्थियों को उनमें से किसी एक विषय पर निबंध लिखना होगा।)

अंतर्गत मूल्यांकन (कुल अंक 20)

(अ) श्रवण कौशल	5 अंक	
(आ) भाषण कौशल	5 अंक	
(इ) स्वाध्याय	10 अंक	कुल 20 अंक

लिखित परीक्षा + अंतर्गत मूल्यांकन = कुल 100 अंक

विषय-सूची

- **कृतिपत्रिका का प्रारूप** 4

पहली इकाई

पृष्ठ. क्र.

1. भारत महिमा 7
2. लक्ष्मी 14
3. वाह रे! हमदर्द 26
4. मन (पूरक पठन–पद्य) 36
5. गोवा : जैसा मैंने देखा 40
6. गिरिधर नागर 51
7. खुला आकाश (पूरक पठन–गद्य) 58
8. गजल 63
9. रीढ़ की हड्डी 69
10. ठेस (पूरक पठन–गद्य) 79
11. कृषक गान 87

दूसरी इकाई

1. बरषहिं जलद 93
2. दो लघुकथाएँ (पूरक पठन–गद्य) 101
3. श्रम साधना 107
4. छापा 119
5. ईमानदारी की प्रतिमूर्ति 128
6. हम उस धरती की संतति हैं (पूरक पठन–पद्य) 138
7. महिला आश्रम 144
8. अपनी गंध नहीं बेचूँगा 154
9. जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ 161
10. बूढ़ी काकी (पूरक पठन–गद्य) 172
11. समता की ओर 181

- **अपठित विभाग** 189
- **भाषा अध्ययन (व्याकरण)** 194
- **उपयोजित लेखन** 216
- **बोर्ड की कृतिपत्रिका : मार्च 2020** 239

6414132

पहली इकाई

1 भारत महिमा

– जयशंकर प्रसाद

विषय-प्रवेश : प्रकृति ने हमारे देश भारत की रचना बड़े प्यार से की है। हमारा देश हिमालय की गोद में बसा हुआ है। हमारा देश सबसे पहले जाग्रत हुआ था और इसकी संस्कृति सबसे पुरानी है। प्रस्तुत कविता में छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद जी ने हमारे प्यारे देश भारत के इसी महिमामंडित अतीत का मनोरम चित्रण किया है। कवि की आकांक्षा है कि हमें सदैव अपने देश पर, इसकी सभ्यता और संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर, हमें देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

कविता का सरल अर्थ

[1] हिमालय के आँगन ..... मधुर साम संगीत।...

हमारा यह प्यारा भारत देश हिमालय के आँगन के समान है। प्रतिदिन उषा भारत को सूर्य की किरणों का उपहार देती है। तब ऐसा लगता है मानो हँसकर वह भारत-भूमि का अभिनंदन कर रही हो। ओस की बूँदों पर जब प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियाँ पड़ती हैं तो ऐसा लगता है जैसे उषा ने भारत को हीरों का हार पहना दिया हो।

सबसे पहले ज्ञान का उदय भारत में ही हुआ अर्थात सबसे पहले हम जाग्रत हुए। फिर हमने पूरे विश्व में ज्ञान का प्रसार किया। इसके कारण समग्र संसार आलोकित हो गया। अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश हुआ और संपूर्ण सृष्टि के सभी दुख-शोक दूर हो गए।

वाणी की देवी वीणापाणि (सरस्वती) ने इसी पवित्र भूमि पर प्रेम के साथ अपने कमल के समान कोमल करों में वीणा उठाई, उसकी झंकार से सप्तसिंधुओं में सातों स्वरों का मोहक सरगम गूँजने लगा, मधुर संगीत का जन्म हुआ। इसी महान देश में संगीत के वेद सामवेद की रचना हुई।

[2] विजय केवल ..... आए थे नहीं।...

भारत के लोगों ने शस्त्रों के बल पर देशों को नहीं जीता। यहाँ प्राचीन काल से ही लोगों के मन में धर्म की प्रखर भावना रही है और उन्होंने संसार में धर्म का प्रचार किया। यहाँ गौतम बुद्ध और वर्धमान महावीर जैसे धर्मपुरुष हुए हैं, जिन्होंने विशाल साम्राज्य छोड़कर भिक्षु का स्वरूप धारण किया और घर-घर घूमकर लोगों का कष्ट दूर करने का प्रयास किया, धर्म का प्रचार किया। हमने मोहम्मद गोरी को पराजित करने के बाद भी दयापूर्वक क्षमा कर दिया। हमारे देश से ही चीन को धर्म की दृष्टि मिली। (भारत के महान सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चीन, स्वर्ण भूमि अर्थात जावा और श्रीलंका भेजा) जावा और श्रीलंका के लोगों को पंचशील (अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि) के सिद्धांत मिले।

भारतवासियों ने कभी किसी की संपत्ति या किसी का राज्य छीनने का प्रयास नहीं किया। हमें प्रकृति ने प्रत्येक वस्तु मुक्तहस्त से प्रदान की। प्रकृति की हमारे देश पर महान कृपा रही है। (यहाँ की शस्य श्यामला भूमि, हिमाच्छादित गिरि शिखर, घाटियाँ, वादियाँ, सदानीरा नदियाँ, झरने, फल-फूल, संसाधनों से भरपूर जंगल सभी अनुपम हैं) भारत सदा से हमारी जन्मभूमि है। हम इसी देश की संतानें हैं। हम बाहर के किसी स्थान से आकर यहाँ नहीं बसे हैं। (जैसा कि कुछ विदेशियों का कहना है।)

[3] चरित थे पूत ..... प्यारा भारतवर्ष।

भारत के लोग सदा से चरित्रवान रहे हैं। हमारी भुजाओं में भरपूर शक्ति रही है। भारतीयों में वीरता की कभी कमी नहीं रही। साथ ही नम्रता सदा हमारा गुण रहा है। हमने कभी अपनी उपलब्धियों पर घमंड नहीं किया। हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति पर गर्व रहा है। हम कभी किसी को दुखी नहीं देख सके। दीन-दुखियों की सेवा करने के लिए हम भारतीय सदैव तत्पर रहते हैं।

हम यदि धन और संपत्ति का संग्रह करते भी थे, तो दान के लिए करते थे। दानवीरता भारतीयों का गुण रहा है। हमारे देश में अतिथियों को सदा देवता के समान माना जाता था। भारत के लोग सत्य बोलना अपना धर्म मानते थे। (भारतीय सत्यवादी हरिश्चंद्र की संतानें हैं।) हमारे हृदय में तेज था, गौरव था। हम सदा अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहते थे। प्राण जाए, पर वचन न जाए हमारा जीवनमूल्य रहा है।

आज भी हम भारतीयों की धमनियों में उन्हीं पूर्वजों का रक्त प्रवाहित हो रहा है। आज भी हमारा देश वैसा ही है। आज भी भारतीयों में वैसा ही साहस है। भारतीय आज भी ज्ञान के क्षेत्र में सबसे आगे हैं। आज भी हम पहले के समान शांति के पुजारी हैं। देशवासियों में वैसी ही शक्ति है। हम उन्हीं आर्यों की दिव्य संतानें हैं।

हम जब तक जिएँ, इसी देश के लिए जिएँ। हमें इसकी सभ्यता और संस्कृति पर अभिमान है और हर्ष है कि हमने इस भूमि पर जन्म लिया है। यह हमारा प्यारा भारतवर्ष है। यदि कभी आवश्यकता पड़े, तो इसके लिए अपना सर्वस्व भी न्योछावर कर दें।

मुहावरा – अर्थ

निछावर करना – अर्पण करना, समर्पित करना।

C4141 32

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 1)

हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत।...

शब्दार्थ

उपहार – भेंट। **हीरक हार** – हीरों का हार। **आलोक** – प्रकाश। **व्योम** – आकाश। **तम** – अँधेरा। **पुंज** – समूह। **अखिल** – संपूर्ण। **संसृति** – संसार। **अशोक** – शोकरहित। **विमल** – पवित्र। **वाणी** – (यहाँ अर्थ) सरस्वती। **सप्रीत** – प्रेम के साथ। **साम** – (यहाँ अर्थ) – सामवेद।

कृति 1 : (आकलन)

(1) पद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) अभिनंदन (ii) आलोक।

(2) पद्यांश में प्रयुक्त इन शब्दों से सहसंबंध दर्शाने वाले शब्द लिखिए :

(i) हिमालय –.....
(ii) किरण –.....
(iii) विमल –.....
(iv) कोमल –.....

(3) विधानों के सामने सत्य/असत्य लिखिए :

(i) जब पूरा विश्व जगा तो भारतवासी भी जग गए।
(ii) वीणापाणि ने अपने हाथ में वीणा ली।
(iii) हिमालय के आँगन में किरणों का उपहास मिला।
(iv) सप्तसिंधु में सातों स्वर गूँजने लगे।

(4) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'आ'
(i) उषा	आलोक
(ii) हीरक	संगीत
(iii) विश्व	अभिनंदन
(iv) वीणा	हार

उत्तर

(1) (i) उषा ने हँसकर क्या किया?
(ii) जब भारतीयों ने ज्ञान का प्रचार किया तो संसार में क्या फैला?

(2) (i) हिमालय – आँगन
(ii) किरण – उपहार
(iii) विमल – वाणी
(iv) कोमल – कर

(3) (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य।

(4) (i) उषा – अभिनंदन
(ii) हीरक – हार
(iii) विश्व – आलोक
(iv) वीणा – संगीत।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) पद्यांश में से ढूँढ़कर उपसर्गयुक्त शब्द लिखिए ।

(i) ..... (ii) .....

(2) अनेक शब्दों के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(i) गले में पहनने की मूल्यवान माला .....
(ii) सितार जैसा वह वाद्य जो सब वाद्यों में श्रेष्ठ माना जाता है, ...

(3) निम्नलिखित शब्दों के लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए :

(i) संपूर्ण (ii) शोकरहित (iii) संसार (iv) आकाश।

उत्तर

(1) (i) अभिनंदन (ii) उपहार।

(2) (i) हार (ii) वीणा।

(3) (i) संपूर्ण – अखिल (ii) शोकरहित – अशोक
(iii) संसार – संसृति (iv) आकाश – व्योम।

[**टिप्पणी** : पाठ्यपुस्तक के प्रश्न तारांकित (*) किए गए हैं।]

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• **उपर्युक्त पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : भारत देश हिमालय के आँगन के समान है। प्रतिदिन उषा भारत को सूर्य की किरणों का उपहार देती है, मानो हँसकर भारत-भूमि का अभिनंदन कर रही हो। ओस की बूँदों पर जब प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियाँ पड़ती हैं, तो ओस की बूँदें चमकने लगती हैं और ऐसा लगता है मानो, उषा ने भारत को हीरों का हार पहना दिया हो।

सबसे पहले ज्ञान का उदय भारत में ही हुआ। अर्थात सबसे पहले हम जाग्रत हुए। फिर हमने पूरे विश्व में ज्ञान का प्रसार किया। इसके कारण समग्र संसार आलोकित हो गया। अज्ञानरूपी अंधकार का विनाश हुआ और संपूर्ण सृष्टि के सभी दुख-शोक दूर हो गए।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 1)

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम।
'गोरी' को दिया दया का दान, चीन को मिला धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि।
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं।...

शब्दार्थ

धरा – पृथ्वी। **धूम** – हलचल। **भिक्षु** – (यहाँ अर्थ) बौद्ध संन्यासी। **लोहा** – (यहाँ अर्थ) शस्त्र। **गोरी** – मोहम्मद गोरी। **स्वर्ण भूमि** – जावा। **सिंहल** – श्रीलंका।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

कविता में प्रयुक्त दो देशों के नाम–

[ ] [ ]

(2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) भारत में केवल ..... की ही विजय नहीं रही।
(चाँदी/लोहे/सोने)

(ii) यहाँ ..... भिक्षु की तरह रहते थे।
(लोग/लड़के/सम्राट)

(iii) हमसे चीन को ..... की दृष्टि मिली।
(धर्म/कर्म/धन)

(iv) हमारा देश सदा प्रकृति का ..... रहा।
(खिलौना/ आँगन /पालना)

(3) उपर्युक्त पद्यांश पर आधारित ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) सम्राट (ii) धर्म।

*(4) **नाम लिखिए :**

कविता में प्रयुक्त दो धातुओं के नाम–

[ ] [ ]

(5) निम्नलिखित पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए :

*(i) कहीं से हम आए थे नहीं।

(ii) प्रकृति का रहा पालना यहीं।

(6) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) हमने गोरी को इसका दान दिया – [ ]

(ii) भारत की धरती पर इसकी धूम रही – [ ]

उत्तर

(1) कविता में प्रयुक्त दो देशों के नाम–

चीन | सिंहल (श्रीलंका)

(2) (i) भारत में केवल लोहे की ही विजय नहीं रही।

(ii) यहाँ सम्राट भिक्षु की तरह रहते थे।

(iii) हमसे चीन को धर्म की दृष्टि मिली।

(iv) हमारा देश सदा प्रकृति का पालना रहा।

(3) (i) कौन भिक्षु होकर रहते?

(ii) चीन को कौन-सी दृष्टि मिली?

(4) कविता में प्रयुक्त दो धातुओं के नाम–

लोहा | स्वर्ण

(5) (i) हम भारतवासी किसी अन्य देश से आकर यहाँ नहीं बसे। हम यहीं के निवासी हैं। सभ्यता के प्रारंभ से हम यहीं रहते आए हैं।

(ii) हमें प्रकृति ने प्रत्येक वस्तु मुक्तहस्त से प्रदान की। यहाँ की शस्य श्यामला भूमि, हिमाच्छादित गिरि शिखर, घाटियाँ, वादियाँ, सदानीरा नदियाँ, झरने, फल-फूल, संसाधनों से भरपूर जंगल सभी अनुपम हैं।

9414132

(6) (i) हमने गोरी को इसका दान दिया – [दया का]

(ii) भारत की धरती पर इसकी धूम रही – [धर्म की]

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए शब्द लिखिए :

(i) बहुमूल्य चमकीले प्रसिद्ध खनिज पदार्थ, जो आभूषणों आदि में जड़े जाते हैं –

(ii) छोटे बच्चों के लिए एक प्रकार का झूला या हिंडोला –

(iii) वह स्थान जहाँ किसी का जन्म हुआ हो –

(iv) बौद्ध संन्यासियों के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द –

(2) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

(i) विजय × ..... (ii) धर्म × .....

(iii) भूमि × ..... (iv) जन्म × .....

उत्तर

(1) (i) रत्न (ii) पालना (iii) जन्मस्थान (iv) भिक्षु।

(2) (i) विजय × पराजय (ii) धर्म × अधर्म

(iii) भूमि × आकाश (iv) जन्म × मरण।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

6414132

* • **उपर्युक्त पद्यांश की अपनी पसंदीदा किन्हीं दो पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम।

भारतीयों ने शस्त्रों के बल पर दूसरे देशों को नहीं जीता, बल्कि उन्होंने प्रेमभाव से लोगों के हृदय जीते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही लोगों के मन में धर्म की भावना रही है। यहाँ वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध जैसे त्यागी धर्मपुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपना विशाल साम्राज्य छोड़कर भिक्षु का स्वरूप धारण किया और घर-घर घूमकर लोगों का कष्ट दूर करने का प्रयास किया, धर्म का प्रचार किया।

पद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 1)

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान।
जिएँ तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

शब्दार्थ

पूत – पवित्र। **विपन्न** – गरीब। **संचय** – एकत्र। **टेव** – आदत। **सर्वस्व** – सब कुछ।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ–
- [ ]
- [ ]

***(2) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :**

संचय
सत्य
अतिथि
रत्न
वचन
दान
हृदय
तेज
देव

(3) निम्नलिखित पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए :

*(i) वही हम दिव्य आर्य संतान।

(ii) किसी को देख न सके विपन्न।

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) हम चरित्र के ऐसे थे – [ ]

(ii) हम दान के लिए यह करते थे – [ ]

(iii) हमारे लिए ये देवता के समान थे – [ ]

(iv) हमें अपने गौरव पर यह था – [ ]

(5) संजाल पूर्ण कीजिए :

[ ]
[ ] — आज भी भारतीयों में पूर्वजों के समान ही है– — [ ]
[ ]

(6) आकृति पूर्ण कीजिए :

कवि की अभिलाषा –

[ ] [ ]

उत्तर

(1)

भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ –

- दानशीलता
- अतिथि सत्कार

(2)

(i) संचय – दान
(ii) सत्य – वचन
(iii) अतिथि – देव
(iv) रत्न – तेज।

(3) (i) भारतवासी आर्य थे और हम उन्हीं आर्यों की दिव्य संतानें हैं।
(ii) भारतीय कभी किसी को दुखी नहीं देख सके। दीन-दुखियों की सेवा करने के लिए हम भारतीय सदैव तत्पर रहते हैं।

(4)
(i) हम चरित्र के ऐसे थे – पवित्र
(ii) हम दान के लिए यह करते थे – संचय
(iii) हमारे लिए ये देवता के समान थे – अतिथि
(iv) हमें अपने गौरव पर यह था – गर्व

(5)

आज भी भारतीयों में पूर्वजों के समान ही है –
- रक्त
- साहस
- ज्ञान
- शांति और शक्ति

(6)

कवि की अभिलाषा –
- स्वयं के लिए न जीकर अपने देश के लिए जीना
- देश के लिए सर्वस्व निछावर कर देना

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) पद्यांश से उपसर्गवाले दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) पूत = ... (ii) गर्व = ...
(iii) प्रतिज्ञा = ... (iv) प्यारा = ...

(3) पद्यांश से शब्द ढूँढ़कर लिखिए :

(i) पवित्र शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द – .....
(ii) गरीब शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द – .....

उत्तर

(1) (i) अतिथि (ii) अभिमान।

(2) (i) पूत = पावन (ii) गर्व = घमंड
(iii) प्रतिज्ञा = प्रण (iv) प्रिय = प्यारा।

(3) (i) पवित्र शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द – पूत
(ii) गरीब शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द – विपन्न।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• **उपर्युक्त पद्यांश की किन्हीं दो पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।

हम भारतीय दीन-दुखियों की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। हम यदि धन और संपत्ति का संग्रह करते भी थे तो दान के लिए करते थे। दानवीरता भारतीयों का गुण रहा है। महर्षि दधीचि और कर्ण जैसे दानवीर इसी भूमि पर हुए हैं। हमारे देश में अतिथियों को देवता के समान माना जाता था। भारतीय सत्यवादी हरिश्चंद्र की संतानें हैं। हमारे हृदय में तेज था, गौरव था। हम सदा अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहते थे। भारतीयों का मानना था – प्राण जाएँ, पर वचन न जाएँ।

पद्य विश्लेषण

सूचना : यह प्रश्नप्रकार कृतिपत्रिका के प्रारूप से हटा दिया गया है। लेकिन यह प्रश्न पाठ्यपुस्तक में होने के कारण विद्यार्थियों के अधिक अभ्यास के लिए इसे उत्तर-सहित यहाँ समाहित किया गया है।

• **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :**

(1) रचनाकार का नाम → जयशंकर प्रसाद।

(2) रचना की विधा → कविता।

(3) पसंद की पंक्तियाँ → व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट,
अखिल संसृति हो उठी अशोक।

(**सूचना :** विद्यार्थी अपनी पसंद की पंक्ति लिखेंगे।)

64141132

(4) **पंक्तियाँ पसंद होने का कारण** → हम भारतीयों ने पूरे विश्व में ज्ञान का प्रसार किया, जिसके कारण समग्र संसार आलोकित हो गया। अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश हुआ और संपूर्ण सृष्टि के सभी दुख-शोक दूर हो गए।

(5) **रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा** → हमें सदैव अपने देश और इसकी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। जब भी आवश्यकता पड़े, देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) राजा दशरथ वृद्ध दंपति के सामने बैठ गए।

(ii) सड़क कदाचित कच्ची थी।

उत्तर : (i) **दशरथ** – व्यक्तिवाचक संज्ञा।

(ii) **सड़क** – जातिवाचक संज्ञा।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) बहुत (ii) सामने (iii) किंतु।

उत्तर : (i) प्रयाग बहुत थक गया था।

(ii) स्कूल के सामने एक बगीचा है।

(iii) घर में दीपक तो था, किंतु उसमें तेल न था।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
उज्ज्वल	----------	----------

अथवा

----------	प्रश्न + उत्तर	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
उज्ज्वल	उत् + ज्वल	व्यंजन संधि

अथवा

प्रश्नोत्तर	प्रश्न + उत्तर	स्वर संधि

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) इस पद ने मोहिनी मंत्र का जाल बिछा दिया।

(ii) बालक भूमि पर लेट गया।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) दिया	देना
(ii) गया	जाना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) दौड़ना (ii) बोलना (iii) रोना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना
(ii) बोलना	बुलाना	बुलवाना
(iii) रोना	रुलाना	रुलवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) दृष्टि फेरना (ii) राह देखना।

उत्तर :

(i) दृष्टि फेरना।

अर्थ : नजर डालना।

वाक्य : नेताजी ने श्रोताओं पर दृष्टि फेरी।

(ii) राह देखना।

अर्थ : प्रतीक्षा करना।

वाक्य : विद्यार्थी कई दिनों से छुट्टियों की राह देख रहे थे।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए कोष्ठक में दिए गए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(सपने की संपत्ति होना, चल बसना, भनक पड़ना)

(i) हफ्ते भर की बीमारी में मरीज चला गया।

(ii) दारोगाजी ने उड़ती हुई खबर सुनी कि कल दंगा होने वाला है।

(iii) ऐसा भूकंप आया कि क्षण भर में सारी चहल-पहल विलुप्त हो गई।

उत्तर : (i) हफ्ते भर की बीमारी में मरीज चल बसा।

(ii) दारोगाजी के कान में भनक पड़ी कि कल दंगा होने वाला है।

(iii) ऐसा भूकंप आया कि क्षण भर में सारी चहल-पहल सपने की संपत्ति हो गई।

6414132

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) नारी महान है।

(ii) वह किसी को किसी प्रकार की कमी नहीं होने देती।

(iii) प्रेरणा का सूक्ष्म प्रभाव होता है।

उत्तर : (i) **नारी** – कर्ता कारक (ii) **किसी को** – कर्म कारक (iii) **प्रेरणा का** – संबंध कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) क्या बताऊँ गाय ने दूध देना बंद कर दिया है बूढ़ी हो गई है इस जमाने में गाय भैंस पालने का खर्चा

(ii) हे मेरे मित्रो परिचितो आओ अपने सारे बदले लेने का यही वक्त है

उत्तर : (i) "क्या बताऊँ। गाय ने दूध देना बंद कर दिया है, बूढ़ी हो गई है। इस जमाने में गाय-भैंस पालने का खर्चा ...।"

(ii) "हे मेरे मित्रो, परिचितो ! आओ, अपने सारे बदले लेने का यही वक्त है।"

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) मनु पीछे की ओर मुड़ता है। *(सामान्य भूतकाल)*

(ii) तुम्हारा मुख लाल होता है। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(iii) रोगी की अवस्था बदल जाती है। *(पूर्ण भूतकाल)*

उत्तर : (i) मनु पीछे की ओर मुड़ा।

(ii) तुम्हारा मुख लाल हो रहा है।

(iii) रोगी की अवस्था बदल गई थी।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) भारतीय चरित्र के पवित्र होते हैं।

(ii) बादल आए किंतु पानी नहीं बरसा।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i) तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए। *(आज्ञावाचक)*

(ii) मास्टर जी ने पुस्तकें लाने के लिए पैसे दिए। *(प्रश्नवाचक)*

उत्तर : (i) तुम अपना ख्याल रखो।

(ii) क्या मास्टर जी ने पुस्तकें लाने के लिए पैसे दिए?

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए :**

(i) क्रोध से उसकी नेत्र लाल हो गऐ।

(ii) राम ने हिरण का शिकार की।

(iii) मैं मेरा काम करता है।

उत्तर : (i) क्रोध से उसके नेत्र लाल हो गए।

(ii) राम ने हिरन का शिकार किया।

(iii) मैं अपना काम करता हूँ।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

2 लक्ष्मी

– गुरुबचन सिंह

विषय-प्रवेश : लक्ष्मी मवेशियों के शौकीन ज्ञान सिंह की अधेड़ उम्र की प्रिय गाय थी। नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को मकान खाली करने की नौबत आई तो लक्ष्मी को रखने की समस्या आई। उसका हल उन्होंने निकाला अपने पड़ोसी और दोस्त करामत अली को लक्ष्मी को सौंप देने से। करामत अली जी-जान से लक्ष्मी की सेवा करते थे, पर जब लक्ष्मी ने दूध देना बंद कर दिया, तो वह उनके परिवार के लिए समस्या बन गई।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार गुरुबचन सिंह ने एक ओर मित्र को दिए गए वचन के पालन पर बल दिया है, तो दूसरी ओर प्राणिमात्र के प्रति दया-भावना को प्रतिपादित किया है। कहानी में दर्शाया गया है कि अनुपयोगी हो जाने के बाद भी पालतू प्राणियों की उचित देखभाल करना आवश्यक है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **मुँह मारना** – जल्दी-जल्दी खाना।

(2) **गला भर आना** – भाव विह्वल होना, आवाज भर आना।

(3) **हाथ थामना** – सहारा देना।

(4) **कोरा जवाब देना** – साफ मना करना।

(5) **तैश में आना** – आवेश (जोश) में आना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा प्रश्न 1 (आ) के लिए

6414132

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 3)

उस दिन लड़के ने तैश में आकर लक्ष्मी की पीठ पर चार डंडे बरसा दिए थे। वह बड़ी भयभीत और घबराई थी। जो भी उसके पास जाता, सिर हिला उसे मारने की कोशिश करती या फिर उछलती-कूदती, गले की रस्सी तोड़कर खूँटे से आजाद होने का प्रयास करती।

करामत अली इधर दो-चार दिनों से अस्वस्थ था। लेकिन जब उसने यह सुना कि रहमान ने गाय की पीठ पर डंडे बरसाए हैं तो उससे रहा नहीं गया। वह किसी प्रकार चारपाई से उठकर धीरे-धीरे चलकर बथान में आया। आगे बढ़कर उसके माथे पर हाथ फेरा, पुचकारा और हौले-से उसकी पीठ पर हाथ फेरा। लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।

''ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।''

उसकी बीबी रमजानी बोली – ''लो, चोट की जगह पर यह रोगन लगा दो। बेचारी को आराम मिलेगा।''

करामत अली गुस्से में बोला – ''क्या अच्छा हो अगर इसी लाठी से तुम्हारे रहमान के दोनों हाथ तोड़ दिए जाएँ। कहीं इस तरह पीटा जाता है?''

रमजानी बोली – ''लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया।''

''तो उसकी सजा इसे लाठियों से दी गई?''

''रहमान से गलती हो गई, इसे वह भी कबूलता है।''

रमजानी कुछ क्षण खड़ी रही फिर वहाँ से हटती हुई बोली – ''देखो, अपना ख्याल रखो। पाँव इधर-उधर गया तो कमर सिंकवाते रहोगे।''

करामत अली ने फिर प्यार से लक्ष्मी की पीठ सहलाई। मुँह-ही-मुँह में बड़बड़ाया – ''माफ कर लक्ष्मी, रहमान बड़ा मूर्ख है। उम्र के साथ तू भी बुढ़ा गई है। डेयरीफार्म के डॉक्टर ने तो पिछली बार ही कह दिया था, यह तेरा आखिरी बरस है।''

शब्दार्थ

तैश – गुस्सा। **बथान** – गाय-बैल के रहने का स्थान। **सिहरन** – कँपकँपी। **रोगन** – दवा मिलाया हुआ तेल। **कबूलना** – स्वीकार करना।

निर्देश : गद्यखंड का पहला गद्यांश पूरा दिया गया है। इसके बादवाले गद्यांशों के आरंभ और अंत के शब्द पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ क्रमांक सहित दिए जाएँगे। विद्यार्थी कृपया पाठ्यपुस्तक से पूरा गद्यांश पढ़ें।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

मार के कारण लक्ष्मी के व्यवहार में आया परिवर्तन –

(2) कारण लिखिए :

(i) रहमान ने लक्ष्मी की पीठ पर डंडे बरसा दिए।

*(ii) रमजानी ने करामत अली को रोगन दिया।

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

गद्यांश में उल्लिखित पात्र –

उत्तर

6414132

(1)

मार के कारण लक्ष्मी के व्यवहार में आया परिवर्तन –

- लक्ष्मी बड़ी भयभीत और घबराई थी
- जो भी उसके पास जाता, उसे सिर हिलाकर मारने की कोशिश करती थी
- उछल-कूद रही थी
- गले की रस्सी तोड़कर खूँटे से आजाद होने का प्रयास करती

(2) (i) लक्ष्मी ने दूध नहीं दिया था।

(ii) रहमान के मारने के कारण लक्ष्मी की पीठ पर चोट आई थी।

(3)

गद्यांश में उल्लिखित पात्र –

- करामत अली (पिता)
- रमजानी (माँ)
- रहमान (पुत्र)
- लक्ष्मी (गाय)

कृति 2 : (आकलन)

• संजाल पूर्ण कीजिए :

करामत अली ने लक्ष्मी को मारने की बात सुनी, तब –

उत्तर

करामत अली ने लक्ष्मी को मारने की बात सुनी, तब –

- उससे रहा नहीं गया
- वह धीरे-धीरे चलकर बथान में आया
- उसने लक्ष्मी के माथे पर हाथ फेरा
- लक्ष्मी को पुचकारकर धीरे से उसकी पीठ पर हाथ फेरा

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

(i) -------- (ii) -------- (iii) -------- (iv) --------

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए :

(i) गाय (ii) बेटी (iii) रस्सी (iv) खूँटा।

उत्तर

(1) (i) उछलती-कूदती (ii) दो-चार
(iii) धीरे-धीरे (iv) इधर-उधर।

(2) (i) गाय – बैल (ii) बेटी – बेटा
(iii) रस्सी – रस्सा (iv) खूँटा – खूँटी।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

* • **पालतू जानवरों के साथ किए जाने वाले सौहार्दपूर्ण व्यवहारों के बारे में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : जानवरों का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्व है। इसलिए प्राचीन काल से पशु मनुष्य के साथी रहे हैं। गाय, बैल, भैंस, कुत्ता, घोड़ा आदि जानवर हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। पालतू पशु मनुष्य के परिवार के सदस्य जैसे होते हैं। हमें उन्हें प्रेम से पालना चाहिए। हमें उनके प्रति सौहार्दपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए। उन्हें उचित समय पर अच्छी खुराक देनी चाहिए। उनकी साफ-सफाई का ध्यान रखना चाहिए। पशु मूक प्राणी होते हैं। वे अपना दुख-दर्द बता नहीं सकते।

इसलिए मनुष्य को उनके भोजन के साथ-साथ उनकी भावनाओं को भी समझना जरूरी है। ये जानवर हमारे प्रति भी सद्व्यवहार और स्नेह रखते हैं। उनकी अच्छी देखभाल करना हमारा कर्तव्य है।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 3 – 4)
लक्ष्मी शांत खड़ी ..... खिलाते-पिलाते रहेंगे...?''

शब्दार्थ

मवेशी – कृषि-कार्य में उपयुक्त तथा दुधारू पशु। **दर्रा** – जानवरों के चारे में मिलाए जाने वाले अनाज के टुकड़े। **धंधा** – व्यवसाय।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

*(i)

गद्यांश से प्राप्त ज्ञान सिंह संबंधी जानकारी –

(ii)

ज्ञान सिंह और करामत अली का आपसी संबंध –

(iii) ज्ञान सिंह द्वारा पाली हुई गाय की विशेषता –

गाय जर्सी नस्ल की थी

***(2) गलत वाक्य सही करके लिखिए :**

(i) करामत अली पिछले चार सालों से गाय की सेवा करता चला आ रहा था।

(ii) करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद इत्मीनान हुआ।

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) लक्ष्मी शांत खड़ी जख्मों पर यह लगवाती रही –

(ii) लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी करामत अली को यह नहीं हुआ –

उत्तर

(1) (i)

कारखाने में काम करना | मवेशी पालने का शौक

गद्यांश से प्राप्त ज्ञान सिंह संबंधी जानकारी –

उदार विचारवाला | अब नौकरी से अवकाश प्राप्त

(ii)

दोनों एक-दूसरे के पड़ोसी थे | कारखाने में एक ही विभाग में काम करते थे

ज्ञान सिंह और करामत अली का आपसी संबंध –

दोनों मित्र थे | एक साथ ड्यूटी पर जाते और एक साथ घर लौटते

(iii)

ज्ञान सिंह द्वारा पाली हुई गाय की विशेषता –

गाय अधेड़ उम्र की थी | वह बहुत अधिक दूध देती थी

गाय जर्सी नस्ल की थी

(2) (i) करामत अली पिछले एक साल से गाय की सेवा करता चला आ रहा था।

(ii) करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी इत्मीनान नहीं हुआ।

(3) (i) लक्ष्मी शांत खड़ी जख्मों पर यह लगवाती रही – तेल

(ii) लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी करामत अली को यह नहीं हुआ – इत्मीनान

6414132

कृति 2 : (आकलन)

*(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

ज्ञान सिंह का पशु-प्रेम दर्शाने वाली बातें –

*(2) उत्तर लिखिए :

(i) ज्ञान सिंह की समस्याएँ–

(ii) ज्ञान सिंह के दूध बेचने के उद्देश्य–

*(3) मुद्दों के आधार पर आकृति पूर्ण कीजिए :

करामत अली की गाय का वर्णन–

- नाम :
- उम्र :
- नस्ल :
- स्थिति :

6414132

उत्तर

(1)

- मवेशी पालने का शौक
- उसके घर के दरवाजे पर गाय या भैंस बँधी रहती

ज्ञान सिंह का पशु-प्रेम दर्शाने वाली बातें–

- तीन साल पहले उसने अधेड़ उम्र की एक जर्सी गाय खरीदी
- परेशानी होने पर भी वह लक्ष्मी (गाय) को नहीं बेचता

(2) (i)

ज्ञान सिंह की समस्याएँ–

- नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी का मकान खाली करना था
- लक्ष्मी को वह अपने साथ नहीं ले जा सकता था

(ii)

ज्ञान सिंह के दूध बेचने के उद्देश्य–

- लक्ष्मी इतना अधिक दूध देती थी कि घर की जरूरत पूरी हो जाने पर भी काफी दूध बच जाता था
- दूध बेचकर ज्ञान सिंह लक्ष्मी को चारा और दर्रा आदि देने के लिए कुछ पैसे जुटा लेता था

(3)

करामत अली की गाय का वर्णन–

- नाम : लक्ष्मी
- उम्र : अधेड़ उम्र
- नस्ल : जर्सी
- स्थिति : बूढ़ी हो जाने के कारण अब दूध देना बंद कर दिया था।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) बरस (ii) गाय (iii) दूध (iv) जरूरत।

(2) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखिए :

(i) निशानी (ii) समस्या (iii) बेटी (iv) जरूरत।

(3) गद्यांश में प्रयुक्त उर्दू शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) -------- (ii) -------- (iii) -------- (iv) --------

(4)

सेवक

- पर्यायवाची
- वचन परिवर्तन
- लिंग परिवर्तन
- विलोम

उत्तर

(1) (i) बरस – साल (ii) गाय – धेनु
(iii) दूध – दुग्ध (iv) जरूरत – आवश्यकता।

(2) (i) निशानी – निशानियाँ (ii) समस्या – समस्याएँ
(iii) बेटी – बेटियाँ (iv) जरूरत – जरूरतें।

(3) (i) मवेशी (ii) शौक
(iii) जरूरत (iv) खुशनसीबी।

(4)

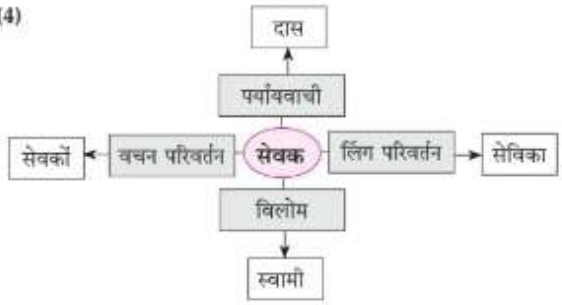

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **पशुपालन के विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : आदि मानव जब से एक स्थान पर समूह बनाकर रहने और खेती करने लगा, तभी से मनुष्यों और पशुओं का साथ रहा है। कृषि कार्य में उसे कई पशुओं को पालतू बनाना पड़ा था। भारतीय समाज में पशुपालन की परंपरा तभी से चली आ रही है। देश के प्रत्येक कृषक की यह इच्छा रहती है कि उसके पास बैलों की एक जोड़ी और एक गाय अवश्य हो। ये जानवर उसके लिए मात्र खेती में काम आने वाले, दूध देने वाले, सवारी तथा रखवाली के काम आने वाले ही नहीं होते, वरन ये कृषक परिवार का अभिन्न अंग होते हैं। घर के सभी सदस्यों को इनसे अत्यंत प्रेम होता है। ये अपने बच्चों के समान इन पशुओं के खान-पान और इनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 4 – 5)
उसके साथी नईम ने ..... राशन ले आओ।"

शब्दार्थ

खैरियत – कुशलता। **हौका** – दीर्घ निःश्वास। **दुहना** – पशु के थन से दूध निकालना। **मर्जी** – इच्छा। **पुआल** – धान के सूखे डंठल, जिनमें से दाने निकाल दिए गए हों। **खली** – तेल निकल जाने के बाद तिलहन का बचा हुआ हिस्सा, जो मवेशी खाते हैं। **सानी** – चारा, खली आदि मिला हुआ पशुओं का खाना।

कृति 1 : (आकलन)

• **कारण लिखिए :**

*(i) करामत अली लक्ष्मी के लिए सानी तैयार करने लगा।

(ii) करामत अली लक्ष्मी को बेचना नहीं चाहता था।

उत्तर

(i) सुबह से रमजानी या रहमान किसी ने भी लक्ष्मी को चारा, दर्रा कुछ भी नहीं दिया था। लक्ष्मी बहुत भूखी थी।

(ii) करामत अली जानता था कि बूढ़ी लक्ष्मी को अगर कोई खरीदेगा तो वह उसे काट-काटकर बेचने के लिए ही खरीदेगा।

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

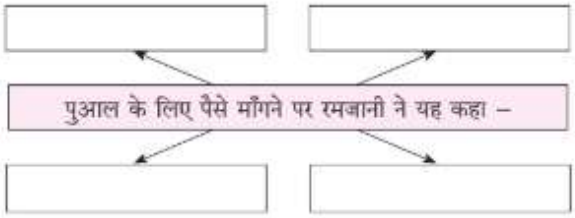

(2) उत्तर लिखिए :

(i)

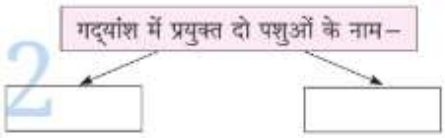

(ii) रमजानी ने संदूकची से यह निकाला– _____

6414132

उत्तर

(1)

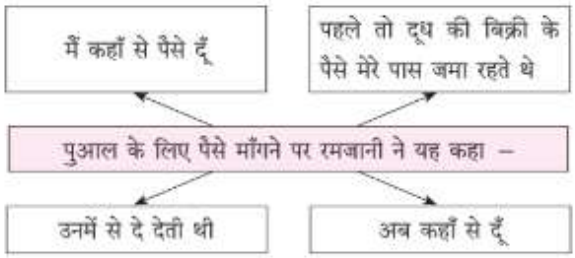

(2) (i)

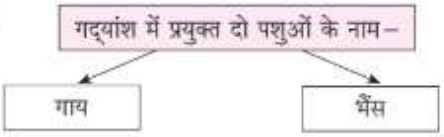

(ii) रमजानी ने संदूकची से यह निकाला– बीस का एक नोट

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) विशेष (ii) बूढ़ी (iii) आसान (iv) बेचना।

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) दूध (ii) परेशानी (iii) जमाना (iv) सानी।

उत्तर

(1) (i) विशेष × सामान्य (ii) बूढ़ी × युवा
(iii) आसान × कठिन (iv) बेचना × खरीदना।

(2) (i) दूध – पुल्लिंग (ii) परेशानी – स्त्रीलिंग
(iii) जमाना – पुल्लिंग (iv) सानी – स्त्रीलिंग।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **मानव और पशु के संबंध के विषय में 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : आदि-मानव पशुओं का शिकार पेट भरने के लिए करता था। कालांतर में उसने पशुओं का शिकार छोड़कर कृषि करना सीखा, साथ ही पशुओं को पालकर उनसे काम लेना प्रारंभ किया। गाय, बैल, घोड़ा और कुत्ता आदि हमारे बहुत अच्छे मित्र हैं। उनसे हमारे अनेक कार्य सिद्ध होते हैं। पशु अपनी मित्रता में सदा खरे उतरे हैं। उन्होंने मानव की हर तरह से सेवा की है। कुत्ता एक स्वामिभक्त जानवर है। अपने मालिक के लिए वह अपने प्राण भी न्योछावर कर देता है। सुरक्षा करने, मार्ग दिखाने आदि में कुत्ता अतुलनीय भूमिका निभाता है। संकट में फँसे लोगों को बचाने में भी कुत्ते बहुत कुशल होते हैं। कुत्तों में सूँघने की अद्भुत शक्ति होती है। कुत्ते पुलिस के काम में बहुत सहायता करते हैं।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 5 – 6)

"ठीक है। इससे लक्ष्मी के ..... इसे लेकर क्या करोगे...?"

शब्दार्थ

झाड़-झंखाड़ – कँटीले पेड़ों-झाड़ियों का समूह। **काँजी हाउस** – सरकारी मवेशीखाना (जिसमें दूसरों का खेत आदि खाने वाले अथवा लावारिस पशु बंद करके रखे जाते हैं)।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i)

करामत अली से रमजानी ने यह कहा –

(ii)

लक्ष्मी को छोड़े गए स्थान की विशेषताएँ –

(2) संजाल पूर्ण कीजिए : *(नवंबर '20)*

गद्यांश में उल्लेखित नाम –

(3) प्रतिक्रियाएँ लिखिए : *(नवंबर '20)*

(i) लोगों द्वारा लक्ष्मी को खरीदने की बात सुनने पर करामत अली की – .....

(ii) करामत अली द्वारा लक्ष्मी को सूखा चारा देने पर लक्ष्मी की – .....

उत्तर

(1) (i)

करामत अली से रमजानी ने यह कहा–
- मेरी मानो तो लक्ष्मी को बेच दो
- रहमान कह रहा था कि लक्ष्मी को कुछ लोग खरीद लेंगे
- रहमान ने किसी से कहा भी है
- शाम को वह तुमसे मिलने भी आएगा

6414132

(ii) वहाँ घास है | बहता हुआ नाला है

लक्ष्मी को छोड़े गए स्थान की विशेषताएँ –

झाड़–झंखाड़ है | जमीन हरी है

(2)

रहमान	गद्यांश में उल्लेखित नाम –	करामत अली
लक्ष्मी		रमजानी

(3) (i) लोगों द्वारा लक्ष्मी को खरीदने की बात सुनने पर करामत अली की – करामत अली खामोश रह गया।

(ii) करामत अली द्वारा लक्ष्मी को सूखा चारा देने पर लक्ष्मी की – लक्ष्मी ने चारे को सूँघा और फिर उसकी तरफ निराशापूर्ण आँखों से देखने लगी।

कृति 2 : (आकलन)

(1) कारण लिखिए :

(i) लक्ष्मी को काँजी हाउस में पहुँचाने की धमकी देना –

(ii) माँ-बेटे को आश्चर्य होना –

(iii) रहमान ने लक्ष्मी को इलाके से बाहर छोड़ दिया।

(2) केवल एक/दो शब्दों में उत्तर लिखिए :

(i) करामत अली इस समय ड्यूटी से लौटा – .....

(ii) दूसरों की गाय का चारा खाने वाली – .....

(iii) रमजानी इसकी बातें सुनती रही – .....

(iv) लक्ष्मी को देखकर आश्चर्यचकित होने वाले – .....

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

रहमान के साथ आए व्यक्ति से करामत अली ने यह पूछा –

[ ] | [ ]

उत्तर

(1) (i) क्योंकि लक्ष्मी दूसरे व्यक्ति की गाय का सब चारा खा गई है।

(ii) क्योंकि लक्ष्मी एक-डेढ़ घंटे बाद ही घर के सामने खड़ी थी।

(iii) रहमान ने सोचा कि लक्ष्मी नाले के पास उगी दूब खाकर पेट भर लेगी।

(2) (i) दोपहर बाद। (ii) लक्ष्मी।

(iii) आगंतुक की। (iv) माँ – बेटे।

(3) रहमान के साथ आए व्यक्ति से करामत अली ने यह पूछा –

क्या तुम गाय खरीदने आए हो? | तुम इसे लेकर क्या करोगे?

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) दिन (ii) घर (iii) माँ (iv) आश्चर्य।

(2) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखिए :

(i) इलाका (ii) आँखें (iii) गली (iv) नाला।

(3) लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) रस्सी – ..... (ii) झाड़-झंखाड़ – .....

(4) निम्नलिखित शब्द के अलग-अलग अर्थ लिखकर उनका अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए : *(नवंबर '20)*

चारा – अर्थ ..... | वाक्य .....

चारा – अर्थ ..... | वाक्य .....

उत्तर

(1) (i) दिन = दिवस (ii) घर = सदन

(iii) माँ = जननी (iv) आश्चर्य = अचरज।

(2) (i) इलाका – इलाके (ii) आँखें – आँख

(iii) गली – गलियाँ (iv) नाला – नाले।

(3) (i) रस्सी – स्त्रीलिंग (ii) झाड़-झंखाड़ – पुल्लिंग।

(4) चारा – अर्थ : घास | वाक्य : गाय चारा खाती है।

चारा – अर्थ : उपाय | वाक्य : करामत अली के सामने लक्ष्मी को गऊशाला भेजने के अलावा कोई चारा नहीं था।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'जानवर भी संवेदनशील होते हैं', विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।** *(नवंबर '२०)*

उत्तर : जानवर मूक प्राणी होते हैं। मनुष्य और जानवर में बहुत समानताएँ हैं। मनुष्य की तरह ही वे भी संवेदनशील होते हैं। अपना बुरा-भला वे भी पहचानते हैं। अपना हित चाहने वालों से वे भी लगाव रखते हैं। जानवरों को पुचकारने अथवा उनके शरीर पर हाथ फेरने से जानवरों को भी अच्छा लगता है। वे अपनी यह खुशी अपने हाव-भाव से प्रकट करते हैं। आदमियों की तरह उनमें भी सहृदयता होती है। इसी तरह प्रताड़ित किए जाने पर वे भी भयभीत होते हैं, छटपटाते हैं। मूक होने के कारण वे अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर पाते, पर अपने हाव-भाव से अपना सुख-दुख वे व्यक्त कर देते हैं। वे अपने हितैषी के लिए अपनी जान पर खेलकर उसकी रक्षा करते हैं, तो अपने को प्रताड़ित करने वाले से डर कर दूर भागते हैं। अच्छी और खराब खुराक वे भी पहचानते हैं। पालतू पशु तो मनुष्य के परिवार के सदस्य जैसे होते हैं। लोगों के साथ उनका भावनात्मक लगाव हो जाता है। हमें जानवरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए और उनकी भावनाओं को समझना चाहिए।

6414132

गद्यांश क्र. 5

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 5 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 6 – 7)
रमजानी करामत के ..... आगे बढ़ने लगा।

शब्दार्थ

गऊशाला – जहाँ गायें रखी जाती हैं। **इत्मीनान** – भरोसा, विश्वास। **हुज्जत** – झगड़ा (यहाँ अर्थ) विरोध। **दुत्कारना** – धिक्कारना, तिरस्कार करना। **भाँपना** – ताड़ना, रंग-ढंग से जान लेना।

कृति 1 : (आकलन)

(1) दो ऐसे प्रश्न बनाकर लिखिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) लक्ष्मी (ii) गऊशाला में।

(2) संजाल पूर्ण कीजिए :

सवेरा होने पर करामत अली ने यह किया–

उत्तर

(1) (i) टुकड़े-टुकड़े होकर कौन बिक जाएगी?

(ii) करामत अली लक्ष्मी को कहाँ भरती करा देगा?

(2)

सवेरा होने पर करामत अली ने यह किया–
- चारपाई छोड़ी
- हाथ-मुँह धोया
- लक्ष्मी की रस्सी खोली
- उसे गली से बाहर ले आया

कृति 2 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

करामत अली लक्ष्मी से ये बातें कर रहा था–

(2) कारण लिखिए :

(i) लक्ष्मी बिना किसी रुकावट के करामत अली के पीछे-पीछे चली आ रही थी।

*(ii) करामत अली ने लक्ष्मी को गऊशाला में भरती किया।

(3) एक-दो शब्दों में उत्तर लिखिए :

(i) रमजानी ने किसके चेहरे के भाव भाँप लिए?

(ii) रमजानी कहाँ खड़ी लक्ष्मी को बाहर ले जाते देखती रही?

उत्तर

(1)

करामत अली लक्ष्मी से ये बातें कर रहा था–
- लक्ष्मी चल, गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है
- तुझे वहाँ भरती करा दूँगा
- तू वहाँ इत्मीनान से रहना
- वहाँ तू हमारे घर की तुलना में मजे से रहेगी

(2) (i) लक्ष्मी करामत अली के प्रेम को पहचानती थी। वह जानती थी कि करामत अली उसे किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाएगा।

(ii) पैसे की तंगी के कारण करामत अली लक्ष्मी के दाने-चारे का प्रबंध नहीं कर पा रहा था। वह लक्ष्मी को भूखों मरता नहीं देख सकता था।

(3) (i) करामत अली (ii) दरवाजे पर।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) दोस्त (ii) रात (iii) सवेरा (iv) बाहर।

(2) गद्यांश में प्रयुक्त उर्दू के शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) -------- (ii) -------- (iii) -------- (iv) --------

(3) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

(i) -------- (ii) -------- (iii) -------- (iv) --------

उत्तर

(1) (i) दोस्त × दुश्मन (ii) रात × दिन
(iii) सवेरा × साँझ (iv) बाहर × भीतर।

(2) (i) किस्मत (ii) खुद (iii) हुज्जत (iv) इत्मीनान।

(3) (i) मुँह-हाथ (ii) पीछे-पीछे
(iii) थके-माँदे (iv) खाए-पिए।

6414132

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

***• 'यदि आप करामत अली की जगह होते तो...' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : करामत अली दोस्त को दिए गए वचन को निभाने वाला और पशु की पीड़ा समझने वाला इन्सान है। यदि करामत अली की जगह मैं होती/होता तो मैं भी वही करती/करता, जो करामत अली ने किया। जब हम किसी पशु को पालते हैं, तो उसकी सुख-सुविधा और खाने-पीने की उचित व्यवस्था करना हमारी जिम्मेदारी होती है। यदि मेरे समक्ष करामत अली जैसी स्थिति (आर्थिक संकट) उत्पन्न होती, तो मैं भी अपने पालतू पशु को भूखा मरते देखने या उसे कसाई के हाथों बेचने के स्थान पर किसी अच्छे पशुघर (गऊशाला) में ही दाखिल कराती/कराता। पशुघर में अपने जैसे अन्य पशुओं के साथ मेरा प्रिय पशु भी सुखपूर्वक अपना शेष जीवन बिता सकता। इससे मुझे बहुत संतोष होता।

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति
(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 8)

***(1) उचित घटनाक्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) उसके गले में रस्सी थी।

(ii) रहमान बड़ा मूर्ख है।

(iii) वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया।

(iv) उसने तुम्हें बेदर्दी से पीटा है।

उत्तर :

(i) उसने तुम्हें बेदर्दी से पीटा है।

(ii) रहमान बड़ा मूर्ख है।

(iii) उसके गले में रस्सी थी।

(iv) वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया।

***(2) हिंदी-मराठी में समोच्चरित शब्दों के भिन्न अर्थ लिखिए :**

	हिंदी	मराठी
(1) खत	पत्र	खाद
(2) पीठ	पीठ (शरीर का अंग)	आटा
(3) खाना	भोजन	दराज
(4) चारा	उपाय	जानवरों को खिलाने की सामग्री
(5) कल	बीता हुआ अथवा आने वाला समय (कल)	रुझान, प्रवृत्ति

6414132

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) वह लक्ष्मी को किसी भी हालत में बेचना नहीं चाहता था।

(ii) रामू ने देखा कि दूध नदारद!

(iii) राशन के लिए कुछ रुपए रखे थे।

उत्तर : (i) **वह** – पुरुषवाचक सर्वनाम।

(ii) **दूध** – द्रव्यवाचक संज्ञा।

(iii) **कुछ** – संख्यावाचक विशेषण।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) और (ii) जहाँ (iii) अरे! (iv) अरे रे!

उत्तर : (i) लक्ष्मी ने चारे को सूँघा और फिर उसकी ओर निराशा से देखने लगी।

(ii) जहाँ इसकी किस्मत में होगा, वहीं छोड़ आऊँगा।

(iii) अरे! लक्ष्मी जल्दी चल।

(iv) अरे रे! साँप ने उसे काट लिया।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निराशा	----------	----------

अथवा

----------	अति + अंत	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निराशा	**निः + आशा**	**विसर्ग संधि**

अथवा

अत्यंत	अति + अंत	**स्वर संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) रमजानी काम में जुट गई।

(ii) रहमान ने लक्ष्मी को घर से निकालने के लिए कमर कस ली।

(iii) लक्ष्मी ने घास छोड़ दिया।

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) गई	जाना
(ii) ली	लेना
(iii) दिया	देना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) मिलना (ii) पीना (iii) बनना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) मिलना	मिलाना	मिलवाना
(ii) पीना	पिलाना	पिलवाना
(iii) बनना	बनाना	बनवाना

6. मुहावरे :

(1) मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) चंपत होना (ii) कमर कसना (iii) ताँता लगना।

उत्तर :

(i) चंपत होना।

अर्थ : गायब होना।

वाक्य : पुलिस को देखकर चोर चंपत हो गया।

(ii) कमर कसना।

अर्थ : तैयार होना।

वाक्य : अकाल का मुकाबला करने के लिए लोगों ने कमर कस ली।

(iii) ताँता लगना।

अर्थ : कतार लग जाना, भीड़ लगना।

वाक्य : गांधी जी के दर्शनों के लिए आश्रम में हमेशा लोगों का ताँता लगा रहता।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए कोष्ठक में दिए गए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(पैर पकड़ना, जान में जान आना, ताँता बँध जाना)

(i) वर्षा होने पर किसानों को धीरज प्राप्त हुआ।

(ii) रमण ने पिता जी से क्षमा-याचना की।

उत्तर : (i) वर्षा होने पर किसानों की जान में जान आई।

(ii) रमण ने पिता जी के पैर पकड़े।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उनका भेद लिखिए :**

(i) कंबख्त ने कितनी बेरहमी से पीटा है।

(ii) लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया।

(iii) उसने लक्ष्मी के माथे पर हाथ फेरा।

उत्तर : (i) **बेरहमी से**–करण कारक

(ii) **लक्ष्मी ने**–कर्ता कारक

(iii) **माथे पर**–अधिकरण कारक।

8. विरामचिह्न :

(विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ क्र. 9 पर भाषा बिंदु में दिए गए प्रश्न देखें। यहाँ केवल उत्तर दिए गए हैं।)

- **निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए :**

(1) "ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।"

(2) मैंने कराहते हुए पूछा – "मैं कहाँ हूँ?"

(3) मँझली भाभी मुट्ठी भर बुँदियाँ सूप में फेंककर चली गई।

(4) बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है मोथी की शीतलपाटी के लिए।

(5) केवल टीका, नथुनी और बिछिया रख लिए थे।

(6) ठहरो, मैं माँ से जाकर कहती हूँ, इतनी बड़ी बात!

(7) 'टाँग का टूटना' यानी सार्वजनिक अस्पताल में कुछ दिन रहना।

(8) जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा।

(9) "लक्ष्मी चल, अरे! गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है।"

(10) मानो, उनकी एक आँख पूछ रही हो–'कहो, कविता कैसी रही?'

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) लक्ष्मी उसकी ओर देखती है। *(अपूर्ण भूतकाल)*

(ii) रहमान लक्ष्मी को मारता है। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

(iii) लक्ष्मी बड़ी घबराई हुई है। *(पूर्ण भूतकाल)*

उत्तर : (i) लक्ष्मी उसकी ओर देख रही थी।

(ii) रहमान ने लक्ष्मी को मारा है।

(iii) लक्ष्मी बड़ी घबराई हुई थी।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) रमजानी खड़ी थी और आगंतुक की बातें सुन रही थी।

6414132

(ii) जो भी गाय के पास जाता, वह उसे सिर मारने की कोशिश करती।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य (ii) मिश्र वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i) करामत अली ने लक्ष्मी की पीठ सहलाई। *(निषेधवाचक वाक्य)*

(ii) यह तुम्हारा पुराना धंधा है। *(प्रश्नवाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) करामत अली ने लक्ष्मी की पीठ नहीं सहलाई।

(ii) क्या यह तुम्हारा पुराना धंधा है?

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए :**

(i) लक्ष्मी की आँख में आँसू आई।

(ii) नईम का आवाज करामत के कान में पहुँचा।

(iii) मामला लक्ष्मी को गऊशाला ले जाने पर ठिक हो गई।

उत्तर : (i) लक्ष्मी की आँखों में आँसू आए।

(ii) नईम की आवाज करामत के कान में पहुँची।

(iii) मामला लक्ष्मी को गऊशाला ले जाने पर ठीक हो गया।

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 9)

- **निम्नलिखित विरामचिह्नों का प्रयोग करते हुए बारह-पंद्रह वाक्यों का गद्यांश लिखिए :**

[**सूचना :** (1) परीक्षा में 'विरामचिह्न' के लिए इस प्रकार का प्रश्न भी पूछा जा सकता है। (2) यहाँ गद्यांश न देते हुए विद्यार्थियों की सुविधा के लिए अलग-अलग विरामचिह्नों का प्रयोग करते हुए स्वतंत्र वाक्य दिए गए हैं।]

(1) (!) लक्ष्मी बड़ी भयभीत और घबराई हुई थी।

(2) (-) मालिक आज दर्रा-खली कुछ नहीं।

(3) (?) कौन खरीदेगा इस बूढ़ी गाय को?

(4) (;) हिंदी साहित्य के विकास; उन्नति में डायरी का भी योगदान है।

(5) (,) देखो, मुझे गाय बेचनी ही नहीं है।

(6) (!) ये देखो चाचाजी!

(7) (' ') गोआ में 'सी-फूड' की अधिकता है।

(8) ("") "ऐसी कोई विशेष बात नहीं है।"

(9) (xxx) हे ग्रामदेवता नमस्कार xxx

(10) (-o-) इस तरह राजा –o– रानी सुख से रहने लगे।

(11) (.....) तुम इस गाय को लेकर क्या करोगे.....?

(12) (:) मनु (हँसते हुए) : मैंने तो लड्डू का डिब्बा देखा भी नहीं।

(13) [( )] रवींद्रनाथ ठाकुर का [(बंगला भाषा) अनुवादित (अनूदित)] साहित्य सभी पढ़ते हैं।

(14) (^) मामा जी आगरा से कल आएँगे।

(15) (/) परीक्षार्थी उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण में से एक तो अवश्य होगा।

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 5**

पर्यावरण चक्र को बनाए रखने में प्राणियों की भूमिका के बारे में यू ट्यूब/रेडियो/दूरदर्शन से जानकारी सुनिए।

- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 5**

भारत सरकार द्वारा 'पशु संरक्षण' के लिए चलाई जाने वाली योजनाओं की जानकारी पढ़िए और घोष वाक्य बनाकर प्रस्तुत कीजिए।

उपयोजित लेखन

- **संभाषणीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 6)**

'विलुप्त हो रहे जानवरों' पर संक्षेप में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : ऐसे अनेक जानवर हैं, जो या तो संख्या में कम हैं या बदलते पर्यावरण और परभक्षण मानकों के कारण लुप्तप्राय हो रहे हैं। साथ ही वनों की कटाई के कारण भोजन और पानी की कमी हो जाना भी इनकी आबादी कम होने का कारण है। भारतीय वन्य जीवों में अनूप मृग, चौसिंगा, कस्तूरी मृग, नीलगाय, चीतल, कृष्णमृग, एक सींग वाला गैंडा, सांभर, गोर, जंगली सूअर आदि दुर्लभ प्रजातियाँ हैं। पर्यावरण संतुलन में इन जीवों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इन प्रजातियों में बड़ी तेजी से गिरावट आ रही है। भारत में स्तनपायी वन्य जीवों की 81 प्रजातियाँ संकटग्रस्त हैं। इनमें से कुछ हैं–शेर, चीता, बाघ, सफेद तेंदुआ, गैंडा, जंगली भैंसा, जंगली सूअर, लाल पांडा, चिम्पैंजी, नीलगिरि लंगूर, बारहसिंगा, कस्तूरी मृग, नीलगिरि हिरन, चौसिंगा हिरन, कश्मीरी हिरन आदि।

• **लेखनीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 7)**

'पेटा' (PETA) संस्था के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और इसके प्रमुख मुद्दे विद्यालय के भित्ति फलक पर लगाइए।

• **कुत्ते की आत्मकथा (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 9)**

मैं गलियों में मारा-मारा फिरने वाला एक कुत्ता हूँ। मैंने अपने जीवन में बहुत सुख-दुख सहे हैं। मैं आपको अपनी व्यथा-कथा सुनाता हूँ।

मेरी माँ एक किसान-परिवार की पालतू कुतिया थी। उसी के घर में मेरा जन्म हुआ था। मेरा रंग दूध की तरह सफेद था। बच्चे-बूढ़े सभी मुझे प्यार से उठा लेते थे। वे मुझे गोद में लेकर सहलाते। लोग मुझे तरह-तरह की चीजें खाने के लिए देते थे। मैं बहुत खुश था।

एक दिन उस किसान ने मुझे एक अमीर आदमी के हाथों सौंप दिया। मेरा मालिक मुझे पाकर बहुत खुश हुआ। वह मेरा बहुत ख्याल रखता था। वह मुझे 'टॉमी' कहकर बुलाता था। जहाँ भी जाता, वह अपने साथ मुझे ले जाता था।

मैं भी अपने मालिक की बहुत सेवा करता था। रात के समय मैं उसके बँगले की रखवाली करता था। मालिक के बच्चे मुझे बहुत प्यार करते थे।

लेकिन सब दिन एक समान नहीं होते। धीरे-धीरे मेरा स्वास्थ्य गिरने लगा। मैं कमजोर होता चला गया। न मैं अब पहले जैसा ताकतवर रहा और न ही सुंदर। इसलिए मेरे प्रति मालिक और उसके परिवार का रुख बदल गया।

मेरे बुढ़ापे ने मुझे कहीं का नहीं रखा। मुझे अब अपना जीवन बोझ-सा लगने लगा है। मैं पेट भरने के लिए मारा-मारा फिरता हूँ। जिसके दरवाजे पर पहुँचता हूँ, वही दो डंडे जमा देता है।

(यहाँ पर 'कुत्ते की आत्मकथा' नमूने के रूप में दी गई है। विद्यार्थी अपनी पसंद के पालतू प्राणी की आत्मकथा लिखें।)

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

3 वाह रे! हमदर्द

– घनश्याम अग्रवाल

विषय-प्रवेश : अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती हुए मरीज को देखने जाने की परंपरा समाज में पुरानी है। इससे मरीज को खुशी होती है और कुछ समय के लिए उसका ध्यान अपने कष्ट से हट जाता है। पर कुछ मिलने वाले ऐसे होते हैं, जो मरीज के लिए परेशानी का कारण बन जाते हैं। प्रस्तुत हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध में लेखक ने दुर्घटना के माध्यम से एक ऐसी ही स्थिति का चित्रण किया है। निबंध में जहाँ एक ओर समाज में विद्यमान परोपकार की भावना पर प्रकाश डाला गया है, वहीं दूसरी ओर बड़े ही रोचक ढंग से हमदर्द लोगों की मानसिकता को भी चित्रित किया गया है। कभी-कभी हमदर्दी भी रोगी की मानसिक पीड़ा का कारण बन जाती है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **टाँग अड़ाना** – बाधा डालना।

(2) **काँप उठना** – भयभीत होना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा 1 (आ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

6414132

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 10)

आँख खुली तो ..... खुला निमंत्रण है।

शब्दार्थ

सार्वजनिक – सर्वजन अर्थात सबके लिए। **फिक्र** – चिंता। **हमदर्दी** – सहानुभूति।

कृति 1 : (आकलन)

(1) **प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :**

लेखक द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर–

(2) **आकृति पूर्ण कीजिए :**

लेखक की टाँगों की स्थिति–

(3) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

आँख खुलने पर लेखक ने यह देखा–

उत्तर

(1) लेखक द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर–

- आप सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वॉर्ड में हैं।
- आपका ऐक्सिडेंट हो गया था।
- सिर्फ पैर का फ्रैक्चर हुआ है।
- अब घबराने की कोई बात नहीं

(2) लेखक की टाँगों की स्थिति–

- एक टाँग अपनी जगह पर सही-सलामत थी।
- दूसरी रेत की थैली के सहारे एक स्टैंड पर लटक रही थी।

(3)

आँख खुलने पर लेखक ने यह देखा–

- लेखक एक बिस्तर पर थे
- इर्द-गिर्द कुछ परिचित-अपरिचित चेहरे खड़े थे

- लेखक की आँख खुलते ही सबके चेहरों पर उत्सुकता की लहर दौड़ गई
- लेखक की एक टाँग रेत की थैली के सहारे एक स्टैंड पर लटकी थी

कृति 2 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

लेखक को यह फिक्र हुई–

- [ ]
- [ ]

- [ ]
- [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

लेखक की दृष्टि से–

- घटना → [ ]
- दुर्घटना → [ ]

***(3) अंतर स्पष्ट कीजिए :**

(i)

प्राइवेट अस्पताल	सार्वजनिक अस्पताल
----------	----------

(ii)

प्राइवेट वॉर्ड	जनरल वॉर्ड
----------	----------

(4) जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'आ'
(i) ऐक्सिडेंट	खुला निमंत्रण
(ii) टाँग	दुर्घटना
(iii) प्राइवेट वार्ड	रेत की थैली
(iv) सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना	फ्रैक्चर

उत्तर

(1)

लेखक को यह फिक्र हुई –

- लोग हमदर्दी जताने मुझसे मिलने आएँगे
- उनका (लेखक) आराम हराम हो जाएगा

- प्राइवेट वॉर्ड में मिलने वाले कभी भी आ जाएँगे
- मिलने के नाम पर तकलीफ देंगे

(2)

लेखक की दृष्टि से–

- घटना → टाँग टूटना
- दुर्घटना → सार्वजनिक अस्पताल में भर्ती होना

(3) (i)

प्राइवेट अस्पताल	सार्वजनिक अस्पताल
प्राइवेट अस्पताल में अच्छी सुविधाएँ होती हैं।	सार्वजनिक अस्पताल में कई बार सुविधाओं का अभाव होता है।

(ii)

प्राइवेट वॉर्ड	जनरल वॉर्ड
मिलने का कोई निश्चित समय नहीं होता।	मिलने का निश्चित समय होता है।

(4)

(i) ऐक्सिडेंट – फ्रैक्चर
(ii) टाँग – रेत की थैली
(iii) प्राइवेट वॉर्ड – खुला निमंत्रण
(iv) सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना – दुर्घटना

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) सूचना के अनुसार लिखिए :

जवाब

- लिंग पहचानिए → [ ]
- समानार्थी शब्द → [ ]
- विरुद्धार्थी शब्द → [ ]
- वचन परिवर्तन → [ ]

6414132

(2) गद्यांश में प्रयुक्त उर्दू शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) ..... (iii) ..... (iv) .....

(3) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) ..... (iii) ..... (iv) .....

(4) गद्यांश में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्द ढूँढ़कर उनके मूल शब्द और उपसर्ग अलग करके लिखिए।

(i) ..... (ii) ..... (iii) .....

उत्तर

(1)

(2) (i) जवाब (ii) फिक्र (iii) तकलीफ (iv) मरीज।

(3) (i) एक-दूसरे (ii) मिलने-जुलने

(iii) सही-सलामत (iv) परिचित-अपरिचित।

(4) (i) अपरिचित = अ + परिचित।

(ii) दुर्घटना = दुर् + घटना।

(iii) हमदर्दी = हम + दर्दी।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **सार्वजनिक अस्पतालों में मरीजों को होने वाली परेशानियों के विषय में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : देश में अनगिनत निजी अस्पताल हैं, परंतु देश की आधी से अधिक गरीब जनता सार्वजनिक अस्पतालों पर ही निर्भर है। इन अस्पतालों की हालत बहुत दयनीय है। इन अस्पतालों की एक्स-रे आदि मशीनों का कोई ठिकाना नहीं होता। गरीबों को वहाँ इलाज के स्थान पर तकलीफ ही मिलती है। सार्वजनिक अस्पतालों में समय पर डॉक्टर नहीं मिलते। डॉक्टर यदि मिल भी जाता है, तो दवाइयाँ नहीं मिलतीं। इसलिए मरीजों को महँगे दामों पर बाहर से दवाएँ खरीदने को बाध्य होना पड़ता है। इसके अलावा डॉक्टर के साथ-साथ अस्पताल के कर्मचारियों का व्यवहार भी रोगियों के प्रति बहुत खराब होता है। ऐसे में इन अस्पतालों में मरीज का ढंग से इलाज नहीं हो पाता। इसलिए लोग इन अस्पतालों में जाने से कतराते हैं।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 11)

मुझसे मिलने के लिए ..... ये देखो बंदर।

शब्दार्थ

एहसान – कृतज्ञता। **हमदर्दी** – सहानुभूति।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

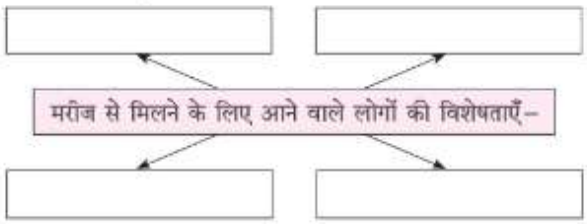

(2) **वाक्य पूर्ण कीजिए :**

(i) इनकी हमदर्दी में यह बात खास छिपी रहती है .....।

(ii) उस दिन सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई तो .....।

(3) **आकृति पूर्ण कीजिए :**

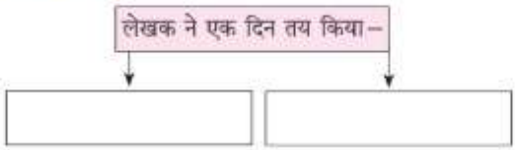

उत्तर

(1)

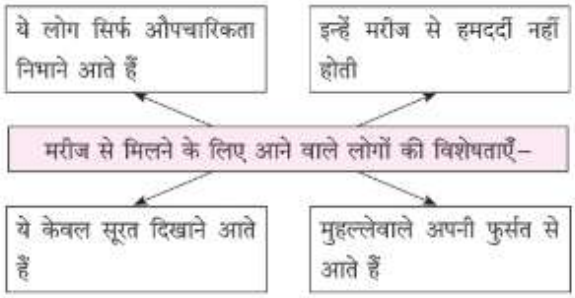

(2) (i) इनकी हमदर्दी में यह बात खास छिपी रहती है कि देख बेटा, वक्त सब पर आता है।

(ii) उस दिन सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई तो मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी।

6414132

(3)

लेखक ने एक दिन तय किया–

- आज कोई भी आए, आँख नहीं खोलूँगा
- चुपचाप पड़ा रहूँगा

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) दर्द के मारे एक तो मरीज को वैसे ही यह नहीं आती – [ ]

(ii) कुछ लोग सिर्फ यह निभाने आते हैं – [ ]

(iii) इन लोगों को मरीज से यह नहीं होती – [ ]

(iv) कब मेरी टाँग टूटे, कब वे अपना यह चुकाएँ – [ ]

(2) विधानों के सामने सत्य /असत्य लिखिए :

(i) मैंने तय किया कि आज मैं आँख ही नहीं खोलूँगा।

(ii) ऑफिस के बड़े साहब आए।

(iii) उन्होंने मेरी टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाया।

(iv) कहिए, अब सिरदर्द कैसा है?

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

दफ्तर के बड़े बाबू ने यह किया–

- [ ]
- [ ]

6414132

उत्तर

(1) (i) दर्द के मारे एक तो मरीज को वैसे ही यह नहीं आती – नींद

(ii) कुछ लोग सिर्फ यह निभाने आते हैं – औपचारिकता

(iii) इन लोगों को मरीज से यह नहीं होती – हमदर्दी

(iv) कब मेरी टाँग टूटे, कब वे अपना यह चुकाएँ – एहसान

(2) (i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य।

(3)

दफ्तर के बड़े बाबू ने यह किया–

- लेखक को धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया
- लेखक की टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाया

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखिए :

(i) बेटा (ii) टाँग (iii) दुर्घटनाएँ (iv) हिस्सा।

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) दिन (ii) नींद (iii) फुरसत (iv) वक्त।

(3) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) नींद (ii) आँख (iii) दर्द (iv) वक्त।

उत्तर

(1) (i) बेटा – बेटे (ii) टाँग – टाँगें
(iii) दुर्घटनाएँ – दुर्घटना (iv) हिस्सा – हिस्से।

(2) (i) दिन – पुल्लिंग (ii) नींद – स्त्रीलिंग
(iii) फुरसत – स्त्रीलिंग (iv) वक्त – पुल्लिंग।

(3) (i) नींद = निद्रा (ii) आँख = नयन
(iii) दर्द = पीड़ा (iv) वक्त = समय।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

*** 'मरीज से मिलने जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : प्राय: सभी को कभी-न-कभी मरीजों से मिलने अस्पताल में जाना पड़ता है। मरीज से मिलने जाते समय कुछ सावधानियाँ बरतना अत्यंत आवश्यक है। मरीज से मिलने जाते समय हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारी वजह से उसे कोई कष्ट न पहुँचे। बच्चे चुलबुले होते हैं। इसलिए मरीज के पास बच्चों को नहीं लेकर जाना चाहिए। बीमारी में दवा और पथ्य के साथ मरीज को आराम व अच्छी नींद आवश्यक है। अत: मरीज के पास ज्यादा देर तक बैठना, जोर-जोर से बोलना, मरीज की बीमारी के बारे में नकारात्मक बातें करना आदि उचित नहीं है। जहाँ तक हो सके, मरीज का उत्साह बढ़ाना चाहिए। अस्पताल में डॉक्टर मरीज को उसकी आवश्यकता के अनुसार दवाएँ देते हैं। इसलिए मरीज से देसी नुस्खे आजमाने की बातें नहीं करनी चाहिए और न ही डॉक्टर की दवा के बारे में रोगी के मन में किसी तरह का भ्रम पैदा करना चाहिए।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 11 – 12)

बच्चे खेलने लगे ..... पैसे दे दिए थे।

शब्दार्थ

औपचारिकता – दिखावा । **औंधा** – उल्टा।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

अस्पताल में आए सोनाबाई के बच्चों की शरारतें–

(2) कारण लिखिए :

* (i) लेखक को अधिक गुस्सा अपनी पत्नी पर आया ----------।

(ii) आगंतुक ने जब लेखक से आँख मिलाई तो एकदम चुप हो गया ----------।

(3) ऐसे दो प्रश्न बनाइए, जिनके उत्तर निम्नलिखित हों :

(i) दवा की शीशी (ii) औपचारिकता।

उत्तर

(1)

अस्पताल में आए सोनाबाई के बच्चों की शरारतें–

- एक बच्चा कुर्सी पर चढ़ गया
- दूसरा बच्चा मेज पर चढ़ गया
- सोनाबाई की छोटी लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी
- एक लड़का टाँग के साथ लटकी थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस करने लगा

(2) (i) आगंतुक को रोते देखकर लेखक की पत्नी ने उसे कोई रिश्तेदार या करीबी मित्र समझकर टैक्सीवाले को किराये के पैसे दे दिए थे।

(ii) आगंतुक किसी अन्य मरीज से मिलने आया था।

(3) (i) सोनाबाई की लड़की ने क्या पटक दी?

(ii) कुछ लोग क्या निभाने की हद कर देते हैं?

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

एक दिन जब एक टैक्सी कमरे के सामने रुकी, तो–

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

सोनाबाई की मान्यता–

(3) गद्यांश में उल्लिखित शरीर के अंगों के नाम :

उत्तर

(1)

एक दिन जब एक टैक्सी कमरे के सामने रुकी, तो–

- उसमें से एक आदमी निकला
- वह लेखक की छाती पर सिर रखकर रोने लगा
- कहने लगा, हाय, तुम्हें क्या हो गया?
- कारवालों का सत्यानाश हो

(2)

सोनाबाई की मान्यता–

- दवा गिरना शुभ होता है
- दवा गई, समझो बीमारी गई

(3)

- छाती
- दिल
- मुँह
- सिर
- गरदन
- आँख

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) सिर (ii) रोना (iii) गलत (iv) गुस्सा।

(2) गद्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ---------- (ii) ---------- (iii) ---------- (iv) ----------

*(3) शब्द-समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(i) वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी रखे जाते हैं –------

(ii) जहाँ मुफ्त में भोजन मिलता है –----------

उत्तर

(1) (i) सिर × पैर (ii) रोना × हँसना

(iii) गलत × सही (iv) गुस्सा × प्यार।

(2) (i) टेबल (ii) डांस (iii) टैक्सी (iv) प्रैक्टिस।

(3) (i) चिड़ियाघर (ii) लंगर (भंडारा)।

6414132

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'शकुन-अपशकुन' के बारे में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : शकुन-अपशकुन समाज में प्रचलित एक अवधारणा है। इसमें यह माना जाता है कि कुछ विशेष प्रकार की परिघटनाएँ हमारे भविष्य का संकेत देती हैं। अनुकूल भविष्यवाणी करने वाले संकेतों को शुभ शकुन और प्रतिकूल भविष्यवाणी करने वाले संकेतों को अपशकुन कहा जाता है। हमारे देश में ही नहीं, अपितु संसार भर में लोग शकुन-अपशकुन पर विश्वास करते हैं। भारतीय संस्कृति में शकुन-अपशकुन का वर्णन वेदों, पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है। काली बिल्ली द्वारा रास्ता काट जाना, किसी कार्य को आरंभ करते समय किसी का छींक देना, घर से बाहर जाते हुए व्यक्ति को किसी के द्वारा टोका जाना आदि समाज में बहुप्रचलित अपशकुन हैं। इन अपशकुनों को मानने वालों की संख्या कम नहीं है। इन अपशकुनों के चक्कर में आकर कभी-कभी लोगों को हानि भी उठानी पड़ती है, फिर भी वे इन्हें मानने से नहीं चूकते। ये मान्यताएँ मनुष्य को कमजोर बनाती हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से इन शकुन-अपशकुनों को अंधविश्वास ही माना जाता है।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

6414132

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 12)

हमदर्दी जताने वालों में ..... हमदर्दी जताने वाले।

शब्दार्थ

झोला – थैला। **परिचित** – जिससे जान-पहचान हो। **बेतुकी** – जिसकी कोई तुक न हो।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

कवि लपकानंद के विषय में लेखक ने यह बताया –

[ ] [ ]

जब भी मिलेंगे दस-बीस कविताएँ पिलाए बिना नहीं छोड़ेंगे

(2) कारण लिखिए :

(i) लेखक ने बड़ी मुश्किल से कवि लपकानंद को विदा किया .....

* (ii) लेखक कहते हैं कि मेरी दूसरी टाँग उस जगह तोड़ना जहाँ कोई परिचित न हो .....

उत्तर

(1)

कवि लपकानंद के विषय में लेखक ने यह बताया –

- कवि की बेतुकी कविताओं से सारा शहर परेशान है
- लेखक उन्हें दूर से देखते ही भाग खड़ा होता है

जब भी मिलेंगे दस-बीस कविताएँ पिलाए बिना नहीं छोड़ेंगे

(2) (i) कवि लपकानंद जब कविता सुनाना शुरू करते, तो रुकने का नाम नहीं लेते थे।

(ii) उस जगह लेखक के परिचित होंगे तो लेखक से समय-असमय मिलने आकर तंग करेंगे।

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

[ ] [ ]

कवि लपकानंद ने यह कहा–

[ ] [ ]

(2) ऐसे दो प्रश्न बनाइए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) डायरी (ii) बड़े बेवफा।

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

कवि से छुटकारा पाने के लिए लेखक ने यह किया–

[ ] [ ]

उत्तर

(1)

- मैं पिछले चार-पाँच दिनों से कवि सम्मेलनों में व्यस्त था
- मैं आपके (लेखक के) बारे में ही सोचता रहा

कवि लपकानंद ने यह कहा–

- रात भर मुझे नींद नहीं आई
- रात को इसी संदर्भ में यह कविता बनाई

(2) (i) कवि ने झोले से क्या निकाली?

(ii) हमदर्दी जताने वाले कैसे होते हैं?

(3) कवि से छुटकारा पाने के लिए लेखक ने यह किया–

- उन्हें जल्दी से चाय पिलाई
- कविता सुनने का वादा किया

कृति 3 : (शब्द संपदा)

*(1) शब्द बनाइए :

(i) [ ] उपसर्गयुक्त शब्द ← दर्द → प्रत्यययुक्त शब्द [ ]

(ii) [ ] उपसर्गयुक्त शब्द ← निश्चित → प्रत्यययुक्त शब्द [ ]

(2) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर उनको वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(i) ..... (ii) .....

उत्तर

(1) (i) [बे] उपसर्गयुक्त शब्द ← दर्द → प्रत्यययुक्त शब्द [नाक]

(बेदर्द) (दर्दनाक)

(ii) [अ] उपसर्गयुक्त शब्द ← निश्चित → प्रत्यययुक्त शब्द [ता]

(अनिश्चित) (निश्चितता)

(2) (i) **दस-बीस** – गोदाम में **दस-बीस** किलो गेहूँ पड़ा है।

(ii) **चार-पाँच** – **चार-पाँच** लड़कों को भेजो, कक्षा का फर्नीचर बाहर निकलवाना है।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'कवियों की कविता सुनाने की आदत' के बारे में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : कवि दो प्रकार के होते हैं। एक वे, जो सचमुच कवि होते हैं और अपने विचारों को मथकर उन्हें सुंदर और सुरुचिपूर्ण शब्दों के माध्यम से कागज पर उतारते हैं। उनकी कविता सुनकर श्रोता को आनंद के साथ-साथ एक दिशा भी मिलती है। दूसरे प्रकार के कवि वे होते हैं, जो अंत:करण से कवि नहीं होते। वे जबरन कवि बनकर कविता लिखना चाहते हैं। इनकी कविता कविता न होकर शब्दों का बेतरतीब समूह होती है। जोड़-तोड़कर कविता तैयार करते ही ये श्रोता की तलाश करने लगते हैं और जो भी सामने मिल जाता है, उसे अपनी कविता सुनाए बिना नहीं छोड़ते। इनकी कविता सुनने के लिए कोई आसानी से तैयार नहीं होता। पर विद्वान कवि कभी अपनी कविता सुनाने की कोशिश नहीं करते। उनकी कविता सारगर्भित होती है और वे हर किसी को कविता सुनाते नहीं फिरते।

6414132

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **निम्नलिखित वाक्यों में अधोरेखांकित शब्दों के शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) मैं अपनी टाँगों की ओर देखता हूँ।

(ii) मेरे दिमाग में एक नये मुहावरे का जन्म हुआ।

(iii) सोनाबाई के बच्चे खेलने लगे।

उत्तर : (i) **मैं** – पुरुषवाचक सर्वनाम।

(ii) **नये** – गुणवाचक विशेषण।

(iii) **सोनाबाई** – व्यक्तिवाचक संज्ञा।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) अकसर (ii) इर्द-गिर्द (iii) धीरे-धीरे।

उत्तर : (i) मैं लपकानंद को देखकर अकसर भाग खड़ा होता हूँ।

(ii) मेरे इर्द-गिर्द अनेक लोग खड़े थे।

(iii) बड़े बाबू धीरे-धीरे मुझे हिलाने लगे।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	नै + इका	----------

अथवा

दुर्बल	----------	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
नायिका	नै + इका	**स्वर संधि**

अथवा

दुर्बल	दु: + बल	**विसर्ग संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) अस्पताल का खयाल आते ही मैं काँप उठा।

(ii) कोई भी आए मैं चुपचाप पड़ा रहूँगा।

(iii) बच्चे खेलने लगे।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) उठा	उठना
(ii) रहूँगा	रहना
(iii) लगे	लगना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) मानना (ii) लिखना (iii) जलना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) मानना	मनाना	मनवाना
(ii) लिखना	लिखाना	लिखवाना
(ii) जलना	जलाना	जलवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित कहावत का अर्थ लिखिए और वाक्य में प्रयोग कीजिए :

ढाक के तीन पात।

अर्थ : सदा एक-सी स्थिति।

वाक्य : छगनलाल ने सालभर में कई व्यवसाय बदले, पर हालत आज भी वही है ढाक के तीन पात।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

- सुमधुर गायन सुनकर श्रोताओं ने गायक की प्रशंसा की। *(सराहना करना, बोलबाला होना)*

उत्तर :

अर्थ : सराहना करना।

वाक्य : सुमधुर गायन सुनकर श्रोताओं ने गायक की सराहना की।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उनका भेद लिखिए :**

(i) मैंने उन्हें जल्दी से चाय पिलाई।

(ii) आप अस्पताल में हैं।

उत्तर : (i) **मैंने** – कर्ता कारक

(ii) **अस्पताल में** – अधिकरण कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) वे मुझे ऐसे देख रहे थे मानो उनकी एक आँख पूछ रही हो कहो कविता कैसी रही और दूसरी आँख पूछ रही हो बोल बेटा अब भी मुझसे भागेगा

(ii) सोनाबाई ने लड़की को घूरा फिर हँसते हुए बोली भैया पेड़े खिलाओ दवा गिरना शुभ होता है

(iii) मैंने कराहते हुए पूछा मैं कहाँ हूँ

उत्तर : (i) वे मुझे ऐसे देख रहे थे, मानो उनकी एक आँख पूछ रही हो,'कहो, कविता कैसी रही?' और दूसरी आँख पूछ रही हो,'बोल, बेटा! अब भी मुझसे भागेगा?'

(ii) सोनाबाई ने लड़की को घूरा, फिर हँसते हुए बोली,''भैया, पेड़े खिलाओ, दवा गिरना शुभ होता है।''

(iii) मैंने कराहते हुए पूछा,''मैं कहाँ हूँ?''

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) एक चेहरा बड़ी तेजी से जवाब देता है। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

(ii) मेरी आँख खुलते ही सबके चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। *(सामान्य भूतकाल)*

(iii) सोनाबाई फिर आती है। *(सामान्य भविष्यकाल)*

उत्तर : (i) एक चेहरे ने बड़ी तेजी से जवाब दिया है।

(ii) मेरी आँख खुलते ही सबके चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

(iii) सोनाबाई फिर आएगी।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) जब आँख खुली तो मैंने स्वयं को बिस्तर पर पाया।

(ii) मैंने उसे जल्दी से चाय पिलाई और विदा किया।

उत्तर : (i) मिश्र वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) मेरी टाँग टूटना एक दुर्घटना थी। *(प्रश्नवाचक)*

(ii) आज फिर कोई दुर्घटना होगी। *(इच्छावाचक)*

उत्तर : (i) क्या मेरी टाँग टूटना एक दुर्घटना थी?

(ii) आज फिर कोई दुर्घटना न हो।

6414132

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए :**

(i) अब मैं अपने टाँगों की ओर देखता है।

(ii) सोनाबाई से एक पल लड़की को घूरी।

(iii) गुप्ता जी की कमरा शायद बगल में हैं।

उत्तर : (i) अब मैं अपनी टाँगों की ओर देखता हूँ।

(ii) सोनाबाई ने एक पल लड़की को घूरा।

(iii) गुप्ता जी का कमरा शायद बगल में है।

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 14)

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) के घटकों के लिए अधिक कृतियाँ]

(1) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए :

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 14 देखें।)

(i) सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई।

(ii) गाय बहुत दूध देती है।

(iii) मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

(iv) सैनिकों की टुकड़ी आगे बढ़ी।

(v) सोना-चाँदी और भी महँगा होता जा रहा है।

(vi) गोवा देख मैं तरंगायित हो उठा।

(vii) युवकों का दल बचाव कार्य में लगा था।

(viii) आपने विदेश में भ्रमण तो कर लिया है।

(ix) इस कहानी में भारतीय समाज का चित्रण मिलता है।

(x) सागर का जल खारा होता है।

उत्तर :

(i) सोनाबाई	– व्यक्तिवाचक	बच्चों – जातिवाचक।
(ii) गाय	– जातिवाचक	दूध – द्रव्यवाचक।
(iii) ईश्वर	– जातिवाचक	प्रार्थना – भाववाचक।
(iv) सैनिकों	– जातिवाचक	टुकड़ी – समूहवाचक।
(v) सोना-चाँदी	– द्रव्यवाचक।	
(vi) गोवा	– व्यक्तिवाचक।	
(vii) युवकों	– जातिवाचक	दल – समूहवाचक।
		कार्य – भाववाचक।
(viii) विदेश	– जातिवाचक	भ्रमण – भाववाचक।
(ix) कहानी	– जातिवाचक	समाज – समूहवाचक।
		चित्रण – भाववाचक।
(x) सागर	– जातिवाचक	जल – द्रव्यवाचक।

(2) पाठ में प्रयुक्त किन्हीं पाँच संज्ञाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(i) **साइकिल** – मुझे साइकिल चलाना नहीं आता।

(ii) **जोश** – कई लोग जोश में होश खो बैठते हैं।

(iii) **रेत** – आन्या को सागर तट पर रेत का घर बनाना बहुत पसंद है।

(iv) **आत्मा** – प्रत्येक आत्मा परमात्मा का अंश होती है।

(v) **बंदर** – बंदर और बच्चे एक जैसे शरारती होते हैं।

(3) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनामों का प्रयोग कीजिए :

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 14 देखें।)

(i) वे सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं।

(ii) तुम बाजार जाओ।

(iii) हम कारखाने में एक ही विभाग में काम करते थे।

(iv) इसे लेकर तुम क्या करोगे।

(v) हृदय वही है; तुम उदार हो।

(vi) लोग स्वयं कमरा साफ कर रहे हैं।

(vii) इसके बाद हम लोग दिन भर पणजी देखते रहे।

(viii) मैं इसके पहले उसे मना करता।

(xi) काम करने के लिए कहा है वही करो।

(4) पाठ में प्रयुक्त सर्वनाम ढूँढ़कर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर :

(i) मैंने (ii) तुझे (iii) वे (iv) कोई (v) आप (vi) मुझसे (vii) उन्होंने (viii) मुझे।

(i) **मैंने –**

वाक्य : मैंने रेत का घर बनाया।

(ii) **तुझे –**

वाक्य : शिक्षिका ने तुझे बुलाया है, मनन।

(iii) **वे –**

वाक्य : वे मेरे चाचा हैं।

(iv) **कोई –**

वाक्य : बाहर कोई है।

(v) **आप –**

वाक्य : कल आप कहाँ थे?

(vi) **मुझसे –**

वाक्य : माँ ने गुस्से में कहा, मुझसे बात मत करो।

(vii) **उन्होंने –**

वाक्य : उन्होंने मुझे घर तक पहुँचाया।

(viii) **मुझे –**

वाक्य : मुझे नींद आ रही है।

6414132

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 11**

  सार्वजनिक अस्पताल में जाकर किसी मरीज से उसके अनुभव सुनिए और अपने शब्दों में सुनाइए।

- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 11**

  अस्पताल में लगे सूचना फलक/विज्ञापनों को पढ़िए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए।

- **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 12**

  रक्त बैंक के कार्य तथा रक्तदान कार्यक्रम के बारे में जानकारी इकट्ठा करके अपनी कॉपी में लिखिए।

- **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 12**

  किसी सार्वजनिक या ग्राम पंचायत की सभा में 'अंगदान' के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : आदरणीय सरपंच महोदय, पंच परमेश्वर तथा अन्य सभी उपस्थित सज्जनो,

आज मैं आप सभी के समक्ष अंगदान के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

अंगदान वह प्रक्रिया है, जिसमें किसी व्यक्ति के शरीर का कोई अंग उसकी व उसके परिवार की सहमति से हटाकर किसी अन्य व्यक्ति को दे दिया जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा एक व्यक्ति को नया जीवन मिल जाता है। प्रत्यारोपण के लिए गुर्दे, लिवर, फेफड़े, हृदय, हड्डियाँ, अस्थि मज्जा, त्वचा, अग्न्याशय, कॉर्निया, आँत आदि का दान दिया जाता है। अंगदान की प्रक्रिया को दुनिया भर में प्रोत्साहित किया जाता है। भारत में यह कानूनन वैध है। अंगदान समाज के लिए एक चमत्कार साबित हुआ है। हालाँकि माँग की तुलना में आपूर्ति बहुत कम है।

उपयोजित लेखन

- **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर किसी समारोह का वृत्तांत लिखिए : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 14)**

  - स्थान
  - तिथि-समय
  - प्रमुख अतिथि
  - समारोह
  - अतिथि संदेश
  - समापन

उत्तर : **गांधी जयंती पर गांधी जी का स्मरण**

अकोला, 3 अक्तूबर। अकोला के सरदार पटेल विद्यालय में कल 2 अक्तूबर को गांधी जयंती समारोह का आयोजन किया गया। विद्यालय में समारोह सुबह 10 बजे आयोजित किया जाना था। विद्यालय के विद्यार्थी 9 बजे से ही अपने-अपने स्थान पर बैठ गए थे।

विद्यालय के सभी अध्यापक मंच पर खादी का कुर्ता-पाजामा और खादी टोपी पहनकर विराजमान थे। प्रमुख अतिथि के रूप में शहर के वयोवृद्ध गांधीवादी जनार्दन पाटील उपस्थित थे। मंच पर गांधी जी की तस्वीर सुशोभित हो रही थी।

समारोह की शुरुआत 'वंदे मातरम्' गीत से हुई। विद्यालय के प्रधानाचार्य राम रतन जोशी ने उपस्थित लोगों का परिचय दिया और देश के लिए गांधी जी के योगदान की चर्चा की।

प्रमुख अतिथि जनार्दन पाटील ने गांधी जी के जीवन की कई घटनाओं के बारे में बताया। उन्होंने गांधी जी के हमेशा सत्य बोलने के आग्रह के बारे में बताया और कहा कि हमें सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए। अपने लाभ के लिए कभी झूठ का सहारा नहीं लेना चाहिए।

विद्यालय के उपमुख्याध्यापक सुधीर देशपांडे ने प्रमुख अतिथि के प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ।

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

4 मन (पूरक पठन–पद्य)

– विकास परिहार

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत कविता 'मन' जापान की लोकप्रिय विधा 'हाइकु' पर आधारित है। यह विधा हिंदी साहित्य में स्वीकृति पा चुकी है। इस विधा को विश्व की सबसे छोटी कविता का स्थान प्राप्त है। इस कविता में कवि ने तीन-तीन छोटी पंक्तियों में अलग-अलग घटनाओं को सुंदर ढंग से पिरोया है। प्रस्तुत कविता की यह अपनी विशेषता है।

कविता का सरल अर्थ

[1] घना अंधेरा ———— आई बहार।

जब अँधेरा घना होता है, तब प्रकाश और अधिक चमकता है अर्थात जब प्रतिकूल परिस्थितियाँ घने अंधकार के रूप में हमें घेर लेती हैं, तब वहीं से एकाएक प्रकाश की किरणें फूट पड़ती हैं।

हमें पूरा जीवन काम करते रहना चाहिए। यह नहीं सोचना चाहिए कि हमें क्या प्राप्त होगा।

जीवन रूपी नैया यदि संसार रूपी सागर में डगमगा रही है, तो उसे कोई अन्य सँभालने के लिए नहीं आएगा। हमें स्वयं उसे पार लगाने के लिए प्रयास करना होगा।

फागुन का महीना अपने संग बसंत के विविध रंग लेकर आया है। यह समय उल्लास और उमंग का समय है। अतः हम सभी को कुछ समय के लिए चिंताओं और परेशानियों को भूलकर बसंत ऋतु का आनंद लेना चाहिए।

गुलाब का फूल काँटों के बीच भी हँसता है, खिलखिलाता है। वह हमें हर पल प्रेरणा देता है कि परेशानियों से घबराए बिना अपना काम करते जाना है।

जब नेत्रों से अश्रु बहते हैं, तो यह मानना चाहिए कि मन की कुंठा नयन रूपी द्वार से बाहर आ रही है।

[2] खारे जल ———— प्यासी ही रही...।

जब नेत्रों से अश्रु बहते हैं तो यह समझना चाहिए कि आँसुओं के खारे जल के साथ मन का संपूर्ण विषाद धुल गया है और मन पहले के समान पावन हो गया है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में अनेक परेशानियाँ हैं, चिंताएँ हैं, और हैं अप्रिय प्रसंग। ऐसे में जीवन रूपी संग्राम में डटे रहना हमारी जिजीविषा का प्रमाण है।

जब आकाश में बादल बहुत घने होते हैं, तभी वर्षा होती है। उसी प्रकार जब मन की पीड़ा बहुत गहरी हो जाती है, तो वह बादल बनकर आँसुओं के रूप में बरसने लगती है।

रेल की पटरियाँ अनंत काल से साथ चल रही हैं, परंतु वे सदा मौन रहती हैं। एक-दूसरे से कभी बात नहीं करतीं।

सितारे आकाश का शृंगार हैं। वे आकाश की शोभा बढ़ाते हैं। जैसे ही सितारे बादलों की ओट में छिपे, आकाश सूना हो जाता है। ठीक इसी प्रकार कुछ लोग हमारे जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं। उनके चले जाने पर या विमुख हो जाने पर मानो हमारा जीवन निरर्थक हो जाता है।

कवि के अंदर अनोखी सामर्थ्य होती है। वह जिन गीतों को स्वर देता है, वे अमर हो जाते हैं। इसी प्रकार कवि अपनी रचनाओं के द्वारा समाज में परिवर्तन ला सकता है।

सागर में अथाह जलराशि होती है, परंतु खारा होने के कारण अथाह होने पर भी वह जलराशि पीने योग्य नहीं होती। उसी प्रकार कोई व्यक्ति कितना भी बड़ा या धनवान क्यों न हो, यदि वह किसी जरूरतमंद के काम नहीं आ सकता तो उसका बड़प्पन व्यर्थ है।

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 3 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 15)

घना अँधेरा
चमकता प्रकाश
और अधिक।
करते जाओ
पाने की मत सोचो
जीवन सारा।
जीवन नैया
मँझधार में डोले,
सँभाले कौन?
रंग-बिरंगे
रंग-संग लेकर
आया फागुन।
काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा।
भीतरी कुंठा
आँखों के द्वार से
आई बाहर।

शब्दार्थ

मँझधार – नदी या उसके प्रवाह का मध्य भाग। **कुंठा** – घोर निराशा।

कृति 1 : (आकलन)

*** (1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

हाइकु में प्रयुक्त महीना और उसकी ऋतु –

***(2) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए :**

काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा।

***(3) आकृति पूर्ण कीजिए :**

हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश–

करते जाओ पाने की मत सोचो जीवन सारा	भीतरी कुंठा नयनों के द्वार से आई बाहर।

(4) उत्तर लिखिए :

(i) खिले हुए ----------

*(ii) मँझधार में डोले ----------

उत्तर

(1) हाइकु में प्रयुक्त महीना और उसकी ऋतु –

फागुन	बसंत

(2) गुलाब का फूल काँटों के बीच भी हँसता है, खिलखिलाता है। वह हमें हर पल प्रेरणा देता है कि हमें परेशानियों से घबराए बिना अपना काम करते जाना है।

64141132

(3)

हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश–

करते जाओ पाने की मत सोचो जीवन सारा	भीतरी कुंठा नयनों के द्वार से आई बाहर।
हमें पूरा जीवन काम करते रहना चाहिए। यह नहीं सोचते रहना चाहिए कि हमें क्या प्राप्त होगा।	जब नेत्रों से अश्रु बहते हैं तो यह मानना चाहिए कि मन की कुंठा नयन रूपी द्वार से बाहर आ रही है।

(4) (i) खिले हुए – फूल।

(ii) मँझधार में डोले – जीवन नैया।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

(1) फागुन के महीने में प्रकृति रंगों से रँग जाती है। इस विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : फागुन का महीना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इस महीने में प्रकृति में चारों ओर नवीनता दिखाई देती है। खेत सरसों के पीले-पीले फूलों से भर जाते हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे जमीन पर पीले रंग की विशाल चादरें बिछाई दी गई हों। बीच-बीच में अलसी के

नीले-नीले फूल पीले रंग पर छाप जैसे लगते हैं। पलाश के वन लाल रंग के बड़े-बड़े फूलों से लद जाते हैं। दूर से इन वनों को देखकर ऐसा लगता है, मानो पेड़ों से आग की लपटें निकल रही हों। विभिन्न प्रकार के पेड़ों पर गुलाबी रंग की नई-नई कोंपलें आ जाती हैं। इन्हें देखकर लगता है जैसे ये पेड़ गुलाबी रंग के वस्त्रों से सज गए हैं। इनके अतिरिक्त फागुन के महीने में ही तो होली का त्योहार आता है जब चारों ओर तरह-तरह के रंगों और अबीर-गुलाल की बहार आ जाती है। लोग खुशी से एक-दूसरे को रंगों से सराबोर कर देते हैं। इस तरह फागुन के महीने में प्रकृति तरह-तरह के रंगों से रँग जाती है।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 15 – 16)

खारे जल से
धुल गए विषाद
मन पावन।

मृत्यु को जीना
जीवन विष पीना
है जिजीविषा।

मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखें।

चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन।

सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सूना आकाश

तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर।

सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी ही रही।

शब्दार्थ

विषाद – अभिलाषा पूरी न होने पर मन में होने वाला खेद या दुख। **जिजीविषा** – जीवन के प्रति आसक्ति। **ओट** – आड़।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :**

अ	आ
(i) मछली	मौन
(ii) गीतों के स्वर	सूना
(iii) रेल की पटरियाँ	प्यासी
(iv) आकाश	अमर
	पीड़ा

***(2) परिणाम लिखिए :**

(i) सितारों का छिपना।
(ii) तुम्हारा गीतों को स्वर देना।

***(3) उत्तर लिखिए :**

(i) छिपे हुए .....
(ii) धुल गए .....
(iii) अमर हुए .....

***(4) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए :**

चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन।

***(5)** मन की ..... बरसीं आँखें। इस हाइकु का सरल अर्थ लिखिए।

(6) तालिका पूर्ण कीजिए :

	स्थिति	निवास-स्थान
मछली	.....	.....
सितारे	.....	.....

उत्तर

(1) (i) मछली – प्यासी
(ii) गीतों के स्वर – अमर
(iii) रेल की पटरियाँ – मौन
(iv) आकाश – सूना।

(2) (i) सूना आकाश
(ii) गीतों का अमर होना।

(3) (i) छिपे हुए सितारे
(ii) धुल गए विषाद
(iii) अमर हुए गीतों के स्वर।

(4) रेल की पटरियाँ अनंत काल से साथ चल रही हैं, परंतु वे सदा मौन रहती हैं। एक-दूसरे से कभी बात नहीं करतीं।

6414132

(5) जब मन की पीड़ा बहुत गहरी हो जाती है, तो वह बादल बनकर आँसुओं के रूप में बरसने लगती है।

(6) **तालिका पूर्ण कीजिए :**

	स्थिति	निवास-स्थान
मछली	प्यासी	सागर
सितारे	छिपे हुए	आकाश

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'आँखें देखने के अलावा और भी कई तरह के काम करती हैं', इस विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : मनुष्य के शरीर में विभिन्न अंग होते हैं और वे अपना-अपना निर्धारित काम करते हैं। कुछ अंगों से निर्धारित कामों के अलावा और भी कई तरह के काम लिए जाते हैं। आँखें हमारे शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इनसे देखने का काम तो लिया ही जाता है, साथ ही साथ और भी कई काम लिए जाते हैं। आँखों से तरह-तरह के इशारे किए जाते हैं, जिन्हें सामनेवाला आदमी आसानी से समझ लेता है। आँखें तरेरकर क्रोध प्रकट किया जाता है। आँखें झुकाकर शर्म प्रदर्शित की जाती है। मन में छुपी दुख देने वाली भावनाओं को आँखों में आँसू लाकर प्रकट किया जाता है। मन भारी होने पर लोग रोकर अपना मन हल्का करते हैं। कोई अचंभेवाली घटना होने पर वाणी के साथ-साथ आँखों से भी भाव प्रदर्शित होता है। आँखों का एक आवश्यक काम मनुष्य को निद्रावस्था में ले जाकर उसे आराम दिलाना है। इस तरह आँखें देखने के अलावा कई महत्त्वपूर्ण काम करती हैं।

उपयोजित लेखन

• **वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र/सहेली ने आपको बधाई-पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 17)**

दिनांक : 25/8/21

प्रिय अविनाश,

नमस्ते!

तुम्हारा पत्र अभी-अभी मिला। धन्यवाद।

अंतर विद्यालय वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के लिए तुम्हारा बधाई-पत्र मिला। पत्र पाकर दिल गदगद हो गया। वास्तव में मेरी इस सफलता में तुम जैसे मित्रों का मुझे सदा उत्साह दिलाते रहने का बड़ा हाथ है। तुम तो जानते हो, मंच पर बोलने में मुझे कितनी झिझक होती थी। पर तुम जैसे मित्रों और हमारे कक्षा अध्यापक के निरंतर प्रोत्साहन से आज मुझे अंतर विद्यालय वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने का अवसर मिला है। मैं इसके लिए तुम जैसे अपने सभी मित्रों और अपने कक्षा अध्यापक नरेश कौशल जी का तहे दिल से आभारी हूँ।

मेरा, उत्साह बढ़ाने के लिए धन्यवाद!

तुम्हारा मित्र

राजेश शर्मा।

17, विमल मेंशन,

महात्मा गांधी रोड,

औरंगाबाद।

ई-मेल आईडी : rajesh@xyz.com

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

5 गोवा : जैसा मैंने देखा

– विनय शर्मा

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत यात्रा निबंध में विनय शर्मा ने भारत के पश्चिमी तट पर बसे गोवा की प्राकृतिक सुंदरता, वहाँ के लोगों की जीवन शैली, त्योहारों तथा समुद्र तटों का मनोरम, मनोहारी चित्रण किया है। यहाँ के समुद्र तट पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र बिंदु हैं। पश्चिमी फैशन के साथ अपने आप को ढालते हुए भी गोवा अपनी भारतीय परंपरा और सभ्यता को नहीं भूला है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **मन तरंगायित होना** – मन उमंग से भरना।

(2) **निजात पाना** – मुक्ति पाना।

(3) **दो-चार होना** – जूझना।

(4) **जेब ढीली होना** – जेब खाली होना, बहुत खर्च होना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा प्रश्न 1 (आ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

6414132

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र.18)

गोवा ! यह नाम ..... धूप तो तीखी ही होती है।

शब्दार्थ

उजास – उजाला। **निजात** – मुक्ति। **खानापूर्ति** – औपचारिकता पूरी करना, किसी सारिणी के खानों में आवश्यक जानकारी लिखना।

कृति 1 : (आकलन)

(1) **आकृति पूर्ण कीजिए :**

लेखक का मड़गाँव से बेनालियम रिसॉर्ट तक का सफर–

[ ] [ ]

[ ] [ ]

(2) **गलत वाक्यों को सही करके लिखिए :**

(i) देश के मध्य में स्थित होने के कारण यह छोटा-सा राज्य प्रत्येक पर्यटक के दिल की धड़कन है।

(ii) शीतल हवा के झोंकों से मन प्रसन्न हो गया और यात्रा की चिंता मिट गई।

(3) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

गद्यांश में प्रयुक्त शहरों के नाम–

[ ] [ ] [ ] [ ] पणजी

(4) **एक-दो शब्दों में उत्तर लिखिए :**

(i) लेखक का ध्यान अपनी ओर खींचने वाला – [ ]

(ii) समस्याओं से निजात पाने का सबसे अच्छा तरीका – [ ]

(iii) लेखक के सफर का साधन – [ ]

(iv) लेखक के मड़गाँव में पहुँचने का दिन – [ ]

उत्तर

(1)

लेखक का मड़गाँव से बेनालियम रिसॉर्ट तक का सफर–

- एक टैक्सी के हॉर्न ने लेखक का ध्यान खींचा
- लेखक और उनके साथी टैक्सी में बैठ गए
- टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी
- मड़गाँव से पाँच किमी सफर तय कर रिसॉर्ट पहुँचे

(2) (i) देश के एक कोने में स्थित होने के कारण यह छोटा-सा राज्य प्रत्येक पर्यटक के दिल की धड़कन है।

(ii) शीतल हवा के झोंकों से मन प्रसन्न हो गया और यात्रा की सारी थकान मिट गई।

(3) गद्यांश में प्रयुक्त शहरों के नाम –

- इंदौर
- खंडवा
- मडगाँव
- मुंबई
- पणजी

(4) (i) टैक्सी का हार्न (ii) पर्यटन

(iii) रेल/गोवा एक्सप्रेस (iv) 23 नवंबर

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

गोवा की खास बातें –

- [ ]
- [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए : *(मार्च '20)*

गोवा राज्य –

- दो भाग
  - [ ]
  - [ ]
- राजधानी
  - [ ]
- नदी
  - [ ]

***(3) कृति पूर्ण कीजिए :**

गोवा की ओर पर्यटकों को आकर्षित करने वाले घटक –

- [ ]
- [ ]

(4) उत्तर लिखिए : *(मार्च '20)*

गद्यांश में उल्लेखित नदी की विशेषताएँ –

- [ ]
- [ ]

उत्तर

(1)

गोवा की खास बातें –

- गोवा राज्य दो भागों में बँटा हुआ है
- दक्षिण गोवा जिला और उत्तर गोवा जिला
- गोवा की राजधानी पणजी है
- पणजी मांडवी नदी के किनारे स्थित है

(2)

गोवा राज्य –

- दो भाग
  - दक्षिण गोवा जिला
  - उत्तर गोवा जिला
- राजधानी
  - पणजी
- नदी
  - मांडवी नदी

(3)

गोवा की ओर पर्यटकों को आकर्षित करने वाले घटक –

- गोवा की प्रकृति
- आबोहवा
- यहाँ की जीवन शैली
- मन तरोताजा करने वाली शीतल हवा

(4) गद्यांश में उल्लेखित नदी की विशेषताएँ –

- यह नदी काफी बड़ी है।
- यह नदी वर्ष भर पानी से भरी रहती है।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) गद्यांश में प्रयुक्त २ प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों को वर्तनी के नियमानुसार लिखिए :

(i) त्रंगाइत (ii) आर्कषन (iii) ओप्चारिक (iv) खानपुर्ती।

(3)(i) निम्नलिखित शब्दों के लिए गद्यांश में प्रयुक्त विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए : *(मार्च '20)*

(1) अनौपचारिक × ..... (2) छाँव × .....

(ii) गद्यांश से अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखिए : *(मार्च '20)*

(1) ..... (2) .....

64141132

उत्तर

(1) (i) तरंगायित (ii) प्रत्येक।

(2) (i) त्रंगाइत – तरंगायित (ii) आर्कषन – आकर्षण

(iii) ओप्चारिक – औपचारिक (iv) खानपुर्ती – खानापूर्ति।

(3) (i) (1) अनौपचारिक × औपचारिक (2) छाँव × धूप।

(ii) (1) रिसार्ट (2) स्यूट.

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'पर्यटन ज्ञान वृद्धि का साधन', विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।** *(मार्च '20)*

उत्तर : पर्यटन का अर्थ है मन बहलाव के लिए अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए किसी मनपसंद स्थान पर घूमने-फिरने के लिए जाना और आनंद लेना। पर्यटन से जहाँ मन बहलाव होता है और स्वास्थ में सुधार होता है, वहीं यह ज्ञान वृद्धि का भी अच्छा साधन है। पर्यटन स्थल पर तरह-तरह की नई-नई चीजें, प्राकृतिक दृश्य, विभिन्न कलाकृतियाँ तथा नए-नए आविष्कार देखने को मिलते हैं। इससे एक-दूसरे के रहन-सहन, उनके रीति-रिवाज और परंपराओं, संस्कृतियों, तीज-त्योहारों, खान-पान आदि के अलावा वहाँ की आर्थिक, सामाजिक एवं औद्योगिक विकास के बारे में जानकारी मिलती है। व्यवसायियों के लिए तो पर्यटन लाभ का सौदा होता है। कुछ लोगों को अपनी चीजों के लिए नए बाजार मिलते हैं, तो कुछ लोगों को नई वस्तुएँ बनाने की प्रेरणा मिलती है। पर्यटन का व्यवसाय कुछ लोगों के लिए आय का स्रोत बन गया है तो किसी के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान का जरिया है। इसलिए प्राचीन काल से हमारे देश में पर्यटन का बड़ा महत्त्व रहा है। चार धाम की यात्रा पर्यटन का ही एक रूप है। इस तरह पर्यटन निश्चित रूप से ज्ञान वृद्धि का साधन है। इसे ज्ञानार्जन की दृष्टि से देखने की जरूरत है।

641132

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 18 – 19)

यहाँ की शाम ..... इंतजार रहता है।

शब्दार्थ

उमस – गरमी। **आशावाद** – आशा की भावना। **नियति** – भाग्य। **मँडराना** – आसपास उड़ना, घूमना।

कृति 1 : (आकलन)

(1) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) गोवा की ..... बड़ी अच्छी होती है।
(सुबह/शाम/रात)

(ii) ..... सागर देखने का उत्साह बढ़ता जा रहा था।
(अरब/हिंद/बंगाल)

(iii) यही ..... का सत्य भी है।
(लोगों/दुनिया/जीवन)

(iv) ..... सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते हैं।
(कुत्ते/पक्षी/लोग)

(2) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(i) फिर भी धँसे हुए पैरों को .....

(ii) मानो, लहर कह रही हो कि .....

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) (1) लहरों की आवाज – [ ]

(2) बच्चों से मिली सीख – [ ]

(ii) गद्यांश में उल्लेखित कोई दो प्राणी–
[ ] [ ]

उत्तर

(1) (i) गोवा की शाम बड़ी अच्छी होती है।

(ii) अरब सागर देखने का उत्साह बढ़ता जा रहा था।

(iii) यही जीवन का सत्य भी है।

(iv) पक्षी सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते हैं।

(2) (i) फिर भी धँसे हुए पैरों को पूरी ताकत से उठा-उठाकर भाग रहे थे।

(ii) मानो, लहर कह रही हो कि बनने के बाद मिटना ही नियति है।

(3) (i) (1) लहरों की आवाज – रणभेरी जैसी

(2) बच्चों से मिली सीख – जीवन में आशावाद हो, तो कोई काम असंभव नहीं

(ii) गद्यांश में उल्लेखित कोई दो प्राणी–
पक्षी कुत्ता

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) खूबसूरत यह देखते ही मैं उससे जाकर लिपट गया– [ ]

(ii) बहुत ही खूबसूरत और शांत जगह है यह – [ ]

(iii) तभी अचानक इनकी आवाज सुनाई दी – [ ]

(iv) जल्दी-जल्दी चलने के बाद भी यह तय नहीं हो पा रही थी – [ ]

(2) उत्तर लिखिए :

बेनालियम बीच की विशेषताएँ–

[ ] [ ]

उत्तर

(1) (i) खूबसूरत यह देखते ही मैं उससे जाकर लिपट गया – समुंदर

(ii) बहुत ही खूबसूरत और शांत जगह है यह – बेनालियम

(iii) तभी अचानक इनकी आवाज सुनाई दी – लहरों की

(iv) जल्दी-जल्दी चलने के बाद भी यह तय नहीं हो पा रही थी – दूरी

(2) बेनालियम बीच की विशेषताएँ–

खूबसूरत | शांत

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखिए :

(i) हवा (ii) मछली (iii) लहर (iv) बच्चे।

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) जगह (ii) रेत (iii) जीवन (iv) सड़क।

(3) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) शांत (ii) मुश्किल (iii) शाम (iv) खूबसूरत।

उत्तर

(1) (i) हवा – हवाएँ (ii) मछली – मछलियाँ
(iii) लहर – लहरें (iv) बच्चे – बच्चा।

(2) (i) जगह – स्त्रीलिंग (ii) रेत – पुल्लिंग
(iii) जीवन – पुल्लिंग (iv) सड़क – स्त्रीलिंग।

(3) (i) शांत × अशांत (ii) मुश्किल × आसान
(iii) शाम × सुबह (iv) खूबसूरत × बदसूरत।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'गोवा की शाम' के विषय में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर बसे गोवा की खूबसूरती के समान यहाँ की शामें भी अद्‌भुत होती हैं। जैसे-जैसे शाम होती है, गोवा मस्ती में डूबने लगता है। सागर के तट पर चाँदी जैसी रेत, नीलम जैसा पानी, चर्च, नारियल के पेड़ों का सौंदर्य मन को मोह लेता है। दूर-दूर तक विदेशी सैलानियों की भीड़ दिखाई देती है, कोई उछल रहा है, कोई कूद रहा है, कोई नाच रहा है। बीच पर तरह-तरह के वॉटर स्पोर्ट्स चल रहे हैं। कहीं मोटरबोट राइडिंग हो रही है, तो कहीं पैराशूट राइडिंग। सैलानियों के लिए क्रूज एक अलग ही आकर्षण होता है। क्रूज अर्थात एक छोटे से स्टीमर में सौ-डेढ़ सौ लोग संगीत की तेज धुन पर थिरकते हुए। यह स्टीमर करीब एक घंटे की घुमावदार परिक्रमा कराता है।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 20)

अंजुना बीच ..... आनंद आता है।

शब्दार्थ

पछाड़ना – झपटना। **मनोरम** – मन का मोहने वाला। **दिशा-निर्देश** – दिशादर्शक (यहाँ अर्थ सूचना)।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) **'बेनालियम', 'अंजुना' तथा 'कलिंगवुड' बीच की विशेषताएँ :**

(1) बेनालियम – .....

(2) अंजुना – .....

(3) कलिंगवुड – .....

(2) जोड़ियाँ मिलाइए :

	'अ'	'आ'
(i)	मनोरम	फिल्में
(ii)	युवा	बाजार
(iii)	हिट	दृश्य
(iv)	स्थानीय	मस्ती

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

[ ] [ ]

अंजुना बीच ऐसा है –

[ ] [ ]

(4) संजाल पूर्ण कीजिए :

[ ] [ ]

कलिंगवुड की विशेषताएँ –

[ ] [ ]

6414132

उत्तर

(1) • **बेनालियम –**

(1) यह बीच उथला और रेतीला है।

(2) यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

(3) यह बीच मछुआरों की पहली पसंद है।

• **अंजुना –**

(1) यह गहरा और नीले पानीवाला खूबसूरत बीच है।

(2) इस पथरीले बीच के एक ओर लंबी-सी पहाड़ी है।

(3) यह बीच बॉलीवुड की पहली पसंद है। यहाँ कई हिट फिल्मों की शूटिंग हुई है।

• **कलिंगवुड –**

(1) यह काफी रेतीला बीच है।

(2) यह बीच 3 से 4 किमी. तक फैला हुआ है।

(3) यह गोवा का सबसे लंबा बीच है।

(2) (i) मनोरम – दृश्य
(ii) युवा – मस्ती
(iii) हिट – फिल्में
(iv) स्थानीय – बाजार

(3)

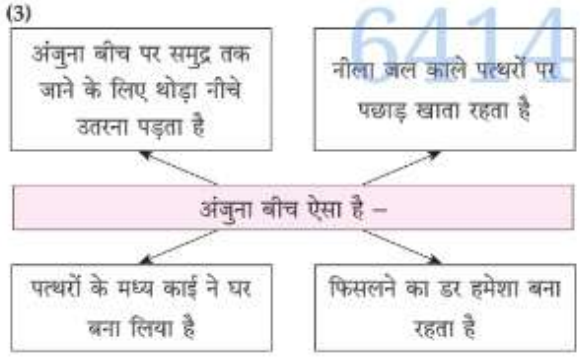

(4)

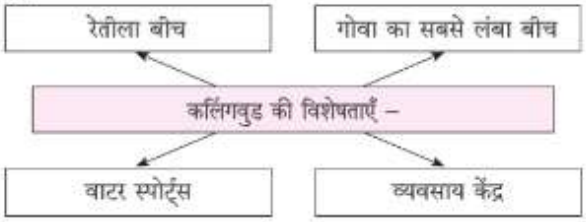

कृति 2 : (आकलन)

*(1) **लिखिए :**

(i) नीले पानीवाला पथरीला –

(ii) रेतीला तथा उथला –

(iii) सबसे लंबा –

(iv) मछुआरों की पहली पसंद –

(2) **विधानों के सामने सत्य/असत्य लिखिए :**

(i) पानी नीले पत्थरों पर पछाड़ खाता रहता है।

(ii) पानी ने काट-काटकर पत्थरों में छेद कर दिए हैं।

(iii) गोवा की सारी मछलियाँ निर्यात कर दी जाती हैं।

(iv) हम लोग दिन भर पणजी शहर देखते रहे।

उत्तर

(1) (i) नीले पानीवाला पथरीला – अंजुना बीच

(ii) रेतीला तथा उथला – बेनालियम बीच

(iii) सबसे लंबा – कलिंगवुड बीच

(iv) मछुआरों की पहली पसंद – बेनालियम बीच।

(2) (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :**

(i) समुद्र (ii) पानी (iii) पत्थर (iv) किनारा।

(2) **गद्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) --------- (ii) --------- (iii) --------- (iv) ---------

(3) **गद्यांश में प्रयुक्त प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढ़कर उनके मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए।**

(i) --------- (ii) --------- (iii) --------- (iv) ---------

6414132

उत्तर

(1) (i) समुद्र – जलधि (ii) पानी – सलिल

(iii) पत्थर – पाषाण (iv) किनारा – तट।

(2) (i) शूटिंग (ii) फिल्म (iii) बॉलीवुड (iv) बीच।

(3)

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
(i) पथरीला	पत्थर	ईला
(ii) पहाड़ी	पहाड़	ई
(iii) स्थानीय	स्थान	ईय
(iv) व्यावसायिक	व्यवसाय	इक

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

*• **'प्रकृति को सुंदर बनाए रखने में मेरा योगदान' विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : हम इस ब्रह्मांड के सबसे सुंदर, हरियाली से युक्त और बेहद आकर्षक ग्रह धरती पर निवास करते हैं। प्रकृति हम इन्सानों को ईश्वर द्वारा दिया गया सबसे खूबसूरत उपहार है। सुंदर पुष्प, आकर्षक पक्षी, वनस्पति, नीला आकाश, भूमि, समुद्र, जंगल, पर्वत, पठार, सूरज, चाँद इस सुंदर प्रकृति का हिस्सा हैं। स्वस्थ जीवन के लिए

प्रकृति बहुत आवश्यक है। मैं इस बात का सदा ध्यान रखता हूँ कि यथासंभव प्रकृति की रक्षा कर सकूँ। मैं जब भी बाहर पार्क या बगीचे में जाता हूँ, अनावश्यक रूप से किसी भी फूल-पत्ते को नहीं तोड़ता। वहाँ खेलते हुए बच्चों को भी फूल-पत्ते तोड़ने से मना करता हूँ, उन्हें समझाता हूँ। मैं एक स्काउट लीडर हूँ। प्रकृति को बचाने के लिए लोगों में जागरूकता फैलाने का प्रयास करता हूँ। अन्य स्काउट्स के साथ मिलकर रैली निकलवाता हूँ कि घर के बाहर कचरा न फैलाएँ, प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कपड़े के थैलियों का प्रयोग करें।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 20 – 21)

यहाँ कई प्रकार ..... सांस्कृतिक परंपरा है।

शब्दार्थ

हैरतअंगेज – आश्चर्यजनक। **रोमांचक** – आनंद उत्पन्न करने वाला।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) कृति पूर्ण कीजिए :**

- **नवरात्रि तथा दशहरा पर्व में गोवा की अलग परंपराएँ–**

(i) नवरात्रि की परंपराएँ – .....

(ii) दशहरा की परंपराएँ – .....

(2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) आप भी अपनी ..... के अनुसार हाथ आजमा सकते हैं। *(इच्छा/जेब/रुचि)*

(ii) हम यानी मैं और मेरी ..... दोनों डर भी रहे थे। *(पत्नी/बिटिया/माँ)*

(iii) कोलबा बीच पर हमने ..... मछलियाँ देखीं। *(व्हेल/डॉल्फिन/शार्क)*

(iv) शाम को भगवान की एक ..... मंदिर ले जाई जाती है। *(मूर्ति/फोटो/पालकी)*

(3) कारण लिखिए :

(पैराग्लाइडिंग के समय) लेखक के–
- डरने का → [ ]
- खुश होने का → [ ]

उत्तर

(1) (i) नवरात्रि की परंपराएँ –

(1) घरों में, गली-मोहल्लों में माँ दुर्गा की घटस्थापना।

(2) लड़कियों द्वारा गरबा का पर्व मनाना।

(ii) दशहरा की परंपराएँ –

(1) सुबह लोग अपने वाहनों की सफाई करके उनकी पूजा करते हैं।

(2) शाम को भगवान की एक पालकी मंदिर ले जाई जाती है और लोग एक विशेष पेड़ की पत्तियाँ तोड़कर एक-दूसरे को देकर बधाई देते हैं।

(2) (i) आप भी अपनी रुचि के अनुसार हाथ आजमा सकते हैं।

(ii) हम यानी मैं और मेरी पत्नी दोनों डर भी रहे थे।

(iii) कोलबा बीच पर हमने डॉल्फिन मछलियाँ देखीं।

(iv) शाम को भगवान की एक पालकी मंदिर ले जाई जाती है।

(3) (पैराग्लाइडिंग के समय) लेखक के–
- डरने का → रस्सी से छूट गए तो समझो गए
- खुश होने का → ऐसा रोमांचक दृश्य पहली बार देखा

कृति 2 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

लेखक ने पैराग्लाइडिंग में यह अनुभव किया–
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

***(2) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :**

यात्रा के दौरान लेखक की दिनचर्या–
→ [ ]
→ [ ]
→ [ ]
→ [ ]

6414132

उत्तर

(1)

काफी ऊँचाई से अथाह जलराशि देखना

अनुभव विस्मयकारी, साथ ही भयावह भी

लेखक ने पैराग्लाइडिंग में यह अनुभव किया –

दूर-दूर तक पानी-ही-पानी

तेज हवा और रस्सियों से लटके लेखक और उनकी पत्नी

(2)

यात्रा के दौरान लेखक की दिनचर्या–

↓ सुबह जल्दी उठना

↓ फटाफट नाश्ता करना

↓ दिन भर घूम-फिरकर थककर रिसॉर्ट लौटना

↓ थकान मिटाने के लिए पूल में तैरना

कृति 3 : (शब्द संपदा)

6414132

* **(1) सोचिए और लिखिए :**

विलोमार्थी

उपसर्गयुक्त — **दृश्य** — प्रत्यययुक्त

पर्यायवाची

(2) गद्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) --------- (ii) --------- (iii) --------- (iv) ---------

(3) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

(i) --------- (ii) --------- (iii) --------- (iv) ---------

उत्तर

(1)

अदृश्य

परि + दृश्य = परिदृश्य — **दृश्य** — दृश्य + अवली = दृश्यावली

नजारा

(2) (i) बोटिंग (ii) वॉटर (iii) स्पोर्ट्स (iv) पैराग्लाइडिंग।

(3) (i) रचा-बसा (ii) अपनी-अपनी

(iii) एक-दूसरे (iv) घूमना-फिरना।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'गोवा की संस्कृति' के विषय में 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : सुरम्य सागरतट पर बसा गोवा प्रांत अपनी प्राकृतिक सुंदरता और अनूठी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की संस्कृति काफी प्राचीन है। आजादी से पहले गोवा पुर्तगाल और फ्रांस का उपनिवेश था। इस वजह से आज भी यहाँ के रहन-सहन, खान-पान पर पश्चिमी संस्कृति का पूरा प्रभाव दिखाई देता है। यहाँ लगभग 80 प्रतिशत लोग ईसाई हैं। गोवा की एक खास बात यह है कि यहाँ के ईसाई समाज में भी हिंदुओं जैसी जाति व्यवस्था पाई जाती है। दक्षिण गोवा में ईसाई समाज का प्रभाव अधिक है, लेकिन वहाँ के वास्तुशास्त्र में हिंदू प्रभाव दिखाई देता है। गोवा में अत्यंत प्राचीन मंदिर पाए जाते हैं, जबकि उत्तर गोवा में पुर्तगाली वास्तुकला के नमूने ज्यादा दृष्टिगोचर होते हैं।

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति

* • **सूची बनाइए :**

• **गोवा का प्राकृतिक सौंदर्य दर्शाने वाले वाक्य।**

उत्तर : (i) हरीतिमा से भरपूर

(ii) खूबसूरत सफेद रेतीले समुद्र तट

(iii) चंद्रमा की चाँदनी में नहाया समुद्र

(iv) गहरा नीला पानी।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

• **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) मैं उनसे पूछने लगा।

(ii) हम मड़गाँव 23 नवंबर को पहुँचे।

उत्तर : (i) **उनसे** – पुरुषवाचक सर्वनाम।

(ii) **मड़गाँव** – व्यक्तिवाचक संज्ञा।

2. अव्यय :

• **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) वहाँ (ii) कभी-कभी।

उत्तर : (i) वहाँ! एक मजेदार दृश्य देखने को मिला।

(ii) कभी-कभी कोई जल-पक्षी कुत्तों का शिकार बन जाता है।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण किजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
स्वच्छ	----------	----------

अथवा

----------	सत् + आचार	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
स्वच्छ	**सु+अच्छ**	**स्वर संधि**

अथवा

सदाचार	सत् + आचार	**व्यंजन संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) हम सभी समुद्र की ओर दौड़ पड़े।

(ii) हम दिन भर पणजी शहर देखते रहे।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) पड़े	पड़ना
(ii) रहे	रहना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) सुनना (ii) बनना (iii) झुकना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) सुनना	सुनाना	सुनवाना
(ii) बनना	बनाना	बनवाना
(iii) झुकना	झुकाना	झुकवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) शिकार होना (ii) दीवार टूट जाना।

उत्तर :

(i) शिकार होना।

अर्थ : पीड़ित होना।

वाक्य : पुराने जमाने में न जाने कितने गरीब जमींदारों के अत्याचारों के शिकार हो जाते थे।

(ii) दीवार टूट जाना।

अर्थ : अड़चन समाप्त हो जाना।

वाक्य : स्त्रियों को समानता का अधिकार मिल जाने से सभी स्त्री-पुरुष के बीच असमानता की दीवार टूट गई।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए कोष्ठक में दिए गए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(कान पक जाना, भनक पड़ना, कान पकड़ना)

थानेदार ने उड़ती हुई बात सुनी कि गाँव में डाकू आने वाले हैं।

उत्तर : भनक पड़ना।

वाक्य : थानेदार के कान में भनक पड़ी कि गाँव में डाकू आने वाले हैं।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उनका भेद लिखिए :**

(i) गोवा की मांडवी नदी वर्ष भर पानी से भरी रहती है।

(ii) गोवा राज्य दो भागों में बँटा हुआ है।

उत्तर : (i) **पानी से**—करण कारक।

(ii) **भागों में**—अधिकरण कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) दूर दूर तक पानी ही पानी तेज हवा और रस्सियों से हवा में लटके हम

(ii) गोवा यह नाम सुनते ही सभी का मन तरंगायित हो उठता है और हो भी क्यों न यहाँ की प्रकृति आबोहवा जीवनशैली ही ऐसी है

उत्तर : (i) दूर-दूर तक पानी-ही-पानी, तेज हवा और रस्सियों से हवा में लटके हम।

(ii) गोवा ! यह नाम सुनते ही सभी का मन तरंगायित हो उठता है और हो भी क्यों न, यहाँ की प्रकृति, आबोहवा जीवनशैली ही ऐसी है।

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) मंत्री जी ने लोगों को एक मशवरा दिया। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

(ii) गोवा में मुझे मेरे पुराने अध्यापक मिले थे। *(सामान्य भूतकाल)*

उत्तर : (i) मंत्री जी ने लोगों को एक मशवरा दिया है।

(ii) गोवा में मुझे मेरे पुराने अध्यापक मिले।

6414132

10. वाक्य भेद :

(1) रचना के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों का भेद पहचानकर लिखिए :

(i) सबकी अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा है।

(ii) डॉल्फिन मछलियाँ छोटी थीं पर बच्चों को आनंद आया।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) पर्यटन का अपना ही आनंद है। *(विस्मयवाचक)*

(ii) आशावाद हो तो हर काम संभव है। *(निषेधवाचक)*

उत्तर : (i) वाह! पर्यटन का अपना ही आनंद है।

(ii) आशावाद हो तो कोई काम असंभव नहीं है।

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए :**

(i) भाषा ईश्वर का बड़ा देन है।

(ii) पैसेवाली व्यक्ति कटु बोलती है।

उत्तर : (i) भाषा ईश्वर की बड़ी देन है।

(ii) पैसेवाला व्यक्ति कटु बोलता है।

6414132

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र.23)

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) के घटकों के लिए अधिक कृतियाँ]

(1) कोष्ठक में दी गई संज्ञाओं के साथ विशेषण संलग्न हैं। नीचे दी गई सारिणी में संज्ञा तथा विशेषणों को भेदों सहित लिखिए : *(भयभीत गाय, नीला पानी, दस लीटर दूध, चालीस छात्र, कुछ लोग, दो गज जमीन, वही पानी, यह लड़का)*

संज्ञा	भेद	विशेषण	भेद
(1) गाय	जातिवाचक	भयभीत	गुणवाचक
(2) पानी	द्रव्यवाचक	नीला	गुणवाचक
(3) दूध	द्रव्यवाचक	दस लीटर	परिमाणवाचक
(4) छात्र	जातिवाचक	चालीस	संख्यावाचक
(5) लोग	समूहवाचक	कुछ	सार्वनामिक
(6) जमीन	जातिवाचक	दो गज	परिमाणवाचक
(7) पानी	द्रव्यवाचक	वही	सार्वनामिक
(8) लड़का	जातिवाचक	यह	सार्वनामिक

(2) उपर्युक्त संज्ञा-विशेषणों की जोड़ियों का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) **भयभीत गाय** – लाठियों के डर से भयभीत गाय इधर-उधर दौड़ रही थी।

(ii) **नीला पानी** – झील का नीला पानी चाँद की रोशनी में चमक रहा था।

(iii) **दस लीटर दूध** – हमारी गाय दोनों समय दस लीटर दूध देती है।

(iv) **चालीस छात्र** – स्वाति की कक्षा में चालीस छात्र हैं।

(v) **कुछ लोग** – छत पर कुछ लोग चहलकदमी कर रहे हैं।

(vi) **दो गज जमीन** – औरंगजेब सारी उम्र युद्ध करता रहा। अंत में उसे अपनी दिल्ली में दो गज जमीन भी नहीं मिली।

(vii) **वही पानी** – यह वही पानी है, जो कल भरा था।

(viii) **यह लड़का** – यह लड़का चोर नहीं है।

(3) पाठ में प्रयुक्त विशेषणों को ढूँढ़कर उनकी सूची बनाइए।

(i) समुद्री (ii) खूबसूरत (iii) सफेद (iv) सांस्कृतिक

(v) शांत (vi) शीतल (vii) स्थानीय (viii) रोमांचक

(ix) सुस्वादु (x) शाकाहारी।

(4) निम्नलिखित वाक्यों में आई हुई सहायक क्रियाओं को अधोरेखांकित कीजिए तथा उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी।

वाक्य – गोली की आवाज सुनकर उड़ती हुई चिड़िया नीचे गिर पड़ी।

(ii) शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है।

वाक्य – सरदियों में सूरज जल्दी छिप जाता है।

(iii) हम आराम करने के इरादे से अपने-अपने स्यूट में चले गए।

वाक्य – बिटिया के विदा होते ही सारे मेहमान चले गए।

(iv) फिर भी धूप तीखी ही होती है।

वाक्य – प्रातःकाल आकाश की आभा मनोरम होती है।

(v) सबके बावजूद यह अपने में एक सांस्कृतिक विरासत भी समेटे हुए है।

वाक्य – जल्दी कक्षा में पहुँचो, विद्यार्थी खाली बैठे हुए हैं।

(vi) इधर बच्चे रेत का घर बनाने लगे।

वाक्य – पिता जी तेजी से दौड़ने लगे।

(vii) अब समुद्र स्याह और भयावह दिखने लगा।

वाक्य – बेटा, अब उठो। सूरज दिखने लगा।

(viii) यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

वाक्य – गुजरात में मकर संक्रांति के दिन सुबह से रात तक पतंग उड़ाई जाती हैं।

(5) पाठ में प्रयुक्त दस सहायक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए।

(i) हो **उठता है।** (ii) चले **आते हैं।**
(iii) देते **हैं।** (iv) जा **पहुँचा।**
(v) हो **गए।** (vi) रुक **गई।**
(vii) पकड़े **हुए है।** (viii) भाग **रहे थे।**
(ix) दौड़ **पड़ी।** (x) बटाँ **हुआ है।**

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 19**

गोवा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी पढ़िए और कालानुक्रम के अनुसार प्रमुख घटनाओं की तालिका बनाइए।

उत्तर : गोवा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

मौर्य वंश	तीसरी सदी ईसा पूर्व से पहली सदी तक
कोल्हापुर के सातवाहन	पहली सदी से 580 ईसवी तक
बादामी के चालुक्य	580 ईसवी से 750 ईसवी तक
विजयनगर	1312 ईसवी से 1468 तक
दिल्ली सल्तनत	1469 ईसवी से 1510 ईसवी तक
पुर्तगाली शासन	1510 ईसवी से 1960 ईसवी तक

- **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 20**

यू ट्यूब पर गोवा का संगीत सुनिए और लोकसंगीत के कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए।

- **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 20**

गोवा की तरह अन्य समुद्रवर्ती दर्शनीय स्थलों की जानकारी अंतरजाल की सहायता से प्राप्त कीजिए तथा लिखकर सूचना फलक पर लगाइए।

6414132

- **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 21**

गोवा की प्राकृतिक सुंदरता पर संवाद प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : गोवा की प्राकृतिक सुंदरता पर दो सहेलियों के बीच संवाद :

रुचि : नीनू, बहुत दिनों बाद दिखी। कैसी हो? कहीं बाहर गई थी क्या?

नीनू : हाँ रुचि, हम लोग एक सप्ताह के लिए गोवा गए थे।

रुचि : गोवा! नीनू मैंने सुना है कि गोवा बहुत सुंदर है।

नीनू : सच सुना है रुचि। गोवा इतना सुंदर है कि मेरा तो मन करता था कि वहाँ से वापस ही नहीं आऊँ।

रुचि : मुझे भी तो कुछ बताओ।

नीनू : रुचि, गोवा अपने समुद्र तटों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। साफ नीला पानी, लंबे समुद्र तट, चमचमाती रेत और नारियल के वृक्ष यहाँ की विशेषता है। गोवा में इतनी अधिक हरियाली है कि ऐसा लगता है मानो धरती ने हरी चादर ओढ़ रखी है।

रुचि : ओह! सुनकर ही कितना अच्छा लग रहा है।

नीनू : गोवा के लोग प्रकृति से बहुत प्रेम करते हैं। छोटे-से-छोटे घर के आगे भी सुंदर-सुंदर फूल-पौधे जरूर होते हैं। वहाँ बड़ा शांत और मनोरंजक वातावरण है।

रुचि : गोवा के समुद्र तट के बारे में कुछ और बताओ न।

नीनू : वहाँ सागर से आसमान देखकर लगता है मानो नीला आसमान पानी से मिल रहा है। प्रातःकाल में उगता हुआ सूरज ऐसा लगता है, मानो समुद्र में से ही उग रहा हो। इसी तरह सूर्यास्त के समय सूरज का लाल गोला धीरे-धीरे नीचे जाता हुआ अचानक समुद्र में डूबता-सा लगता है। जैसे-जैसे शाम होती है, समुद्र की लहरों का ऊँचा उठना शुरू हो जाता है।

उपयोजित लेखन

विजय/विजया मोहिते, वरदा सोसाइटी, विजयनगर, कोल्हापुर से व्यवस्थापक, औषधि भंडार, नागपुर को पत्र लिखकर आयुर्वेदिक औषधियों की माँग करता / करती है। **(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र.23)**

5-7-2020

सेवा में,
व्यवस्थापक महोदय,
औषधि भंडार,
नागपुर।

विषय : आयुर्वेदिक औषधियाँ मँगाने के लिए पत्र।

महोदय,

मैं कोल्हापुर निवासी विजय/विजया हूँ। मुझे कुछ आयुर्वेदिक औषधियों की आवश्यकता है, जो हमारे यहाँ उपलब्ध नहीं हैं। कृपया आप निम्नलिखित औषधियाँ शीघ्रातिशीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें :

(1) कायम चूर्ण 10 शीशी (50 ग्राम)
(2) सुदर्शन धनवटी 3 शीशी (50 ग्राम)
(3) खदिरादि वटी 2 शीशी (50 ग्राम)
(4) शीतोपलादि चूर्ण 5 शीशी (50 ग्राम)

औषधियाँ मिलने पर आपको बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेज दी जाएगी।

धन्यवाद।
भवदीया,

6414132

विजय/विजया मोहिते
वरदा सोसाइटी,
कोल्हापुर।
ई-मेल आईडी : vijay@xyz.com

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कॅन कीजिए।

6 गिरिधर नागर

– संत मीराबाई

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत काव्य में रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका मीराबाई अपना प्रेम प्रकट कर रही हैं। सभी पदों में श्रीकृष्ण के प्रति मीराबाई के प्रेम, उनकी भक्ति, उत्सुकता, प्रिय-मिलन की आशा, प्रतीक्षा आदि का मार्मिक चित्रण है।

कविता का सरल अर्थ

[1] मेरे तो गिरधर गोपाल ..... तारो अब मोही।।

गिरि को धारण करने वाले, गायों के पालक कृष्ण के सिवा मेरा और कोई नहीं है। जिनके मस्तक पर मोर का मुकुट शोभित है, वे ही मेरे पति हैं। उनके लिए मैंने कुल की मर्यादा छोड़ दी है। चाहे कोई मुझे कुछ भी कहे। संतों के साथ बैठ-बैठकर मैंने लोकलाज त्याग दी है। मैंने अपने प्रेम रूपी बेल को अपने अश्रु रूपी जल से सींच-सींचकर बड़ा किया है। अब तो यह प्रेम-बेल फैल गई है और इसमें आनंद रूपी फल लगने लगा है। मैंने दूध जमाने के पात्र में जमे दही को मथानी से बड़े प्रेम से बिलोया और उसमें से कृष्ण-प्रेम रूपी मक्खन को निकाल लिया। शेष छाछ रूपी निस्सार जगत को छोड़ दिया। कृष्ण-भक्तों को देखकर मैं प्रसन्न होती हूँ, परंतु संसार का व्यवहार देख मुझे दुख होता है और मैं रो पड़ती हूँ। हे गिरधरलाल, मीरा तो आपकी दासी है, उसे इस संसार रूपी भव-सागर से पार लगाओ।

[2] हरि बिन कूण गती मेरी ..... मैं सरण हूँ तेरी।।

हे हरि, आपके बिना मेरा कौन है? अर्थात आपके सिवा मेरा कोई ठिकाना नहीं है। आप ही मेरा पालन करने वाले हैं और मैं आपकी दासी हूँ। मैं रात-दिन, हर समय आपका ही नाम जपती रहती हूँ। मैं बार-बार आपको पुकारती हूँ, क्योंकि मुझे आपके दर्शनों की तीव्र लालसा है। यह संसार विभिन्न प्रकार के दोषों और विकारों से भरा हुआ सागर है, जिसके बीच मैं घिर गई हूँ। इस संसार रूपी सागर में मेरी नाव टूट गई है। हे प्रभु, आप शीघ्र इस नाव का पाल बाँधिए, अन्यथा यह जीवन-नौका इस संसार-सागर में डूब जाएगी। हे प्रियतम, आपकी यह विरहिणी निरंतर आपकी बाट जोहती रहती है। आपके आगमन की प्रतीक्षा करती रहती है। आपकी यह दासी मीरा सदा आपके नाम का स्मरण करती रहती है और आपकी शरण में आई है।

[3] फागुन के दिन चार ..... चरण कँवल बलिहार रे।।

हे मेरे मन, फागुन मास में होली खेलने का समय अति अल्प होता है। अतः तू जी भरकर होली खेल। अर्थात मानव जीनव अस्थायी है, इसलिए भगवान कृष्ण से पूर्ण रूप से प्रेम कर ले। जिस प्रकार होली के उत्सव में नाच आदि का आयोजन होता है, उसी प्रकार कृष्ण-प्रेम में मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो करताल, पखावज आदि बाजे बज रहे हैं और अनहद नाद का स्वर सुनाई दे रहा है, जिससे मेरा हृदय बिना स्वर और राग के अनेक रागों का आलाप करता रहता है। मेरा रोम-रोम भगवान कृष्ण के प्रेम के रंग में डूबा रहता है। मैंने अपने प्रिय से होली खेलने के लिए शील और संतोष रूपी केसर का रंग घोला है। मेरा प्रिय-प्रेम ही होली खेलने की पिचकारी है। उड़ते हुए गुलाल से सारा आकाश लाल हो गया है। अब मुझे लोक-लज्जा का कोई डर नहीं है, इसलिए मैंने हृदय रूपी घर के दरवाजे खोल दिए हैं। अंत में मीरा कहती हैं कि मेरे स्वामी गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले कृष्ण भगवान हैं। मैंने उनके चरण-कमलों में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया है।

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 24)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई।।
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई।।
भगत देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी 'मीरा' लाल गिरिधर तारो अब मोही।।

शब्दार्थ

गिरधर (गिरिधर) – पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण। **सोई** – वही। **जाके** – जिसके। **कुल** – वंश, घराना। **कानि** – मर्यादा। **ढिग** – पास, निकट। **मथनियाँ** – मथानी, दही मथने का बरतन।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

कन्हैया के नाम–
- [ ]
- [ ]

(2) पद्यांश में आए इस अर्थ के शब्द लिखिए :

(i) निकट *(ii) साजन।

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) दूध को मथने से प्राप्त दो पदार्थ–
- [ ]
- [ ]

(ii) (1) श्रीकृष्ण के सिर पर है – [ ]

(2) मीरा इन्हें अपना पति मानती हैं – [ ]

(4) संजाल पूर्ण कीजिए :

मीरा ने कृष्ण-प्रेम के लिए यह किया–
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

*(5) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

कन्हैया की विशेषताएँ –
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(6) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'आ'
आँसुओं के जल से	छोड़ दी
कुल की मर्यादा	आनंद फल
प्रेम बेल	लोक लाज खोई
संत संगति के कारण	प्रेम की बेल सींची
	प्रेम से बिलोई।

उत्तर

(1) कन्हैया के नाम–
- गिरधर
- गोपाल

(2) (i) निकट – ढिग (ii) साजन – पति।

(3) (i) दूध को मथने से प्राप्त दो पदार्थ–
- छाछ
- माखन

(ii) (1) श्रीकृष्ण के सिर पर है – मोर मुकट

(2) मीरा इन्हें अपना पति मानती हैं – गिरधर/गोपाल

(4)
- कुल की मर्यादा छोड़ दी
- संतों के साथ कृष्ण का नाम जपा

मीरा ने कृष्ण-प्रेम के लिए यह किया–
- अपने आँसुओं के जल से कृष्ण-प्रेम की बेल को सींचा
- लोक लाज त्याग दी

(5) कन्हैया की विशेषताएँ –
- गिरि को धारण करने वाले
- गायों के पालक
- सिर पर मोरपंख का मुकुट पहनने वाले
- भक्तों को संसार रूपी सागर से पार उतारने वाले

(6)
- आँसुओं के जल से – प्रेम की बेल सींची।
- कुल की मर्यादा – छोड़ दी।
- प्रेम बेल – आनंद फल।
- संत संगति के कारण – लोक लाज खोई।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए :

(i) भगत – ..... (ii) माखन – .....

(iii) आणँद – ..... (iv) जाके – .....

6414132

(2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) मोर = ... (ii) जगत = ...

(iii) दूध = ... (iv) प्रेम = ...

(3) निम्नलिखित अर्थवाले शब्द पद्यांश से चुनकर लिखिए :

(i) उद्धार करो – ..... (ii) मुझे – .....

उत्तर

(1) (i) भगत – भक्त (ii) माखन – मक्खन

(iii) आणँद – आनंद (iv) जाके – जिसके।

(2) (i) मोर = मयूर (ii) जगत = संसार

(iii) दूध = दुग्ध (iv) प्रेम = प्यार।

(3) (i) उद्धार करो – तारो (ii) मुझे – मोही।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• **उपर्युक्त पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : मैंने दूध जमाने के पात्र में जमे दही को मथानी से बड़े प्रेम से बिलोया और उसमें से कृष्ण-प्रेम रूपी मक्खन को निकाल लिया। शेष छाछ रूपी निस्सार जगत को छोड़ दिया। कृष्ण-भक्तों को देखकर मैं प्रसन्न होती हूँ, परंतु संसार का व्यवहार देख मुझे दुख होता है और मैं रो पड़ती हूँ। हे गिरधरलाल, मीरा तो आपकी दासी है, उसे इस संसार रूप भव-सागर से पार लगाओ।

6414132

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 24)

हरि बिन कूण गती मेरी।।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी।।
आदि-अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी।
बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी।।
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी।।
बिरहणि पिवकी बाट जोवै राखल्यो नेरी।
दासी मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी।।

शब्दार्थ

कूण – कहाँ। **गती** – आश्रय। **प्रतिपाल** – पालन करने वाले। **रावरी** – आपकी। **चेरी** – दासी। **नाँव** – नाम। **बेर-बेर** – बार-बार। **आरति** – तीव्र लालसा। **बूड़त** – डूबता है। **बेरी** – बेड़ा, नौका। **नेरी** – पास, निकट।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) ये मीरा के प्रतिपालक हैं – [ ]

(ii) कृष्ण के बिना इनको कहीं आश्रय नहीं है – [ ]

(iii) मीरा को प्रभु से मिलने की तीव्र यह है – [ ]

(iv) मीरा की यह संसार सागर में डूबने वाली है – [ ]

(2) पद्यांश में आए इस अर्थ के शब्द लिखिए :

*(i) दासी (ii) आश्रय *(iii) बार-बार (iv) नौका।

(3) विधानों के सामने सत्य / असत्य लिखिए :

(i) हरि बिना मीरा को कहीं आश्रय नहीं है।

(ii) कृष्ण मीरा के पति हैं और वे उनकी पत्नी।

(iii) मीरा बार-बार प्रभु की आरती करती हैं।

(iv) मीरा की जीवन नौका संसार सागर में डूबने वाली है।

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) धिरी हुई हैं < ये – ..... / यहाँ – .....

(ii) नाम रटती रहती हैं < ये – ..... / इनका – .....

(5) निम्नलिखित विधान सही हैं अथवा गलत हैं लिखिए :

(नवंबर '20)

(i) मीराबाई के प्रभु उसके पालनहार हैं।

(ii) मीराबाई अपने आप को प्रभु की दासी नहीं कहतीं।

(iii) संसार रूपी सागर विकारों से भरा है।

(iv) संत मीराबाई अपने प्रभु की राह देख रही हैं।

उत्तर

(1) (i) ये मीरा के प्रतिपालक हैं – [कृष्ण]

(ii) कृष्ण के बिना इनको कहीं आश्रय नहीं है – [मीरा]

(iii) मीरा को प्रभु से मिलने की तीव्र यह है – [लालसा]

(iv) मीरा की यह संसार सागर में डूबने वाली है – [नौका]

(2) (i) दासी – चेरी (ii) आश्रय – गती

(iii) बार-बार – बेर-बेर (iv) नौका – बेरी।

(3) (i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य।

(4) (i) घिरी हुई हैं — ये – मीराबाई; यहाँ – संसार रूपी सागर में

(ii) नाम रटती रहती हैं — ये – मीराबाई; इनका – राम का

(5) (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) सही।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए :

(i) कूण – ..... (ii) रावरी – .....

(iii) बेरी – ..... (iv) नेरी – .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचान कर लिखिए :

(i) पखावज – ..... (ii) पिचकारी – .....

(iii) गुलाल – ..... (iv) चरण – .....

(3) पद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए : *(नवंबर '20)*

विलोम शब्द जोड़ी	समानार्थी शब्द जोड़ी
..... ×	..... = ...

उत्तर

(1) (i) कूण – कहाँ (ii) रावरी – आपकी

(iii) बेरी – बेड़ा (iv) नेरी – पास, निकट।

(2) (i) पखावज – स्त्रीलिंग (ii) पिचकारी – स्त्रीलिंग

(iii) गुलाल – पुल्लिंग (iv) चरण – पुल्लिंग।

(3)

विलोम शब्द जोड़ी	समानार्थी शब्द जोड़ी
आदि × अंत	दासी = चेरी

कृति 3 : (सरल अर्थ)

* • **उपर्युक्त पद्यांश की 'हरि बिन कूण ..... आरति है तेरी।।' चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।** *(नवंबर '20)*

उत्तर : हे हरि, आपके बिना मेरा कौन है? अर्थात आपके सिवा मेरा कोई ठिकाना नहीं है। आप ही मेरा पालन करने वाले हैं और मैं आपकी दासी हूँ। मैं रात-दिन, हर समय आपका ही नाम जपती रहती हूँ। मैं बार-बार आपको पुकारती हूँ, क्योंकि मुझे आपके दर्शनों की तीव्र लालसा है।

पद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 24)

फागुन के दिन चार होरी खेल मना रे।
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै, रोम-रोम रणकार रे।।
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम-प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे।।
घट के पट सब खोल दिए हैं, लोकलाज सब डार रे।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कँवल बलिहार रे।।

शब्दार्थ

पखावज – विशेष प्रकार का बाजा। **छतीसूँ** – श्रेष्ठ। **संतोख** – संतोष। **घट** – हृदय। **पट** – द्वार। **कँवल** – कमल। **बलिहारना** – निछावर होना। **राग** – सुर। **अंबर** – आकाश।

कृति 1 : (आकलन)

(1) पद्यांश में आए इस अर्थ के शब्द लिखिए :

(i) कमल * (ii) आकाश (iii) श्रेष्ठ (iv) संतोष।

(2) जोड़ियाँ बनाइए :

सुर	करताल	घट	राग
झनकार	प्रेम	पट	पिचकार

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) आकाश लाल हो गया है इससे – [ ]

(ii) गिरिधर नागर हैं मीरा के ये – [ ]

(4) उत्तर लिखिए :

(i) पद्यांश में प्रयुक्त
- महीना – .....
- त्योहार – .....

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त ध्वनि निर्माण करने वाले दो साधन
- .....
- .....

* **(5) संजाल पूर्ण कीजिए :**

होली के समय आनंद निर्मित करने वाले घटक –
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

उत्तर

(1) (i) कमल – कँवल (ii) आकाश – अंबर

(iii) श्रेष्ठ – छतीसूँ (iv) संतोष – संतोख।

6414132

(2) (i) सुर – राग (ii) करताल – झनकार

(iii) घट – पट (iv) प्रेम – पिचकार।

(3) (i) आकाश लाल हो गया है इससे – गुलाल से

(ii) गिरिधर नागर हैं मीरा के ये – प्रभु

(4)(i) पद्यांश में प्रयुक्त
- महीना – फागुन
- त्योहार – होली/होरी

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त ध्वनि निर्माण करने वाले दो साधन
- करताल
- पखावज

(5) होली के समय आनंद निर्मित करने वाले घटक–
- करताल
- पखावज
- प्रेम-पिचकारी
- केसर गुलाल

कृति 2 : (शब्द संपदा)

- **पद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए :**

ऐसे दो शब्द जिनका वचन परिवर्तन से रूप नहीं बदलता –

(i) ..... (ii) .....

उत्तर

(i) दिन (ii) चरण।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **उपर्युक्त पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : हे मेरे मन, फागुन मास में होली खेलने का समय अति अल्प होता है। अतः तू जी भरकर होली खेल। अर्थात मानव जीनव अस्थायी है, इसलिए भगवान कृष्ण से पूर्ण रूप से प्रेम कर ले। जिस प्रकार होली के उत्सव में नाच आदि का आयोजन होता है, उसी प्रकार कृष्ण-प्रेम में मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो करताल, पखावज आदि बाजे बज रहे हैं और अनहद नाद का स्वर सुनाई दे रहा है, जिससे मेरा हृदय बिना स्वर और राग के अनेक रागों का आलाप करता रहता है। मेरा रोम-रोम भगवान कृष्ण के प्रेम के रंग में डूबा रहता है। मैंने अपने प्रिय से होली खेलने के लिए शील और संतोष रूपी केसर का रंग घोला है। मेरा प्रिय-प्रेम ही होली खेलने की पिचकारी है।

6414132

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) बाहर कोई नहीं है।

(ii) माँ को हँसी आ गई।

(iii) चतुर वैद्य विष से भी दवा का काम ले सकता है।

उत्तर : (i) **कोई** – अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

(ii) **हँसी** – भाववाचक संज्ञा।

(iii) **चतुर** – गुणवाचक विशेषण।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) भी (ii) इसलिए।

उत्तर : (i) **भी** – हमारी बेटी गाय से भी अधिक सीधी है।

(ii) **इसलिए** – नीरज बीमार था, इसलिए दफ्तर नहीं गया।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
.....	उत् + लेख	.....

अथवा

तपोबल	.....	.....

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
उल्लेख	उत् + लेख	व्यंजन संधि

अथवा

तपोबल	तपः + बल	विसर्ग संधि

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) यह कुरसी दीवार की तरफ खिसका दो।

(ii) हम समय पर स्टेशन पहुँच गए।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) दो	देना
(ii) गए	जाना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) पढ़ना (ii) जीतना (iii) करना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
(ii) जीतना	जिताना	जितवाना
(iii) करना	कराना	करवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) चैन न मिल पाना (ii) झेंप जाना।

उत्तर :

(i) चैन न मिल पाना।

अर्थ : बेचैनी अनुभव करना।

वाक्य : मालिक की कड़ी बातें सुनकर मुनीम को चैन न मिल पाया।

(ii) झेंप जाना।

अर्थ : लज्जित होना, शरमाना।

वाक्य : नकल करने पर मित्र की फटकार सुनकर अभिनव झेंप गया।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांशों के लिए कोष्ठक में दिए गए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(नाक-भौं सिकोड़ना, गुदगुदा देना, सिर झुका देना)

(i) अप्रिय बात सुनकर सभी तिरस्कार प्रकट करेंगे।

(ii) जीवन में आनंददायी क्षण बहुत कम होते हैं।

उत्तर : (i) अप्रिय बात सुनकर सभी नाक-भौं सिकोड़ेंगे।

(ii) जीवन में गुदगुदाने वाले क्षण बहुत कम होते हैं।

7. कारक :

- **कोष्ठक में दिए गए प्रत्येक कारक चिह्न से अलग-अलग वाक्य बनाइए और उनके कारक लिखिए :**

(भाषाबिंदु : पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 26)

(ने, को, से, का, की, के, में, पर, हे, अरे, के लिए)

(1) **ने** – ऋतु ने खाना बनाया।

(2) **को** – विपिन ने प्रगति को खाना खिलाया।

(3) **से** – हिमानी साइकिल से ऑफिस जाती है।

(4) **का** – शुभम हर्षित का भाई है।

(5) **की** – पूर्वी आयुष की बहन है।

(6) **के** – नीरज के तीन चाचा हैं।

(7) **में** – नीनू घर में है।

(8) **पर** – पेड़ पर बंदर कूद रहे हैं।

(9) **हे** – हे भगवान, कितना शोर है यहाँ।

(10) **अरे** – अरे! सलिल तुम कहाँ हो?

(11) **के लिए** – अंशु वारिजा के लिए फ्रॉक लाई।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) मैं कहाँ से पैसे दूँ पहले तो दूध की बिक्री के पैसे मेरे पास जमा रहते थे

(ii) सहसा कानों में आवाज आई काकी उठो मैं पूड़ियाँ लाई हूँ

उत्तर : (i) "मैं कहाँ से पैसे दूँ? पहले तो दूध की बिक्री के पैसे मेरे पास जमा रहते थे।"

(ii) सहसा कानों में आवाज आई – "काकी, उठो मैं पूड़ियाँ लाई हूँ।"

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) विदा का क्षण आ गया। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(ii) आप छत पर क्या करते हैं? *(अपूर्ण भूतकाल)*

(iii) मेरी गाड़ी तो बिक जाती है। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

उत्तर : (i) विदा का क्षण आ जाएगा।

(ii) आप छत पर क्या कर रहे थे?

(iii) मेरी गाड़ी तो बिक गई है।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) संसार का व्यवहार देखकर मुझे दु:ख होता है और मैं रो पड़ती हूँ।

(ii) मीराबाई कहती हैं कि अब उन्हें लोकलाज का कोई डर नहीं है।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य (ii) मिश्र वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) संतों के साथ बैठकर मैंने लोकलाज त्याग दी है।

(विस्मयादिबोधक वाक्य)

(ii) हे हरि, आप ही मेरा पालन करने वाले हैं। *(आज्ञावाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) हाय! संतों के साथ बैठकर मैंने लोकलाज त्याग दी है।

(ii) हे हरि, आप ही मेरा पालन करें।

6414132

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए :**

(i) लेखक ने अभिनेता की घमंड तोड़ी।

(ii) हमने क्रिकेट की मैच देखी।

उत्तर : (i) लेखक ने अभिनेता का घमंड तोड़ा।

(ii) हमने क्रिकेट का मैच देखा।

उपयोजित लेखन

- **निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए तथा उचित शीर्षक देकर मिलने वाली सीख भी लिखिए :**

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 25)

आलमारी, गिलहरी, चावल के पापड़, छोटा बच्चा।

जीव दया

एक गाँव में एक छोटा बच्चा रहता था। उसका नाम चिंटू था। एक दिन चिंटू अपने घर के बाहर खेल रहा था। उसने देखा कि सामने एक पेड़ के नीचे दो-तीन कौए किसी चीज पर चोंच मार रहे हैं और वहाँ से हल्की-हल्की चीं-चीं की आवाज आ रही है। चिंटू दौड़कर वहाँ पहुँचा और उसने उन कौओं को वहाँ से उड़ाया। उसने देखा कि एक छोटी-सी गिलहरी वहाँ चीं-चीं कर रही थी। उसका शरीर कौओं की चोंच से घायल हो गया था। चिंटू ने अपनी जेब से रूमाल निकाला और डरे बिना धीरे से गिलहरी को उठा लिया। उसने घर के अंदर लाकर उसे पानी पिलाया, उसके घावों को साफ करके उन पर सोफ्रामाइसिन लगाई और उसे मेज पर बैठा दिया। गिलहरी कुछ देर बाद धीरे-धीरे मेज पर घूमने लगी। मेज पर एक प्लेट में चावल के पापड़ रखे थे। गिलहरी ने एक पापड़ उठाया और अपने अगले दोनों पंजों में पकड़कर धीरे-धीरे उसे खाने लगी। चिंटू को बहुत अच्छा लगा। उसने माँ से पूछा कि जब तक गिलहरी बिलकुल ठीक नहीं हो जाती क्या मैं उसे अपने पास रख सकता हूँ। अभी अगर वह बाहर जाएगी तो कौए उसे अपना आहार बना लेंगे। माँ को चिंटू की ऐसी सोच पर गर्व हुआ और उन्होंने खुशी-खुशी उसकी बात मान ली। चिंटू ने अपनी किताबों की खुली आलमारी के एक खाने में एक तौलिया बिछाकर गिलहरी को बैठा दिया। उसके पास चावल के कुछ पापड़ तथा अमरूद के कुछ टुकड़े रख दिए। तीन-चार दिन बाद जब गिलहरी अच्छी तरह दौड़ने लगी तो चिंटू ने उसे बाहर पेड़ पर छोड़ दिया।

सीख : हमें पशु-पक्षियों के प्रति दया-भाव रखना चाहिए।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

7 खुला आकाश (पूरक पठन–गद्य)

– कुँवर नारायण

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत पाठ डायरी विधा का एक उदाहरण है। कुँवर नारायण जी ने इस पाठ के माध्यम से नगरों की भीड़, वहाँ की जीवन-शैली, जीवन के संघर्ष, आत्मचिंतन आदि पर प्रकाश डाला है। लेखक मानते हैं कि व्यक्ति के विकास में आत्मचिंतन का बड़ा महत्त्व है। इसके द्वारा हम अपनी क्षमताओं के बारे में और अधिक जान सकेंगे। साथ ही अपनी गलतियों से सीख ले सकेंगे।

कृतिपत्रिका के प्रश्न 3 (अ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 27)

हमारे अंदर ..... कोशिश में हूँ।

शब्दार्थ

निर्जीव – जिसमें जीवन न हो। **सँकरी** – पतली, कम चौड़ी, तंग। **लंद-फंद** – अव्यवस्थित।

कृति 1 : (आकलन)

6414132

* (1) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

गली की विशेषताएँ–
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

* (2) लिखिए :

घर से बाहर झाँकने पर यह दिखाई देता है –
↙ ↘
[ ] [ ]

* (3) कृति पूर्ण कीजिए :

गली से यह नहीं दिखता –
↙ ↘
[ ] [ ]

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

चिड़ियों को देखकर लेखक सोचते हैं–
↙ ↘
[ ] [ ]

(5) उत्तर लिखिए : *(मार्च '20)*

• गद्यांश में उल्लेखित/वर्णित चिड़ियों की विशेषताएँ

उत्तर

(1) गली की विशेषताएँ–
↓
आसमान नहीं दिखाई देता
↓
पेड़ नहीं हैं
↓
न पेड़ लगाने की जगह है
↓
मकान पर मकान लदे लगते हैं

(2) घर से बाहर झाँकने पर यह दिखाई देता है –
↙ ↘
मकान ही मकान | एक गंदी व तंग गली

(3) गली से यह नहीं दिखता –
↙ ↘
आसमान | घोंसले बनाती चिड़ियाँ

(4) चिड़ियों को देखकर लेखक सोचते हैं–
↙ ↘
ये प्राकृतिक नहीं हैं | रबड़ या प्लास्टिक से बने खिलौने हैं

(5)

• गद्यांश में उल्लेखित/वर्णित चिड़ियों की विशेषताएँ
पेड़ों पर बैठने वाली
आसमान में न उड़ने वाली
टेलीफोन के तारों पर चुपचाप बैठने वाली
घरों के अंदर घोंसले न बनाने वाली

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'पक्षियों की घटती संख्या' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।** *(मार्च '20)*

उत्तर : एक समय था जब सुबह उठने के साथ ही पक्षियों की चहचहाहट मन को मोह लेती थी। छोटी-बड़ी कई तरह की चिड़ियाँ द्वार पर फुदकती हुई दिखाई देती थीं। पर आज इनका दर्शन भी दूभर हो गया है। कहीं कोई चिड़िया दिखाई दे जाती है, तो मन खुशी से भर उठता है।

पक्षियों की घटती संख्या का मुख्य कारण पेड़ों की अंधाधुंद कटाई है। पक्षी पेड़ों पर घोंसला बनाते थे, पेड़ों का फल खाते थे और पेड़ों की हरियाली में मस्त होकर एक डाल से दूसरी डाल पर चहकते हुए उड़ते फिरते थे। मनुष्य की बढ़ती संख्या के कारण वन के वन साफ हो गए। बाग-बगीचे काट कर खेत बना लिए गए। पेड़ों के विनाश का भयंकर परिणाम हुआ है। पक्षियों के समक्ष चारे की भीषण समस्या है। पेड़ों के फल पक्षियों का मुख्य आहार हैं। फल उनके लिए दुर्लभ हो गए। इसके अलावा पक्षी खेतों में पाए जाने वाले कीड़ों-मकोड़ों को खाकर फसल की रक्षा करते थे। पर कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से वे भी नहीं रहे। इसलिए दिनोदिन पक्षियों की संख्या घटती जा रही है। गौरैया चिड़िया की प्रजाति विनाश के कगार पर है।

यदि पक्षियों को बचाने का प्रयास न किया गया, तो एक दिन ऐसा आएगा जब हम उन्हें देखने के लिए तरसेंगे। आवश्यकता है, उनके लिए बनावटी घरौंदे बनाने और उनके लिए पानी और चुगने के लिए चुग्गे की व्यवस्था करने की।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 28)

बिलकुल चुपचाप ..... और कुछ नहीं...।

शब्दार्थ

आत्मचिंतन – स्वयं के बारे में विचार करना। **गोजर** – कनखजूरा। **लकड़बग्घा** – भेड़िये की जाति का एक हिंसक पशु। **धूर्त** – कपटी।

कृति 1 : (आकलन)

*** (1) आकृति में लिखिए :**

कुछ मनुष्यों में दिखाई देने वाले पशु –

[ ] [ ]

(2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) बिलकुल चुपचाप बैठकर सिर्फ ..... बारे में सोचें। *(मेरे/अपने/सबके)*

(ii) दूसरों की सोच-समझ पर ..... रखें। *(भरोसा/प्रेम/संदेह)*

(iii) ..... अन्य नहीं, अंतमय है, हमारे ही प्रतिरूप, हमसे अलग या भिन्न नहीं। *(दूसरा /सब/वह)*

(iv) ..... तरह सारे मनुष्य केवल मनुष्य होते और कुछ नहीं। *(इसी/उसी/किसी)*

उत्तर

(1) कुछ मनुष्यों में दिखाई देने वाले पशु –

- बाघ, भेड़िये, लकड़बग्घे, साँप, तेंदुए, बिच्छू, गोजर
- गायें, बकरी, भेड़, तितली

(2) (i) बिलकुल चुपचाप बैठकर सिर्फ अपने बारे में सोचें।

(ii) दूसरों की सोच-समझ पर भरोसा रखें।

(iii) दूसरा अन्य नहीं, अंतमय है, हमारे ही प्रतिरूप, हमसे अलग या भिन्न नहीं।

(iv) उसी तरह सारे मनुष्य केवल मनुष्य होते और कुछ नहीं।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'आत्मचिंतन के लाभ' विषय में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : आत्मचिंतन यानी स्वयं के विषय में चिंतन करना। आत्मचिंतन का अर्थ है किसी कार्य को करने या होने के बाद उसे करने के लिए अपनाई गई क्रिया और विचार पद्धति का विश्लेषण। आत्मचिंतन के द्वारा हमें अपनी गलतियों से सीखने, साथ ही अपने किए गए कार्य को और बेहतर ढंग से करने का मौका मिलता है। किसी भी व्यक्ति को कोई दूसरा जितना सिखा सकता है, उससे कहीं अधिक वह अपने स्वाध्याय एवं आत्मचिंतन के द्वारा सीख सकता है। इस प्रक्रिया में हम शांत भाव से बैठकर किसी समस्या या मुद्दे के बारे में

चिंतन कर सकते हैं। छात्र जीवन में तो इसकी और भी अधिक आवश्यकता है। अपनी क्षमताओं के विषय में अच्छी तरह जाने-समझे बिना हम लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं। शीघ्रातिशीघ्र उसे प्राप्त कर लेना चाहते हैं और बाद में भटक जाते हैं। इसलिए पहले आत्मचिंतन करें, स्वयं को जानें, फिर लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास करें।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 28 – 29)

मुझे जीवन को ..... दूसरों के लिए ...।

शब्दार्थ

चारित्रिक – चरित्र से संबंधित। **चैतन्य** – जागरूक। **धूर्त** – कपटी।

कृति 1 : (आकलन)

*** (1) कृति पूर्ण कीजिए :**

लेखक ऐसी जिंदगी बिताना नहीं चाहता –
- [ ]
- [ ]

(2) उत्तर लिखिए :

(i) बुढ़ापे के अलावा जीवन के दो खंड –
- [ ]
- [ ]

(ii) लेखक अपने आप को इनके लिए अविभाज्य पाता है –
- [ ]
- [ ]

उत्तर

(1) लेखक ऐसी जिंदगी बिताना नहीं चाहता –
- चीजों को लुका-छिपाकर
- बातों और व्यवहार को रचा-बसाकर

(2) (i) बुढ़ापे के अलावा जीवन के दो खंड –
- बचपन
- यौवन

(ii) लेखक अपने आप को इनके लिए अविभाज्य पाता है –
- जीवन चेष्टा
- साहित्यिक चेष्टा

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'जीवन की सार्थकता' के विषय में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : ईश्वर ने हमें सर्वश्रेष्ठ योनि अर्थात मानव योनि में जन्म दिया है। हमारा कर्तव्य है कि हम मानव जाति के लिए कुछ अच्छा कार्य करें। हमें जितनी आयु मिली है, वह समय हम अच्छे कार्यों को करने में लगाएँ। कुछ ऐसा काम करें जिससे समाज और देश का हित हो। कुछ लोग समय की कमी की बात करते हैं। लेकिन यदि कुछ करने की लगन हो तो समय आड़े नहीं आता। स्वामी विवेकानंद 40 वर्ष की आयु से भी पहले इस संसार से चले गए। ईसा मसीह का 30 वर्ष की आयु में ही प्राणांत हो गया। रामानुजम, रानी लक्ष्मीबाई, नेपोलियन, सिकंदर और अन्य अनेक अल्पायु में ही इस असार संसार को छोड़ गए, फिर भी मानव इतिहास में, ये महापुरुष अपनी छाप छोड़ गए। सीमित समय में भी जितना अधिक-से-अधिक अच्छा हो सके, हमें देश व समाज के कल्याण के लिए कुछ सकारात्मक अवश्य करना चाहिए।

6414132

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 29)

दिल्ली शहर में ..... गुलाम होते हैं।

शब्दार्थ

चलायमान – चलता हुआ, चंचल। **बहस** – वाद-विवाद। **फिलहाल** – तत्काल, अभी। **एकनिष्ठ** – एक के ही ऊपर निष्ठा, श्रद्धा रखने वाला।

कृति 1 : (आकलन)

*** (1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

(i) मनुष्य जीवन की स्थितियाँ –
- [ ]
- [ ]

(ii) लेखक इनकी सेवा में लगे हैं –
- [ ]
- [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

लेखक की दृष्टि में दिल्ली शहर–
- [ ]
- [ ]
- हर वक्त चलायमान

(3) जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'आ'
(i) शौक	भविष्य
(ii) एकनिष्ठ	गुलाम
(iii) उज्ज्वल	रास्ते
(iv) दरजनों	सेवा

उत्तर

(1) (i) मनुष्य जीवन की स्थितियाँ–
- गुलामी करना
- गुलामी करवाना

(ii) लेखक इनकी सेवा में लगे हैं–
- मोटर
- कंप्यूटर

(2) लेखक की दृष्टि में दिल्ली शहर–
- बहुत बड़ी बस
- सवारियों से लंद-फंद
- हर वक्त चलायमान

(3)
(i) शौक – रास्ते
(ii) एकनिष्ठ – सेवा
(iii) उज्ज्वल – भविष्य
(iv) दरजनों – गुलाम

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

* • **'जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं', इसका सोदाहरण अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : जिन कामों या चीजों का हमें शौक होता है, जिसमें हमारी रुचि होती है, उसके लिए हम समय, सुविधा सब निकाल लेते हैं। रुचि सफलता की वाहक है। हम सभी अपनी रुचि के कामों को करते समय उसमें डूब जाते हैं। उसी का परिणाम होता है सफलता। शिक्षा काल में जिस विषय में हमारी रुचि होती है, उसे पढ़ने में हम सारी रात भी जग लेते हैं, जबकि किसी ऐसे विषय की पुस्तक खोलते ही आँखें नींद से भर आती हैं, जो हमें पसंद न हो। व्यायाम, तैराकी, बागवानी, चित्रकला, गायन, वादन आदि ऐसे अनेक कार्य हैं, जिनका यदि शौक हो तो मनुष्य घंटों बिताने पर भी उनसे ऊब अनुभव नहीं करता। किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए उसमें रुचि होना परम आवश्यक है। बिना रुचि के आगे बढ़ने की संभावना बहुत कम होती है। जिस काम में हमारी रुचि होती है, उसे करने के लिए हम अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं। न दिन देखते हैं, न ही रात। थकान शब्द तो मानो हमारे शब्दकोश में कभी था ही नहीं।

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 31)

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 31 देखें।)

(1) निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए :

संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
(i) दुः + लभ	दुर्लभ	विसर्ग संधि
(ii) महा + आत्मा	महात्मा	स्वर संधि
(iii) अन् + आसक्त	अनासक्त	स्वर संधि
(iv) अंतः + चेतना	अंतश्चेतना	विसर्ग संधि
(v) सम् + तोष	संतोष	व्यंजन संधि
(vi) सदा + एव	सदैव	स्वर संधि

(2) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
(i) सज्जन	सत् + जन	व्यंजन संधि
(ii) नमस्ते	नमः + ते	विसर्ग संधि
(iii) स्वागत	सु + आगत	स्वर संधि
(iv) दिग्दर्शक	दिक् + दर्शक	व्यंजन संधि
(v) यद्यपि	यदि + यपि	स्वर संधि
(vi) दुस्साहस	दुः + साहस	विसर्ग संधि

(3) निम्नलिखित आकृति में दिए गए शब्दों का विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
(i) दिग्गज	दिक् + गज	व्यंजन संधि

6414132

(ii) सप्ताह	सप्त + अह	स्वर संधि
(iii) निश्चल	निः + चल	विसर्ग संधि
(iv) भानूदय	भानु + उदय	स्वर संधि
(v) निस्संदेह	निः + संदेह	विसर्ग संधि
(vi) सूर्यास्त	सूर्य + अस्त	स्वर संधि

(4) पाठ में आए संधि शब्द छाँटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
(i) निर्जीव	निः + जीव	विसर्ग संधि
(ii) संभव	सम् + भव	व्यंजन संधि
(iii) उज्ज्वल	उत् + ज्वल	व्यंजन संधि

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 29**

  शरद जोशी लिखित अतिथि तुम कब जाओगे, हास्य-व्यंग्य कहानी पढ़िए तथा सुनाइए।

- **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 29**

  घर की बालकनी/आँगन में सेंद्रिय पद्धति से पौधे कैसे उगाए जाते हैं, इसके बारे में आकाशवाणी/दूरदर्शन पर सुनिए और सुनाइए।

- **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 28**

  'कंप्यूटर ज्ञान का महासागर' विषय पर तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए।

उत्तर : कंप्यूटर इस पृथ्वी पर कल्पवृक्ष के समान है। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ इसका महत्व न हो। सूचना के क्षेत्र में कंप्यूटर के कारण अद्भुत क्रांति आ गई है। इंटरनेट इसकी अनुपम देन है। दुनियाभर की जानकारी हम मिनटों में प्राप्त कर सकते हैं। यह एक सेकंड में दस हजार करोड़ गणितीय गणना कर सकता है। चाहे मौसम का पूर्वानुमान हो या प्राकृतिक गैस और खनिज भंडारों का पता लगाना हो, रेलगाड़ियों और हवाईजहाजों का आरक्षण कराना हो या संसारभर की जानकारी प्राप्त करनी हो, कंप्यूटर के द्वारा घर बैठे हम मिनटों में कर सकते हैं। यह समय-समय पर भौगोलिक सूचनाओं से संबंधित जानकारी भी देता है। मुद्रण व प्रसारण के क्षेत्र में इसका योगदान असीमित है। कंप्यूटर एक चालक की भाँति वायुयान का संचालन करता है। चालक के बटन दबाते ही कंप्यूटर स्वयं गति और दिशा का निर्धारण कर लेता है। शिक्षा के क्षेत्र में तो आज कंप्यूटर एक अनिवार्यता बन गया है। ज्ञान का ऐसा कौन-सा क्षेत्र है, जहाँ कंप्यूटर की पहुँच न हो। अतः यदि यह कहा जाए कि कंप्यूटर ज्ञान का महासागर है, तो अतिशयोक्ति न होगी।

- **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 28**

  महानगरीय/ग्रामीण दिनचर्या के लाभ तथा हानि के बारे में अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

उत्तर : गाँवों में आज भी खुला आसमान है। वहाँ का वातावरण शुद्ध, प्रकृति की गोद में है, जबकि महानगरों में आसमान दिखाई नहीं पड़ता। बड़े पैमाने पर वाहनों से होने वाला प्रदूषण, लगातार होने वाला शोर, भीड़ और धुआँ असहज महसूस कराता है। भीड़भाड़, ट्रैफिक जाम, और अपराध महानगरों में रोज की बात है। गाँवों में एक प्रकार का ठहराव है। शाम ढलते ही चारों ओर एक प्रकार का सन्नाटा पसर जाता है। जबकि, महानगरों में जीवन हर समय गतिमान रहता है। देर रात तक ऑफिस, दुकानें खुली रहती हैं। बस, ट्रेन, टैक्सियाँ, स्कूटर्स सड़कों पर दौड़ते रहते हैं। गाँवों में धूप, हरियाली और शांति का आनंद प्राप्त कर सकते हैं। लोग आज भी गर्मजोशी से मिलते हैं। एक-दूसरे के दुख-तकलीफ में काम आते हैं। महानगरों में बहुत-से लोग पड़ोसी तक को नहीं पहचानते। दोस्तों, रिश्तेदारों के लिए समय नहीं निकाल पाते। यहाँ लोगों के पास पैसा है, सुविधाएँ हैं, पर शांति कोसों दूर है। ग्रामीण लोगों का जीवन महानगरों की भागदौड़ से दूर एवं प्रकृति के करीब होता है। दूसरी ओर महानगरों में लोग हमेशा समय को पकड़ने के लिए दौड़ते रहते हैं। अति व्यस्तता के कारण तनाव, फिर स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न परेशानियाँ उन्हें घेर लेती हैं।

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

8 गजल

– *माणिक वर्मा*

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत गजल में माणिक वर्मा ने हमें निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है। कवि का मानना है कि बाहरी रंग-रूप तो अस्थायी होता है। सुंदरता हमारे विचारों में, हमारे कामों में होनी चाहिए।

कविता का सरल अर्थ

[1] आपसे किसने ..... भीतर देखो।

किसी भी अट्टालिका के चमचमाते शिखरों को सभी देखते हैं। उनकी शान की प्रशंसा भी करते हैं। लोग समाज में इन शिखरों के समान ही सम्मान पाना चाहते हैं। परंतु वास्तव में देखा जाए तो इन शिखरों से अधिक महत्व है उन ईंटों और पत्थरों का, जिनके कारण ये शिखर बन सके। यदि नींव की ईंटों ने गुमनामी के अंधेरे में रहना स्वीकार न किया होता, तो इन शिखरों का अस्तित्व ही न होता। यदि हम समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं, तो हमें प्रशंसा और वाहवाही का लोभ त्यागकर नींव की ईंटों के समान कुछ अच्छा और सुदृढ़ काम करना चाहिए।

यदि आप मंजिल की ओर अग्रसर हैं तो अपने अच्छे कर्मों के कारण उसी प्रकार आसमानों तक छा जाइए, जैसे आँधी आने पर पृथ्वी से आकाश तक धूल-ही-धूल दृष्टिगोचर होती है। अर्थात आपके द्वारा किए गए अच्छे कामों का प्रभाव और चर्चा हर तरफ हो। और यदि आप मंजिल की ओर बढ़ते हुए मार्ग में कहीं बैठ जाते हो तो मील के पत्थर के समान बनो। मील का पत्थर जिस प्रकार एक पथिक को अपनी मंजिल की ओर बढ़ते समय सहायता करता है, उसी प्रकार क्रियाशील न होते हुए भी आप दूसरों की मदद करें।

ईश्वर ने हमें मनुष्य जीवन दिया है। हमारा उद्देश्य केवल सजना, सँवरना और सुंदर दिखना ही नहीं होना चाहिए। हमारे द्वारा किए गए काम सुंदर होने चाहिए। ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस श्रेष्ठ मानव जीवन में हमें मानवीय गुणों को अपनाना चाहिए। हमारा कोई भी काम ऐसा न हो, जो मानवता के दायरे से बाहर हो। समाज में सभी के प्रति हमारा व्यवहार ऐसा हो कि सारा संसार हमें एक अच्छे मनुष्य के रूप में जाने।

हमें ऐसी शख्सियत बनना चाहिए कि कैसी भी प्रतिकूल परिस्थिति क्यों न हों, हम विचलित न हों। बिना टूटे, बिना बिखरे हर परिस्थिति का डटकर सामना करें। अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

हमें प्रत्येक मानव से सहानुभूति रखनी चाहिए। यह तभी संभव हो सकेगा, जब हम उनके हर दुख-तकलीफ को समझें। जैसे मोमबत्ती का धागा सदा उसके साथ रहता है। उसके साथ जलता है। उसी प्रकार जब हम दीन-दुखियों की पीड़ा को समझेंगे, तो उसे दूर करने का यथासंभव प्रयास करेंगे। इस प्रकार हम अपना मानव-धर्म निभा पाएँगे।

[2] एक जुगनू ..... अक्सर देखो।

जब वक्त हमारा साथ न दे रहा हो; हर तरफ असफलताएँ धुंध के समान छाई हों; निराशा रूपी अंधकार का साम्राज्य हो; ऐसे समय में एक छोटी-सी आशा की किरण भी बहुत बड़ा सहारा बन सकती है। ठीक उसी प्रकार, जैसे घने अंधकार में चमकता हुआ जुगनू। तुम्हें भी निराश, हताश लोगों के मन में आशा की किरण जगाना चाहिए।

सभी मनुष्यों के लिए समाज में रहने के लिए कुछ सीमाएँ हैं, जिनका हमें पालन करना होता है। तभी समाज हमें और हमारे व्यवहार को स्वीकार करता है। अगर तुम चाहते हो कि लोगों में तुम्हारी कोई पहचान बने तो जिस प्रकार सीप के अंदर मूल्यवान मोती छिपा होता है, उसी प्रकार तुम्हें समाज के कल्याण के लिए श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए। तुम्हारी यह कल्याण-भावना तुम्हें एक पहचान देगी, सम्मान देगी।

यदि कोई कोमल कली फूल बनने से डर रही हो। कली जानती है कि उसके खिलते ही तितली उसका रस चूसने के लिए आएगी और फूल बनी कली को परेशान करेगी। तुम फूल को तितली से बचाने का प्रयास करो। अर्थात उसके डर को दूर करने में उसकी मदद करो।

यह संसार मनुष्यों का एक सागर है। भीड़ में जाने-अनजाने अनगिनत चेहरे हर तरफ दिखाई देते हैं। हे ईश्वर, मैं चाहता हूँ कि मैं जिसे भी देखूँ, मुझे उसी में तुम नजर आओ। तुम तो सर्वव्यापक हो।

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 33)

आपसे किसने कहा स्वर्णिम शिखर बनकर दिखो,
शौक दिखने का है तो फिर नींव के अंदर दिखो।

चल पड़ी तो गर्द बनकर आस्मानों पर लिखो,
और अगर बैठो कहीं तो मील का पत्थर दिखो।

सिर्फ देखने के लिए दिखना कोई दिखना नहीं,
आदमी हो तुम अगर तो आदमी बनकर दिखो।

जिंदगी की शक्ल जिसमें टूटकर बिखरे नहीं,
पत्थरों के शहर में वो आईना बनकर दिखो।

आपको महसूस होगी तब हरइक दिल की जलन,
जब किसी धागे-सा जलकर मोम के भीतर दिखो।

शब्दार्थ

स्वर्णिम – सोने के रंग का, सुनहला। **गर्द** – धूल। **शक्ल** – चेहरा।

6414132

कृति 1 : (आकलन)

*** (1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

कवि के अनुसार ऐसे दिखो –
- (1) .....
- (2) .....
- (3) .....
- (4) .....

(2) विधानों के सामने सत्य / असत्य लिखिए :

(i) स्वर्णिम शिखर बनकर जीना ही जीना है।

(ii) मील का पत्थर बनकर जीना अच्छा नहीं है।

(iii) मोमबत्ती के धागे जैसा जीवन जियो।

(iv) जिंदगी टूटकर नहीं बिखरनी चाहिए।

***(3) गजल की पंक्तियों का तात्पर्य :**

(i) नींव के अंदर दिखो .....

(ii) आईना बनकर दिखो .....

(4) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'आ'
(i) शिखर	गर्द
(ii) आस्मान	जिंदगी
(iii) पत्थर	स्वर्णिम
(iv) शक्ल	मील
	नींव

(5) दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) आईना *(ii) आसमान।

(6) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

(i) पत्थर के शहर में यह बनकर दिखना है –

(ii) दिखने का शौक है तो यह बनो –

उत्तर

(1)

कवि के अनुसार ऐसे दिखो –
- (1) नींव के अंदर
- (2) मील का पत्थर
- (3) आदमी बनकर
- (4) आईना बनकर

(2) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य।

(3) (i) हमें प्रशंसा और वाहवाही का लोभ त्यागकर नींव की ईंटों के समान कुछ अच्छा और सुदृढ़ काम करना चाहिए।

(ii) हमें ऐसी शख्सियत बनना चाहिए कि कैसी भी प्रतिकूल परिस्थिति क्यों न हो, हम विचलित न हों। बिना टूटे, बिना बिखरे हर परिस्थिति का डटकर सामना करें। अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

(4) (i) शिखर – स्वर्णिम

(ii) आस्मान – गर्द

(iii) पत्थर – मील

(iv) शक्ल – जिंदगी

(5) (i) पत्थरों के शहर में क्या बनकर दिखना चाहिए?

(ii) गर्द बनकर कहाँ लिखना चाहिए?

(6) (i) आईना।

(ii) नींव।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) शक्ल = ... (ii) शिखर = ...

(iii) गर्द = ... (iv) पत्थर = ...

(2) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) आदमी × ..... (ii) शहर × .....

(iii) आसमान × ..... (iv) टूटना × .....

उत्तर

(1) (i) शक्ल = चेहरा (ii) शिखर = शीर्ष

(iii) गर्द = धूल (iv) पत्थर = पाषाण।

(2) (i) आदमी × जानवर (ii) शहर × गाँव

(iii) आसमान × जमीन (iv) टूटना × जुड़ना।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **उपर्युक्त पद्यांश की आरंभ की चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : किसी भी अट्टालिका के चमचमाते शिखरों को सभी देखते हैं। उनकी शान की प्रशंसा भी करते हैं। लोग समाज में इन शिखरों के समान ही सम्मान पाना चाहते हैं। परंतु वास्तव में देखा जाए तो इन शिखरों से अधिक महत्व है उन ईंटों और पत्थरों का, जिनके कारण ये शिखर बन सके। यदि नींव की ईंटों ने गुमनामी के अंधेरे में रहना स्वीकार न किया होता, तो इन शिखरों का अस्तित्व ही न होता। यदि हम समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं, तो हमें प्रशंसा और वाहवाही का लोभ त्यागकर नींव की ईंटों के समान कुछ अच्छा और सुदृढ़ काम करना चाहिए।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 33)

एक जुगनू ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ हूँ,
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो।
एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते,
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखो।
डर जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली,
तुम ना खिलते फूल पर तितली के टूटे पर दिखो।
कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में,
मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो।

शब्दार्थ

धुंध – धुआँ, कोहरा। **गर** – अगर। **शक्ल** – चेहरा।

कृति 1 : (आकलन)

*** (1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

मनुष्य से अपेक्षाएँ –

[ ] [ ]

(2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) वक्त की इस धुंध में तुम ..... बनकर दिखो।
(सितारा/चिराग/रोशनी)

(ii) हम सभी के लिए एक ..... है।
(दुनिया/मर्यादा/मंच)

(iii) कोई ..... कली फूल बनने से डर जाए।
(छोटी/सुंदर/नाजुक)

(iv) कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस ..... में।
(भीड़/संसार/घर)

(3) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवनमूल्य लिखिए :

(i) एक जुगनू ने ..... रोशनी बनकर दिखो।

*(ii) कोई ऐसी शक्ल ..... मुझे अक्सर दिखो।

*** (4) आकृति पूर्ण कीजिए :**

[ ] [ ]

गजल में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक–

[ ] [ ]

(5) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

* (i) भीड़ * (ii) जुगनू * (iii) तितली (iv) मोती।

(6) जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'आ'
(i) धुंध	सीप
(ii) मर्यादा	तितली
(iii) मोती	रोशनी
(iv) फूल	मनुष्य

(7) पद्यांश के आधार पर संबंध जोड़कर उचित वाक्य तैयार कीजिए : *(मार्च '20)*

(i) जुगनू धुंध (ii) रोशनी तितली

मैं

(1) .....

(2) .....

6414132

उत्तर

(1)

मनुष्य से अपेक्षाएँ –

- मानवीय गुणों को अपनाना
- निराश और हताश लोगों के मन में आशा की किरण जगाना

(2) (i) वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो।
(ii) हम सभी के लिए एक मर्यादा है।
(iii) कोई नाजुक कली फूल बनने से डर जाए।
(iv) कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में।

(3) (i) जब वक्त साथ न दे रहा हो। हर तरफ असफलता और निराशा का साम्राज्य हो। ऐसे समय में एक छोटी-सी आशा की किरण भी बहुत बड़ा सहारा बन सकती है। हमें निराश, हताश लोगों के मन में आशा की किरण जगाना चाहिए।
(ii) हे ईश्वर, मैं चाहता हूँ कि मैं जिसे भी देखूँ, मुझे उसी में तुम नजर आओ। अर्थात मानव मात्र ईश्वर का अंश है।

(4)

गजल में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक –

- फूल
- तितली
- मोती
- सीप

6414132

(5) (i) कवि अक्सर किसी शक्ल को कहाँ देखना चाहता है?
(ii) वक्त की धुंध में साथ रहने को किसने कहा?
(iii) कवि खिलते फूल के स्थान पर कहाँ दिखने को कहता है?
(iv) मोती को किसके अंदर दिखना चाहिए?

(6)
(i) धुंध – रोशनी
(ii) मर्यादा – मनुष्य
(iii) मोती – सीप
(iv) फूल – तितली

(7) (i) मैं धुंध में जुगनू के प्रकाश की तरह हूँ।
(ii) मैं रोशनी में तितली की तरह फूलों पर मँडराती हूँ।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) जुगनू – ..... (ii) रोशनी – .....
(iii) मोती – ..... (iv) सीप – .....

(2) (i) निम्नलिखित के लिए पद्यांश से शब्द ढूँढ़कर लिखिए : *(मार्च '20)*

(1) लोगों का समूह – .....
(2) सीप में बनने वाला रत्न – .....

(ii) पद्यांश में आए पर शब्द के अलग-अलग अर्थ लिखिए। *(मार्च '20)*

(1) ..... (2) .....

उत्तर

(1) (i) जुगनू – पुल्लिंग (ii) रोशनी – स्त्रीलिंग
(iii) मोती – पुल्लिंग (iv) सीप – स्त्रीलिंग

(2) (i) (1) लोगों का समूह – भीड़
(2) सीप में बनने वाला रत्न – मोती।
(ii) (1) किंतु, लेकिन (2) पंख।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **उपर्युक्त पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।** *(मार्च '20)*

उत्तर : यदि कोई कोमल कली फूल बनने से डर रही हो तो, कली जानती है कि उसके खिलते ही तितली उसका रस चूसने के लिए आएगी और फूल बनी कली को परेशान करेंगी। तुम फूल को तितली से बचाने का प्रयास करो। अर्थात उसके डर को दूर करने में उसकी मदद करो।

यह संसार मनुष्यों का एक सागर है। भीड़ में अनगिनत चेहरे हर तरफ दिखाई देते हैं। हे ईश्वर, मैं चाहता हूँ कि मैं जिसे भी देखूँ, मुझे उसी में तुम नजर आओ। तुम तो सर्वव्यापक हो।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों के शब्द भेद पहचानिए :**

(i) मैं दिल्ली में अच्छा घर ढूँढ़ रहा हूँ।
(ii) वे तेजी के साथ बगीचे की ओर चल पड़े।
(iii) तुम अब पढ़ने बैठ जाओ।

उत्तर : (i) **अच्छा** – गुणवाचक विशेषण।
(ii) **बगीचे** – जातिवाचक संज्ञा।
(iii) **तुम** – पुरुषवाचक सर्वनाम।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) के मारे (ii) या (iii) पर।

उत्तर : (i) **के मारे** – लड़का डर के मारे काँप रहा था।
(ii) **या** – वे खेलने या घूमने गए होंगे।
(iii) **पर** – गाड़ी थी, पर पर्याप्त पेट्रोल नहीं था।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
नरेश	----------	----------

अथवा

----------	दिक् + अंबर	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
नरेश	नर + ईश	स्वर संधि

अथवा

दिगंबर	दिक् + अंबर	व्यंजन संधि

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) वे गरीबों को फल बाँटते रहे।

(ii) देरी करने को मेरा मन गवारा नहीं कर पाया।

(iii) उनके शब्द मेरे कानों में गूँजने लगे।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) रहे	रहना
(ii) पाया	पाना
(iii) लगे	लगना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) छोड़ना (ii) डूबना (iii) सूखना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना
(ii) डूबना	डुबाना	डुबवाना
(iii) सूखना	सुखाना	सुखवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग किजिए :

(i) नाम-निशान न रहना (ii) रटता जाना।

उत्तर :

(i) नाम-निशान न रहना।

अर्थ : अस्तित्व मिट जाना।

वाक्य : भूकंप के कारण पुराने कार्यालय का नाम-निशान नहीं रहा।

(ii) रटते जाना।

अर्थ : बार-बार कहते जाना।

वाक्य : विजय गाँव जाने की बात रटता जा रहा है।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांशों के लिए कोष्ठक में दिए गए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(तौलकर बोलना, तीर की तरह निकल जाना, कानों में गूँजना, ठहाका लगाना)

(i) पाकिटमार महिला का बटुआ छीनकर बहुत तेजी से निकल गया।

(ii) माता-पिता द्वारा दी गई सीख जीवनभर ध्वनित होती रहती है।

(iii) सज्जन हमेशा सोच-समझकर बोलता है।

उत्तर : (i) पाकिटमार महिला का बटुआ छीनकर तीर की तरह निकल गया।

(ii) माता-पिता द्वारा दी गई सीख जीवनभर कानों में गूँजती रहती है।

(iii) सज्जन हमेशा तौलकर बोलते हैं।

64141132

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उनका भेद लिखिए :**

(i) ईश्वर की प्राप्ति आसानी से नहीं होती।

(ii) एक बच्चा कुर्सी पर चढ़ा तो दूसरा नाचने लगा।

(iii) मैंने तय किया कि आज किसी से नहीं मिलूँगा।

उत्तर : (i) **की** – संबंध कारक।

(ii) **पर** – अधिकरण कारक।

(iii) **से** – करण कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) ''गरम गरम भूनकर मसाला लगाकर दूँगा''

(ii) आदमी ने आकर पूछा–अभी भोजन तैयार होने में कितना विलंब है

(iii) हाँ, सूर ने एक जगह लिखा है–मैं दसों दिशाओं में देख लेता हूँ

उत्तर : (i) ''गरम-गरम भूनकर मसाला लगाकर दूँगा।''

(ii) आदमी ने आकर पूछा – ''अभी भोजन तैयार होने में कितना विलंब है?''

(iii) हाँ, सूर ने एक जगह लिखा है–'मैं दसों दिशाओं में देख लेता हूँ।'

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) ठीक ग्यारह बजे प्रधानमंत्री बाहर आते हैं। *(सामान्य भूतकाल)*

(ii) मुझे भाई का जला हुआ चेहरा याद आता है। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(iii) गुरुदेव अपने समय पर स्नान करते हैं। *(पूर्ण भूतकाल)*

उत्तर : (i) ठीक ग्यारह बजे प्रधानमंत्री बाहर आए।

(ii) मुझे भाई का जला हुआ चेहरा याद आएगा।

(iii) गुरुदेव ने अपने समय पर स्नान किया था।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) ईश्वर ने हमें मनुष्य जीवन दिया है।

(ii) हमारा उद्देश्य, सजना, सँवरना ही नहीं है, बल्कि हमारे द्वारा किए गए कार्य सुंदर होने चाहिए।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों को अर्थ के आधार दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i) चाची जली-भुनी रहती थी। *(संदेहवाचक वाक्य)*

(ii) मन अब सुकून अनुभव कर रहा था। *(निषेधवाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) शायद चाची जली-भुनी रहती थी।

(ii) मन अब सुकून अनुभव नहीं कर रहा था।

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए :**

(i) इस मंदिर में अनेकों बूद्ध की मूर्तियाँ हैं।

(ii) माँ को यहाँ से गए बस एक मिनेट हुई है।

(iii) मेरा घर तुमसे अच्छा है।

उत्तर : (i) इस मंदिर में बुद्ध की अनेक मूर्तियाँ हैं।

(ii) माँ को यहाँ से गए बस एक मिनट हुआ है।

(iii) मेरा घर तुम्हारे घर से अच्छा है।

उपयोजित लेखन

- **'यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता' विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध-लेखन कीजिए। (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 34)**

उत्तर : पिछले कई वर्षों में अंतरिक्ष विज्ञान में जो प्रगति हुई है, वह सराहनीय है। पहले अंतरिक्ष यात्रा कल्पना से अधिक कुछ नहीं थी लेकिन आज अंतरिक्ष यात्रा के सपने सच हो गए हैं। रूस ने अंतरिक्ष यान के द्वारा अपने अंतरिक्ष यात्री यूरी गागरिन को पहली बार अंतरिक्ष में भेजा था। फिर तो अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन सबसे पहले चंद्रमा पर पहुँचने वाले अंतरिक्ष यात्री हो गए।

अब तो ऐसा लगता है कि कभी-न-कभी हम को भी अंतरिक्ष में जाने का मौका मिल सकता है। लेकिन यह कब संभव होगा, कहा नहीं जा सकता। काश, मेरा घर अंतरिक्ष में होता.... यदि सच में मेरा घर अंतरिक्ष में होता तो कितना अच्छा होता। जिस आसमान को दूर से देखा करते हैं, हम उसकी खूब सैर करते। चाँद, सितारों को नजदीक से देखते। बादलों के बीच लुका-छिपी खेलते। परियों के देश में जाते। वे किस तरह रहती हैं, जानने-देखने का अवसर पाते। हम अंतरिक्ष से अपनी सुंदर धरती को देखते। अपने प्यारे भारत को देखते। आकाशगंगा के विभिन्न ग्रहों-उपग्रहों को देखते। सौरमंडल के सबसे सुंदर ग्रह शनि और उसके वलयों को देखते। उनके जितना निकट जा सकते, अवश्य जाते। स्पेस वॉक करते। वहाँ फैली शांति का अनुभव करते। वहाँ के प्रदूषणरहित वातावरण में रहने का मौका मिलता, जिससे हमारा स्वास्थ्य बहुत बढ़िया हो जाता। काश ऐसा हो पाता...

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

9 रीढ़ की हड्डी

– जगदीशचंद्र माथुर

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत अति प्रसिद्ध एकांकी में एकांकीकार जगदीशचंद्र माथुर ने तत्कालीन समाज में स्त्री-शिक्षा के विषय में लोगों की दकियानूसी विचारधारा पर प्रकाश डाला है। उमा के द्वारा स्त्रियों की भावनाओं को महत्त्व दिया गया है। नारी के सम्मान का मुद्दा उठाया गया है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **पसीना बहाना** – बहुत मेहनत करना।

(2) **मुँह फुलाना** – नाराज होना।

(3) **इज्जत उतारना** – बेइज्जती करना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा प्रश्न 1 (आ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

6414132

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 35–36)

रामस्वरूप : अबे! धीरे-धीरे चल ..... 'मार्जिन' रखता हूँ।

शब्दार्थ

तख्त – लकड़ी से बनी हुई बड़ी चौकी। **करीने से** – ढंग से। **मुखातिब** – के सामने, की ओर रुख करना। **मार्जिन** – (यहाँ अर्थ) अंतर।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

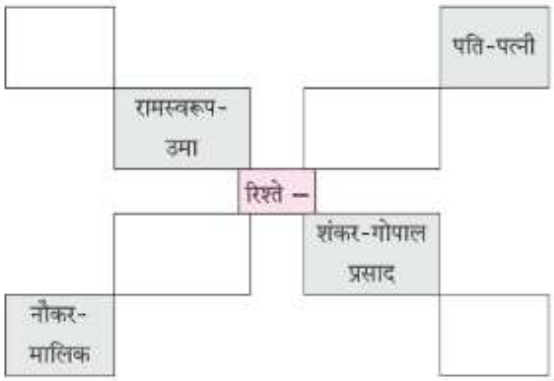

* (2) **आकृति पूर्ण कीजिए :**

(i) व्यावसायिक शिक्षा के नाम –

(ii) शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त वाद्यों के नाम –

(3) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

उमा को देखने आने वाले लोग –

उत्तर

(1)

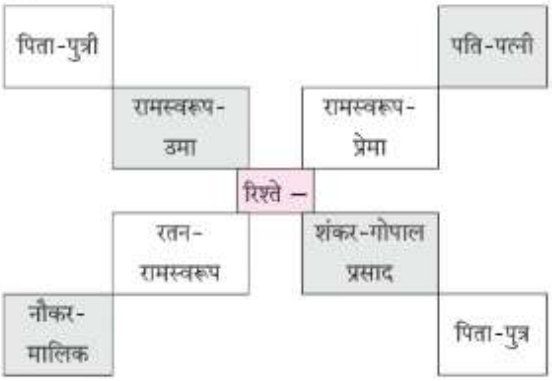

(2) (i) व्यावसायिक शिक्षा के नाम –
- वकील
- मेडिकल

(ii) शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त वाद्यों के नाम –
- हारमोनियम
- सितार

(3) उमा को देखने आने वाले लोग –
- पढ़े-लिखे हैं
- वकील हैं
- सभा सोसाइटियों में जाते हैं
- चाहते हैं कि लड़की ज्यादा पढ़ी लिखी न हो।

कृति 2 : (आकलन)

(1) कारण लिखिए :

(i) उमा मेहमानों के सामने जरा करीने से आए –

*(ii) रामस्वरूप ने हारमोनियम उठाकर लाने को कहा –

(2) ये वाक्य किसने, किससे कहे हैं? लिखिए :

(i) अबे! धीरे-धीरे चल।

(ii) बिछा दें साहब?

(iii) लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी उमा तो मुँह फुलाए पड़ी है।

(iv) अरे हाँ, देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए।

(3) दो ऐसे प्रश्न बनाइए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) तख्त (ii) उमा।

उत्तर

(1) (i) गोपाल प्रसाद खूबसूरत बहू चाहते थे।

(ii) रामस्वरूप, गोपाल प्रसाद और शंकर को दिखाना चाहते थे कि उनकी लड़की हारमोनियम बजाना जानती है।

(2) (i) अबे! धीरे-धीरे चल। – रामस्वरूप ने रतन से कहा है।

(ii) बिछा दें साहब?– रतन ने रामस्वरूप से कहा है।

(iii) लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी उमा तो मुँह फुलाए पड़ी है। – प्रेमा ने रामस्वरूप से कहा है।

(iv) अरे हाँ, देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए। – रामस्वरूप ने प्रेमा से कहा है।

(3) (i) कमरे में रतन क्या बिछाता है?

(ii) मुँह फुलाए कौन पड़ी है?

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखिए :

(i) बेटी (ii) तकलीफ

(iii) रास्ता (iv) छुट्टी।

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) पसीना (ii) अक्ल

(iii) मजबूरी (iv) सितार।

(3) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म पूर्ण कीजिए।

*(i) पढ़े ---------- *(ii) सभा ----------

(iii) ठीक ---------- (iv) धीरे ----------

उत्तर

(1) (i) बेटी – बेटियाँ (ii) तकलीफ – तकलीफें

(iii) रास्ता – रास्ते (iv) छुट्टी – छुट्टियाँ।

(2) (i) पसीना – पुल्लिंग (ii) अक्ल – स्त्रीलिंग

(iii) मजबूरी – स्त्रीलिंग (iv) सितार – पुल्लिंग।

(3) (i) पढ़े-लिखे (ii) सभा-सोसायटी

(iii) ठीक-ठाक (iv) धीरे-धीरे।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा की बात छिपाते हैं, उसे अपनी मजबूरी बताते हैं' इस विषय में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : रामस्वरूप एक अच्छे पिता हैं। उमा उनकी इकलौती पुत्री है। वे स्त्री शिक्षा के पक्षधर हैं। इसलिए उमा को बी. ए. तक पढ़ाते हैं। वे उमा का विवाह एक शिक्षित परिवार के सुशिक्षित युवक से करना चाहते हैं। यह नाटक जिस दौर में लिखा गया, उस समय सभी लोग स्त्री शिक्षा को महत्त्व नहीं देते थे, आवश्यक नहीं समझते थे। लोगों की नजरों में बहू की उच्च शिक्षा घरेलू जीवन में व्यवधान थी। परिणामस्वरूप जहाँ कहीं भी वे विवाह-संबंध के लिए बात करते, बेटी की उच्च शिक्षा बाधा बन जाती। कहीं भी विवाह निश्चित न हो पाने के कारण रामस्वरूप परेशान हो जाते हैं और मजबूर होकर उमा के बी. ए. तक पढ़े होने की बात छिपाने का रास्ता चुनते हैं। स्वयं प्रगतिशील विचारों का होते हुए भी विवाह योग्य लड़की का पिता होने के कारण रामस्वरूप जी को विवशतावश रूढ़िग्रस्त लोगों के सामने झुकना पड़ता है। यही उनकी मजबूरी है।

6414132

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 36 – 37)

गो. प्रसाद : अच्छा तो साहब ..... पान भिजवा देना।

शब्दार्थ

तश्तरी – छोटी थाली। **बैकबोन** – रीढ़ की हड्डी। **खँखारना** – गला साफ करना। **तकल्लुफ** – शिष्टाचार। **तशरीफ लाना** – विराजना, आसनस्थ होना। **निहायत** – अत्यधिक। **जायचा** – जन्मपत्र, कुंडली।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

गोपाल प्रसाद की दृष्टि में बहू ऐसी हो –
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) अच्छा तो साहब, फिर ..... की बातचीत हो जाए। *(काम/शादी/बिजनेस)*

(ii) जरा ..... तो कर लीजिए। *(नाश्ता/आराम/भोजन)*

(iii) ब्याह तय करने आए हो, ... सीधी करके बैठो। *(गरदन/कमर/टाँगें)*

(iv) वाकई आजकल ..... का सवाल भी बेढब हो गया है। *(खूबसूरती/महँगाई/टैक्स)*

उत्तर

(1) गोपाल प्रसाद की दृष्टि में बहू ऐसी हो –
- खूबसूरत हो।
- सिलाई-पुराई जानती हो।
- अधिक पढ़ी-लिखी न हो।
- चश्मा न पहनती हो।

(2) (i) अच्छा तो साहब, फिर बिजनेस की बातचीत हो जाए।

(ii) जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

(iii) ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो।

(iv) वाकई आजकल खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है।

कृति 2 : (आकलन)

(1) गलत वाक्यों को सही करके फिर से लिखिए :

(i) यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ ठहरेंगे।

(ii) सुना है, सरकार अब ज्यादा जमीन खरीदने वालों पर टैक्स लगाएगी।

(2) घटना के अनुसार वाक्यों का उचित क्रम लगाकर लिखिए :

(i) शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए?

(ii) ठाकुर जी के चरणों में रख दिया है।

(iii) तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की बैकबोन–

(iv) आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

उत्तर

(1) (i) यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए।

(ii) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर टैक्स लगाएगी।

(2) (i) तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की बैकबोन–

(ii) आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

(iii) शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए?

(iv) ठाकुर जी के चरणों में रख दिया है।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) दोस्त (ii) आमदनी

(iii) मुश्किल (iv) खूबसूरती।

(2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) नाश्ता (ii) खयाल

(iii) ब्याह (iv) जरूरी।

(3) गद्यांश में प्रयुक्त उर्दू शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) .....

(iii) ..... (iv) .....

उत्तर

(1) (i) दोस्त × दुश्मन (ii) आमदनी × खर्च

(iii) मुश्किल × आसान (iv) खूबसूरती × बदसूरती।

6414132

(2) (i) नाश्ता = जलपान (ii) खयाल = विचार
(iii) ब्याह = शादी (iv) जरूरी = आवश्यक।

(3) (i) तकल्लुफ (ii) तकदीर (iii) तशरीफ (iv) खूबसूरती।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'गोपाल प्रसाद विवाह को बिजनेस मानते हैं' इस विषय में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : गोपाल प्रसाद विवाह को एक बिजनेस मानते हैं। जिस प्रकार एक व्यापारी पहले अपने लाभ-हानि का विचार करता है, फिर व्यापार करता है। उसी प्रकार गोपाल प्रसाद अपने डॉक्टर पुत्र का विवाह एक संपन्न परिवार में करना चाहते हैं। हिंदू समाज में विवाह एक ऐसा पवित्र बंधन माना जाता है, जो दो परिवारों को सदा के लिए एक कर देता है। दोनों परिवार एक-दूसरे के सुख-दुख में साथी होते हैं। परंतु गोपाल प्रसाद के लिए विवाह दो परिवारों का मिलन न होकर एक प्रकार का बिजनेस है। वे चाहते हैं कि एक अच्छी हैसियत वाले परिवार की कम पढ़ी-लिखी लड़की से बेटे का विवाह कराया जाए, ताकि बढ़िया-सा दहेज मिले और वह बिना किसी नाज-नखरे के घर के कामों में लगी रहे।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

8414132

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 37 – 38)
गो. प्रसाद और शंकर : (एक साथ)चश्मा!!! ..... जीते थे?

शब्दार्थ

छवि – तेज, निखार। **झेंपती-सी** – शरमाती-सी (यहाँ अर्थ)। **जिम्मे** – (यहाँ अर्थ) जिम्मेदारी।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) **कारण लिखिए :**
(i) बाप-बेटे चौंक उठे –
(ii) उमा को चश्मा लगा –

(2) **उमा की विशेषताएँ लिखिए।**

उमा की विशेषताएँ –
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

उत्तर

(1) (i) उन्होंने उमा के चेहरे पर सुनहरी रिमवाला चश्मा देखा।
(ii) पिछले महीने उमा की आँखें दुखने लगी थीं।

(2)
उमा की विशेषताएँ–
↓
चेहरे पर छवि है।
↓
बाजा व सितार बजाती है।
↓
अच्छा गाती है।
↓
पेंटिंग व सिलाई करती है।

कृति 2 : (आकलन)

(1) **वाक्य पूर्ण कीजिए :**
(i) जी हाँ सितार भी और बाजा भी। सुनाओ तो उमा .....।
(ii) सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, ...।

(2) **विधानों के सामने सत्य/असत्य लिखिए :**
(i) पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ।
(ii) आपकी लड़की सितार अच्छा बजाती है।
(iii) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी सीखी है?
(iv) हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-बिनाम भी जीते थे।

(3) **जोड़ियाँ मिलाइए :**

'अ'	'आ'
(i) सकपकाना	मीरा
(ii) भजन	तख्त
(iii) तस्वीर	चश्मा
(iv) बाजा	कुत्तेवाली

उत्तर

(1) (i) जी हाँ सितार भी और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।
(ii) सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी।

(2) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य।

(3) (i) सकपकाना – चश्मा
(ii) भजन – मीरा
(iii) तस्वीर – कुत्तेवाली
(iv) बाजा – तख्त

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखिए :

(i) दीवार (ii) महीना (iii) कमीज (iv) आँखें।

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) चश्मा (ii) सिलाई (iii) तख्त (iv) दीवार।

(3) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म पूर्ण कीजिए :

*(i) पेंटिंग ..... (ii) गाना .....

(iii) पढ़ाई ..... (iv) इनाम .....

उत्तर

(1) (i) दीवार – दीवारें (ii) महीना – महीने

(iii) कमीज – कमीजें (iv) आँखें – आँख।

(2) (i) चश्मा – पुल्लिंग (ii) सिलाई – स्त्रीलिंग

(iii) तख्त – पुल्लिंग (iv) दीवार – स्त्रीलिंग।

(3) (i) पेंटिंग-वेंटिंग (ii) गाना-बजाना

(iii) पढ़ाई-वढ़ाई (iv) इनाम-बिनाम।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'गोपाल प्रसाद बहू में गाना-बजाना, सिलाई, पेंटिंग आदि गुण चाहते हैं पर पढ़ाई नहीं, क्या यह उचित है' इस विषय में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : गोपाल प्रसाद एक वकील हैं। उनका पुत्र डॉक्टर है। वे अपने पुत्र के लिए लड़की देखने आए हैं। वे अपनी पुत्रवधू के रूप में एक मैट्रिक पास लड़की चाहते हैं। डॉक्टर पुत्र और मैट्रिक पास पुत्रवधू। कैसा विरोधाभास लगता है। पति और पत्नी गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहियों की तरह होते हैं। यदि दोनों पहिये समान नहीं होंगे, तो गाड़ी सुचारू रूप से कैसे चलेगी। गोपाल प्रसाद चाहते हैं कि भावी पुत्रवधू सुंदर हो। वह बाजा बजाना जानती हो, उसे अच्छी तरह गाना आता हो। वह न केवल सिलाई-पेंटिंग करना जानती हो, बल्कि उसमें प्रवीण भी हो। घर के सारे काम करती रहे। उसके गुणों की चर्चा करके परिवार के लोग वाहवाही लूटते रहें। गोपाल प्रसाद की सोच किसी भी तरह उचित नहीं कही जा सकती।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 38 – 39)

रामस्वरूप : जवाब दो, ... बैकबोन।

शब्दार्थ

रूखा – व्यवहार की कठोरता। **ताव** – अहंकारयुक्त रोष का आवेश। **नाप-तौल** – नापने और तौलने की क्रिया। **दगा** – धोखा, फरेब, छल।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) दुकानदार इनसे कुछ नहीं पूछता – [ ]

(ii) जो आप इतनी देर से यह कर रहे हैं – [ ]

(iii) क्या हम लड़कियों की यह नहीं होती – [ ]

(iv) बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ यह किया – [ ]

(2) नीचे दिए गए शब्दों के आधार पर प्रश्न बनाइए :

(i) शंकर (ii) उमा।

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

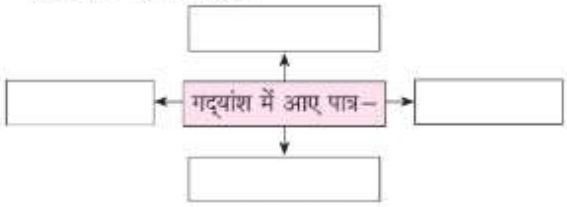

उत्तर

(1) (i) दुकानदार इनसे कुछ नहीं पूछता – कुर्सी-मेज से

(ii) जो आप इतनी देर से यह कर रहे हैं – नाप-तौल

(iii) क्या हम लड़कियों की यह नहीं होती – बेइज्जती

(iv) बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ यह किया – दगा

(2) (i) नौकरानी के पैरों में पड़कर मुँह छुपाकर कौन भागा था?

(ii) कौन बी.ए. पास है?

(3)

कृति 2 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

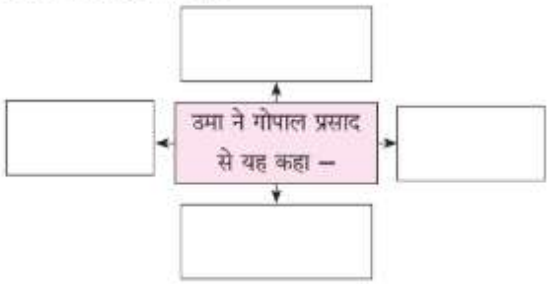

6414132

(2) कारण लिखिए :

(i) शंकर नौकरानी के पैरों में पड़कर मुँह छिपाकर भागा।

*(ii) उमा को गुस्सा आया –

(iii) गोपाल प्रसाद का रामस्वरूप पर गुस्सा होना।

(iv) उमा का तेज आवाज में बोलना।

उत्तर

(1)

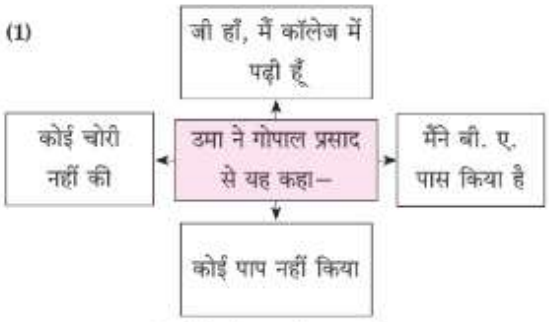

(2) (i) शंकर लड़कियों के होस्टल में ताक-झाँक करता पकड़ा गया था।

(ii) गोपाल प्रसाद उमा के चश्मे, उसके गाने-बजाने, पेंटिंग, सिलाई और उसकी पढ़ाई आदि के बारे में एक के बाद एक प्रश्न करते जा रहे थे।

(iii) क्योंकि रामस्वरूप ने उनके साथ दगा किया है।

(iv) क्योंकि नाप-तोल करके उमा की बेइज्जती की जा रही थी।

6414132

कृति 3 : (शब्द संपदा)

*** (1) कृदंत बनाइए :**

(i) पढ़ना (ii) समझना (iii) सीना (iv) चाहना।

(2) गद्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) ..... (iii) ..... (iv) .....

(3) गद्यांश में प्रयुक्त प्रत्ययुक्त शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए।

(i) ..... (ii) ..... (iii) ..... (iv) .....

*** (4) शब्द-युग्म पूर्ण कीजिए :**

सीधा .....

(5) गद्यांश में आई हुई दो समानार्थी शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए ।

(i) ..... = ...

(ii) ..... = ...

उत्तर

(1) (i) पढ़ना – पढ़ाकू (ii) समझना – समझदार

(iii) सीना – सीनेवाला (iv) चाहना – चाहत।

(2) (i) पेंटिंग (ii) बैकबोन (iii) होस्टल (iv) मैट्रिक।

(3) (i) दुकानदार = दुकान + दार (ii) कायरता = कायर + ता

(iii) नौकरानी = नौकर + आनी (iv) बेइज्जती = बेइज्जत + ई।

(4) सीधा-सादा।

(5) (i) बेटा = पुत्र (ii) इज्जत = मान।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

(1) उमा को गोपाल प्रसाद की किन बातों पर गुस्सा आया? क्या वह उचित था? इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : गोपाल प्रसाद अपने डॉक्टर लड़के के विवाह के लिए उमा को देखने आते हैं। वे स्वयं वकील हैं परंतु उन्हें पुत्रवधू केवल मैट्रिक पास चाहिए। गोपाल प्रसाद का मानना है कि स्त्रियों का काम केवल घर सँभालना होता है। वे कभी उमा से गाने-बजाने की बात कर रहे थे, कभी यह जानना चाह रहे थे कि उसे सिलाई-पेंटिंग आदि करना आता है या नहीं, कुछ इनाम वगैरह भी जीते हैं या नहीं। उमा को इन सब बातों पर तो गुस्सा आ ही रहा था। परंतु उसे इससे भी अधिक गुस्सा उनके पुत्र को देखकर आ रहा था। वह जानती थी कि शंकर एक चरित्रहीन युवक है। वह लड़कियों के होस्टल के पास ताक-झाँक करते हुए पकड़ा गया था और उसे बेइज्जत करके वहाँ से निकाला गया था। शंकर के जीवन का कोई आदर्श नहीं था। ऐसे विचारहीन, चरित्रहीन व्यक्ति का उमा के जीवन में कोई स्थान नहीं था। उमा कोई भेड़-बकरी या निर्जीव वस्तु नहीं है कि लोग देख-भालकर अपनी इच्छानुसार खरीद सकें। विवाह में उसे भी पसंद-नापसंद का अधिकार मिलना चाहिए। उसे उचित सम्मान मिलना चाहिए।

*** (2) सुनी-पढ़ी अंधविश्वास की किसी घटना में निहित आधारहीनता और अवैज्ञानिकता का विश्लेषण करके लिखिए।**

उत्तर : मेरी दादी बड़ी अंधविश्वासी हैं। उनका मानना था कि कोई घर से बाहर जा रहा हो और किसी को छींक आ जाए तो जाने वाले का काम पूरा नहीं होगा। किसी के बाहर जाते समय कोई छींक दे तो दादी बाहर जाने वाले को रोक देती थीं। घर के सभी लोग उनकी इस आदत से परेशान थे। एक बार मेरे भाई को इंटरव्यू के लिए बाहर जाना था। यह इंटरव्यू हमारे जिले के सर्वश्रेष्ठ स्कूल में वाइस प्रिंसिपल के पद के लिए था। भाई काफी दिनों से इसके लिए तैयारी और प्रतीक्षा कर रहे थे। मुझे बहुत खाँसी-जुकाम हो रहा था। जैसे ही भाई ने बैग उठाकर चलना चाहा, मुझे जोर-जोर से छींकें आने लगीं। दादी ने भाई को जाने नहीं दिया और उनका वह महत्त्वपूर्ण इंटरव्यू छूट गया। घर के सभी लोग इस घटना से बहुत दुखी हुए। मैंने दादी को समझाया कि छींक एक स्वाभाविक क्रिया है। जुकाम होने पर नाक में एक प्रकार की सरसराहट होती है। नाक में मौजूद नर्व सेल इसका संकेत मस्तिष्क को भेजते हैं। मस्तिष्क इसकी प्रतिक्रिया में चेहरे, गले और छाती की

मांसपेशियों को सक्रिय कर देता है, जिसके फलस्वरूप ये सब मिलकर तेज हवा निकालकर बाहरी कणों को बाहर फेंक देते हैं। यही क्रिया छींक है। दादी के मन में भी भाई के इंटरव्यू को लेकर अफसोस था। उन्होंने मेरी बात समझी और धीरे-धीरे अपनी इस आदत को छोड़ दिया।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) बापू की लिखावट अच्छी नहीं थी।

(ii) कुछ बिजनेस की बातचीत हो जाए।

(iii) मैंने आपसे पहले ही कहा था।

उत्तर : (i) **अच्छी** – गुणवाचक विशेषण।

(ii) **बातचीत** – भाववाचक संज्ञा।

(iii) **मैंने** – पुरुषवाचक सर्वनाम ।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) शायद (ii) या (iii) ऊपर।

उत्तर : (i) शायद आज वर्षा होगी।

(ii) बच्चे खेलने या घूमने गए होंगे।

(iii) छत के ऊपर बंदर कूद रहे हैं।

6414132

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	मनः + हर	----------

अथवा

वागीश	----------	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
मनोहर	मनः + हर	**विसर्ग संधि**

अथवा

वागीश	**वाक् + ईश**	**व्यंजन संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूलरूप लिखिए :**

(i) आपकी लड़की अच्छा गाती है।

(ii) मैं आपको बताना ही भूल गया।

(iii) अब तख्त को उधर मोड़ दें।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) है	होना
(ii) गया	जाना
(iii) दें	देना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्विवितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) चढ़ना (ii) पढ़ना (iii) उड़ना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वि.प्रेरणार्थक रूप
(i) चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
(ii) पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
(iii) उड़ना	उड़ाना	उड़वाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) तिलिस्म टूटना (ii) बस चलना (iii) खेल करना।

उत्तर :

(i) तिलिस्म टूटना।

अर्थ : वास्तविकता सामने आना।

वाक्य : ढोंगी साधु की सच्चाई प्रकट होते ही उसका तिलिस्म टूट गया।

(ii) बस चलना।

अर्थ : काबू में होना, सामर्थ्य होना ।

वाक्य : बेटे का बस चले तो वह अपनी माँ को सारे तीर्थ करा दे।

(iii) खेल करना।

अर्थ : काम को ठीक से न करना, काम को बिगाड़ना ।

वाक्य : सड़क बनाने का काम कर रहे मजदूरों में से कुछ तो खेल ही कर रहे थे।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

(गिनती में न होना, अंजाम देना, कानों में गूँजना)

(i) काम कैसा भी हो, उसे पूरा करना कर्मचारी का कर्तव्य है।

(ii) माता जी के कहे वचन आज भी राजू को सुनाई देते हैं।

उत्तर :

(i) काम कैसा भी हो, उसे अंजाम देना कर्मचारी का कर्तव्य है।

(ii) माता जी के कहे वचन आज भी राजू के कानों में गूँजते हैं।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उनका भेद लिखिए :**

(i) नहीं साहब वह तो मैंने अर्ज किया न।

(ii) आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं।

(iii) अब तख्त को उधर मोड़ दे।

उत्तर (i) **मैंने** – कर्ता कारक।

(ii) **आपके** – संबंध कारक।

(iii) **तख्त को** – कर्म कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) अरे प्रेमा वे आ भी गए तुम उमा को समझा देना थोड़ा सा गा देगी मेहमानों से हँ हँ हँ आइए आइए

(ii) ठीक लेकिन हाँ बेटी तुमने कुछ इनाम बिनाम भी जीते थे

(iii) बिजनेस समझकर ओह अच्छा अच्छा लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए

उत्तर : (i) अरे प्रेमा, वे आ भी गए। ... तुम उमा को समझा देना, थोड़ा-सा गा देगी। (मेहमानों से) हँ-हँ-हँ। आइए, आइए!

(ii) ठीक!... लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-बिनाम भी जीते थे?

(iii) 'बिजनेस'? – (समझकर) ओह!...अच्छा, अच्छा। लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) ठीक समय पर गो. प्रसाद और शंकर आते हैं। *(सामान्य भूतकाल)*

(ii) मेरी चाय में चीनी ज्यादा डालते हैं। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(iii) आपके पुत्र मुँह छिपाकर भागते हैं। *(पूर्ण भूतकाल)*

उत्तर : (i) ठीक समय पर गो. प्रसाद और शंकर आए।

(ii) मेरी चाय में चीनी ज्यादा डालिएगा।

(iii) आपके पुत्र मुँह छिपाकर भागे थे।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानिए :

(i) मैंने कोई पाप नहीं किया और न ही कोई चोरी की है।

(ii) उमा से कह देना कि जरा करीने से आए।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य (ii) मिश्र वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) उमा ने सितार पर भजन गाया। *(निषेधवाचक)*

(ii) गोपाल प्रसाद शंकर का विवाह उमा से करेंगे। *(प्रश्नवाचक)*

उत्तर :

(i) उमा ने सितार पर भजन नहीं गाया।

(ii) क्या गोपाल प्रसाद शंकर का विवाह उमा से करेंगे?

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(i) वे असली भारत के सपूत थे।

(ii) सोमनाथ को आबादी इतिहास में प्रसिद्ध है।

(iii) जिंदगी हमारी अब नहीं बचेगी।

उत्तर : (i) वे भारत के असली सपूत थे।

(ii) सोमनाथ की समृद्धि इतिहास में प्रसिद्ध है ।

(iii) अब हमारी जिंदगी नहीं बचेगी ।

6414132

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 41)

(1) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखांकित कीजिए और उनके भेद दिए गए स्थान में लिखिए :

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 41 देखिए।)

वाक्य	अव्यय	भेद
(1) गाय को घर के सामने खूँटे से बाँधा।	– के सामने	– संबंधबोधक अव्यय
(2) वह उठा और घर चला गया।	– और	– समुच्चयबोधक अव्यय
(3) अरे! गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है।	– अरे	– विस्मयादिबोधक अव्यय
(4) वह भारी कदमों से आगे बढ़ने लगा।	– आगे	– क्रियाविशेषण अव्यय
(5) उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया।	– धीरे-धीरे	– क्रियाविशेषण अव्यय

(6) मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी। – आज – क्रियाविशेषण अव्यय

(7) वाह-वाह! खूब सोचा आपने! – वाह-वाह – विस्मयादिबोधक अव्यय

(8) चाची, माँ के पास चली गई। – के पास – संबंधबोधक अव्यय

(2) पाठ में प्रयुक्त अव्यय छाँटिए और उनसे वाक्य बनाकर लिखिए :

(अ) क्रियाविशेषण अव्यय :

(1) धीरे-धीरे। **वाक्य** : मुन्ना धीरे-धीरे चलने लगा।

(2) ज्यादा। **वाक्य** : बीमारी से अभी उठे हो, ज्यादा मत खाओ।

(ब) संबंधबोधक अव्यय :

(1) के पास। **वाक्य** : हमारे स्कूल के पास नदी बहती है।

(2) के साथ। **वाक्य** : टॉमी गाड़ी के साथ दौड़ रहा है।

(क) समुच्चयबोधक अव्यय :

(1) कि। **वाक्य** : गांधी जी ने कहा था कि गाय करुणा की कविता है।

(2) और। **वाक्य** : दुर्योधन और कर्ण की मित्रता अनमोल थी।

(ड) विस्मयादिबोधक अव्यय :

(1) ओह! **वाक्य** : ओह! कितनी गरमी है।

(2) हैं हैं हैं! **वाक्य** : हैं हैं हैं ! आइए, विराजिए।

(3) नीचे दिए गए अव्ययों के भेद पहचानकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(1) हाय! – विस्मयादिबोधक अव्यय

वाक्य : हाय! कितनी भयानक रेल-दुर्घटना थी।

(2) काश! – विस्मयादिबोधक अव्यय

वाक्य : काश! समय पर दवा मिल जाती, तो रोगी बच जाता।

(3) प्रायः – क्रियाविशेषण अव्यय

वाक्य : प्रयाग प्रायः स्कूल में अनुपस्थित रहता है।

(4) बाद – क्रियाविशेषण अव्यय

वाक्य : स्कूल से आने के बाद थोड़ा आराम करके पढ़ने बैठो।

(5) और – समुच्चयबोधक अव्यय

वाक्य : शुभम और हर्षित भाई हैं।

(6) बल्कि – समुच्चयबोधक अव्यय

वाक्य : आपको निबंध केवल पढ़ना ही नहीं है, बल्कि उसकी समीक्षा भी करनी है।

(7) के पास – संबंधबोधक अव्यय

वाक्य : हमारे घर के पास एक मंदिर है।

(8) यदि... तो – समुच्चयबोधक अव्यय

वाक्य : यदि इसी तरह समय बरबाद करते रहे, तो पास नहीं हो पाओगे।

(9) इसलिए – समुच्चयबोधक अव्यय

वाक्य : मेहमान आने वाले हैं इसलिए जल्दी से खाना बना लो।

(10) वाह! – विस्मयादिबोधक अव्यय

वाक्य : वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

(11) की तरफ – संबंधबोधक अव्यय

वाक्य : नदी की तरफ जाओ।

(12) के अलावा – संबंधबोधक अव्यय

वाक्य : यहाँ मेरे और भगवान के अलावा कोई नहीं है।

(13) कारण – क्रियाविशेषण अव्यय

वाक्य : महिम, किस कारण तुम दस दिन तक स्कूल नहीं आए?

(14) के लिए – संबंधबोधक अव्यय

वाक्य : अंशु ने वारिजा के लिए फ्रॉक खरीदा।

(15) अच्छा – विस्मयादिबोधक अव्यय

वाक्य : अच्छा! स्तुति भी नृत्य में भाग लेगी।

(16) क्योंकि – समुच्चयबोधक अव्यय

वाक्य : अनुज कल स्कूल नहीं आया था, क्योंकि बीमार था।

(17) नहीं... तो – समुच्चयबोधक अव्यय

वाक्य : खेल-कूद छोड़कर पढ़ाई पर ध्यान दो, नहीं तो फेल हो जाओगे।

6414132

उपक्रम/कृति/परियोजना

• **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 39**

पाठ में आए अंग्रेजी शब्द पढ़िए और शब्दकोश की सहायता से उनका हिंदी में अनुवाद कीजिए।

उत्तर :

(1) कॉलेज – महाविद्यालय

(2) सोसायटी – समाज

(3) बी. एस्सी. – विज्ञान स्नातक

(4) कोर्स – पाठ्यक्रम

(5) वीक एंड – सप्ताहांत

(6) मार्जिन – गुंजाइश

(7) बिजनेस – व्यापार

(8) बैकबोन – रीढ़ की हड्डी

(9) टैक्स – कर

(10) पेंटिंग – चित्रकारी

(11) होस्टल – छात्रावास

(12) मैट्रिक – मैट्रिक

• **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 38**

विवाह में गाए जाने वाले पारंपरिक मंगल गीत सुनिए और सुनाइए।

• **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 37**

'दहेज एक अभिशाप' विषय पर चर्चा कीजिए।

• **'दहेज प्रथा' विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : दहेज अर्थात पुत्री के विवाह के समय पिता द्वारा उसे प्रेमपूर्वक दिए जाने वाले उपहार। समाज में यह प्राचीन काल से प्रचलित है। महाराज जनक ने भी सीता को दहेज दिया था। परंतु समय के साथ-साथ यह प्रथा कुप्रथा बनती गई। हमारे देश में अधिकतर समाजों में यह कुप्रथा अपना स्थान बना चुकी है। आज विवाह संबंध दो परिवारों का मिलन न होकर धन बटोरने का साधन बन गया है। कन्या पक्ष से बटोरी जाने वाली राशि वर की शिक्षा एवं पद के अनुरूप तय की जाती है। समाज में व्याप्त इस कलंक के कारण न जाने कितनी मासूम बच्चियाँ जन्म लेने से पहले ही मार दी जाती हैं। अनेक वधुएँ ससुरालवालों के अत्याचारों से त्रस्त होकर या तो आत्महत्या कर लेती हैं, या उन्हीं के द्वारा मार डाली जाती हैं। हालाँकि सन 1961 में दहेज प्रतिबंध अधिनियम लागू किया जा चुका है, पर फिर भी अनगिनत लोग दहेज ले रहे हैं और कन्याओं के माता-पिता को देना पड़ रहा है।

6414132

• **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 36**

आपके घर की किसी परंपरा के बारे में घर के बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कीजिए। वह परंपरा उचित है या अनुचित, इस पर अपना मत शब्दांकित कीजिए।

उत्तर : हमारे घर में जिससे कुछ लाभ होता है, उसकी पूजा करने की परंपरा रही है। हम सूर्य और चंद्रमा की पूजा करते हैं। इसके अलावा वृक्षों में नीम, वट और पीपल की भी पूजा की जाती है। इन सबसे हमें कोई न कोई लाभ होता है। तुलसी के पौधे से तो लाभ ही लाभ है। इससे वातावरण शुद्ध रहता है। घर में मच्छर-मक्खी नहीं आते। इसकी पत्तियाँ और मंजरी औषधि के रूप में काम में आती हैं। इसलिए लोग तुलसी को अपने आँगन, बगीचे तथा घर के आसपास लगाते हैं। उसकी श्रद्धापूर्वक सेवा और पूजा करते हैं। इससे इस उपयोगी पौधे का संरक्षण होता है। इसलिए तुलसी की पूजा अवश्य होनी चाहिए।

उपयोजित लेखन

• **अपने परिसर में विद्यार्थियों के लिए 'योगसाधना शिविर' का आयोजन करने हेतु आयोजक के नाते विज्ञापन तैयार कीजिए।**

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 41)

उत्तर :

क्या आप हर समय तनावग्रस्त रहते हैं।

क्या आपको अच्छी तरह नींद नहीं आती।

क्या आपका स्वास्थ्य हमेशा खराब रहता है।

क्या आपका वजन बढ़ता जा रहा है।

?

तो आपके लिए खुशखबर है

शीघ्र ही आपके नगर में आयोजन हो रहा है

एक योगसाधना शिविर का

स्थान : टाउन हॉल

समय : प्रातः एवं सायं 6 बजे से 9 बजे तक

जानकारी के लिए संपर्क करें : 1234xxxxxx

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

10 ठेस (पूरक पठन–गद्य)

– फणीश्वरनाथ रेणु

विषय-प्रवेश : कलाकार किसी भी धर्म, जाति और वर्ग का हो, उसे अपनी कला पर अभिमान होता है। वह स्वाभिमान के मूल्य को समझता है और उसकी रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहता है। जाति या धर्म के नाम पर जब उसके स्वाभिमान पर आघात होता है तो वह उसे बरदाश्त नहीं करता।

प्रस्तुत कहानी में सिरचन नामक एक ग्रामीण कलाकार का वर्णन किया गया है। वह मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी (चटाई), बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, ताल के सूखे पत्तों की छतरी-टोपी आदि उपयोगी वस्तुएँ बनाता है। ये वस्तुएँ बनाकर वह अपनी आजीविका कमाता है। स्वाभिमानी होने के कारण वह हर परिस्थिति में अपने स्वाभिमान की रक्षा करता है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **मुँह लाल होना** – क्रोधित होना।

(2) **ठेस लगना** – दुखी होना, बुरा अनुभव होना।

(3) **फूट-फूटकर रोना** – जोर-जोर से रोना।

(4) **मुँह लटकाना** – निराश होना।

टिप्पणी

(1) **खेसारी का सत्तू** – भुनी हुई लतरी (दाल) का आटा।

(2) **पटेर की पाटी** – तालाबों में उगने वाले सरकंडे की जाति के पौधे के पत्तों से बनी हुई चटाई।

(3) **मूँज की रस्सी** – सरकंडे के छिलके (मूँज) से बनी रस्सी।

(4) **मोथी घास** – नागरमोथा, एक घास, जिससे औषधि भी बनाई जाती है।

(5) **कुश** – धार्मिक कार्यों में उपयोगी एक घास, दर्भ।

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 3 (अ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 42)
खेती-बारी ..... बनाना सीखी हैं!''

शब्दार्थ

बेगार – बिना मजदूरी के जबरदस्ती लिया गया काम। **चटोर** – स्वादलोलुप। **मड़ैया** – झोंपड़ी। **चिक** – बाँस की तीलियों का बना हुआ परदा। **बेपानी करना** – बेइज्जत करना। **नाखून से खाँटकर** – थोड़ा-सा।

कृति 1 : (आकलन)

(1) **कारण लिखिए :**

गाँव के लोग अब सिरचन को खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए इसलिए नहीं बुलाते –

(2) **वाक्यों को उचित क्रम लगाकर लिखिए :**

(i) मैं पहले ही पूछ लेता, भोग क्या-क्या लगेगा?

(ii) तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाना सीखी हैं?

*(iii) लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं।

(iv) मुफ्त में मजदूरी देनी हो, तो और बात है।

(3) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

एक समय ऐसा भी था, जब –
- .....
- .....
- .....
- .....

*(4) **कृति पूर्ण कीजिए :**

सिरचन को लोग कहते –
- [ ]
- [ ]

(5) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

(i) बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती लिया गया काम– .....

(ii) बाँस की तीलियों से बना परदा– .....

उत्तर

(1) लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। दूसरे मजदूर खेत पर पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकते हैं, तब पगडंडी पर तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा।

(2) (i) लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं।

(ii) मुफ्त में मजदूरी देनी हो, तो और बात है।

(iii) मैं पहले ही पूछ लेता, भोग क्या-क्या लगेगा?

(iv) तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाना सीखी है?

(3)

एक समय ऐसा भी था, जब –
- सिरचन की मड़ैया के पास बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं
- लोग उसकी खुशामद करते थे
- लोग कहते–एक दिन का समय निकालकर चलो
- लोग कहते–अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है

(4)

सिरचन को लोग कहते –
- मुफ्तखोर
- कामचोर

(5) (i) बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती लिया गया काम– बेगार।

(ii) बाँस की तीलियों से बना परदा– चिक।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'खेत-खलिहान की मजदूरी' इस विषय में 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : भारत गाँवों और खेतों का देश है। यहाँ आज भी देश की दो-तिहाई जनता खेती से जुड़ी है। खेत हैं, खेती है तो मजदूर भी जरूरी हैं। मजदूर और किसान एक-दूसरे के पूरक हैं। मजदूर के बिना किसानों का काम असंभव-सा होता है। फसल की बुआई, गुड़ाई, निराई, सिंचाई आदि के काम के लिए मजदूरों की आवश्यकता होती ही है। भूमिहीन मजदूर परिवार बहुत गरीब होते हैं। उनके पास अपनी जमीन नहीं होती। उन्हें रोजी-रोटी के लिए दूसरों के खेतों में काम करना पड़ता है। फसल की बुआई और कटाई के समय तो बड़े किसानों के खेतों में उन्हें काम और मजदूरी मिल जाती है, परंतु पूरे वर्ष काम नहीं मिल पाता। ऐसे समय इन मजदूरों को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए मजदूरी के अन्य कार्य करने पड़ते हैं। बार-बार कर्ज लेना पड़ता है।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 43)

सिरचन जाति ..... नहीं बोलेगा...

शब्दार्थ

तन्मयता – लगन। **मुँहजोर** – मुँहफट। **झाला** – तीखापन। **अधकपाली दर्द** – आधे सिर में होने वाला दर्द। **मोथी** – एक प्रकार की घास। **शीतलपाटी** – चटाई। **मूँज** – एक प्रकार का तृण, घास। **बेकाम** – अनुपयोगी, बेकार।

कृति 1 : (आकलन)

(1) कृति पूर्ण कीजिए :

(i)

सिरचन का काम करने का ढंग ऐसा था –
- [ ]
- [ ]

*(ii)

सिरचन का मेहनताना –
- [ ]
- [ ]

(2) गलत वाक्य सही करके लिखिए :

(i) दूध, घी, मलाई न मिले तो कोई बात नहीं किंतु बात में जरा भी झाला सिरचन नहीं बरदाश्त कर सकता।

(ii) आज तो अब अधकपाली दर्द के कारण मन ठीक नहीं है। थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा।

*(3) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

सिरचन को आने वाले काम –
- .....
- .....
- .....
- .....

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) सिरचन जाति का यह है – [ ]

(ii) बिना इसके पेट भर भात पर काम करने वाला कारीगर – [ ]

(iii) सिरचन को लोग यह भी समझते हैं – [ ]

(iv) ऐसे बहुत-से काम हैं जिन्हें इसके सिवा गाँव में कोई नहीं जानता – [ ]

(5) कृति पूर्ण कीजिए :

काम की तन्मयता में बाधा पड़ने पर सिरचन की प्रतिक्रिया –

[ ] [ ]

(6) उत्तर लिखिए : ***(नवंबर '20)***

(i) सिरचन को आकर्षित करने वाली चीजें –

[ ] [ ]

(ii) सिरचन के स्वयं के बारे में विचार –

[ ] [ ]

6414132

उत्तर

(1) (i) सिरचन का काम करने का ढंग ऐसा था –

- एक-एक मोथी और पटेर की बड़ी जतन से कुच्ची बनाता
- कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त

(ii) सिरचन का मेहनताना –

- पेट भर खाना
- एकाध पुराना-धुराना कपड़ा

(2) (i) दूध में कोई मिठाई न मिले तो कोई बात नहीं किंतु बात में जरा भी झाला सिरचन नहीं बरदाश्त कर सकता।

(ii) आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है। थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा।

(3)

सिरचन को आने वाले काम –

- मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी बनाना
- बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक बनाना
- सतरंगे डोर के मोढ़े बनाना
- भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के जाले बनाना

(4) (i) सिरचन जाति का यह है – कारीगर

(ii) बिना इसके पेट भर भात पर काम करने वाला कारीगर – मजदूरी

(iii) सिरचन को लोग यह भी समझते हैं – चटोर

(iv) ऐसे बहुत-से काम हैं जिन्हें इसके सिवा गाँव में कोई नहीं जानता – सिरचन

(5)

काम की तन्मयता में बाधा पड़ने पर सिरचन की प्रतिक्रिया –

- फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम
- ...सिरचन मुँह-जोर है, कामचोर नहीं

(6) (i) सिरचन को आकर्षित करने वाली चीजें –

- दही की कढ़ी
- मलाईवाला दूध

(ii) सिरचन के स्वयं के बारे में विचार –

- वह मुँहजोर है
- कामचोर नहीं

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• 'कार्य में तन्मयता लाती है सफलता' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। ***(नवंबर '20)***

उत्तर : कोई कार्य करने और तन्मयता से काम करने दोनों में फर्क होता है। साधारण ढंग से कोई कार्य करना किसी काम को जैसे-तैसे पूरा कर देना होता है। जबकि तन्मयता से काम करने का मतलब है किसी काम को रुचि से, उसके प्रत्येक अंग पर बारी की से ध्यान देकर श्रेष्ठतम ढंग से करना। इस तरह का काम तब होता है, जब काम करने वाला व्यक्ति उसमे तल्लीन हो कर काम करता है। तल्लीनता से काम करने पर व्यक्ति में विपुलता आती है और वह अपने काम में विशेषतज्ञा प्राप्त कर लेता है। विशेषज्ञ व्यक्ति अपने क्षेत्र के सफल व्यक्ति कहे जाते हैं। ऐसे सफल व्यक्ति शिक्षा, राजनीति व्यवसाय, तकनीक और समाज सब जगह दिखाई देते हैं। ये सब अपने क्षेत्र में

तल्लीनता से कार्य करने के कारण सफल हुए हैं। इनसे हमें शिक्षा लेनी चाहिए और अपना काम तल्लीनता से करना चाहिए।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 43 – 44)
इस बार मेरी ..... देखती है न!''

शब्दार्थ

बैरंग – बिना टिकट लगा, तुरंत। **तैनात** – नियुक्त। **तीली** – मोटी सींक, सलाई। **कमानी** – लचीली एवं झुकाई हुई कीली, धुरी, खूँटी। **झब्बा** – गुच्छा, सुतली आदि में लगाया जाने वाला फुँदना। **मुँगिया** – मूँग के आटे से बना पदार्थ।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

मानू की विदाई के एक सप्ताह पहले ही लेखक की माँ ने यह किया –
- .....
- सिरचन को काम पर तैनात करवा दिया
- .....

(2) वाक्यों को उचित क्रम लगाकर लिखिए :

(i) मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है।
(ii) मँझली भाभी का मुँह लटक गया।
(iii) रंगीन सुतलियों में झब्बे डालकर सिरचन चिक बुनने बैठा।
(iv) मँझली भाभी से रहा नहीं गया।

(3) कारण लिखिए :

मझली भाभी का मुँह लटक गया –

(4) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(i) मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को –
(ii) मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया लड्डू, बेटी की बिदाई के समय –

(5) कृति पूर्ण कीजिए :

मानू के दूल्हे ने मँगवाई थीं –
- .....
- .....

उत्तर

(1)

मानू की विदाई के एक सप्ताह पहले ही लेखक की माँ ने यह किया –
- काम के बदले नई मोहर छापवाली धोती की बात की
- सिरचन को काम पर तैनात करवा दिया
- मन लगाकर काम करने की हिदायत दी

(2) (i) रंगीन सुतलियों में झब्बे डालकर सिरचन चिक बुनने बैठा।
(ii) मँझली भाभी से रहा नहीं गया।
(iii) मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है।
(iv) मँझली भाभी का मुँह लटक गया।

(3) मझली भाभी का प्रस्ताव सुनकर सिरचन ने कहा कि बहुरिया, मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुर्ता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती। मानू दीदी का दूल्हा अफसर है। सिरचन की बात सुनकर मझली भाभी का मुँह लटक गया।

(4) (i) मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को लिखकर चेतावनी दे दी है।
(ii) मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया लड्डू, बेटी की बिदाई के समय रोज मिठाई जो खाने को मिलेगी।

(5)

मानू के दूल्हे ने मँगवाई थीं–
- तीन जोड़ी फैशनेबल चिक
- पटेर की दो शीतलपाटियाँ

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'मन लगाकर काम करना एक गुण है' इस विषय में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : किसी भी काम को मन लगाकर अर्थात तन्मयता से करना एक गुण है। उसका फल भी हमें मिलता है। मन लगाकर किए गए काम के परिणाम हमेशा उत्तम होते हैं। जिस काम को करने में मन लगता है, वह कभी बोझ नहीं लगता। जो काम मन मारकर करना पड़े, वह बोझ बन जाता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो एक किनारे खड़े होकर नाव की तलाश करते हैं अर्थात उचित काम और अवसर की तलाश करते रहते हैं और वह अवसर कभी नहीं आता, वे जिंदगी भर इंतजार ही करते रहते हैं। कुछ लोग नौकरी में मन लगाकर काम ही नहीं करना चाहते। दूसरे साथी जब मेहनत और लगन से काम करके प्रोन्नति पाकर आगे बढ़ जाते हैं, तो ईर्ष्या के वश होकर उन्हें अधिकारियों का चमचा आदि कहते हैं।

6414137

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 44 – 45)
दूसरे दिन चिक ..... कान मत दो!

शब्दार्थ

पाँति – पंक्ति। **लक्ष्य करना** – ध्यान से देखना। **कलेवा** – सुबह का जलपान। **तमतमाकर** – क्रोधित होकर। **बतकुट्टी** – बात काटने की क्रिया।

कृति 1 : (आकलन)

(1) ये वाक्य किसने, किससे कहे हैं? लिखिए :

(i) आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है?

(ii) अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती?

(iii) बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी!

(iv) किसी के नैहर-ससुराल की बात क्यों करेगा वह?

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) सिरचन को काम में मगन होकर खाने-पीने की यह न रहती। – [ ]

(ii) चिक में सुतली के फंदे डालकर सिरचन ने इस पर निगाह डाली। – [ ]

(iii) मानू यह सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी। – [ ]

(iv) अरी मँझली, सिरचन को यह क्यों नहीं देती। – [ ]

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

माँ ने तमक कर सिरचन से कहा –
- [ ]
- [ ]
- जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो।

उत्तर

(1) (i) आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है? – लेखक ने माँ से कहा है।

(ii) अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती? – लेखक की माँ ने मँझली भाभी से कहा है।

(iii) बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी! – सिरचन ने लेखक की माँ से कहा है।

(iv) किसी के नैहर-ससुराल की बात क्यों करेगा वह? – चाची ने लेखक की माँ से कहा है।

(2) (i) सिरचन को काम में मगन होकर खाने-पीने की यह न रहती। – सुध

(ii) चिक में सुतली के फंदे डालकर सिरचन ने इस पर निगाह डाली। – सूप

(iii) मानू यह सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी। – पान

(iv) अरी मँझली, सिरचन को यह क्यों नहीं देती। – बुँदियाँ

(3)
माँ ने तमक कर सिरचन से कहा –
- सिरचन, तुम काम करने आए हो, अपना काम करो।
- बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत है?
- जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'बहू के मायके की आलोचना करना उचित नहीं है' इस विषय में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : कहा जाता है कि बेटियों का असली घर उनका ससुराल होता है। जिसे असली घर बताया जाता है, यानि कि ससुराल, वहाँ अकसर बहू को बेगाना समझा जाता है। ससुराल में बहू को कोई हक नहीं होता कि वह अपनी इच्छा से कुछ कर सके। हर छोटी-बड़ी बात के लिए उसे ससुरालवालों की आज्ञा की आवश्यकता होती है। बहू सबकी इच्छाओं का ख्याल रखती है, सबका सम्मान करती है, पर बहू का सम्मान अकसर नहीं किया जाता। स्थिति तब और भी भयंकर हो जाती है, जब ससुरालवाले समय-असमय बहू के मायके की आलोचना करने लगते हैं। मायकेवालों ने क्या भेजा है, बहू क्या लाई है? आदि प्रश्न घरवाले ही नहीं, कभी-कभी अड़ोस-पड़ोसवालों की जुबान पर भी आने लगते हैं। लड़केवाले प्रायः समझते हैं कि उनका दर्जा लड़कीवालों से ऊँचा है। बात-बात पर बहू के मायकेवालों की उपेक्षा की जाती है। उनमें मीन-मेख निकाली जाती है। परिणामस्वरूप, बहू के मन में ससुराल के प्रति विद्वेष की भावना आ जाती है। हमें बहू के मायकेवालों का सम्मान करना होगा। तभी बहू भी ससुरालवालों को सम्मान देगी। हमेशा उनसे कुछ लेने की अपेक्षा करना उचित नहीं है।

गद्यांश क्र. 5

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 5 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 45 – 46)
सिरचन ने मुस्कराकर ..... वह नहीं आ सकता।

6414132

शब्दार्थ

अवाक – चकित, स्तब्ध। **गमकौआ** – सुगंधित। **जर्दा** – तंबाकू। **जली-भुनी रहना** – नाराज रहना। **मसखरी** – दिल्लगी, चुहलबाजी। **हनहनाता** – बड़बड़ाता।

कृति 1 : (आकलन)

(1) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

*(i) सिरचन ने छोटी चाची से माँगा –

(ii) सिरचन की घरवाली ने यह बुनी थी –

(2) वाक्यों को उचित क्रम लगाकर लिखिए :

*(i) सातों तारे मंद पड़ गए।

(ii) सिरचन ने मुस्कराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया।

(iii) चाची कई कारणों से जली-भुनी रहती थी सिरचन से।

(iv) बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए।

(3) कारण लिखिए :

(i) मेरा कलेजा धड़क उठा... हो गया सत्यानाश!

(ii) सातों तारे मंद पड़ गए।

उत्तर

(1) (i) सिरचन ने छोटी चाची से माँगा – गमकौआ जर्दा।

(ii) सिरचन की घरवाली ने यह बुनी थी – शीतलपाटी।

(2) (i) सिरचन ने मुस्कराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया।

(ii) चाची कई कारणों से जली-भुनी रहती थी सिरचन से।

(iii) बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए।

(iv) सातों तारे मंद पड़ गए।

(3) (i) चाची ने सिरचन को बुरी तरह डाँटा था। मैं जानता था कि सिरचन बड़ा स्वाभिमानी है। अब वह मानू की ससुराल के लिए चिक और शीतलपाटी बनाएगा भी या नहीं।

(ii) सिरचन बड़ा स्वाभिमानी था। चाची ने उसे बुरी तरह डाँटा तो वह उस चिक को, जिसे उसने बड़े मन से बनाना शुरू किया था, अधूरी छोड़कर चला गया।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'सिरचन काम अधूरा छोड़कर चला गया। क्या यह उचित था' इस विषय में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : लेखक की चाची के बुरा-भला कहने पर सिरचन नाराज होकर काम अधूरा छोड़कर चला गया। इसे किसी भी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता। सिरचन अच्छी तरह जानता था कि चिक और पटेर की शीतलपाटियाँ मानू के अफसर दूल्हे की फरमाइश पर बनवाई जा रही हैं। मानू उन्हें लेकर ही ससुराल जाएगी। फिर भी उसने काम पूरा नहीं किया और चला गया। यह सिरचन ने ठीक नहीं किया। उसने एक बार भी नहीं सोचा कि दूल्हे की फरमाइश पूरी न होने की स्थिति में मानू को ताने सुनने पड़ सकते हैं। सास-ससुर व घर के अन्य सदस्यों की नाराजगी का शिकार होना पड़ सकता है। उस समय वह मानू, जिसके प्रति सिरचन के मन में भी स्नेह था, कितनी दुखी होगी। सिरचन का काम अधूरा छोड़कर जाना मुझे उचित नहीं लगा। (विद्यार्थी अपने विचार लिखें।)

गद्यांश क्र. 6

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 6 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 46)

बड़ी भाभी ..... देख रहा था।

शब्दार्थ

कदर – इज्जत। **झालर** – लहरदार किनारी। **बेजा** – अनुचित।

कृति 1 : (आकलन)

(1) ये वाक्य किसने, किससे कहे हैं? लिखिए :

(i) यह भी बेजा नहीं दिखलाई पड़ता, क्यों मानू?

(ii) चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी!

(iii) मानू दीदी कहाँ हैं? एक बार देखूँ।

(iv) ये मेरी ओर से हैं। सब चीजें हैं दीदी!

(2) वाक्यों को उचित क्रम लगाकर लिखिए :

(i) मानू फूट-फूटकर रो रही थी।

*(ii) ये मेरी ओर से हैं। सब चीजें हैं दीदी!

(iii) मानू कुछ नहीं बोली!... बेचारी!

(iv) मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था।

***(3) कृति पूर्ण कीजिए :**

मानू को उपहार में मिला –

(4) दो ऐसे प्रश्न बनाइए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) सिरचन ने (ii) मानू।

उत्तर

(1) (i) यह भी बेजा नहीं दिखलाई पड़ता, क्यों मानू? – बड़ी भाभी ने मानू से कहा है।

(ii) चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी! – लेखक ने बड़ी भाभी से कहा है।

(iii) मानू दीदी कहाँ हैं? एक बार देखूँ। – सिरचन ने लेखक से कहा है।

(iv) यह मेरी ओर से हैं। सब चीजें हैं दीदी! – सिरचन ने मानू से कहा है।

6414132

(2) (i) मानू कुछ नहीं बोली!... बेचारी!

(ii) ये मेरी ओर से हैं। सब चीजें हैं दीदी!

(iii) मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था।

(iv) मानू फूट-फूटकर रो रही थी।

(3)

मानू को उपहार में मिला –

- शीतलपाटी
- चिक और कुश की एक जोड़ी आसनी

(4) (i) किसने दाँत से जीभ को काटकर दोनों हाथ जोड़ दिए?

(ii) मोहर छापवाली धोती का दाम कौन देने लगी?

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'सिरचन भावनाओं से परिपूर्ण व्यक्ति था' इस विषय में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : सिरचन भावनाओं से परिपूर्ण व्यक्ति है। वह एक उच्चकोटि का कलाकार है। चिक, शीतलपाटी आदि बनाने में पूरे क्षेत्र में उसका कोई सानी नहीं है। लेखक का परिवार, विशेष रूप से उनकी माँ का सिरचन बहुत आदर करता है। लेखक की माँ भी सिरचन की कला का सम्मान करती है। शायद इसीलिए लेखक की चाची उससे जली-भुनी रहती है। भावुक होने के कारण सिरचन को किसी के द्वारा टोका जाना तनिक भी बर्दाश्त नहीं होता। इसीलिए चाची के बुरा-भला कहने पर वह नाराज होकर काम अधूरा छोड़कर चला जाता है। परंतु सिरचन जानता है कि चिक, शीतलपाटी आदि सभी चीजों के लिए मानू के अफसर पति ने फरमाइश की थी। उसे मानू से स्नेह था। अतः नाराज होने के बावजूद वह मानू के लिए वे सारी चीजें बनाता है और इतनी सुंदर कि लेखक भी उसकी कारीगरी देखकर दंग रह जाता है। सिरचन स्वयं उन्हें लेकर स्टेशन आता है। मानू जब माँ द्वारा कही गई मोहर छापवाली धोती का दाम सिरचन को देना चाहती है तो वह दोनों हाथ जोड़कर मना कर देता है।

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 48)

(1) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों का काल परिवर्तन कीजिए : *(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 48 देखिए।)*

(i) अली घर से बाहर चला जाता है। *(सामान्य भूतकाल)*

उत्तर : अली घर से बाहर चला गया।

(ii) आराम हराम हो जाता है।

(पूर्ण वर्तमानकाल एवं पूर्ण भविष्यकाल)

उत्तर : (अ) आराम हराम हो गया है।

(ब) आराम हराम हो चुका होगा।

(iii) सरकार एक ही टैक्स लगाती है। *(सामान्य भविष्यकाल)*

उत्तर : सरकार एक ही टैक्स लगाएगी।

(iv) आप इतनी देर से नाप-तौल करते हैं। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

उत्तर : आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं।

(v) वे बाजार से नई पुस्तक खरीदते हैं।

(पूर्ण भूतकाल एवं अपूर्ण भविष्यकाल)

उत्तर : (अ) उन्होंने बाजार से नई पुस्तक खरीदी थी।

(ब) वे बाजार से नई पुस्तक खरीदते रहेंगे।

(vi) वे पुस्तक शांति से पढ़ते हैं। *(अपूर्ण भूतकाल)*

उत्तर : वे पुस्तक शांति से पढ़ रहे थे।

(vii) सातों तारे मंद पड़ गए। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

उत्तर : सातों तारे मंद पड़ रहे हैं।

(viii) मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा।

(अपूर्ण भूतकाल)

उत्तर : मैं खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कह रहा था।

(2) नीचे दिए गए वाक्य का काल पहचानकर निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए :

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था – अपूर्ण भूतकाल

1.	सामान्य वर्तमानकाल	मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाता हूँ।
2.	सामान्य भविष्यकाल	मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाऊँगा।
3.	अपूर्ण भविष्यकाल	मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाता रहूँगा।
4.	पूर्ण वर्तमानकाल	मानू को ससुराल मैंने ही पहुँचाया है।
5.	सामान्य वर्तमानकाल	मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही गया।
6.	अपूर्ण वर्तमानकाल	मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा हूँ।
7.	पूर्ण भूतकाल	मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही गया था।
8.	पूर्ण भविष्यकाल	मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा चुका हूँगा।

64141132

उपक्रम/कृति/परियोजना

• **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 43**

लोक कलाओं के नामों की सूची तैयार कीजिए।

उत्तर : (1) मधुबनी (2) जादोपाटिया (3) कलमकारी (4) कांगड़ा (5) गोंड (6) चित्तर (7) तंजावुर (8) थंगक (9) पातचित्र (10) पिछवई (11) पिथोरा (12) फड़ (13) बाटिक (14) यमुनाघाट (15) वरली।

• **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 44**

देश की आत्मा गाँवों में बसती है, गांधी जी के इस विचार से संबंधित लेख पढ़िए तथा इस पर स्वमत प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : हमारा देश कृषिप्रधान देश है। यह गाँवों का देश है। भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। सरित-सरोवर, झील-जलाशय, विविध विटप, वन-पर्वत, खेत-खलिहान और सहज-स्वाभाविक जीवन शैली सब गाँवों में ही उपलब्ध हो सकती है। आज भी भारत की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गाँवों में बसती है। परंतु देश के आर्थिक विकास का लाभ गाँववासियों को संख्या के अनुपात में नहीं मिल पाता। आज भी असंख्य गाँव देश की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाए हैं। गाँवों की समस्याएँ चाहे गरीबी हो, सामाजिक हो, पेयजल हो या बिजली, सड़क, शिक्षा आदि हों, इन्हें कभी भी गंभीर रूप से नहीं लिया गया। शहर के निकट बसे गाँवों में तो फिर भी विकास की संभावनाएँ बनी रहती हैं, परंतु दूर-दराज के पिछड़े गाँवों के विकास के प्रति प्रशासन का ध्यान ही नहीं जाता। देखा जाए तो गाँवों की प्रगति से ही पूरे देश की प्रगति जुड़ी है, क्योंकि गाँवों से ही हमारी प्रत्येक आवश्यकता अनाज, वस्त्र, कागज, ईंधन, उद्योगों के लिए कच्चा माल आदि की पूर्ति होती है।

• **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 45**

आपकी तथा परिवार के किसी बड़े सदस्य की दिनचर्या की तुलना कीजिए तथा समानता एवं अंतर बताइए।

उत्तर : मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ और उसी स्कूल में पढ़ती हूँ, जहाँ मेरी माँ वाइस प्रिंसिपल हैं और हिंदी की प्राध्यापिका हैं। हम दोनों आठ बजे बस से स्कूल जाते हैं और दो बजे घर लौटते हैं। माँ सुबह जल्दी जगती हैं। नाश्ता और दोपहर का खाना बनाती हैं। मुझे जगाती हैं। स्वयं तैयार होती हैं। फिर हम स्कूल के लिए निकलते हैं। स्कूल से घर आकर मैं कपड़े बदलती हूँ, तब तक माँ खाना गरम करती हैं। खाना खाते समय हम दोनों स्कूल व मेरी पढ़ाई के विषय में बातें करते हैं। उसके बाद हम दोनों लगभग एक घंटा विश्राम करते हैं। चार बजे माँ फिर से काम पर लग जाती हैं। विद्यार्थियों का गृहकार्य-कक्षाकार्य आदि जाँचना, कभी परीक्षा के लिए प्रश्नपत्र बनाना और कभी परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाएँ जाँचना, हर दिन माँ के पास स्कूल से संबंधित काम होता ही है। मैं भी उनके पास बैठकर पढ़ती हूँ। छह-साढ़े छह बजे माँ रात के खाने की तैयारी के लिए रसोई में जाती हैं। इस बीच मैं अपनी सहेलियों के साथ कुछ देर खेलने चली जाती हूँ। आठ बजे पिता जी के आने के बाद हम तीनों खाना खाते हैं। उसके बाद मैं पढ़ती हूँ और ग्यारह बजे सो जाती हूँ।

• **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 46**

महाराष्ट्र में चलाए जाने वाले लघु उद्योगों की जानकारी रेडियो/दूरदर्शन पर सुनिए और इसके मुख्य मुद्दों को लिखिए।

उत्तर : महाराष्ट्र में चलाए जाने वाले लघु उद्योग और क्षेत्र : (1) कोल्हापुरी चप्पलें (कोल्हापुर) (2) वरली पेंटिंग (ठाणे) (3) लकड़ी के खिलौने (सावंतवाडी) (4) गंजीफा (सावंतवाडी) (5) चाँदी का काम (हुपरी) (6) बीदरी काम (बीदर) (7) दरी (विदर्भ) (8) बाँस का सामान (रायगड, ठाणे) (9) पीतल के संगीत वाद्य (ताल, झाँझ, घंटे)।

उपयोजित लेखन

• **'पुस्तक प्रदर्शनी में एक घंटा' इस विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध-लेखन कीजिए। (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 48)**

उत्तर : पुस्तकें अनमोल होती हैं। वे हमारी सबसे अच्छी मित्र होती हैं, क्योंकि वे ज्ञान-विज्ञान का भंडार होती हैं। व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं परंतु उनके श्रेष्ठ विचार, ज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, मानवीय मूल्य पुस्तकों के रूप में जीवित रहते हैं। पुस्तक प्रदर्शनी और मेले हमारे लिए वरदान हैं। ये पाठकों और लेखकों का संगम होते हैं। प्रत्येक वर्ष अगस्त में पुणे में कोरेगाँव पार्क में पुस्तक प्रदर्शनी और मेले का आयोजन किया जाता है। अनेक पुस्तक विक्रेता और प्रकाशक वहाँ आते हैं। इस बार मैं भी उस प्रदर्शनी में गया। स्टालों पर पुस्तकें बड़े आकर्षक ढंग से सजी हुई थीं। सभी स्तर और रुचि के लोगों के लिए वहाँ यथेष्ट सामग्री थी। इतिहास, भूगोल, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, धर्म, भाषा, यात्रा, जीवन-वृत्त आदि सभी विषयों की पुस्तकें वहाँ थीं। अनेक स्कूलों के विद्यार्थी वहाँ आए हुए थे। बच्चे-बड़े सभी पुस्तकें खरीदने में व्यस्त थे या उनको देख-पढ़ रहे थे। कुछ लोग ग्रुप में खड़े पुस्तकों पर चर्चा कर रहे थे। मेरे पास समय का अभाव था। मैंने अपने और छोटे भाई के लिए मुंशी प्रेमचंद का कहानी-संग्रह तथा हिंदी का एक शब्दकोश खरीदा।

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कॅन कीजिए।

6414132

11 कृषक गान

– दिनेश भारद्वाज

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत गीत में गीतकार दिनेश भारद्वाज एक कृषक का महत्त्व प्रतिपादित कर रहे हैं। कृषक, जो कि संपूर्ण संसार का अन्नदाता है, स्वयं अभावों में जीता है। पर किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाता। कवि समाज में उसका सम्मान पूर्ववत स्थापित करना चाहते हैं।

कविता का सरल अर्थ

[1] हाथ में संतोष ..... का गान कर लूँ।।

कृषक के अभावों की कोई सीमा नहीं है। परंतु उसके पास संतोष रूपी धन है। वह उसी संतोष के सहारे अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। पूरे संसार में कैसा भी वसंत आए, कृषक के जीवन में सदैव पतझड़ ही रहता है। अर्थात ऋतुएँ बदलती हैं, लोगों की परिस्थितियाँ बदलती हैं, परंतु कृषक के भाग्य में अभाव ही अभाव हैं। ऐसी दयनीय स्थिति के बावजूद उसे किसी से कुछ माँगना अच्छा नहीं लगता। कृषक को अपनी दीन-हीन दशा पर भी नाज है। कवि कहते हैं कि मैं ऐसे व्यक्ति पर अभिमान करना चाहता हूँ। मैं कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

[2] चूसकर श्रम रक्त ..... का गान कर लूँ।।

कृषक दिन-रात खेतों में काम करता है। अपने रक्त को पसीने के रूप में बहाता है और संपूर्ण जगत को जीवन-रस प्रदान करता है। ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में उसके लिए धूप-छाया दोनों एक-सी हैं। मौसम में कैसा भी बदलाव आए, कृषक की स्थिति नहीं बदलती। मैं मानवता के साथ उसका आह्वान करना चाहता हूँ। मैं कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

[3] विश्व का पालक ..... का गान कर लूँ।।

कृषक संपूर्ण संसार का अन्नदाता है। वह अन्न उगाकर पूरे विश्व का पालन करता है। लोगों को जीवन देता है। किंतु अफसोस की बात है कि जिन लोगों को वह पालता है, उन्हीं के द्वारा उसे पददलित किया जाता है। अपमानित किया जाता है। मैं चाहता हूँ कि मैं कृषक का हाथ पकड़कर एक नवीन सृष्टि का निर्माण करूँ, जहाँ लोग उसके महत्त्व को समझें। उसका सम्मान करें। मैं कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

[4] क्षीण निज बलहीन ..... का गान कर लूँ।।

कृषक को जीवन में पर्याप्त सुविधाएँ नहीं मिल पातीं। उसे अपने दुर्बल, क्षीण शरीर को ढकने के लिए कपड़े तक नहीं प्राप्त होते। वह पत्तों से अपना तन ढकने को मजबूर होता है। कृषक ऊसर धरती में जी-तोड़ मेहनत करके, पसीने के रूप में अपने खून को बहाकर उसे उपजाऊ बनाता है। मेरे लिए वह सभी देवी-देवताओं से ऊपर है। मैं चाहता हूँ कि देव-दानवों के स्थान पर कृषक का ही ध्यान करूँ, उसी के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करूँ। मैं कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

[5] यंत्रवत जीवित बना ..... का गान कर लूँ।।

कृषक एक जीवित मशीन के समान है। वह बिना अपने अधिकार माँगे मशीन की तरह पूरा जीवन काम करता रहता है। उस अन्नदाता, सृष्टि के पालक की दुर्दशा देखकर आज मानवता रो रही है। मैं कण-कण जोड़कर कृषक के लिए एक ऐसे नीड़ का, ऐसे घर का निर्माण करना चाहता हूँ, जहाँ उसे एक अच्छा जीवन जीने के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त हों। मैं कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

0414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 49)

हाथ में संतोष की तलवार ले जो उड़ रहा है,
जगत में मधुमास, उसपर सदा पतझर रहा है,
दीनता अभिमान जिसका, आज उसपर मान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

चूसकर श्रम रक्त जिसका, जगत में मधुरस बनाया,
एक-सी जिसको बनाई, सृजक ने भी धूप-छाया,
मनुजता के ध्वज तले, आह्वान उसका आज कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

शब्दार्थ

मधुमास – वसंत ऋतु। **सृजक** – रचना करने वाला, सर्जक। **मनुजता** – मनुष्यता। **आह्वान** – पुकारना।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

कृषक इन स्थितियों में अविचल रहता है –

--- ---

***(2) आकृति पूर्ण कीजिए :**

कविता में प्रयुक्त ऋतुओं के नाम –

--- ---

(3) कविता में आए इन शब्दों के लिए प्रयुक्त शब्द हैं :

(i) वसंत (ii) पाला हुआ *(iii) निर्माता *(iv) मानवता।

***(4) निम्नलिखित पंक्तियों में कवि के मन में कृषक के प्रति उत्पन्न होने वाले भाव लिखिए :**

पंक्ति	भाव
(i) आज उस पर मान कर लूँ।	
(ii) आह्वान उसका आज कर लूँ।	

(5) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) कृषक हाथ में ------- की तलवार लेकर चल रहा है।
(श्रम/संतोष/धन)

(ii) सारे संसार में ------- और उस पर सदा पतझड़ रहता है।
(वसंत/वर्षा/फूल)

(iii) कृषक को अपनी ------- पर अभिमान है।
(मेहनत/गरीबी/दीनता)

(iv) उसके लिए ------- और छाया एक जैसी है।
(धूप/रोशनी/कालिमा)

***(6) संजाल पूर्ण कीजिए :**

कवि की चाह –

[ ] [ ]

उत्तर

(1) कृषक इन स्थितियों में अविचल रहता है –

पतझर धूप

(2) कविता में प्रयुक्त ऋतुओं के नाम –

मधुमास पतझर

(3) (i) वसंत – मधुमास (ii) पाला हुआ – पालित
(iii) निर्माता – सृजक (iv) मानवता – मनुजता।

(4)

पंक्ति	भाव
(i) आज उस पर मान कर लूँ।	(i) अभिमान
(ii) आह्वान उसका आज कर लूँ।	(ii) मानवता

(5) (i) कृषक हाथ में संतोष की तलवार लेकर चल रहा है।
(ii) सारे संसार में वसंत और उस पर सदा पतझड़ रहता है।
(iii) कृषक को अपनी दीनता पर अभिमान है।
(iv) उसके लिए धूप और छाया एक जैसी है।

(6) कवि की चाह –

- कृषक की संतोष की भावना और अभिमान पर मान करना
- मनुजता के ध्वज के नीचे कृषक का आह्वान करना

6414132

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) पद्यांश से प्रत्यय जुड़े हुए दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ---------- (ii) ----------

(2) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए :

(i) मधुमास – ----------

(ii) आह्वान – ----------

उत्तर

(1) (i) दीनता (ii) मनुजता।

(2) (i) मधुमास – वसंत ऋतु
(ii) आह्वान – पुकार।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

*** • पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए।**

उत्तर : कृषक के अभावों की कोई सीमा नहीं है। परंतु वह संतोष रूपी धन के सहारे अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। पूरे संसार में कैसा भी वसंत आए, कृषक के जीवन में सदैव पतझड़ ही बना रहता है। अर्थात ऋतुएँ बदलती हैं, लोगों की परिस्थितियाँ बदलती हैं, परंतु

कृषक के भाग्य में अभाव ही अभाव हैं। ऐसी दयनीय स्थिति के बावजूद उसे किसी से कुछ माँगना अच्छा नहीं लगता। वह हाथ फैलाना नहीं जानता। कृषक को अपनी दीन-हीन दशा पर भी नाज है। मैं ऐसे व्यक्ति पर अभिमान करना चाहता हूँ। कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 49)

विश्व का पालक बन जो, अमर उसको कर रहा है,
किंतु अपने पालितों के, पद दलित हो मर रहा है,
आज उससे कर मिला, नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

क्षीण निज बलहीन तन को, पत्तियों से पालता जो,
ऊसरों को खून से निज, उर्वरा कर डालता जो,
छोड़ सारे सुर-असुर, मैं आज उसका ध्यान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

यंत्रवत जीवित बना है, माँगते अधिकार सारे,
रो रही पीड़ित मनुजता, आज अपनी जीत हारे,
जोड़कर कण-कण उसी के, नीड़ का निर्माण कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

शब्दार्थ

पालक – पालने वाला। **पालित** – पाला हुआ, आश्रित। **पद दलित** – पैरों से कुचला हुआ। **ऊसर** – अनुपजाऊ। **उर्वरा** – उपजाऊ भूमि। **यंत्रवत** – मशीन के समान। **नीड़** – घोंसला।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) वाक्य पूर्ण कीजिए :**

(i) कृषक कमजोर शरीर को ----------

(ii) कृषक बंजर जमीन को ----------

***(2) संजाल पूर्ण कीजिए :**

कवि की चाह –
- ----------
- ----------
- ----------

(3) उत्तर लिखिए :

विश्व का पालक –
↓
[ ]
↓
उसकी स्थिति –
↓
[ ]

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) कृषक विश्व का यह है – [ ]

(ii) वह अपने क्षीण तन को इनसे पालता है – [ ]

(iii) कृषक अपने खून से सींचकर ऊसरों को यह बना देता है – [ ]

(iv) आज यह पीड़ित होकर रो रही है – [ ]

***(5) निम्नलिखित पंक्तियों में कवि के मन में कृषक के प्रति उत्पन्न होने वाले भाव लिखिए :**

पंक्ति	भाव
(i) नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।	
(ii) आज उसका ध्यान कर लूँ।	

(6) कविता की पंक्तियों को उचित क्रमानुसार लिखकर प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :

(i) आज उससे कर मिला, नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।

(ii) छोड़ सारे सुर-असुर, मैं आज उसका ध्यान कर लूँ।

(iii) जोड़कर कण-कण उसी के, नीड़ का निर्माण कर लूँ।

(iv) किंतु अपने पालितों के, पद दलित हो मर रहा है।

(7) आकृति पूर्ण कीजिए :

कृषक की विशेषताएँ –
- [ ]
- [ ]

उत्तर

(1) (i) कृषक कमजोर शरीर को पत्तियों से पालता है।

(ii) कृषक बंजर जमीन को अपने खून से सींचकर उर्वरा बना देता है।

6414132

(2)

कवि की चाह –

- विश्व के पालक कृषक के लिए नवीन सृष्टि का निर्माण करना
- सभी सुर-असुर छोड़कर ऊसर भूमि को उर्वरा बनाने वाले कृषक का ध्यान करना
- एक-एक कण जोड़कर कृषक के लिए नीड़ का निर्माण करना

(3)

विश्व का पालक–
↓
कृषक
↓
उसकी स्थिति–
↓
अपने पालितों द्वारा कुचला जाना

(4) (i) कृषक विश्व का यह है – पालक

(ii) वह अपने क्षीण तन को इनसे पालता है – पत्तियों से

(iii) कृषक अपने खून से सींचकर ऊसरों को यह बना देता है – उर्वर

(iv) आज यह पीड़ित होकर रो रही है – मनुजता

(5)

पंक्ति	भाव
(i) नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।	सृजनशीलता
(ii) आज उसका ध्यान कर लूँ।	आदर

(6) (i) किंतु अपने पालितों के, पद दलित हो मर रहा है।

(ii) आज उससे कर मिला, नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।

(iii) छोड़ सारे सुर-असुर, मैं आज उसका ध्यान कर लूँ।

(iv) जोड़कर कण-कण उसी के, नीड़ का निर्माण कर लूँ।

(7)

कृषक की विशेषताएँ–
- ऊसरों को अपने खून से उर्वरा कर डालता है।
- क्षीण, बलहीन तन को पत्तियों से पालता है।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) पद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए ।

(i) ..... (ii) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग करके लिखिए :

(i) पालक = ...

(ii) मनुजता = ...

(iii) पीड़ित = ...

(iv) जोड़कर = ...

(3) पद्यांश में आए इन शब्दों के लिए प्रयुक्त शब्द हैं :

(i) उपजाऊ (ii) किसान *(iii) शरीर *(iv) राक्षस ।

उत्तर

(1) (i) सुर-असुर (ii) कण-कण।

(2) (i) पालक = पाल + क (ii) मनुजता = मनुज + ता

(iii) पीड़ित = पीड़ा + इत (iv) जोड़कर = जोड़ + कर।

(3) (i) उपजाऊ – उर्वरा (ii) किसान – कृषक

(iii) शरीर – तन (iv) राक्षस – असुर।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• **पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए।**

उत्तर : *देखिए कविता का सरल अर्थ [5]।*

पद्य विश्लेषण

सूचना : यह प्रश्नप्रकार कृतिपत्रिका के प्रारूप से हटा दिया गया है। लेकिन यह प्रश्न पाठ्यपुस्तक में होने के कारण विद्यार्थियों के अधिक अभ्यास के लिए इसे उत्तर-सहित यहाँ समाविष्ट किया गया है।

*• **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :**

(1) **रचनाकार का नाम** → दिनेश भारद्वाज।

(2) **कविता की विधा** → गान।

(3) **पसंदीदा पंक्ति** → हाथ में संतोष की तलवार ले जो उड़ रहा है।

(4) **पसंदीदा होने का कारण** → अनगिनत अभावों के होते हुए भी कृषक के पास संतोष रूपी धन है।

(5) **रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा** → कृषक दिन-रात परिश्रम करके संपूर्ण सृष्टि का पालन करता है। हमें उसके परिश्रम के महत्त्व को समझना चाहिए। उसका सम्मान करना चाहिए।

6414132

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों के शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) हमें अपने देश पर अभिमान है।

(ii) भूकंप में घंटों मलबे के नीचे दबे रहकर भी बच्चा जीवित रहा।

उत्तर : (i) **अभिमान** – भाववाचक संज्ञा।

(ii) **जीवित** – गुणवाचक विशेषण।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) बल्कि (ii) तो।

उत्तर : (i) सिरचन को लोग पूछते ही नहीं थे, बल्कि उसकी खुशामद भी करते थे।

(ii) लहरें बच्चों का रेत का घर गिरा देतीं तो वे नया घर बनाने लगते।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	सम् + सार	----------

अथवा

निश्चय	----------	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
संसार	सम् + सार	**व्यंजन संधि**

अथवा

निश्चय	**निः + चय**	**विसर्ग संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) सामने शेर को देखते ही सभी यात्री काँपने लगे।

(ii) तुम्हारी भाभी ने कहाँ से सीखी हैं?

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) लगे	लगना
(ii) हैं	होना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) चलना (ii) चमकना (iii) लिखना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) चलना	चलाना	चलवाना
(ii) चमकना	चमकाना	चमकवाना
(iii) लिखना	लिखाना	लिखवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) चंपत होना (ii) मन न लगना।

उत्तर :

(i) चंपत होना।

अर्थ : गायब हो जाना।

वाक्य : पुलिस के आते ही चोर चंपत हो गया।

(ii) मन न लगना।

अर्थ : इच्छा न होना।

वाक्य : सिरचन का किसी काम में मन नहीं लग रहा था।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांशों के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

(खून का घूँट पीकर रह जाना, पानी फेरना, पिंड छुडाना)

(i) लालची और निर्लज्ज लोगों से छुटकारा पाना आसान नहीं होता।

(ii) शिवाजी आगरे से भाग निकले, इसलिए औरंगजेब को अपना मन मारकर रह जाना पड़ा।

उत्तर : (i) लालची और निर्लज्ज लोगों से पिंड छुड़ाना आसान नहीं होता।

(ii) शिवाजी आगरे से भाग निकले, इसलिए औरंगजेब को अपना खून का घूँट पीकर रह जाना पड़ा।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उनका भेद लिखिए :**

(i) मानू फूट-फूटकर रो रही थी।

(ii) सिरचन ने जीभ को दाँत से काटकर दोनों हाथ जोड़ दिए।

उत्तर : (i) **मानू**–कर्ता कारक (ii) **दाँत से**–करण कारक।

64141132

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) माँ हँसकर कहती जा जा बेचारा मेरे काम में पूजा भोग की बात ही नहीं उठाता कभी

(ii) मानू कुछ नहीं बोली बेचारी किंतु मैं चुप नहीं रह सका चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी

उत्तर : (i) माँ हँसकर कहती,''जा-जा बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात ही नहीं उठाता कभी।''

(ii) मानू कुछ नहीं बोली।...बेचारी! किंतु मैं चुप नहीं रह सका–''चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी।''

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) सिरचन को एक सप्ताह पहले ही काम पर लगा दिया। *(पूर्ण भूतकाल)*

(ii) मानू ससुराल जाती है। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(iii) उनके आशीर्वाद आज भी हमें मिले। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

उत्तर :

(i) सिरचन को एक सप्ताह पहले ही काम पर लगा दिया था।

(ii) मानू ससुराल जाएगी।

(iii) उनके आशीर्वाद आज भी हमें मिलते हैं।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद लिखिए :

(i) यह वही लड़का है, जिसे पुरस्कार मिला था।

(ii) मजदूर गड्ढा खोदे और घर चले गए।

उत्तर : (i) मिश्र वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) गाँव के किसान सिरचन को मजदूरी के लिए नहीं बुलाते। *(इच्छावाचक वाक्य)*

(ii) तुम्हें समय पर स्कूल जाना चाहिए। *(आज्ञावाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) काश! गाँव के किसान सिरचन को मजदूरी के लिए नहीं बुलाते।

(ii) तुम समय पर स्कूल जाओ।

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए :**

(i) लोग गंगा नदी को पवीत्र मानते हैं।

(ii) किसी झमाने में यह शहर बहुत आबाद हैं।

उत्तर : (i) लोग गंगा नदी को पवित्र मानते हैं।

(ii) किसी जमाने में यह शहर बहुत समृद्ध था।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

दूसरी इकाई

1 बरषहिं जलद

– गोस्वामी तुलसीदास

विषय-प्रवेश : अवधी बोली में लिखा गया 'रामचरितमानस' विश्व के अमूल्य ग्रंथों में से एक है। प्रस्तुत काव्य खंड इसी ग्रंथ से लिया गया है। चौपाई और दोहों जैसे लोकप्रिय छंदों में प्रस्तुत इस काव्य खंड में तुलसीदासजी ने वर्षा ऋतु का सुंदर वर्णन किया है। इस काव्य खंड में उन्होंने वर्षा ऋतु से संबंधित विभिन्न वस्तुओं को जीवन से जोड़कर देखा है।

यह काव्य खंड सीता हरण के पश्चात का है। श्रीराम और लक्ष्मण जी सीता जी की खोज में वन में भटक रहे हैं। बरसात की ऋतु आ चुकी है पर सीता जी का पता नहीं चल सका है। कवि ने इस काव्य खंड में श्रीराम के मन की व्याकुलता का चित्रण किया है।

चौपाइयों और दोहों का सरल अर्थ

[1] घन घमंड नभ ..... जिमि जिव हरि पाई।। (चौपाई)

कवि कहते हैं कि आकाश में बादल उमड़-घुमड़कर भयंकर गर्जना कर रहे हैं। (श्रीरामजी कह रहे हैं कि) प्रिया (सीता जी) के बिना मेरा मन डर रहा है। बिजली आकाश में ऐसे चमक रही है, जैसे दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थिर नहीं रहती। यानी वह चमकती है और चमककर लुप्त हो जाती है।

बादल पृथ्वी के नजदीक आकर (नीचे उतरकर) बरस रहे हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे विद्वान व्यक्ति विद्या प्राप्त कर विनम्र हो जाते हैं। बूँदों की चोट पहाड़ों पर पड़ रही है। पहाड़ बूँदों के प्रहार को इस प्रकार शांत भाव से सह रहे हैं, जैसे संत पुरुष दुष्टों के कटु वचनों को सह लेते हैं।

छोटी नदियाँ वर्षा के जल से भरकर अपने किनारों को तोड़ती हुई आगे बढ़ती जा रही हैं, जैसे मामूली धन पाकर भी दुष्ट लोग इतराने लगते हैं (यानी मर्यादा का त्याग कर देते हैं)। पृथ्वी पर गिरते ही पानी गँदला हो गया है, मानो प्राणी से माया लिपट गई हो।

वर्षा का पानी एकत्र होकर तालाबों में भर रहा है। जैसे एक-एक कर सद्गुण सज्जन व्यक्ति के पास चले आते हैं। नदी का पानी समुद्र में जाकर उसी प्रकार स्थिर हो जाता है जिस प्रकार जीव हरि (ईश्वर) को प्राप्त कर अचल (आवागमन से मुक्त) हो जाता है।

[2] हरित भूमि ..... होहिं सद्ग्रंथ।। (दोहा)

पृथ्वी घास से परिपूर्ण होकर हरीभरी हो गई है, जिससे रास्तों का पता नहीं चलता है। यह दृश्य ऐसा लगता है, जैसे पाखंडी के पाखंड भरे मत के प्रचार से सद्ग्रंथ लुप्त हो जाते हैं।

[3] दादुर धुनि चहुँ ..... उपजे ग्याना।। (चौपाई)

कवि कहते हैं कि वर्षा काल में चारों दिशाओं में मेढकों की ध्वनि ऐसी (सुहावनी) लगती है मानो विद्यार्थियों का समूह वेद-पाठ कर रहा हो। अनेक वृक्षों में नई-नई कोंपलें आ गई हैं, जिससे वे ऐसे हरे-भरे तथा सुशोभित हो गए हैं, जैसे साधना करने वाले किसी व्यक्ति का मन ज्ञान प्राप्त करने पर प्रफुल्लित हो जाता है।

(बरसात के दिनों में) मदार और जवासा के पौधे पत्तों से रहित हो गए हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो अच्छे शासक के राज्य में दुष्टों का धंधा जाता रहा हो (खत्म हो गया हो)। धूल खोजने पर भी कहीं नहीं मिलती है। जैसे क्रोध धर्म को दूर कर देता है, उसी तरह वर्षा ने धूल को नष्ट कर दिया है।

अनाज से युक्त (लहलहाती हुई हरी-भरी खेती) पृथ्वी कुछ इस प्रकार शोभायमान हो रही है, जैसे उपकार करने वाले व्यक्ति शोभायमान होते हैं। रात के अंधकार में जुगनू चारों ओर दिखाई दे रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे घमंडियों का समूह एकत्र हो गया है।

चतुर किसान अपनी फसलों की निराई कर रहे हैं। (अपनी फसल से घास-फूस निकालकर फेंक रहे हैं)। इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे विद्वान लोग मोह, मद, माया का त्याग कर रहे हों।

बरसात के दिनों में चक्रवाक पक्षी कहीं नहीं दिखाई दे रहे हैं। इससे ऐसा लग रहा है जैसे कलियुग में धर्म पलायन कर गया हो।

यह पृथ्वी अनेक प्रकार के जीवों से भरी पड़ी है। यह उसी तरह शोभायमान हो रही है, जैसे अच्छे राजा के राज्य में प्रजा की वृद्धि (विकास) होती है।

यहाँ-वहाँ अनेक राही थककर इस तरह ठहरे हुए हैं, जैसे मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होने पर इंद्रियाँ शिथिल हो जाती हैं और विषयों की ओर जाना छोड़ देती हैं।

[4] कबहुँ प्रबल ..... कुसंग-सुसंग।। (दोहा)

कभी-कभी वायु बहुत तेज गति से चलने लगती है। इससे बादल यहाँ-वहाँ गायब हो जाते हैं। यह दृश्य उसी प्रकार लगता है जैसे परिवार में कुपुत्र के उत्पन्न होने से कुल के उत्तम धर्म (श्रेष्ठ आचरण) नष्ट हो जाते हैं।

कभी (बादलों के कारण) दिन में घोर अंधकार छा जाता है और कभी सूर्य प्रकट हो जाता है। तब लगता है, जैसे बुरी संगति पाकर ज्ञान नष्ट हो गया हो और अच्छी संगति पाकर ज्ञान उत्पन्न हो गया हो।

6141132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 51)

चौपाई

घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा।।
दामिनि दमक रहहिं घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं।।
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ ।।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसे।।
छुद्र नदी भरि चली तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।।
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहिं माया लपटानी।।
समिटि-समिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा।।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होई अचल जिमि जिव हरि पाई ।।
दोहा : हरित भूमि तृन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ।
जिमि पाखंड बिबाद तें, लुप्त होहिं सद्ग्रंथ ।।

शब्दार्थ

घन – बादल। **घमंड** – गर्व। **गरजत** – गरजते हैं। **घोरा** – भयंकर। **डरपत** – डर रहा है। **दामिनि** – बिजली। **दमकना** – चमकना। **खल** – दुष्ट। **थिर** – स्थिर। **निअराएँ** – पास आकर। **जथा** – जैसे। **नवहिं** – झुक जाते हैं, विनम्र हो जाते हैं। **बुध** – विद्वान। **अघात** – प्रहार। **खल** – दुष्ट। **सह** – सह लेते हैं। **छुद्र** – छोटी। **तोराई** – तोड़कर। **थोरेहुँ** – थोड़े-से भी। **ढाबर** – मटमैला। **लपटानी** – लिपट जाते हैं। **जिमि** – जैसे। **पहिं** – के पास। **जलनिधि** – समुद्र। **महुँ** – में। **अचल** – स्थिर। **सद्ग्रंथ** – अच्छे ग्रंथ, महान ग्रंथ।

कृति 1 : (आकलन)

(1) चौखट पूर्ण कीजिए :

(i) मन डर रहा है इनका – [ ]

(ii) बिजली की तुलना की गई है इससे – [ ]

(iii) भूमि के पास आए बादल ऐसे लगते हैं – [ ]

(iv) विद्यार्थी जिसे पाने के लिए पढ़ाई करते हैं – [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) संत और पर्वत में समानता का आधार –
[ ] [ ]

(ii) छोटी नदियों और दुष्टों का एक जैसा काम –
[ ] [ ]

(3) जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'ब'
*(i) दमकती बिजली	दुष्टों के वचन
*(ii) भूमि पर गिरा पानी	राम का डरना
(iii) बूँदों का प्रहार	दुष्ट की मित्रता
(iv) बादलों की गर्जना	माया से लिपटा जीव

(4) तालिका पूर्ण कीजिए :

इन्हें	यह कहा है –
(i) ----------	ईश्वर को प्राप्त कर स्थिर हुआ जीव
*(ii) सज्जनों के सद्गुण	----------

(5) आकृति पूर्ण कीजिए :

*(i) पद्यांश में आए प्राकृतिक जल स्रोत –
[ ] [ ]

(ii) सद्ग्रंथों के लुप्त होने के कारण –
[ ] [ ]

(6) निम्नलिखित अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए :

*(i) संतों की सहनशीलता।

(ii) जीव की निश्चिंतता।

(iii) रास्तों का अदृश्य हो जाना।

(iv) विद्वानों की विनम्रता

6414132

(7) निम्नलिखित शब्दों के लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द खोजकर लिखिए :

*(i)	बादल	
(ii)	मटमैला	
(iii)	विद्वान	
(iv)	भयानक	

उत्तर

(1) (i) मन डर रहा है इनका – श्रीराम का

(ii) बिजली की तुलना की गई है इससे – दुष्ट की प्रीति से

(iii) भूमि के पास आए बादल ऐसे लगते हैं – विद्वान की तरह

(iv) विद्यार्थी जिसे पाने के लिए पढ़ाई करते हैं – विद्या

(2) (i) संत और पर्वत में समानता का आधार –
- दुष्टों के वचन सहना
- बूँदों का आघात सहना

(ii) छोटी नदियों और दुष्टों का एक जैसा काम –
- छोटी नदियाँ किनारों को तोड़कर बहती हैं
- दुष्ट थोड़ा भी धन पाकर इतराने लगते हैं

(3) (i) दमकती बिजली – दुष्ट की मित्रता

(ii) भूमि पर गिरा पानी – माया से लिपटा जीव

(iii) बूँदों का प्रहार – दुष्टों के वचन

(iv) बादलों की गर्जना – राम का डरना

(4)

इन्हें	यह कहा है –
(i) **नदी के जल का समुद्र में मिलना**	ईश्वर को प्राप्त कर स्थिर हुआ जीव
(ii) सज्जनों के सद्गुण	**तालाब में जल भरना**

(5)

(i) पद्यांश में आए प्राकृतिक जल स्रोत –
- नदी
- समुद्र

(ii) सद्ग्रंथों के लुप्त होने के कारण –
- पाखंड
- विवाद

(6) (i) खल के बचन संत सह जैसे।

(ii) होई अचल जिमि जिव हरि पाई।

(iii) हरित भूमि तृन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ।

(iv) जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ।

(7)

(i)	बादल	जलद
(ii)	मटमैला	ढाबर
(iii)	विद्वान	बुध
(iv)	भयानक	घोरा

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए :

(i) थिर –.....

(ii) जथा –.....

(iii) सदगुन –.....

(iv) अघात –.....

(2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) जलनिधि = ... (ii) गिरि = ...

(iii) नदी = ... (iv) जल = ...

उत्तर

(1) (i) थिर –स्थिर (ii) जथा –यथा

(iii) सदगुन –सद्गुण (iv) अघात –आघात।

(2) (i) जलनिधि = समुद्र (ii) गिरि = पहाड़

(iii) नदी = सरिता (iv) जल = पानी।

6414132

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **प्रस्तुत पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : बादल आकाश में उमड़-घुमड़कर भयंकर गर्जना कर रहे हैं। श्रीराम जी कह रहे हैं कि ऐसे में सीता जी के बिना उनका मन भयभीत हो रहा है। बिजली आकाश में ऐसे चमक रही है, जैसे दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थिर नहीं रहती। कभी वह बनी रहती है और कभी टूटने के कगार पर पहुँच जाती है।

बादल धरती के नजदीक आकर बरस रहे हैं। उनका यह व्यवहार ठीक उसी प्रकार लगता है, जैसे विद्वान व्यक्ति विद्या पाकर विनम्र हो जाते हैं। बादल भी जल के भार से झुक गए हैं और पृथ्वी के नजदीक आकर अपने जल से प्राणियों को तृप्त कर रहे हैं। पहाड़ों पर वर्षा की बूँदों की चोट पड़ रही है, पर पहाड़ चुपचाप शांत भाव से यह आघात उसी प्रकार सहते जा रहे हैं, जैसे संत लोग दुष्टों के कटुवचन सह लेते हैं और उस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करते।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

8414132

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 51 – 52)

चौपाई

दादुर धुनि चहुँ दिशा सुहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई।।
नव पल्लव भए बिटप अनेका। साधक मन जस मिले बिबेका।।
अर्क-जवास पात बिनु भयऊ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ।।
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी। करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी।।
ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी।।
निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा।।
कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना।।
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं। कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं।।
विविध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाई सुराजा।।
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना।।

दोहा : कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ-तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ।।
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसइ-उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग-सुसंग।।

शब्दार्थ

दादुर – मेढक। **धुनि** – स्वर। **सुहाई** – अच्छी लगती है। **जनु** – जैसे। **बटु** – बालक। **समुदाई** – समुदाय। **पल्लव** – कोंपल । **भए** – हुए। **बिटप** – वृक्ष। **साधक** – साधना करने वाला। **अर्क** – मदार। **जवास** – जवासा। **पात** – पत्ते। **भयऊ** – हुए। **सुराज** – अच्छा राज। **उद्यम** – कार्य। **कतहुँ** – कहीं भी। **धूरी** – धूल। **धरमहिं** – धर्म को। **ससि** – अन्न। **सोह** – शोभायमान। **निसि** – रात। **घन** – घने। **खद्योत** – जुगनू। **दंभिन्ह** – घमंडियों। **निरावहि** – निराना (घास-फूस छीलकर निकालना)। **बुध** – विद्वान (बुद्धिमान)। **माना** – सम्मान। **चक्रबाक** – चकवा पक्षी। **पराहीं** – भाग जाता है। **महि** – पृथ्वी। **थकि** – थककर। **भ्राजा** – शोभायमान होना। **मारुत** – हवा। **नसाहि** – नष्ट होना। **निबिड़** – घोर,घना। **बिनसइ** – नष्ट होना।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

पद्यांश में प्रयुक्त दो जंगली पौधे –

(2) उत्तर लिखिए :

इनकी तुलना की गई है, इनसे –

(i) रात के अंधकार में जुगनू –

(ii) ससि (अनाज) से भरपूर धरती –

(iii) कृषि को निराने वाले किसान –

(iv) दिखाई न देने वाला चक्रवाक –

(3) जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'ब'
* (i) नव पल्लव से भरा वृक्ष	ससि संपन्न पृथ्वी
* (ii) उपकारी की संपत्ति	चक्रवाक पक्षी का न दिखना
(iii) मेढक की ध्वनि	साधक के मन का विवेक
(iv) कलियुग में धर्म का पलायन कर जाना	बटुक समुदाय द्वारा वेद-पाठ

*(4) निम्नलिखित शब्दों के लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द खोजकर लिखिए :

(i) ग्रह –

(ii) पेड़ –

(iii) पत्ते –

(iv) उपग्रह –

(v) पौधा –

(5) तालिका पूर्ण कीजिए :

इन्हें	यह कहा है –
*(i)	बटु समुदाय
(ii) (नव पल्लव वाले) वृक्ष	.....
(iii) (लुप्त हुई) धूल	.....
(iv)	ज्ञान उत्पन्न हुआ

(6) उत्तर लिखिए :

पद्यांश में आया –

(i) एक प्रसिद्ध धर्मग्रंथ –

(ii) चित्त का मनोविकार या उग्र भाव –

(iii) एक प्रसिद्ध पक्षी –

(iv) वह शब्द, जिसके दो अर्थ हैं, जिनमें से एक का अर्थ सूर्य है –

(7) निम्न अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए :

*(i) कपूत के कारण कुल की हानि –

(ii) कुसंग से ज्ञान नष्ट होना और सुसंग से ज्ञान उत्पन्न होना। –

उत्तर

(1)

पद्यांश में प्रयुक्त दो जंगली पौधे –

अर्क (मदार) | जवासा

(2) (i) रात के अंधकार में जुगनू – घमंडियों के समाज से

(ii) ससि (अनाज) से भरपूर धरती – उपकारी की संपति से।

(iii) कृषि को निराने वाले किसान – मोह-मद-मान त्यागने वाले विद्वान से।

(iv) दिखाई न देने वाला चक्रवाक – कलियुग पाकर भाग जाने वाले धर्म से

(3)

(i) नव पल्लव से भरा वृक्ष –साधक के मन का विवेक

(ii) उपकारी की संपत्ति –ससि संपन्न पृथ्वी

(iii) मेढक की ध्वनि –बटुक समुदाय द्वारा वेद-पाठ

(iv) कलियुग में धर्म का पलायन कर जाना –चक्रवाक पक्षी का न दिखना

(4) (i) ग्रह – पतंग (सूर्य)

(ii) पेड़ – बिटप

(iii) पत्ते – पात

(iv) उपग्रह – महि

(v) पौधा – अर्क-जवास

(5)

इन्हें	यह कहा है –
(i) दादुर	बटु समुदाय
(ii) (नव पल्लव वाले) वृक्ष	ज्ञान प्राप्त कर प्रफुल्लित होने वाला साधक
(iii) (लुप्त हुई) धूल	क्रोध के कारण लुप्त हुआ धर्म
(iv) (विषयों से विरक्त) मनुष्य	ज्ञान उत्पन्न हुआ

(6) (i) एक प्रसिद्ध धर्मग्रंथ – वेद

(ii) चित्त का मनोविकार या उग्र भाव – क्रोध

(iii) एक प्रसिद्ध पक्षी – चक्रवाक (चकवा)

(iv) वह शब्द, जिसके दो अर्थ हैं, जिनमें से एक का अर्थ सूर्य है – पतंग

6414132

(7) (i) कपूत के कारण कुल की हानि – जिमि कपूत के उपजे, कुल सदधर्म नसाहिं।।

(ii) कुसंग से ज्ञान नष्ट होना और सुसंग से ज्ञान उत्पन्न होना। – बिनसइ-उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग-सुसंग

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के अर्थवाले शब्द पद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए :

(i) हुए – .....

(ii) जैसे – .....

(iii) कहीं – .....

(iv) की – .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) दादुर – .....

(ii) धूरी (धूल) – .....

(iii) धर्म – .....

(iv) प्रजा – .....

6414132

उत्तर

(1) (i) हुए – भए, भयऊ।

(ii) जैसे – जनु, जस।

(iii) कहीं – कतहुँ।

(iv) की – कै।

(2) (i) दादुर – पुल्लिंग

(ii) धूरी (धूल) – स्त्रीलिंग

(iii) धर्म – पुल्लिंग

(iv) प्रजा – स्त्रीलिंग।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **उपर्युक्त पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों (दोहा) का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : कभी-कभी वायु बहुत तेज गति से चलने लगती है। इससे बादल यहाँ-वहाँ गायब हो जाते हैं। यह दृश्य उसी प्रकार लगता है जैसे परिवार में कुपुत्र के उत्पन्न होने से कुल के उत्तम धर्म (श्रेष्ठ आचरण) नष्ट हो जाते हैं।

कभी (बादलों के कारण) दिन में घोर अंधकार छा जाता है और कभी सूर्य प्रकट हो जाता है। तब लगता है, जैसे बुरी संगति पाकर ज्ञान नष्ट हो गया हो और अच्छी संगति पाकर ज्ञान उत्पन्न हो गया हो।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों के शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) भूमि परत भा ढाबर पानी।

(ii) नव पल्लव भए बिटप अनेका।

उत्तर : (i) **पानी** – द्रव्यवाचक संज्ञा

(ii) **नव** – गुणवाचक विशेषण।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) नहीं (ii) इसलिए।

उत्तर : (i) जनक कॉलेज नहीं जाता।

(ii) बेचन बिजली का बिल अदा नहीं कर पाया, इसलिए बिजली आपूर्ति खंडित हो गई।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
.....	विद्या + अर्थी	.....

अथवा

जगन्नाथ	.....	.....

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
विद्यार्थी	विद्या + अर्थी	**स्वर संधि**

अथवा

जगन्नाथ	**जगत् + नाथ**	**व्यंजन संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में सहायक क्रिया पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) बादल पृथ्वी के नजदीक आकर बरस रहे हैं।

(ii) दुष्ट लोग थोड़ा धन पाकर भी इतराने लगते हैं।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) रहे	रहना
(ii) लगने	लगना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) सहना

(ii) गिरना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) सहना	सहाना	सहवाना
(ii) गिरना	गिराना	गिरवाना

6441432

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) आँखें फाड़कर देखना (ii) रुआँसा होना।

उत्तर :

(i) आँखें फाड़कर देखना।

अर्थ : आश्चर्य से देखना।

वाक्य : मनीष सर्कस के कलाकारों के करतब आँखें फाड़कर देख रहा था।

(ii) रुआँसा होना।

अर्थ : उदास होना।

वाक्य : मालिक की झिड़कियाँ खाकर नौकर रुआँसा हो गया।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

(हामी भरना, करवट बदलना)

आखिरकार रंजन ने शादी करने के लिए स्वीकृति दी।

उत्तर : आखिरकार रंजन ने शादी करने के लिए हामी भरी।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) छोटी-छोटी नदियाँ वर्षा के जल से भर जाती हैं।

(ii) नदी अपने किनारों को तोड़ती हुई आगे बढ़ जाती है।

उत्तर : (i) **वर्षा के**—संबंध कारक

(ii) **किनारों को**—कर्म कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) पृथ्वी घास से परिपूर्ण होकर हरी हो गई है जिससे रास्तों का पता नहीं चलता

(ii) हरी भरी फसलों से युक्त पृथ्वी कैसी लग रही है

उत्तर : (i) पृथ्वी घास से परिपूर्ण होकर हरी हो गई है, जिससे रास्तों का पता नहीं चलता।

(ii) हरी-भरी फसलों से युक्त पृथ्वी कैसी लग रही है?

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) प्रियाहीन मेरा मन डरता है। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

(ii) बादल पृथ्वी के नजदीक आकर बरस रहे हैं। *(सामान्य भविष्यकाल)*

उत्तर : (i) प्रियाहीन मेरा मन डरा है।

(ii) बादल पृथ्वी के नजदीक आकर बरसेंगे।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) बादल गरज रहे हैं और बिजली चमक रही है।

(ii) अनेक वृक्षों में नई-नई कोंपलें आ गई हैं, जिससे वे हरे-भरे तथा सुशोभित हो गए हैं।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य (ii) मिश्र वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) कलियुग में धर्म पलायन कर जाता है। *(प्रश्नवाचक वाक्य)*

(ii) संत पुरुष दुष्टों के वचन सहते हैं। *(निषेधवाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) क्या कलियुग में धर्म पलायन कर जाता है ?

(ii) संत पुरुष दुष्टों के वचन नहीं सहते।

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(i) एक-एक करके सद्गुण सज्जन के पास चला आते है।

(ii) धूल खोजने पे भी कहीं नहीं मिलता है।

उत्तर :

(i) एक-एक कर सद्गुण सज्जन के पास चले आते हैं।

(ii) धूल खोजने पर भी कहीं नहीं मिलती है।

उपयोजित लेखन

- **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :**

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 53)

एक महानुभाव की कल्पना – विश्वविद्यालय स्थापना का प्रण – दान से धन एकत्र करना – एक सेठ के पास जाना – सेठ का दिन भर बिठाए रखना – महानुभाव निराश – शाम को सात लाख रुपए का चेक पाना – आश्चर्य और खुशी।

परोपकार

उत्तर : बात आजादी मिलने के बहुत पहले की है। तब देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की पढ़ाई के लिए बहुत कम विश्वविद्यालय थे। विद्यार्थियों को दूर-दूर स्थानों पर जाकर शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती थी और उन्हें वहीं टिककर पढ़ना पड़ता था। विद्यार्थियों की इस परेशानी को दूर करने के लिए एक महानुभाव ने अपने शहर में विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रण किया।

इसके लिए उन्होंने सारे देश का दौरा किया और जहाँ से जो भी धन मिला, एकत्र किया। एक बार किसी व्यक्ति ने उन्हें बताया कि आप कलकत्ता के फलाँ सेठ के पास जाइए। वहाँ आपको अवश्य कुछ धन मिलेगा। वे पहुँच गए उनके पास। उन्होंने सेठ जी से अपना उद्देश्य बताया। सेठ जी ने उन्हें कुछ देर इंतजार करने के लिए कहा और वे अपने काम में लग गए। दोपहर से शाम हो गई। सेठ जी ने उन्हें नहीं बुलाया। वे निराश हो गए थे। इतने में सेठ जी अपने केबिन से बाहर आए। वे सज्जन खड़े हो गए और बोले, ''सेठ जी मुझे आज्ञा दीजिए, मैं चलूँ।'' सेठ जी ने कहा, ''बैठिए भाई, बैठिए! मैं आपका ही काम कर रहा था। ये लीजिए अपने परोपकार के काम में मेरा छोटा-सा सहयोग! इस समय मैं और कुछ नहीं दे पाऊँगा।'' सेठ जी ने एक चेक उन सज्जन के हाथ में थमा दिया।

उन महाशय ने चेक पर नजर डाली – 'सात लाख रुपए!' उनके मुँह से निकला, ''सेठ जी, मुझे तो लगा था, मुझे यहाँ से खाली हाथ जाना पड़ेगा, पर आपने तो...।''

''बस... बस!'' उन्होंने उन सज्जन की बात काटते हुए कहा, ''आप परोपकार का काम कर रहे हैं, मुझसे जो बन पड़ा, मैंने भी सहयोग दे दिया।'' इस धन से विश्वविद्यालय के कई काम पूरे हुए।

विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए यह धन एकत्र करने वाले व्यक्ति थे महामना मदनमोहन मालवीय और उन्होंने जिस विश्वविद्यालय का निर्माण किया, वह था 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय।'

सीख : परोपकार सबसे बड़ा धर्म है।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

2 दो लघुकथाएँ (पूरक पठन – गद्य)

– नरेंद्र छाबड़ा

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत पाठ में दो लघुकथाएँ दी गई हैं। प्रथम लघुकथा में हमारी मानसिक प्रवृत्ति के बारे में बताया गया है। लेखक ने इसके माध्यम से यह दर्शाया है कि जब लोग बड़ी-बड़ी दुकानों, मॉल या बड़े होटलों में जाते हैं, तो वहाँ वे सामानों के निश्चित मूल्यों के बारे में कोई मोल-भाव नहीं करते। माँगे गए पैसे शौक से अदा करके चले आते हैं। पर छोटे दुकानदारों या खोमचे वालों से सामान खरीदते समय लोगों का व्यवहार बिलकुल बदल जाता है। लोग उनसे दो-एक रुपये कम करने के बारे में बहस पर उतर आते हैं। हमें यह मानसिकता बदलनी चाहिए।

दूसरी लघुकथा में रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के शिकार एक युवक के बारे में बताया गया है। उसके सामने भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को कोसने के अलावा कोई चारा नहीं रहता। पर सत्य का पालन करना उसे एक दिन अपने लक्ष्य तक पहुँचा देता है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **सीना तानकर खड़े रहना** – निर्भय होकर खड़े रहना।

(2) **बोलबाला होना** – प्रभाव होना।

(3) **दाद देना** – प्रशंसा करना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 3 (अ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

6414132

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 54)

इस वर्ष बड़ी ..... अनुभव कर रहा था।

शब्दार्थ

भीषण – भयानक, डरावना। **तपना** – धूप, आँच से गरम होना। **लू** – तपी हुई वायु या उसका झोंका। **उमस** – हवा न चलने से मालूम होने वाली गरमी। **चैन** – कष्ट दूर होने पर मिलने वाला सुख। **लिजलिजा** – बेढंगा, अशोभनीय। **घुटन भरा** – साँस लेने में होने वाली कठिनाई की स्थिति। **राहत** – आराम, सुख। **सुकून** – शांति, जी ठंडा होना। **नीरवता** – शब्दरहित, जिसमें ध्वनि न हो। **ठिठकना** – चलते-चलते सहसा रुक जाना। **कंगाल** – निर्धन, गरीब।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

*(i)

गरमी की विशेषताएँ –

(ii)

पर्वतीय स्थल का प्राकृतिक सौंदर्य –

*(iii)

लेखक के मन परिवर्तन के कारण –

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

*(i) मौसम ऐसा था –

(ii) भुट्टे वाले के भुट्टे की विशेषता –

(3) निम्नलिखित के लिए परिच्छेद में प्रयुक्त शब्द लिखिए :

(i) आराम – .....

(ii) गरीब – .....

(iii) शांति – .....

(iv) बेढंगा – .....

उत्तर

(1) (i) गरमी की विशेषताएँ –
- भीषणता
- अंगारे-सी तपन
- लू चलना
- उमस होना

(ii) पर्वतीय स्थल का प्राकृतिक सौंदर्य –
- हरे-भरे पहाड़
- गर्व से सीना ताने खड़े वृक्ष
- पहाड़ों की नीरवता
- झरने

(iii) लेखक के मन परिवर्तन के कारण –
- पहाड़ों पर घूमने में हजारों रुपये खर्च करना
- अच्छे होटलों में रुकना
- बड़ी दुकानों में दाम पूछे बिना खर्च करना
- गरीब से दो रुपये के लिए झिक-झिक करना

(2) (i) मौसम ऐसा था –
- लिजलिजा
- घुटन भरा

(ii) भुट्टे वाले के भुट्टे की विशेषता –
- गरम-गरम भूना हुआ
- मसाला लगाया हुआ

(3) (i) आराम – राहत
(ii) गरीब – कंगाल
(iii) शांति – सुकून
(iv) बेढंगा – लिजलिजा।

6414132

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'छोटे दुकानदारों और बड़े दुकानदारों से चीजें खरीदते समय हमारा व्यवहार' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : हम अधिकतर दिखावे में विश्वास करते हैं। जब हम बड़े-बड़े शॉपिंग सेंटरों और मॉल में जाते हैं, तो वस्तुओं की कीमतों को लेकर हम कभी मोल-भाव नहीं करते। वहाँ सैकड़ों लोग सामान खरीदते हैं और कीमतों को लेकर कोई मोल-भाव नहीं करता। वहाँ भाव ज्यादा होते हुए भी उसके बारे में पूछने की हिम्मत नहीं होती। क्योंकि वहाँ इज्जत का सवाल होता है। कभी-कभी तो वहाँ ठगाकर लोग चले आते हैं, पर शर्म के मारे कुछ नहीं बोलते। मगर वही लोग बाजार में छोटे दुकानदारों या खोमचेवालों से दो-चार रुपए के लिए झिक-झिक करते देखे जाते हैं। यहाँ उनको अपनी इज्जत की परवाह नहीं रहती। क्योंकि यहाँ बड़े ग्राहकों के सामने उनको अपने इस व्यवहार पर झेंपने का डर नहीं रहता। यहाँ वे अपने को बड़ा दिखाते हैं। क्योंकि सामने गरीब आदमी होता है।

हमें अपनी सोच में बदलाव लाने की जरूरत है। छोटे व्यापारियों या गरीब खोमचेवालों से खरीदे जाने वाले सामान में मोल-भाव करने में झिक-झिक करना उचित नहीं है।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 55)

अब तक वह ..... परास्त नहीं।

शब्दार्थ

आवेदन – किसी काम के लिए की जाने वाली प्रार्थना। **नाकामयाब** – असफल। **चयन** – चुनने का काम। **कोसना** – निंदा करना, बुरा-भला कहना। **घुन** – अनाज, लकड़ी आदि में लगने वाला एक छोटा कीड़ा। **कलंक** – धब्बा, दाग, लांछन। **तर्क** – दलील। **उपहार** – भेंट, सौगात। **आदान-प्रदान** – लेना-देना। **समर्थन** – पुष्टि करना। **कतई** – बिलकुल।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

लेखक इन विषयों पर अपने विचार रखते थे –

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) अब तक उसका चयन न हो पाने का कारण –

(ii) भ्रष्टाचार के बारे में उसके विचार –

भ्रष्टाचार देश के लिए कलंक

*(iii) **प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :**

लोग रिश्वत देकर ये लाभ उठाते हैं –

***(3) कारण लिखिए :**

(i) युवक को पहले नौकरी न मिल सकी .....

(ii) आखिरकार अधिकारियों द्वारा युवक का चयन कर लिया गया .....

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) उसके प्रमाणपत्र उसे सफलता दिलाने में ये रहे –

(ii) वह भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को यह करता था –

(iii) उसके तर्क में अधिकारियों को यह महसूस होने लगी –

(iv) उसके अनुसार रिश्वत का भ्रष्टाचार से यह रिश्ता है –

64141132

उत्तर

(1) देशप्रेम, नैतिकता

लेखक इन विषयों पर अपने विचार रखते थे –

शिष्टाचार, ईमानदारी

(2) (i) अब तक उसका चयन न हो पाने का कारण –

भ्रष्टाचार होना, रिश्वत का चलन होना

(ii)

(iii)

(3) (i) युवक को पहले नौकरी न मिल सकी, क्योंकि हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला था।

(ii) आखिरकार अधिकारियों द्वारा युवक का चयन कर लिया गया, क्योंकि भीतर बैठे अधिकारियों ने गंभीरता से विचार विमर्श करने के बाद युवक के सही उत्तर की दाद दी थी।

(4) (i) उसके प्रमाणपत्र उसे सफलता दिलाने में ये रहे – नाकामयाब

(ii) वह भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को यह करता था – कोसता था

(iii) उसके तर्क में अधिकारियों को यह महसूस होने लगी – रुचि

(iv) उसके अनुसार रिश्वत का भ्रष्टाचार से यह रिश्ता है। – रिश्वत भ्रष्टाचार की बहन

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

***• 'भ्रष्टाचार एक कलंक' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : भ्रष्टाचार का अर्थ है दूषित आचार या जो आचार बिगड़ गया हो। आज हमारे जीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त है। आए दिन नेताओं के भ्रष्टाचार के समाचार आते रहते हैं। भ्रष्टाचार के आरोप में कितने नेता जेल काट रहे हैं। ये जनता के पैसे हड़प कर गए, पर इन्हें शर्म तक नहीं आती। आज हमारे देश में तेजी से भोगवादी संस्कृति फैल रही है। लोगों में रातोरात धनवान बनने की लालसा जोर पकड़ रही है। चारों ओर धन बटोरने के लिए धोखाधड़ी, छल-कपट, किए जा रहे हैं। अपनी भौतिक समृद्धि बढ़ाने के लिए लोगों ने भ्रष्टाचार को शिष्टाचार बना लिया है। छोटे से छोटे काम के लिए लोगों को रिश्वत का सहारा लेना पड़ता है। शिक्षा का पवित्र क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रह गया है। लोगों में देशभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा की भावना घटती जा रही है। भ्रष्टाचार राष्ट्रीय जीवन के लिए अभिशाप बन गया है। हमें आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार एक कलंक है। इस कलंक को मिटाना जरूरी है। हम सबको इसके लिए निष्ठापूर्वक कार्य करने की जरूरत है।

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 57)

(1) अर्थ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के भेद लिखिए :

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 57 देखें।)

(1) क्या पैसा कमाने के लिए गलत रास्ता चुनना उचित है? – प्रश्नवाचक वाक्य

(2) इस वर्ष भीषण गरमी पड़ रही थी। – विधानवाचक वाक्य

(3) आप उन गहनों की चिंता न करें। – निषेधवाचक वाक्य

(4) सुनील, जरा ड्राइवर को बुलाओ। – आज्ञावाचक वाक्य

(5) अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं? – प्रश्नवाचक वाक्य

(6) सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया। – विधानवाचक वाक्य

(7) हाय! कितनी निर्दयी हूँ मैं! – विस्मयादिबोधक वाक्य

(8) काकी उठो, भोजन कर लो। – आज्ञावाचक वाक्य

(9) वाह! कैसी सुगंध है। – विस्मयादिबोधक वाक्य

(10) तुम्हारी बात मुझे अच्छी नहीं लगी। – निषेधवाचक वाक्य

6414132

(2) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों में अर्थ के आधार पर परिवर्तन कीजिए :

(1) थोड़ी बातें हुईं। *(निषेधवाचक वाक्य)*

उत्तर : थोड़ी भी बातें नहीं हुईं।

(2) मानू इतना ही बोल सकी। *(प्रश्नवाचक वाक्य)*

उत्तर : क्या मानू इतना ही बोल सकी?

(3) मैं आज रात का खाना नहीं खाऊँगा। *(विधानवाचक वाक्य)*

उत्तर : मैं आज रात का खाना खाऊँगा।

(4) गाय ने दूध देना बंद कर दिया *(विस्मयादिबोधक वाक्य)*

उत्तर : अरे! गाय ने दूध देना बंद कर दिया।

(5) तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए! *(आज्ञावाचक वाक्य)*

उत्तर : तुम अपना ख्याल रखो।

(3) प्रथम इकाई के पाठों में से अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के पाँच वाक्य ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर :

(1) करामत अली इधर दो-चार दिनों से अस्वस्थ था। *(विधानवाचक वाक्य)*

(2) इन्हें मरीज से हमदर्दी नहीं होती। *(निषेधवाचक वाक्य)*

(3) तो उसकी सजा इसे लाठियों से दी गई? *(प्रश्नवाचक वाक्य)*

(4) "जाओ, लक्ष्मी का राशन ले आओ।" *(आज्ञावाचक वाक्य)*

(5) हे ईश्वर, अगर मेरी दूसरी टाँग भी तोड़नी हो तो जरूर तोड़ें, मगर इस जगह जहाँ मेरा कोई न हो। *(इच्छावाचक वाक्य)*

(4) रचना के आधार पर वाक्यों के भेद पहचानकर लिखिए :

(1) अधिकारियों के चेहरे पर हलकी-सी मुस्कान और उत्सुकता छा गई।

उत्तर : सरल वाक्य।

(2) हर ओर से अब वह निराश हो गया था।

उत्तर : सरल वाक्य।

(3) उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिलते ही उसे चलाऊँ।

उत्तर : मिश्र वाक्य।

(4) वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली।

उत्तर : संयुक्त वाक्य।

(5) मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं।

उत्तर : सरल वाक्य।

(6) अभी समाज में यह चल रहा है क्योंकि लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं।

उत्तर : संयुक्त वाक्य।

(5) रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के तीन-तीन वाक्य पाठों में ढूँढ़कर लिखिए।

(i) **सरल वाक्य :**

(1) आज उसे साक्षात्कार के लिए जाना है।

(2) अब तक उसके हिस्से में सिर्फ असफलता ही आई थी।

(3) रिश्वत भ्रष्टाचार की बहन है।

(ii) **संयुक्त वाक्य :**

(1) अधिकारियों के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आई और उत्सुकता छा गई।

(2) व्यक्ति समाज को कम-से-कम देने की इच्छा रखता है लेकिन समाज से अधिक-से-अधिक लेने की इच्छा रखता है।

(3) विषमता दूर करने में कानून भी कुछ मदद देता है, परंतु कानून से मानवोचित गुणों का विकास नहीं हो सकता।

(iii) **मिश्र वाक्य :**

(1) भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है, जो देश को घुन की तरह खा रहा है।

(2) वह जानता था कि यहाँ भी उसका चयन नहीं होगा।

(3) संपत्ति तो वे ही चीजें हो सकती हैं, जो किसी-न-किसी रूप में मनुष्य के उपयोग में आती हैं।

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **श्रवणीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 55)**
  बालक/बालिकाओं से संबंधित कोई ऐतिहासिक कहानी सुनकर उसका रूपांतरण संवाद में करके कक्षा में सुनाइए।
- **पठनीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 55)**
  अपनी पसंद की कोई सामाजिक ई-बुक पढ़िए।
- **संभाषणीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 55)**
  'शहर और महानगर का यांत्रिक जीवन' विषय पर बातचीत कीजिए।
- **लेखनीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 55)**
  पहाड़ों पर रहने वाले लोगों की जीवन शैली की जानकारी प्राप्त करके अपनी जीवन शैली से उसकी तुलना करते हुए लिखिए।

मुद्दे : (i) घर-द्वार (ii) रहन-सहन (iii) खान-पान (iv) रीति-रिवाज (v) जीवन-यापन के साधन (vi) यातायात व्यवस्था।

64141132

उपयोजित लेखन

• **'जल है तो कल है' विषय पर अपने विचार 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए। (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 57)**

उत्तर : हवा के पश्चात प्राणियों को जीवित रहने के लिए जिस चीज की आवश्यकता होती है वह है जल। जल के बिना प्राणी अधिक दिनों तक नहीं जी सकता। इसीलिए कहा जाता है कि जल ही जीवन है।

जल हमें कुओं, तालाबों और नदियों से मिलता है। वर्षा का जल तालाबों, झीलों आदि में जमा होता है। कुछ पानी भूगर्भ में चला जाता है। शेष पानी नदियों में होता हुआ समुद्र में चला जाता हैं। भूगर्भ का पानी कुओं के माध्यम से पीने के काम में लाया जाता हैं। नदियों और झीलों का पानी शुद्ध किया जाता है। इसके बाद वह पीने लायक होता है। गाँवों में अधिकतर कुओं के पानी से ही काम चलाया जाता है। बड़े-बड़े शहरों में नदियों और झीलों के पानी को शुद्ध करके पीने के काम में लाया जाता है।

हर व्यक्ति को पानी की आवश्यकता होती है। बिना पानी के किसी का काम नहीं चल सकता। निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण आज पानी की समस्या विकट हो गई है। इसका कारण है पानी का अंधाधुंध उपयोग। गाँवों में सिंचाई के लिए अंधाधुंध तरीके से भू-जल का दोहन किया जा रहा है। इस कारण पानी का स्तर निरंतर नीचे-ही-नीचे जा रहा है। कहीं-कहीं तो कुओं में पानी ही नहीं रहा।

पीने का पानी कम होने का कारण वर्षा का निरंतर कम होते जाना है। पेड़ों और जंगलों की अंधाधुंध कटाई इसका प्रमुख कारण है। आए दिन पानी के लिए झगड़े होते रहते हैं। देश के अंदर एक राज्य दूसरे राज्य से पानी के लिए झगड़ता है। एक देश दूसरे देश से जल के लिए लड़ता है। पानी की समस्या सारी दुनिया में है। कुछ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि भविष्य में पानी के लिए महायुद्ध होगा।

पानी का अशुद्ध होना भी पानी की कमी का एक कारण है। अशुद्ध पानी से तरह-तरह की जानलेवा बीमारियाँ होती हैं। शहरों के किनारे बहने वाली नदियों में शहर की सारी गंदगी डाली जा रही है। कल-कारखानों का विषैला पानी नदियों में प्रवाहित होता है। वही पानी पीने के लिए दिया जाता है। इससे लोगों को तरह-तरह की बीमारियाँ होती है।

सरकार की ओर से हर व्यक्ति तक पर्याप्त शुद्ध पेय जल पहुँचाने का अथक प्रयास किया जा रहा है। फिर भी अभी इस दिशा में और प्रयास करने की जरूरत है। हर व्यक्ति इस उम्मीद में है कि उसे पर्याप्त शुद्ध जल उपलब्ध हो। आखिर जल है, तो कल है।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

3 श्रम साधना

– श्रीकृष्णदास जाजू

विषय-प्रवेश : प्राचीन काल से आज तक सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए हैं। इसके साथ ही संपत्ति तथा उसके निर्माण में लगने वाली शक्तियों के बीच तरह-तरह की असमानताएँ भी रही हैं। श्रमजीवियों तथा व्यापारियों की आर्थिक स्थिति में जमीन-आसमान का अंतर रहा है। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने मानवीय जीवन, संपत्ति, संपत्ति के स्वामित्व, मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं तथा शारीरिक एवं बौद्धिक श्रम आदि का विस्तृत विवेचन किया है। प्रस्तुत वैचारिक निबंध में श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए सामाजिक एवं आर्थिक समानता पर बल दिया गया है।

मुहावरा – अर्थ

गुजर-बसर होना – आजीविका चलना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा प्रश्न 1 (आ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 58)

गुलामी की प्रथा ..... मनुष्य का शरीर श्रम।

शब्दार्थ

गुलामी – दासता, पराधीनता। **तत्त्ववेत्ता** – तत्त्वज्ञ, दार्शनिक। **प्रथा** – रिवाज, रीति। **हित** – कल्याण, भलाई। **न्यायोचित** – जो न्यायतः उचित हो। **हुकूमत** – शासन। **घनघोर** – बहुत घना। **स्वामित्व** – मालिकाना। **यातना** – अति कष्ट, पीड़ा। **प्राथमिक** – प्रारंभिक।

कृति 1 : (आकलन)

- **आकृति पूर्ण कीजिए :**

* (i) दो प्रथाएँ, जो समाप्त हो गईं –

(स्वाध्याय में दिए गए 'उत्तर लिखिए' प्रश्न को कृतिस्वरूप में दिया गया है।)

(ii) गुलामी प्रथा को खत्म करने के लिए यह हुआ –

(iii) इस तरह मिटी राजप्रथा –

उत्तर

(i) दो प्रथाएँ, जो समाप्त हो गईं –
- गुलामी की प्रथा
- राजप्रथा

(ii) गुलामी प्रथा को खत्म करने के लिए यह हुआ –
- विवेक जागृत हुआ
- लोगों में युद्ध हुए

(iii) इस तरह मिटी राजप्रथा –
- घनघोर युद्ध हुए
- सदियों तक झगड़े चले

कृति 2 : (आकलन)

(1) (i) **संजाल पूर्ण कीजिए :**

आम तौर पर जिन्हें माना जाता है संपत्ति –

6414132

(ii) **लिखिए :**

संपत्ति के स्वामित्व और अधिकार को जानने के लिए इन्हें समझना जरूरी है–
- ____
- ____

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) लेखक के मतानुसार संपत्ति –
- ____
- ____

* (ii) संपत्ति के दो मुख्य साधन –
- ____
- ____

(iii) मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ –
- ____
- ____
- मकान

(iv) संपत्ति के माप-तौल के साधन –
- ____
- ____

6414132

उत्तर

(1) (i) आम तौर पर जिन्हें माना जाता है संपत्ति –
- रुपया
- नोट
- सोना (सिक्का)
- चाँदी (सिक्का)

(ii) संपत्ति के स्वामित्व और अधिकार को जानने के लिए इन्हें समझना जरूरी है–
- संपत्ति किसे कहते हैं?
- संपत्ति बनती कैसे है?

(2) (i) लेखक के मतानुसार संपत्ति –
- मनुष्य के उपयोग में आने वाली वे चीजें, जिनके बिना वह जिंदा नहीं रह सकता
- मनुष्य के उपयोग में आने वाली वे चीजें, जो उसके सुख-सुविधा और आराम के लिए होती हैं

(ii) संपत्ति के दो मुख्य साधन –
- सृष्टि के द्रव्य
- मनुष्य का शरीर श्रम

(iii) मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ –
- अन्न
- वस्त्र
- मकान

(iv) संपत्ति के माप-तौल के साधन–
- रुपया, नोट
- सोना-चाँदी के सिक्के

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) प्रथा = ... (ii) युद्ध = ...

(iii) हुकूमत = ... (iv) गुलामी = ...

(2) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) गौण × ..... (ii) अनेक × .....

(iii) अप्राकृतिक × ..... (iv) बादशाह × .....

(3) लिंग पहचान कर लिखिए :

(i) मकान – ..... (ii) संपत्ति – .....

उत्तर

(1) (i) प्रथा = रिवाज (ii) युद्ध = लड़ाई

(iii) हुकूमत = शासन (iv) गुलामी= दासता।

(2) (i) गौण × मुख्य (ii) अनेक × एक

(iii) अप्राकृतिक × कृत्रिम (iv) बादशाह × भिखारी।

(3) (i) मकान – पुल्लिंग (ii) संपत्ति – स्त्रीलिंग।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'राजाओं और बादशाहों का राज' के बारे में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में व्यक्त कीजिए।**

उत्तर : स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले हमारे देश में छोटी-बड़ी अनेक रियासतें थीं। राजा, बादशाह और तालुकेदार इन रियासतों के मालिक थे। इनके राज में रहने वाली जनता इनकी प्रजा कहलाती थी। राजा और बादशाह जनता से तरह-तरह के कर वसूल करते थे और कर अदा न कर पाने पर जनता पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। एक तरह से जनता को ये अपना गुलाम समझते थे और उसका शोषण करने में जरा भी नहीं झिझकते थे। जनता इनसे त्रस्त थी। इसके अलावा ये राजा और बादशाह अपने स्वार्थ के लिए आपस में लड़ते-भिड़ते थे और मौका मिलने पर एक-दूसरे की रियासतों पर कब्जा कर जनता में लूटपाट किया करते थे। असहाय जनता की कोई सुनने वाला नहीं था। आजादी मिलने के बाद इन छोटी-छोटी रियासतों को खत्म कर भारत संघ में मिला लिया गया। इसके बाद इन राजाओं और बादशाहों का राज खत्म हो गया। इसके साथ ही समाप्त हो गया जनता पर इनका अत्याचार। फिर तो प्रजातंत्र में न कोई किसी का राजा रहा न कोई किसी की प्रजा। सबको समान अधिकार उपलब्ध हो गए।

6414132

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 59)

संपत्ति के स्वामित्व ..... कोई मर्यादा नहीं।

शब्दार्थ

प्रत्यक्ष – जो आँखों के सामने हो। **उत्पादित** – उत्पन्न किया हुआ। **श्रमजीवी** – शारीरिक मेहनत के द्‌वारा जीवन निर्वाह करने वाला। **व्यवसाय** – व्यापार, कारोबार। **बुद्‌धिजीवी** – बुद्‌धि से जीविका चलाने वाला, दिमागी काम करने वाला। **भरण-पोषण** – पालन-पोषण। **निर्वाह** – गुजारा। **उद्‌योगपति** – उद्‌यमी, उद्‌योग चलाने वाला।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

(i)

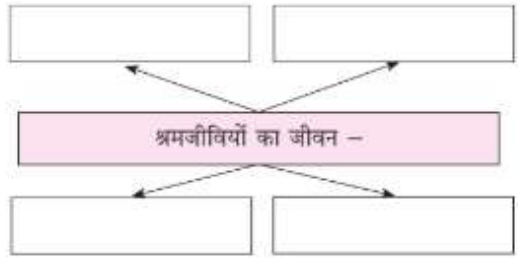

(ii)

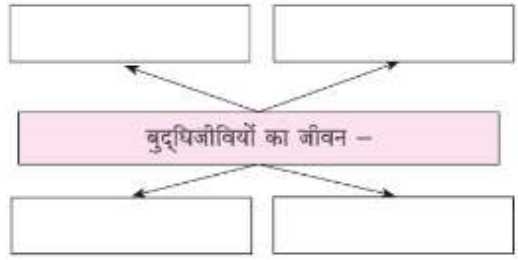

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

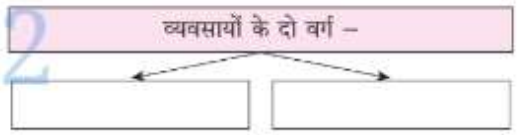

*** (3) तुलना कीजिए/अंतर बताइए :**

बुद्‌धिजीवी	श्रमजीवी
1.	1. .....
2.	2. .....

उत्तर

(1) (i)

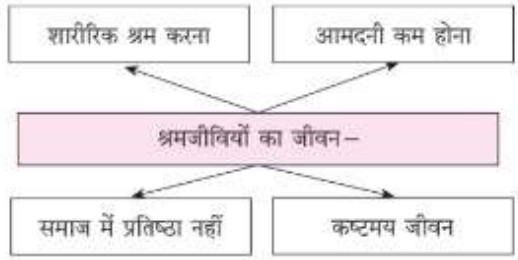

(ii) बौद्धिक काम करना | अच्छी आमदनी

बुद्धिजीवियों का जीवन –

सामाजिक प्रतिष्ठा | आरामदेह जीवन

(2) व्यवसायों के दो वर्ग –

श्रमजीवियों के व्यवसाय | बुद्धिजीवियों के व्यवसाय

(3)

बुद्धिजीवी	श्रमजीवी
1. बौद्धिक काम करना।	1. शारीरिक श्रम करना।
2. अधिक आमदनी, प्रतिष्ठित एवं सुखमय जीवन।	2. आमदनी कम, प्रतिष्ठा नहीं, कष्टमय जीवन।

कृति 2 : (आकलन)

6414132

***(1) संजाल पूर्ण कीजिए :**

गद्यांश में प्रयुक्त श्रमजीवी–

(2) उत्तर लिखिए :

(i) जो संपत्ति का निर्माण करते हैं, वे –

(ii) धन इकट्ठा होता है इनके पास –

(iii) बौद्धिक काम से अपना भरण-पोषण करने वाले लोग –

(iv) समाज के लिए ये दोनों जरूरी हैं –

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

*(i) व्यापारी और उद्योगपतियों के लिए अर्थशास्त्र द्वारा बताए गए नियम –

(ii) दो ऐसे प्रश्न बनाकर लिखिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(1) अन्न (2) श्रमजीवियों पर।

उत्तर

(1)

लुहार | किसान

गद्यांश में प्रयुक्त श्रमजीवी–

बढ़ई | मजदूर

(2) (i) जो संपत्ति का निर्माण करते हैं, वे – मजदूर

(ii) धन इकट्ठा होता है इनके पास – व्यवस्था करने वाले

(iii) बौद्धिक काम से अपना भरण-पोषण करने वाले लोग – मंत्री, राज्य के कर्मचारी, क्लर्क, न्यायाधीश, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, व्यापारी

(iv) समाज के लिए ये दोनों जरूरी है – श्रमजीवी और बुद्धिजीवी

(3) (i) व्यापारी और उद्योगपतियों के लिए अर्थशास्त्र द्वारा बताए गए नियम –

खरीद सस्ती-से-सस्ती | बिक्री महँगी-से-महँगी

(ii) (1) वर्षभर मेहनत कर किसान क्या पैदा करता है?

(2) बुद्धिजीवियों का जीवन किन लोगों पर आधारित है?

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) गद्यांश में आए शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) .....

(iii) ..... (iv) .....

(2) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) प्रत्यक्ष × ..... (ii) धनवान × .....

(iii) ऊँचा × ..... (iv) दुर्भाग्य × .....

उत्तर

(1) (i) लेन-देन (ii) राज-काज
(iii) ऊँचे-ऊँचे (iv) भरण-पोषण।

(2) (i) प्रत्यक्ष × परोक्ष (ii) धनवान × निर्धन
(iii) ऊँचा × नीचा (iv) दुर्भाग्य × सौभाग्य।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'शारीरिक श्रम का महत्त्व' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : श्रम दो प्रकार का होता है। शारीरिक श्रम और बौद्धिक श्रम। पुराने जमाने में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या कम थी, इसलिए लोगों को शारीरिक श्रम का ही सहारा था। वे जीवन-यापन के लिए छोटा-मोटा काम करके अपना गुजारा कर लेते थे। शिक्षा की समुचित व्यवस्था हो जाने के बाद पढ़े-लिखे लोगों की संख्या में अंधाधुंध वृद्धि हुई है। हर शिक्षित व्यक्ति चाहता है कि उसे ऐसी नौकरी मिले, जिसमें उसे शारीरिक श्रम न करना पड़े। शारीरिक श्रम वाला काम कोई करना नहीं चाहता। इसलिए देश में लाखों नवयुवक बेरोजगार हैं। यह लोगों के शारीरिक श्रम से परहेज रखने का परिणाम है। लोगों को शारीरिक श्रम का महत्त्व समझना जरूरी है। बुद्धि के बल पर बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई जा सकती हैं, पर उनका कार्यान्वयन करने के लिए शारीरिक श्रम की ही आवश्यकता होती है। छोटी-छोटी चीजों से लेकर बड़ी-बड़ी चीजों का निर्माण केवल शारीरिक श्रम से ही हो सकता है। जो व्यक्ति इस रहस्य को समझते हैं, वे शारीरिक श्रम को महत्त्व देते हैं। अनेक पढ़े-लिखे लोग अपना व्यवसाय अथवा छोटा-मोटा काम शुरू करके अपना जीवन-यापन कर रहे हैं और बौद्धिक श्रम के साथ शारीरिक श्रम उनका साथ दे रहा है। स्वरोजगार के द्वारा वे स्वयं भी काम कर रहे हैं और दूसरों को भी रोजगार दे रहे हैं।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 60)
मनुष्य समाज में ..... निर्वाह चल सके।''

शब्दार्थ

नगण्य – जो गणना में न आ सके, तुच्छ। **कृतज्ञ** – नेकी, उपकार मानने वाला, एहसानमंद। **संग्रहित** – एकत्र। **अल्पतम** – बहुत कम। **कर्तव्य** – जिसे करना उचित हो। **रंज** – दुख, शोक। **बुनियादी** – आरंभिक। **विषमता** – असमता, अंतर। **शोषण** – अनुचित लाभ, अनुचित व्यवहार।

कृति 1 : (आकलन)

- **आकृति पूर्ण कीजिए :**

(i) शिक्षालयों के खर्च के स्रोत –
[ ] [ ]

*(ii) व्यापार की कला इनसे प्राप्त होती है –
[ ] [ ]

(iii) समाज की कृपा से योग्यता प्राप्त मनुष्यों का कर्तव्य –
[ ] [ ]

उत्तर

(i) शिक्षालयों के खर्च के स्रोत –
- सरकार द्वारा टैक्स के रूप में वसूल किए गए पैसे
- दानी लोगों की कृपा से प्राप्त धन

(ii) व्यापार की कला इनसे प्राप्त होती है –
- विद्यालयों से
- अपने साथियों एवं समाज से

(iii) समाज की कृपा से योग्यता प्राप्त मनुष्यों का कर्तव्य –
- समाज को अधिक से अधिक देना
- समाज से कम-से-कम लेना

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) समाज में व्याप्त आर्थिक और सामाजिक विषमताओं का परिणाम –
[ ] [ ]

6411 1132

*(ii) गांधी जी द्वारा शोषण तथा अशांति मिटाने के लिए बताए गए सूत्र –

उत्तर

(1) (i) समाज में व्याप्त आर्थिक और सामाजिक विषमताओं का परिणाम –

शोषण होना	अशांति होना

(ii) गांधी जी द्वारा शोषण तथा अशांति मिटाने के लिए बताए गए सूत्र –

• पेट भरने के लिए हाथ-पैर (चलाना) • चार घंटे शरीर श्रम	• ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान देने के लिए बुद्धि (का उपयोग) • चार घंटे बौद्धिक काम

कृति 3 : (शब्द संपदा)

6414132

(1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) आम = ... (ii) श्रम = ...

(iii) हिस्सा = ... (iv) जगत = ...

(2) निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय और मूल शब्द अलग करके लिखिए :

(i) योग्यता (ii) अल्पतम (iii) बुनियादी (iv) सामाजिक।

उत्तर

(1) (i) आम = सामान्य (ii) श्रम = मेहनत

(iii) हिस्सा = भाग (iv) जगत = संसार।

(2) (i) योग्य + ता (ता) (ii) अल्प + तम (तम)

(iii) बुनियाद + ई (ई) (iv) समाज + इक (इक)।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

***• 'समाज परोपकार वृत्ति के बल पर ही ऊँचा उठ सकता है' – इस कथन से संबंधित अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : हमारे शास्त्रों में परोपकार को बहुत महत्त्व दिया गया है। पेड़ों में फल लगना, नदियों के जल का बहना परोपकार का ही एक रूप है। इसी तरह सज्जन व्यक्तियों की संपत्ति और इस शरीर को भी परोपकार में लगा देने के लिए कहा गया है। हमारे समाज में गरीब – अमीर हर प्रकार के व्यक्ति होते हैं। अनेक लोग ऐसे हैं जिन्हें भरपेट भोजन भी नहीं मिलता और कुछ लोग ऐसे हैं, जिनके पास इतनी संपत्ति है कि उन्हें स्वयं इसकी पूरी जानकारी नहीं है। मनुष्य में परोपकार की प्रवृत्ति जन्मजात होती है। प्यासे को पानी पिलाना और किसी भूखे को खाना खिला देना कौन नहीं चाहता। यही परोपकार भावना है। हमारे देश में अनेक अस्पताल, अनेक शिक्षा संस्थाएँ परोपकार करने वाले लोगों के धन से चल रही हैं। समाज के कमजोर वर्ग के लिए तरह-तरह की संस्थाएँ काम कर रही हैं। इनका संचालन दान अथवा सहायता के रूप में प्राप्त धन से हो रहा है। हर युग में समाज के उत्थान के लिए परोपकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहा है। यह सहयोग इसी तरह मिलता रहना चाहिए तभी हमारे समाज का उत्थान होगा।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 61)

आजीविका की ..... मदद मिले।

शब्दार्थ

आजीविका – रोजी, रोजगार। **आशय** – अर्थ, मतलब। **अर्थशास्त्री** – अर्थशास्त्र का ज्ञाता। **नैतिक** – नीति संबंधी। **स्वार्थ वृत्ति** – स्वार्थ की भावना। **स्पर्धा** – प्रतियोगिता। **मानवोचित** – मानव के लिए उचित।

कृति 1 : (आकलन)

• **आकृति पूर्ण कीजिए :**

(i) गद्यांश में बताई गई शरीर श्रमवाली दो वस्तुएँ –

(ii) गद्यांश में आए दो यज्ञों के नाम –

*(iii) दान से ये कार्य होते हैं –

उत्तर

(i) गद्यांश में बताई गई शरीर श्रमवाली दो वस्तुएँ –

- आजीविका की साधन-सामग्री
- पैसे के बल पर सामग्री खरीदने वाले पैसे की जड़

(ii) गद्यांश में आए दो यज्ञों के नाम –

- संपत्ति दान यज्ञ
- भूदान यज्ञ

(iii) दान से ये कार्य होते हैं –

- अस्पताल
- विद्यालय

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

संपत्ति समाज में फैली रहने से ये लाभ होंगे –

- [ ]
- [ ]

6414132

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादन की प्रेरणा के लिए यह करना होगा – [ ]

(ii) पूँजी के बारे में अनुभव यह बताता है – [ ]

(iii) लेखक के अनुसार स्वार्थ का अर्थ – [ ]

(iv) समाज इस वृत्ति के बल पर ऊँचा उठ सकता है – [ ]

(3) गद्यांश के वाक्यों को उचित क्रम से लिखिए :

(i) देखना है कि समाज का कल्याण किस वृत्ति से होगा।

(ii) बिना शरीर श्रम किए उस सामग्री का उपयोग करने का न्यायोचित अधिकार हमें नहीं मिलता।

(iii) आजीविका की साधन-सामग्री किसी-न-किसी के श्रम के बिना हो ही नहीं सकती।

(iv) नैतिक दृष्टि से स्वार्थवृत्ति का पोषण करना योग्य नहीं है।

(4) उत्तर लिखिए :

* कल्याणकारी राज्य का अर्थ – .....

उत्तर

(1) संपत्ति समाज में फैली रहने से ये लाभ होंगे –

- सहकार पद्धति से बड़े पैमाने पर काम आसानी से चलने लगेंगे
- लाभ लेने वाले लोग सम्मानपूर्वक लाभ उठाएँगे, याचक की तरह नहीं।

(2) (i) अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादन की प्रेरणा के लिए यह करना होगा – व्यक्ति को स्वार्थ के लिए अवसर देने होंगे।

(ii) पूँजी के बारे में अनुभव यह बताता है – पूँजी गरीबी या बेकारी की समस्या हल नहीं कर सकी है।

(iii) लेखक के अनुसार स्वार्थ का अर्थ – परार्थ की हानि

(iv) समाज इस वृत्ति के बल पर ऊँचा उठ सकता है – परोपकार की वृत्ति

(3) (i) आजीविका की साधन-सामग्री किसी-न-किसी के श्रम के बिना हो ही नहीं सकती।

(ii) बिना शरीर श्रम किए उस सामग्री का उपयोग करने का न्यायोचित अधिकार हमें नहीं मिलता।

(iii) नैतिक दृष्टि से स्वार्थवृत्ति का पोषण करना योग्य नहीं है।

(iv) देखना है कि समाज का कल्याण किस वृत्ति से होगा।

(4) कल्याणकारी राज्य का अर्थ – सब तरह के दुर्बलों को राजसत्ता द्वारा मदद दिया जाना।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्द-समूह के लिए गद्यांश से चुनकर एक-एक शब्द लिखिए :

(i) वह दौलत, जो किसी के अधिकार में हो और जो खरीदी या बेची जा सकती हो –

(ii) दूसरों के उपकार या भलाई का काम –

(iii) ऐसी बात – जिसमें केवल अपना हित हो –

(iv) वह धन – जिससे कोई व्यवसाय आरंभ किया गया हो –

(2) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) थोड़ा × ..... (ii) दोषपूर्ण × .....

(iii) योग्य × ..... (iv) गरीबी × .....

उत्तर

(1) (i) संपत्ति (ii) परोपकार (iii) स्वार्थ (iv) पूँजी।

(2) (i) थोड़ा × बहुत (ii) दोषपूर्ण × निर्दोष

(iii) योग्य × अयोग्य (iv) गरीबी × अमीरी।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

***• 'मेवे फलते श्रम की डाल' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपनी लिखित अभिव्यक्ति दीजिए।**

उत्तर : श्रम दो प्रकार का होता है। एक शारीरिक श्रम और दूसरा बौद्धिक श्रम। दोनों प्रकार के श्रम का अपना-अपना महत्त्व है। श्रम को सदा महत्त्व दिया गया है। श्रम करने वाला व्यक्ति परिश्रम करके अपना भरण-पोषण करता है और शान से रहता है। जो श्रम करता है, वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माण करता है। वह अपना खून-पसीना एक कर मेहनत की पवित्र रोटी खाता है। मेहनत की जिंदगी ही सच्ची जिंदगी है। श्रम करने वाला व्यक्ति काम से कभी नहीं घबराता। उसके सामने जैसा भी काम आता है, उसे वह लगन और मेहनत से पूरा करता है। विद्यार्थी श्रम द्वारा ही परीक्षा में सफलता प्राप्त करते हैं। मजदूर, किसान, इंजीनियर, वैज्ञानिक, व्यापारी, खिलाड़ी आदि सबकी प्रगति में श्रम का ही हाथ होता है। हमें याद रखना चाहिए कि श्रम कभी बेकार नहीं जाता। ईमानदारी से किए गए श्रम का तुरंत लाभ भले न मिले, पर कभी-न-कभी उसका फल मिलकर ही रहता है। श्रम करने वाले ही मेवों का स्वाद चखते हैं।

गद्यांश क्र. 5

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 5 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 62)

हमारी सामाजिक ..... ऐसी हम श्रद्धा रखें।

शब्दार्थ

हीन दृष्टि – हीनता की नजर। **लाचारी** – विवशता। **वृत्ति** – मन की अवस्था। **प्रतिष्ठा** – सम्मान, मान मर्यादा। **प्रीति** – प्यार, लगाव। **कर्तव्य परायण** – कर्तव्य के प्रति निष्ठावान। **क्रांति** – स्थिति में भारी फेर-बदल, पूर्ण परिवर्तन। **उत्पादक** – उत्पन्न करने वाला।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i)

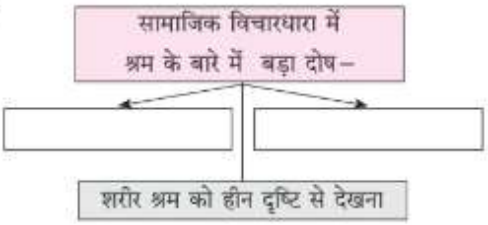

(ii)

(2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) शरीर श्रम के लिए क्या जरूरी है?

(ii) श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना किसके हाथ है?

उत्तर

(1) (i)

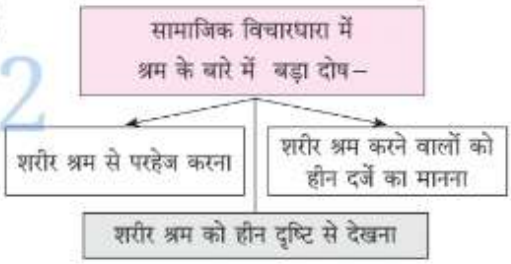

(ii)

(2) (i) शरीर श्रम के लिए जरूरी है दिल में प्रीति होना।

(ii) श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना श्रमिक के हाथ है।

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) गांधीजी की मान्यता के अनुसार हर व्यक्ति को यह करना चाहिए – [ ]

(ii) अब कुछ समय से जगत के सामने दया की जगह यह विचार आया है – [ ]

641432

(iii) महात्माजी द्‌वारा दी गई प्रसिद्‌ध विचारधारा – [ ]

(iv) अहिंसा के मार्ग से यह प्रश्न हल हो सकता है – [ ]

(2) निम्नलिखित वाक्यों के आधार पर प्रश्न बनाइए :

(i) गांधीजी ने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए ही रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया।

(ii) कानून से मानवोचित गुणों का विकास नहीं हो सकता?

(iii) अहिंसा के प्रभाव का कुछ अनुभव भी हम कर सकते हैं।

(iv) आर्थिक सामाजिक समता का प्रश्न अहिंसा के मार्ग से सुलझेगा।

उत्तर

(1) (i) गांधीजी की मान्यता के अनुसार हर व्यक्ति को यह करना चाहिए – [उत्पादक श्रम]

(ii) अब कुछ समय से जगत के सामने दया की जगह यह विचार आया है – [समता का]

(iii) महात्माजी द्‌वारा दी गई प्रसिद्‌ध विचारधारा – [अहिंसा]

(iv) अहिंसा के मार्ग से यह प्रश्न हल हो सकता है – [विषमता का]

(2) (i) गांधीजी ने किन बातों की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया?

(ii) कानून से किन गुणों का विकास नहीं हो सकता?

(iii) किसके प्रभाव का अनुभव हम कर सकते हैं?

(iv) आर्थिक सामाजिक समता का प्रश्न किस मार्ग से सुलझेगा?

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के वचन पहचानकर लिखिए :

(i) बच्चा – ..... (ii) विषमताएँ – .....

(iii) पैसे – ..... (iv) धनिक – .....

*** (2) गद्‌यांश में प्रयुक्त 'इक' प्रत्यययुक्त शब्दों को ढूँढ़कर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(i) ..... (ii) ..... (iii) ..... (iv) .....

(v) ..... (vi) .....

उत्तर

(1) (i) बच्चा – एकवचन (ii) विषमताएँ – बहुवचन

(iii) पैसे – बहुवचन (iv) धनिक – एकवचन।

(2) (i) आर्थिक (ii) प्राकृतिक (iii) श्रमिक

(iv) सामाजिक (v) प्राथमिक (vi) बौद्‌धिक।

(i) **आर्थिक :** किसानों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए कुछ करो।

(ii) **प्राकृतिक :** कश्मीर की घाटी प्राकृतिक दृश्यों से भरी पड़ी है।

(iii) **श्रमिक :** कारखाने में काम करने वाले श्रमिक का काम बहुत मेहनत का होता है।

(iv) **सामाजिक :** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

(v) **प्राथमिक :** घायल व्यक्ति को तुरंत प्राथमिक चिकित्सा की जरूरत होती है।

(vi) **बौद्‌धिक :** हर व्यक्ति की बौद्‌धिक क्षमता भिन्न-भिन्न होती है।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'शारीरिक श्रम स्वास्थ के लिए अति उत्तम' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : शारीरिक श्रम का अर्थ है, वह मेहनत, जिसमें हाथ-पैर के सहयोग से काम संपन्न हो। किसान, मजदूर, कुली, ठेलेवाले, शारीरिक मेहनत करते हैं। वैसे हर व्यक्ति जाने-अनजाने थोड़ी बहुत शारीरिक मेहनत करता ही है। अपने घर की सफाई करना, खाना बनाना, बरतन धोना और बाजार-हाट से सामान-सब्जी लाना भी श्रम है। कुछ शारीरिक काम करने वाले लोग धूप में खेतों में काम करते हैं। कुछ कारखानों में पसीना बहाकर मेहनत करते हैं। कुछ अनाज के बोरे गाड़ियों पर चढ़ाते-उतारते हैं। कुछ सड़कों पर हथौड़े लेकर पत्थर तोड़ते या खुदाई करते हैं। ये मोटा खाते और मोटा पहनते हैं, पर शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं। दूसरी ओर वे लोग हैं, जो कोई शारीरिक श्रम नहीं करते। वे पौष्टिक भोजन करते हैं, नर्म गद्‌देदार बिछौनों पर सोते हैं, पर बीमारी के कारण उन्हें नींद नहीं आती। भोजन नहीं पचता। डॉक्टर इन्हें कम भोजन करने और ज्यादा दवाइयाँ लेने के लिए कहते हैं। शारीरिक श्रम के अभाव में इनका जीवन कष्टप्रद बन जाता है। डॉक्टर इन्हें हाथ-पैर चलाने और व्यायाम करने की सलाह देते हैं। ऐसे लोगों को शारीरिक श्रम करने वालों से सबक लेना चाहिए, जो अपनी मेहनत के बल पर भले-चंगे बने रहते हैं। इस प्रकार शारीरिक श्रम अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है।

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 63)

*• **पाठ में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनके विलोम शब्द भी पाठ में ही प्रयुक्त हुए हैं। ऐसे शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर : (i) हाड़ × माँस (ii) प्रत्यक्ष × अप्रत्यक्ष

(iii) देश × विदेश (iv) हाथ × पैर

(v) स्वार्थ × परार्थ (vi) अमीर × गरीब।

6414132

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों के शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) गांधीजी ने यह काम श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा कायम करने के लिए किया।

(ii) विषमता दूर करने के लिए प्रभावशाली उपाय करना चाहिए।

उत्तर : (i) **गांधीजी** – व्यक्तिवाचक संज्ञा।

(ii) **प्रभावशाली** – गुणवाचक विशेषण।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) फिर (ii) कभी-कभी।

उत्तर : (i) संपत्ति रूपी ये सब चीजें फिर कैसे बनती हैं?

(ii) बुद्धिजीवियों को भी कभी-कभी शरीर श्रम करना पड़ता है।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	स्व + अर्थ	----------
	अथवा	
----------	सम् + पूर्ण	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
स्वार्थ	स्व + अर्थ	**स्वर संधि**
	अथवा	
संपूर्ण	सम् + पूर्ण	**व्यंजन संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) प्रतिदिन समय पर अपना काम किया करो।

(ii) वह अपनी जमा-पूँजी भी गँवा बैठा।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) करो	करना
(ii) बैठा	बैठना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) खौलना (ii) डूबना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) खौलना	खौलाना	खौलवाना
(ii) डूबना	डुबाना	डुबवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) मुँह फेरना (ii) रट लगाना।

उत्तर :

(i) मुँह फेरना।

अर्थ : उपेक्षा करना।

वाक्य : कर्मचारी अपनी माँग लेकर सेठ जी के पास जाते तो वे उनसे बात करने के बजाय मुँह फेर लेते।

(ii) रट लगाना।

अर्थ : एक ही बात बार-बार कहना।

वाक्य : मुर्गा बहुत सबेरे 'कुकड़ू-कूँ' की रट लगाता है।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(फूला न समाना, भार होना, कान में डालना)

(i) मुनीम जी ने बड़े बाबू को बात पहुँचाई।

(ii) मेडिकल में प्रवेश मिल जाने पर नकुल बहुत प्रसन्न हुआ।

उत्तर : (i) मुनीम जी ने बात बड़े बाबू के कान में डाल दी।

(ii) मेडिकल में प्रवेश मिल जाने पर नकुल फूला न समाया।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) गुलामी की प्रथा संसार भर में हजारों वर्षों तक चलती रही।

(ii) गांधीजी ने श्रम और श्रमिकों की प्रतिष्ठा स्थापित करने का काम किया।

उत्तर : (i) **गुलामी की** – संबंध कारक

(ii) **गांधीजी ने** – कर्ता कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) आम तौर से माना जाता है कि रुपया नोट और सोना-चाँदी का सिक्का ही संपत्ति है

6414132

(ii) अर्थशास्त्र ने यह नियम बताया है कि खरीद सस्ती से सस्ती हो और बिक्री महँगी से महँगी

उत्तर : (i) आम तौर से माना जाता है कि रुपया, नोट और सोना-चाँदी का सिक्का ही संपत्ति है।

(ii) अर्थशास्त्र ने यह नियम बनाया है कि खरीद सस्ती-से-सस्ती हो और बिक्री महँगी से महँगी।

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) बहुत से लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं। *(अपूर्ण भूतकाल)*

(ii) जिनके पास संपत्ति है, वे आराम से रह रहे हैं।

(सामान्य भविष्यकाल)

उत्तर :

(i) बहुत से लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चला रहे थे।

(ii) जिनके पास संपत्ति है, वे आराम से रहेंगे।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) हमारी विचारधारा में बड़ा भारी दोष है।

(ii) लोग शरीर श्रम करना नहीं चाहते और इसे हीन दृष्टि से देखते हैं।

(iii) जिस श्रम में समाज को जिंदा रखने की क्षमता है, उस श्रम का सही मूल्य श्रमिक जान लेगा तो देश में आर्थिक क्रांति होने में देर नहीं लगेगी।

(iv) सामाजिक समता का प्रश्न अहिंसा के मार्ग से सुलझेगा।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य

(iii) मिश्र वाक्य (iv) सरल वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का दी गई सूचना के अनुसार अर्थ के आधार पर परिवर्तन कीजिए :

(i) गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है। *(संदेहवाचक वाक्य)*

(ii) अब राजप्रथा मिट गई। *(आज्ञावाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) शायद गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है।

(ii) अब राजप्रथा मिटा दो।

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) इस सम्बन्ध में कुछ भाई अमेरिका का उदाहरण पेस करते हैं।

(ii) वही आधार पे भारत को कल्याणकारी राज्य बनाने की बात चली है

उत्तर :

(i) इस संबंध में कुछ भाई अमेरिका का उदाहरण पेश करते हैं।

(ii) उसी आधार पर भारत को कल्याणकारी राज्य बनाने की बात चली है।

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 64)

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 64 देखें।)

(1) निम्नलिखित वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द-समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

(इज्जत उतारना, हाथ फेरना, काँप उठना, तिलमिला जाना, दुम हिलाना, बोलबाला होना)

(i) करामत अली हौले-से लक्ष्मी से स्नेह करने लगा।

वाक्य : करामत अली हौले-से लक्ष्मी पर हाथ फेरने लगा।

(ii) सार्वजनिक अस्पताल का ख्याल आते ही मैं भयभीत हो गया।

वाक्य : सार्वजनिक अस्पताल का ख्याल आते ही मैं काँप उठा।

(iii) क्या आपने मुझे अपमानित करने के लिए यहाँ बुलाया था?

वाक्य : क्या आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए यहाँ बुलाया था?

(iv) सिरचन को बुलाओ, चापलूसी करता हुआ हाजिर हो जाएगा।

वाक्य : सिरचन को बुलाओ, दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा।

(v) पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध में आ गए।

वाक्य : पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही तिलमिला उठे।

(2) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) गुजर-बसर करना। **अर्थ :** जीविका चलाना।

वाक्य : पंडित घनश्याम किसी तरह गुजर-बसर कर लेते हैं।

(ii) गला फाड़ना। **अर्थ :** ऊँची आवाज में बोलना।

वाक्य : बेटे ने पिता से कहा, "मैं आपकी बात सुन रहा हूँ,आप नाहक गला फाड़ रहे हैं।"

(iii) कलेजे में हूक उठना। **अर्थ :** कसक होना।

वाक्य : सेठ लक्खूमल जब भी जवान बेटे की हत्या की बात याद करते हैं, उनके कलेजे में हूक उठती है।

(iv) सीना तानकर खड़े रहना। **अर्थ :** दृढ़तापूर्वक अड़े रहना।

वाक्य : वह समाजसेवक निर्दोष लोगों की सहायता के लिए सीना तानकर खड़ा रहता है।

(v) टाँग अड़ाना। **अर्थ :** कार्य में बाधा डालना।

वाक्य : किसी के बनते हुए काम में टाँग अड़ाना अच्छी बात नहीं है।

(vi) जेब ढीली होना। **अर्थ :** काफी खर्च होना।

वाक्य : मरीज की बीमारी तो ठीक हो गई, पर अस्पताल का बिल भरने में जेब ढीली हो गई।

6414132

(vii) निजात पाना। **अर्थ** : मुक्त होना।

वाक्य : आखिरकार लंबे अरसे बाद सेठजी लेन-देन के मुकदमे से निजात पा गए।

(viii) फूट-फूटकर रोना। **अर्थ** : बिलखते हुए रोना।

वाक्य : बेटे के गायब हो जाने पर माँ फूट-फूटकर रोई थी।

(ix) मन तरंगित होना। **अर्थ** : मौज में आना।

वाक्य : बेटे की अच्छे वेतनवाली नौकरी लग जाने की बात सुनकर पिता का मन तरंगित हो गया।

(x) मुँह लटकाना। **अर्थ** : चिंता, दुख से सिर नीचा कर लेना।

वाक्य : पिता जब निकम्मे बेटे को फटकारता है, तो वह मुँह लटकाकर सुनता रहता है।

(3) पाठ्यपुस्तक में आए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए : (इसके लिए विद्यार्थी 'नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन, कक्षा दसवीं' पुस्तक देखें।)

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **पठनीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 59)** महात्मा गांधी के श्रमप्रतिष्ठा और अहिंसा संबंधी विचार पढ़कर चर्चा कीजिए।
- **श्रवणीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 60)** आर्थिक विषमता को दूर करने वाले उपायों के बारे में सुनकर कक्षा में सुनाइए।
- **संभाषणीय – (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 61)** 'वर्तमान युग में सभी बच्चों के लिए खेल-कूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं' विषय पर चर्चा करते हुए अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

उपयोजित लेखन

- **निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए :**

आत्माराम नाम का खेतिहर मजदूर – दयनीय आर्थिक हालत – गाँव में एक साधु का आना – आत्माराम का साधु से कमाई का उपाय पूछना – साधु का मिट्टी देना – उससे खिलौने बनाने के लिए कहना – आत्माराम को अच्छी आय – कागज से भी अनेक वस्तुएँ बनाना – अच्छी कमाई होना।

उत्तर : एक छोटा-सा गाँव था। गाँव के लोग खेती-बारी से अपना गुजारा करते थे। लोगों के पास छोटे-छोटे खेत थे। वे अपने खेतों में साल में दो फसलें उगाते थे। खेतों में उत्पन्न अनाज से साल भर बड़ी मुश्किल से उनका काम चलता था। इस गाँव के लोगों में आपस में बहुत प्रेम-भाव था। गाँव में कुछ लोग ऐसे थे, जिनके पास खेत भी नहीं थे। उनका जीवन बहुत कष्टमय था। इन्हीं में से एक था आत्माराम। आत्माराम गाँव के किसानों के खेत में काम करके कुछ कमा लिया करता था।

एक दिन गाँव में एक साधु महाराज आए। आत्माराम ने साधु के सामने अपनी समस्या रखते हुए कहा, ''महाराज कुछ ऐसा उपाय बताइए, जिससें मैं चार पैसे कमाकर अपना और अपने परिवार का पेट पाल सकूँ।'' साधु महाराज ने कहा, ''ले यह मिट्टी। यह मिट्टी तेरे लिए सोना बनेगी।'' आत्माराम बोला, ''मैं समझा नहीं, महाराज! ऐसी मिट्टी तो गाँव में बहुत है, क्या करूँ इसका?'' साधु ने कहा, ''मिट्टी खोद। उससे खिलौने बना और बाजार में बेच। तेरा भला होगा।'' आत्माराम ने साधु को धन्यवाद दिया।

वह मिट्टी से खरगोश, चूहा, तोता, गुड़िया, गुड्डा बनाता और बाजार में बेच आता। इससे उसे अच्छी आय होने लगी। अब उसकी जिंदगी आराम से चलने लगी।

एक दिन बाजार में एक लड़के ने उससे चाँद के खिलौने की माँग की। यह खिलौना तो उसने कभी बनाया ही नहीं था। बात आई-गई हो गई।

एक दिन आत्माराम ने चाँद की शक्ल का पतंग आकाश में उड़ते हुए देखा। फिर क्या था! अब आत्माराम ने मिट्टी के खिलौने बनाने बंद कर दिए और कागज के पतंग, खरगोश, तोते, बिल्ली, गुड़िया, गुड्डा आदि बनाने लगा। अब उसके खिलौनों का वजन हल्का हो गया और उसकी कमाई भारी हो गई।

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कॅन कीजिए।

4 छापा

– ओमप्रकाश 'आदित्य'

विषय-प्रवेश : आयकर विभाग के अधिकारी प्रामाणिक सूचनाओं के आधार पर अनधिकृत रूप से अर्जित धन का पता लगाने और उसे अधिकार में लेने के लिए छापा मारते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने अपने घर पर छापा मारने वालों द्वारा छापा मारने के बाद की स्थिति का व्यंग्यात्मक एवं रोचक चित्रण किया है। छापे के दौरान अधिकारियों को वहाँ सोना-चाँदी तो दूर रसोईघर की पीपियों में पेट भरने के लिए जरूरी सामान भी नहीं मिलता। कवि ने कविता के माध्यम से छापा मारने वालों की कार्य-प्रणाली और आम आदमी की आर्थिक स्थिति का वास्तविक चित्रण किया है। इसके साथ ही कवि ने व्यवस्था से एक ज्वलंत प्रश्न भी पूछा है कि जब वह अनधिकृत रूप से अर्जित धन अपने अधिकार में कर लेती है, तो अधिकृत रूप से अर्जित आय से जिनके पेट नहीं भरते, वह उनकी सहायता करने की कुछ व्यवस्था क्यों नहीं करती?

कविता का सरल अर्थ

[आयकर विभागवाले कर चोरी करने वालों और नाजायज ढंग से संपत्ति अर्जित करने वाले लोगों के घर और कार्यालय पर छापा मारते हैं। कवि के घर पर छापा पड़ा, तो कवि माँगी गई वस्तुओं को साहित्य में इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों से जोड़कर व्यंग्योक्ति में जबाब देते हैं।]

[1] मेरे घर ..... उन्हें कैसे दे दूँ।

कवि कहते हैं कि मेरे घर पर आयकर विभाग का छापा पड़ा। वह भी कोई छोटा-मोटा नहीं, बहुत बड़ा छापा पड़ा। अधिकारी मेरे घर पर पूछताछ करने के लिए आए। वे सीधे घर में घुस गए और पूछने लगे, "सोना कहाँ रखा है?" कवि उन्हें जबाब देते हैं–सोना! वह तो मेरी आँखों में है, मैं कई रात से सोया नहीं हूँ। अधिकारियों को इस पर गुस्सा आता है। वे प्रश्न को और स्पष्ट करते हैं,"स्वर्ण दो!" लेखक स्वर्ण को सुवर्ण से जोड़ते हैं और जबाब देते हैं कि सुवर्ण तो उन्होंने अपने काव्य में बिखेरे हैं। उसे वे उन्हें कैसे सौंप दें।

[2] वे झुँझलाकर ..... पहले करूँगा तैयार।

अधिकारी कवि का जवाब सुनकर झुँझलाकर कहते हैं, 'तुम हमारी बात समझे नहीं। हमें तुम्हारा वह अर्थ चाहिए, जिसे तुमने अनधिकृत रूप से अर्जित किया है। कवि अधिकारियों के अर्थ (धन) शब्द को कविता के अर्थ से जोड़कर मुसकराकर जवाब देते हैं कि अर्थ तो मेरी नई कविताओं में आपको मिल सकता है। फिर अधिकारी कवि से छुपाकर रखी गई चाँदी निकालने के लिए कहते हैं। कवि चाँदी का अर्थ चाँदी जैसे सफेद हो गए अपने बालों से जोड़कर कहते हैं, "चाँदी तो मेरे सिर के बालों में आ रही है।" अधिकारी जब कड़ककर पूछते हैं कि उनके नोट (रुपये) कहाँ हैं, तो वे नोट का संबंध विद्यालय की परीक्षा के नोटों से जोड़कर जवाब देते हैं कि परीक्षा के नोट तो वे परीक्षा से एक महीने पहले तैयार करेंगे।

[3] वे गरजकर बोले, ... एक ही तत्त्व खाली।

अधिकारियों ने गरजते हुए कहा,"हमारा कहने का मतलब आपकी मुद्रा (पैसों-सिक्कों) से है।" कवि ने इसका अर्थ मुख मुद्रा से जोड़कर जवाब दिया, "मुद्राएँ तो आप मेरे मुख पर देख लें।" अधिकारी यह उत्तर सुनकर कुछ सोचने लगे। फिर वे उनके सोने के कमरे में घुस गए और उनके फटे तकिए की रुई नोचने लगे (कि शायद पैसे इसमें छुपाकर रखे हों)। कवि कहते हैं कि अधिकारियों ने उनकी टूटी हुई अलमारी खोली, उनकी रसोई में खाली पड़े पीपों को टटोला, बच्चों का गुल्लक खोल-खोलकर देखा, पर उन्हें कहीं कुछ भी नहीं मिला। सब कुछ खाली था।

[4] कनस्तरों को, ... सूचना दे दी।

कवि कहते हैं कि अधिकारियों ने उनके घर में पड़े कनस्तरों और पानी रखने के लिए मटकों तक को टटोला, देखा, पर उन्हें सब खाली मिले। वे कहते हैं कि अधिकारियों ने मेरे घर में ऐसा निर्जन दृश्य देखा तो उनका खिला हुआ चेहरा मुरझा गया। (क्योंकि, उन्होंने सोचा था कि छापे में काफी धन मिलेगा, पर यहाँ तो कहीं कुछ भी नहीं था।) अब अधिकारियों का गुस्सा शांत हो गया था। उनके मन में दया के भाव आ गए थे। कवि से उन्होंने क्षमा माँगी और बताया कि किसी की गलत सूचना पर वे उसके यहाँ आ गए थे।

[5] अपनी असफलता ..... तो डलवा दीजिए।

अधिकारियों को कवि के घर में कुछ न मिला, तो वे पछताने लगे। उनके सिर शर्म से झुक गए। वे वापस जाने लगे, तो कवि ने उन्हें रोककर कहा, "आप मेरी एक बात सुन लीजिए। यदि छापे के दौरान मेरे घर में आपको अधिक धन मिलता, तो आप उसे ले लेते। अब आपने देख लिया कि मेरे घर में कोई धन नहीं है। ऐसी हालत में (मेरी यह स्थिति देखकर) आप मुझे कुछ (धन) देकर तो जाइए। जिन लोगों के घरों में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे होते हैं, उन्हें आप लोग निकलवाकर ले लेते हैं। ठीक है निकलवा लीजिए (आपका काम ही निकलवा लेना है), पर जिनके घर में (टूटी) कुर्सी भी बैठने के लिए नहीं है, उनके घर में बैठने-सोने के लिए एक तखत की व्यवस्था तो करते जाइए।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 65)

मेरे घर छापा पड़ा, छोटा नहीं बहुत बड़ा
वे आए, घर में घुसे, और बोले–सोना कहाँ है?
मैंने कहा–मेरी आँखों में है, कई रात से नहीं सोया हूँ
वे रोष में आकर बोले–स्वर्ण दो स्वर्ण!
मैंने जोश में आकर कहा–सुवर्ण मैंने अपने काव्य में बिखेरे हैं
उन्हें कैसे दे दूँ!

वे झुँझलाकर बोले, तुम समझे नहीं
हमें तुम्हारा अनधिकृत रूप से अर्जित अर्थ चाहिए
मैं मुसकाकर बोला, अर्थ मेरी नई कविताओं में है
तुम्हें मिल जाए तो ढूँढ़ लो

वे कड़ककर बोले, चाँदी कहाँ है?
मैं भड़ककर बोला–मेरे बालों में आ रही है धीरे-धीरे
वे उद्‌भ्रांत होकर बोले,
यह बताओ तुम्हारे नोट कहाँ हैं?
परीक्षा से एक महीने पहले करूँगा तैयार।

शब्दार्थ

छापा – धावा। **सोना** – सोना (एक धातु)। **सोना** – नींद। **स्वर्ण** – सोना (आभूषण)। **सुवर्ण** – सुंदर अक्षर। **रोष** – क्रोध। **काव्य** – कविता। **बिखेरे** – फैलाए, छिटकाए। **झुँझलाना** – चिड़चिड़ाना। **अनधिकृत** – जिसके लिए अधिकार न मिला हो। **अर्जित** – किसी प्रकार प्राप्त या एकत्र किया हुआ। **अर्थ** – संपत्ति (पैसा)। **अर्थ** – (साहित्य में) मतलब। **कड़ककर** – तेज स्वर में बोलना। **चाँदी** – चाँदी (एक धातु)। **चाँदी** – बालों की चाँदी (सफेदी)। **उद्‌भ्रांत** – उद्‌विग्न, हैरान। **नोट** – (रुपएवाला) नोट। **नोट** – (परीक्षा के नोट) टिप्पणी। **परीक्षा** – इम्तहान।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

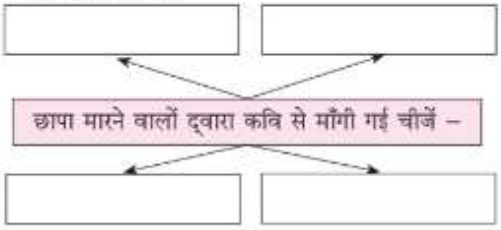

(2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) वे (छापा मारने वाले) रोष से बोले तो कवि किस प्रकार बोले?

(ii) वे (छापा मारने वाले) कड़ककर बोले तो कवि किस प्रकार बोले?

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

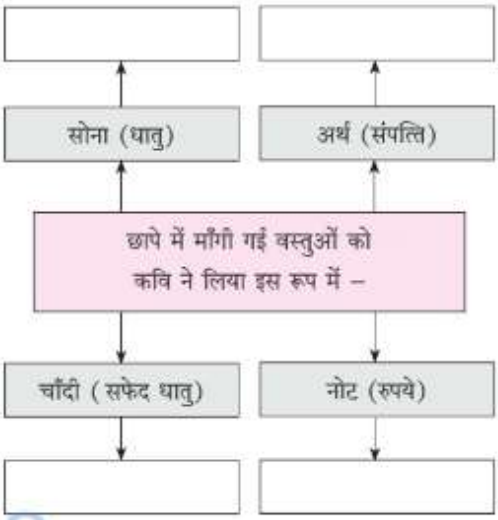

*** (4) कविता के आधार पर जोड़ियाँ मिलाइए :**

'अ'	'ब'
(i) अर्थ	बालों में
(ii) सुवर्ण	चेहरे पर
(iii) चाँदी	नई कविता में
(iv) मुद्रा	काव्य कृतियों में

उत्तर

(1)

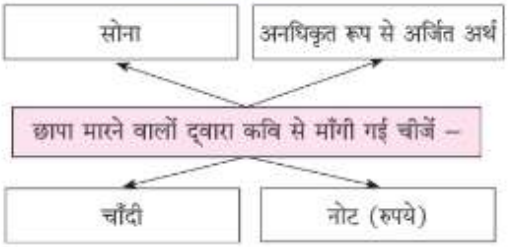

(2) (i) वे रोष से बोले तो कवि जोश से बोले।

(ii) वे कड़ककर बोले तो कवि भड़ककर बोले।

6414132

(3)

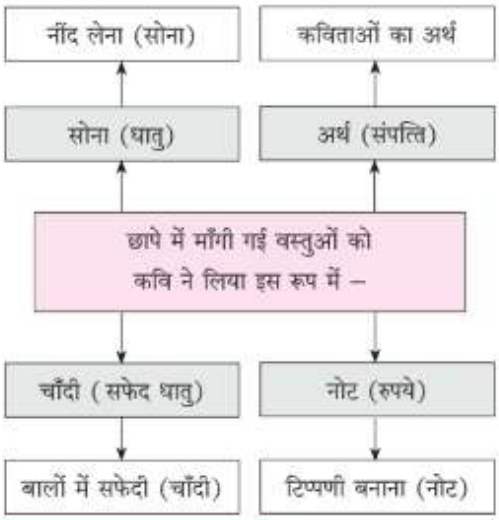

(4) (i) अर्थ – नई कविता में
(ii) सुवर्ण – काव्य कृतियों में
(iii) चाँदी – बालों में
(iv) मुद्रा – चेहरे पर।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए :

(i) सोना – (1) ..... (2) .....
(ii) अर्थ – (1) ..... (2) .....
(iii) नोट – (1) ..... (2) .....
(iv) चाँदी – (1) ..... (2) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

(i) रात × .....
(ii) अनधिकृत × .....
(iii) नई × .....
(iv) धीरे-धीरे × .....

उत्तर

(1) (i) सोना – (1) (धातु) सोना (2) नींद लेना।
(ii) अर्थ – (1) संपत्ति (पैसा) (2) (साहित्य में) मतलब।
(iii) नोट – (1) (रुपया) नोट (2) (परीक्षा के) टिप्पणी।
(iv) चाँदी – (1) (धातु) चाँदी (2) (बालों में सफेदी) चाँदी।

(2) (i) रात × दिन
(ii) अनधिकृत × अधिकृत
(iii) नई × पुरानी
(iv) धीरे-धीरे × जल्दी जल्दी

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **पद्यांश की अंतिम पाँच पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : अधिकारी कवि से छुपाकर रखी गई चाँदी निकालने के लिए कहते हैं। कवि चाँदी का अर्थ चाँदी जैसे सफेद हो गए अपने बालों से जोड़कर कहते हैं, ''चाँदी तो मेरे सिर के बालों में आ रही है।'' अधिकारी जब कड़ककर पूछते हैं कि उनके नोट (रुपये) कहाँ हैं, तो वे नोट का संबंध विद्यालय की परीक्षा के नोटों से जोड़कर जवाब देते हैं कि परीक्षा के नोट तो वे परीक्षा से एक महीने पहले तैयार करेंगे।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 65 – 66)

वे गरजकर बोले, हमारा मतलब आपकी मुद्रा से है
मैं लरजकर बोला,
मुद्राएँ आप मेरे मुख पर देख लीजिए,
वे खड़े होकर कुछ सोचने लगे
फिर शयनकक्ष में घुस गए
और फटे हुए तकिये की रुई नोचने लगे
उन्होंने टूटी अलमारी को खोला
रसोई की खाली पीपियों को टटोला
बच्चों की गुल्लक तक देख डाली
पर सब में मिला एक ही तत्त्व खाली...
कनस्तरों को, मटकों को ढूँढ़ा सब में मिला शून्य-ब्रह्मांड
देखकर मेरे घर में ऐसा अरण्यकांड
उनका खिला हुआ चेहरा मुरझा गया
और उनके बीस सूची हृदय में
रौद्र की जगह करुण रस समा गया,
वे बोले, क्षमा कीजिए, हमें किसी ने गलत सूचना दे दी
अपनी असफलता पर वे मन ही मन पछताने लगे।

शब्दार्थ

गरजना – जोर से कड़ककर बोलना। **मुद्रा** – सिक्का। **मुद्रा** – (यहाँ अर्थ) मुख मुद्रा। **लरजना** – काँपना, हिलना-डुलना, भयभीत होना। **नोचना** – किसी वस्तु को झटके के साथ खींचना। **पीपियाँ** – ढोल के आकार के लोहे के बने छोटे पात्र। **टटोलना** – उँगलियों से छूकर पता लगाना। **गुल्लक** – मिट्टी का वह बर्तन, जिसमें धन संग्रह किया जाए। **कनस्तर** – टीन का चौखूँटा पीपा। **मटका** – मिट्टी का घड़ा। **शून्य ब्रह्मांड** – रिक्त

6414132

संसार। **अरण्यकांड** – (यहाँ अर्थ) बिखरा हुआ। **मुरझाना** – चेहरे से उदासी प्रकट होना। **रौद्र** – क्रोधपूर्ण। **करुण** – दया, अनुकंपा। **पछताना** – कोई अनुचित कार्य करने पर उसके लिए दुखी होना।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) संजाल पूर्ण कीजिए :** *(मार्च '20)*

ये वस्तुएँ खाली थीं –

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

*(i) शयन कक्ष में पाई गई चीजें–

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त दो रस –

***(3) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :**

छापा मारने वालों में आया परिवर्तन –

(4) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

*(i) अरण्यकांड *(ii) असफलता

(iii) मुद्रा (iv) शयन कक्ष।

(5) आकृति पूर्ण कीजिए :

कवि के घर की अभावग्रस्त स्थिति दर्शाने वाली पंक्ति –

उत्तर

(1) ये वस्तुएँ खाली थीं –
- रसोई की पीपियाँ
- बच्चों का गुल्लक
- कनस्तर
- मटके

(2) (i) शयन कक्ष में पाई गई चीजें–
- फटा हुआ तकिया
- टूटी हुई अलमारी

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त दो रस –
- रौद्र रस
- करुण रस

(3) छापा मारने वालों में आया परिवर्तन –
- उनका खिला चेहरा मुरझा गया
- हृदय में रौद्र की जगह करुण रस समा गया
- बोले–क्षमा कीजिए गलती के लिए
- असफलता पर मन ही मन पछताने लगे

(4) (i) कवि के घर में क्या देखकर छापा मारने वालों का खिला चेहरा मुरझा गया?

(ii) कवि के घर छापा मारने पर छापा मारने वालों को क्या मिली?

(iii) कवि ने छापा मारने वालों से अपने मुँह पर क्या देखने के लिए कहा?

(iv) छापा मारने वाले कहाँ घुस गए?

(5) कवि के घर की अभावग्रस्त स्थिति दर्शाने वाली पंक्ति –
- रसोई की खाली पीपियों को टटोला

कृति 2 : (शब्द संपदा)

• **(1) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए :**

(i) मुद्राएँ –..... (ii) अलमारी –.....

(iii) चेहरा –..... (iv) सूचना –.....

6414132

(2) ऐसे शब्द जिनके अर्थ निम्न शब्द हो :

(1) टीन का पीपा

(2) कमरा।

(3) वचन परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए : *(मार्च' 20)*

- उन्होंने टूटी अलमारी को खोला।

उत्तर

(1) (i) मुद्राएँ – मुद्रा (ii) अलमारी – अलमारियाँ

(iii) चेहरा – चेहरे (iv) सूचना – सूचनाएँ

(2) (1) टीन का पीपा – कनस्तर

(2) कमरा – शयन कक्ष।

(3) उन्होंने टूटी अलमारियों को खोला।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **पद्यांश की 'रसोई की खाली ..... मिला शून्य-ब्रह्मांड', पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।** *(मार्च' 20)*

उत्तर : कवि कहते हैं कि अधिकारियों ने उनकी रसोई में खाली पड़े पीपों को टटोला, बच्चों का गुल्लक खोल-खोलकर देखा, पर उन्हें कहीं कुछ भी नहीं मिला। सब कुछ खाली था।

वे कहते हैं कि अधिकारियों ने उनके घर में पड़े कनस्तरों और पानी रखने के लिए मटकों तक को टटोला, देखा, पर उन्हें सब खाली मिले।

6414132

पद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 66)

सिर झुकाकर वापिस जाने लगे
मैंने उन्हें रोककर कहा, ठहरिए!
सिर मत धुनिए मेरी एक बात सुनिए
मेरे घर में अधिक धन होता तो आप ले जाते
अब जब मेरे घर में बिल्कुल धन नहीं है
तो आप मुझे कुछ देकर क्यों नहीं जाते
जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं
उन्हें आप निकलवा लेते हैं
बहुत अच्छी बात है, निकलवा लीजिए
पर जिनके घर में बैठने को कुछ भी नही
उनके यहाँ कम-से-कम
एक तख्त तो डलवा दीजिए।

शब्दार्थ

सिर झुकाना – शर्मिंदा होना। **सिर धुनना** – पश्चात्ताप के कारण बहुत दुख प्रकट करना। **तख्त** – लकड़ी का बना तख्ता।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

*(i) कवि ने छापा मारने वालों से माँगा –
- [ ]
- [ ]

*(ii) कवि द्वारा छापामारों को दिए गए सुझाव –
- [ ]
- [ ]

(iii) संपन्न घर की स्थिति दर्शाने वाली पंक्ति –
- [ ]

(2) संजाल पूर्ण कीजिए :

पद्यांश में प्रयुक्त –
- धातु: [ ] [ ]
- फर्नीचर: [ ] [ ]

(3) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके अर्थ निम्नलिखित शब्द हों :

*(i) तख्त *(ii) अनधिकृत (iii) पलंग (iv) धन।

उत्तर

(1)

(i) कवि ने छापा मारने वालों से माँगा –
- कुछ धन
- एक तख्त

(ii) कवि द्वारा छापामारों को दिए गए सुझाव –
- जिसके घर में अधिक धन हो, तो ले लीजिए
- जिसके घर में बिलकुल धन न हो, उसे कुछ धन दे दीजिए

(iii)

संपन्न घर की स्थिति दर्शाने वाली पंक्ति –
↓
जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं

(2)

सोना ← धातु → चाँदी
↑
पद्यांश में प्रयुक्त –
↓
पलंग ← फर्नीचर → सोफा

(3) (i) कवि छापा मारने वालों से अपने घर में क्या डलवाने के लिए कहते हैं?

(ii) छापा मारने वालों को लेखक से किस प्रकार का अर्थ चाहिए था?

(iii) परिच्छेद में सोफे के अलावा सोने-चाँदी से बनी और किस वस्तु का उल्लेख हुआ है?

(iv) कवि के घर में क्या बिलकुल नहीं है?

कृति 2 : (शब्द संपदा)

6414132

- **निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग चुनकर शब्द लिखिए :**

(उप, अप, अ, अभि)

(i) यश – ..... (ii) ज्ञान – .....

(iii) मान – ..... (iv) वन – .....

उत्तर

(i) यश – अपयश (ii) ज्ञान – अज्ञान

(iii) मान – अभिमान (iv) वन – उपवन

कृति 3 : (सरल अर्थ)

*** • उपर्युक्त पद्यांश की अंतिम छह पंक्तियों – 'जिनके घर में ····· डलवा दीजिए' का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : जिन लोगों के घरों में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे होते हैं, उन्हें आप लोग निकलवाकर ले लेते हैं। ठीक है निकलवा लीजिए (आपका काम ही निकलवा लेना है), पर जिनके घर में (टूटी) कुर्सी भी बैठने के लिए नहीं है, उनके घर में बैठने-सोने के लिए एक तख्त की व्यवस्था तो करते जाइए।

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति

***(1) कृति पूर्ण कीजिए :**

घरों की स्थिति दर्शाने वाली पंक्तियाँ –

समृद्ध | अभावग्रस्त

***(2) सोना, चाँदी, अर्थ और मुद्रा शब्दों के विभिन्न अर्थ बताते हुए कविता के आधार पर इनके अर्थ लिखिए।**

उत्तर

(1)

घरों की स्थिति दर्शाने वाली पंक्तियाँ –

समृद्ध	अभावग्रस्त
जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं।	फटे हुए तकिए और रसोई की खाली पीपियाँ

(2)

	सामान्य अर्थ	कविता के आधार पर अर्थ
(i) सोना	पीले रंग की एक बहुमूल्य धातु, जो आभूषण बनाने के काम आती है।	सोना यानी नींद में होना।
(ii) चाँदी	सफेद रंग की एक नर्म चमकीली धातु, जो गहने, सिक्के आदि बनाने के काम आती है।	सिर के बालों का चाँदी के रंग का (सफेद) हो जाना।
(iii) अर्थ	संपत्ति, रुपया-पैसा।	मतलब (कविताओं में)।
(iv) मुद्रा	सिक्का, रुपया-पैसा।	हाथ, मुख, गर्दन आदि की कोई विशेष भावसूचक स्थिति मुख-चेष्टा।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों के शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) वे कड़ककर बोले, चाँदी कहाँ है?

(ii) यह शोर कौन मचा रहा है?

(iii) छापा बहुत बड़ा था।

उत्तर : (i) **चाँदी** – द्रव्यवाचक संज्ञा।

(ii) **कौन** – प्रश्नवाचक सर्वनाम।

(iii) **बड़ा** – गुणवाचक विशेषण।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) अंदर (ii) आजकल (iii) अब।

उत्तर : (i) वे घर के अंदर चले आए।

(ii) आजकल उनके अच्छे दिन नहीं हैं।

(iii) यह काम अब उनके वश का नहीं है।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	भोजन + आलय	----------

अथवा

निश्चय	----------	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
भोजनालय	भोजन + आलय	**स्वर संधि**

अथवा

निश्चय	**निः + चय**	**विसर्ग संधि**

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) आप हमारे घर में कुछ न पा सकेंगे।

(ii) वे निराश होकर चले गए।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
सकेंगे	सकना
गए	जाना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) देना (ii) सोना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) देना	दिलाना	दिलवाना
(ii) सोना	सुलाना	सुलवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) आँखें खुल जाना (ii) ठहाका लगाना।

उत्तर :

(i) आँखें खुल जाना।

अर्थ : सच्चाई का पता लग जाना।

वाक्य : कवि के घर की हालत देखकर छापा मारने वालों की आँखें खुल गईं।

(ii) ठहाका लगाना।

अर्थ : जोर से हँसना।

वाक्य : बात-बात पर ठहाका लगाना किसी को अच्छा नहीं लगता।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

(खटका लगा रहना, ताँता लगा रहना)

जर्जर बिल्डिंग में रहने वाले लोगों को रात-दिन भय बना रहता है।

उत्तर : जर्जर बिल्डिंग में रहने वाले लोगों को रात-दिन खटका लगा रहता है।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) छापा मारने वालों ने घर का कोना-कोना छान मारा।

(ii) तकिए से रुई नीचे गिर रही थी।

उत्तर : (1) **वालों ने** – कर्ता कारक।

(2) **तकिए से** – अपादान कारक।

6414132

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) जिनके घर सोने चाँदी के पलंग और सोफे हैं उन्हें आप निकलवा लेते हैं

(ii) वे बोले, क्षमा कीजिए हमें किसी ने गलत सूचना दे दी

उत्तर :

(i) जिनके घर सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं उन्हें आप निकलवा लेते हैं।

(ii) वे बोले,''क्षमा कीजिए, हमें किसी ने गलत सूचना दे दी।''

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) अधिकारियों को गुस्सा आता है। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(ii) उन्होंने रसोई में खाली पड़े डिब्बे टटोले। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(iii) उनके हृदय में करुण रस समा गया था। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

उत्तर : (i) अधिकारियों को गुस्सा आएगा।

(ii) वे रसोई में खाली पड़े डिब्बे टटोल रहे हैं।

(iii) उनके हृदय में करुण रस समा जाता है।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) उनका खिला हुआ चेहरा मुरझा गया।

(ii) उन्होंने रसोईघर की पीपियाँ टटोली, जो खाली थीं।

(iii) कनस्तरों को ढूँढ़ा, मटकों को ढूँढ़ा, परंतु कहीं कुछ नहीं मिला।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) मिश्र वाक्य (iii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i) हाय ! मेरे घर पर छापा पड़ा। *(विधानवाचक वाक्य)*

(ii) तुम हमारी बात नहीं समझे। *(प्रश्नवाचक वाक्य)*

(iii) अर्थ तो मेरी कविताओं में आपको मिल सकता है। *(संदेहवाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) मेरे घर पर छापा पड़ा।

(ii) क्या तुम हमारी बात समझे ?

(iii) अर्थ तो शायद मेरी कविताओं में आपको मिल सकता है।

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) वे बोले, मैं मेरा काम कर रहे हैं।

(ii) इस घर में अनेकों खाली पीपी हैं।

उत्तर : (i) वे बोले, मैं अपना काम कर रहा हूँ।

(ii) इस घर में अनेक खाली पीपियाँ हैं।

6414132

उपयोजित लेखन

*** (1) 'कर जमा करना, देश के विकास को गति देना है' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 67)

उत्तर :

समाज में दो तरह के लोग होते हैं। एक वे, जो कर अदा करने लायक आय होने पर स्वेच्छा से ईमानदारी के साथ सरकार को कर अदा कर देते हैं और दूसरे वे, जो कमाई तो जायज-नाजायज अंधाधुंध करते हैं, पर नियम के तहत कर अदा करने से कतराते हैं। यह मनोवृत्ति उचित नहीं है।

देश के विकास का कार्य जनता द्वारा प्राप्त कर से ही पूरा होता है। चिकित्सा, परिवहन तथा जनता की सहायतार्थ शुरू किए जाने वाले सारे कार्य जनता से प्राप्त कर से ही पूरे होते हैं। जिस देश में आय करने वाले सभी लोग ईमानदारी और स्वेच्छा से उचित मात्रा में कर अदा करते हैं, उस देश के विकास के सारे कार्य सुचारू रूप से पूरे होते हैं और सामान्य जनता को उसका पूरा-पूरा लाभ मिलता है। यदि कोई व्यक्ति यह सोचता हो कि सभी लोग तो कर अदा करते हैं, उसके अकेले कर अदा न करने या कम कर का भुगतान करने से क्या फर्क पड़ेगा, तो ऐसा सोचने वालों की संख्या अनगिनत हो सकती है। इस तरह कर की कितनी रकम सरकारी खजाने में जमा होने से रह जाती है। इस कारण पैसे के अभाव में सरकार की अनेक योजनाएँ अटकी रह जाती हैं। इसलिए कर योग्य आय पर ईमानदारी से कर जमा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। कर अदा कर हम अपनी ही सहायता करते हैं। कर जमा करने से ही विकास को गति मिलती है।

*(2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 67)

उत्तर :

आपके शहर में –

दुर्लभ ग्रंथ प्राप्त करने का

*** सुनहरा अवसर ***

- तुलसीदास रचित – **रामचरितमानस**
- वाल्मीकि रचित – **रामायण**

(भाषाटीका सहित)

- सभी 18 पुराण – जिल्द सहित
- सभी 18 स्मृतियाँ – जिल्द सहित

तथा चारों वेद –

- ऋग्वेद
- यजुर्वेद
- सामवेद
- अथर्ववेद

सभी ग्रंथों पर 50% छूट

इनके अतिरिक्त

ज्ञान कोश तथा विश्वकोश
जैसे अनेक दुर्लभ ग्रंथ

15 अगस्त 2021 से 22 अगस्त 2021

सुबह 10.00 बजे से सायं 5.30 बजे

स्थान : सुंदराबाई हाल
चर्चगेट, मुंबई – 400 020.

6414432

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कॅन कीजिए।

5 ईमानदारी की प्रतिमूर्ति

– सुनील शास्त्री

विषय-प्रवेश : लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री थे। वे एक सामान्य परिवार में जन्मे 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धांत को मानने वाले व्यक्ति थे। वे अपनी ईमानदारी, सादगी, सरलता आदि के लिए प्रसिद्ध थे। प्रस्तुत संस्मरण में उनके पुत्र सुनील शास्त्री ने शास्त्री जी और अपने बीच घटी कई प्रेरक एवं यादगार घटनाओं का बेबाक वर्णन किया है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **फूट-फूट कर रोना** – जोर-जोर से रोना।

(2) **देखते रह जाना** – आश्चर्यचकित होना।

(3) **कलेजा चीरकर बताना** – गूढ़ रहस्यवाली बात समझाना।

(4) **दबे पैर चलना** – इस प्रकार चलना, जिससे पैर की आहट न मालूम हो।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा 1 (आ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 68)

हमने अपने जीवन ..... मैंने बता दिया।

शब्दार्थ

अभाव – कमी। **आलीशान** – शानदार, भव्य। **झुरझुरी** – कँपकँपी, सिहरन। **सैलूट** – नमस्कार, सलाम करना। **संतरी** – पहरेदार, द्वारपाल। **हिदायत** – मार्गदर्शन, आदेश।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) पिता के न रहने पर लेखक पर यह बीता – [ ]

(ii) लेखक के जन्म के समय उनके पिता यह थे – [ ]

(iii) लेखक सदा यह कल्पना किया करते थे – [ ]

(iv) लेखक के पिता प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ यह गाड़ी थी – [ ]

(2) ऐसे दो प्रश्न बनाइए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) सहाय साहब (ii) अभाव।

(3) किसने, किससे कहा?

(i) 'मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं। तुम्हीं चलाओ।'

(ii) 'तुम बैठो, आराम करो, हम लोग वापस आते हैं अभी।'

(4) उत्तर लिखिए :

(i) शान की सवारी याद आने का परिणाम – .....

(ii) बातचीत में समय बिताने का परिणाम – .....

उत्तर

(1)

(i) पिता के न रहने पर लेखक पर यह बीता – उन्हें बैंक में नौकरी करनी पड़ी।

(ii) लेखक के जन्म के समय उनके पिता यह थे – उत्तर प्रदेश के पुलिस मंत्री।

(iii) लेखक सदा यह कल्पना किया करते थे – उनके पास बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए।

(iv) लेखक के पिता प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ यह गाड़ी थी – इंपाला शेवरलेट

(2) (i) लेखक के पिता के निजी सचिव का नाम क्या था?

(ii) लेखक ने अपने पिता के रहते जीवन में क्या नहीं देखा?

(3) (i) 'मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं। तुम्हीं चलाओ।'

– लेखक के बड़े भाई अनिल भैया ने लेखक से कहा।

(ii) 'तुम बैठो, आराम करो, हम लोग वापस आते हैं अभी।'

– लेखक ने ड्राइवर से कहा।

(4) (i) (लेखक कल्पना किया करते थे कि, उनके पास बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए। इस समय वे आलीशान गाड़ी इंपाला शेवरलेट में शान से सवारी कर रहे थे।) वह पुरानी बात याद आने पर उनके शरीर में झुरझुरी आने लगी।

6414132

(ii) (लेखक अपने परिचित व्यक्ति के यहाँ इंपाला शेवरलेट में सवार होकर भोजन करने गए थे। वहाँ बातचीत में उन्हें समय का ध्यान नहीं आया) उन्हें देर हो गई।

कृति 2 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

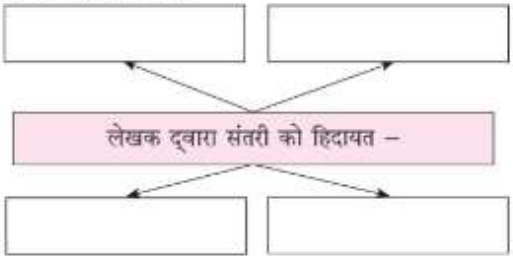

(2) उत्तर लिखिए :

(i) लेखक हमेशा कल्पना किया करते थे –

(ii) लेखक को इस बात का गर्व था –

(iii) लेखक ने संतरी को सैलूट मारने से रोका –

(iv) लेखक घर में यहाँ से घुसे –

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) लेखक के पिता पहले इस राज्य के गृहमंत्री थे – ☐

(ii) पहले गृहमंत्री को यह कहा जाता था – ☐

6414132

उत्तर

(1)

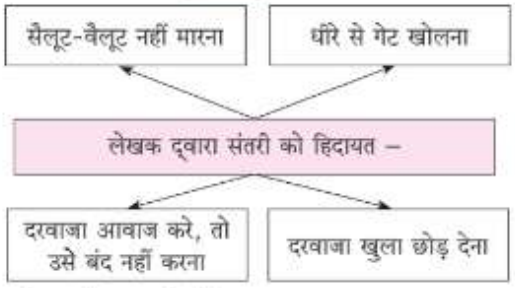

(2) (i) बड़ी आलीशान गाड़ी की।

(ii) प्रधानमंत्री का लड़का होने का।

(iii) ताकि आवाज न हो और लेखक के पिता को उनके लौटने का अंदाज न हो।

(iv) पीछे किचन के दरवाजे से।

(3) (i) लेखक के पिता पहले इस राज्य के गृहमंत्री थे – उत्तर प्रदेश

(ii) पहले गृहमंत्री को यह कहा जाता था – पुलिस मंत्री

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) पुलिस (ii) बदन (iii) संतरी (iv) पानी।

(2) गद्यांश में आए अंग्रेजी शब्द खोजकर लिखिए।

(i) ..... (ii) ..... (iii) ..... (iv) .....

(3) गद्यांश से ऐसे दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए, जिनका वचन परिवर्तन से रूप नहीं बदलता।

(i) ..... (ii) .....

उत्तर

(1) (i) पुलिस – स्त्रीलिंग (ii) बदन – पुल्लिंग

(iii) संतरी – पुल्लिंग (iv) पानी – पुल्लिंग।

(2) (i) आर्डर (ii) रेजिडेंस (iii) गेट (iv) सैलूट।

(3) (i) घर (ii) समय।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'बच्चों की कल्पनाएँ और माता-पिता का डर' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : बचपन में बच्चों को हर चीज के बारे में उत्सुकता होती है। उनके मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ आती हैं। इन कल्पनाओं को साकार रूप देने की वे कोशिश भी करते हैं। पर वे दुनियादारी से अनभिज्ञ होते हैं। इसलिए कभी-कभी उनसे गलतियाँ हो जाया करती हैं। कुछ बच्चे डर के कारण इन गलतियों को अपने माता-पिता से छुपाने का प्रयास करते हैं। मगर ये गलतियाँ जब खुल जाती हैं, तब ये बच्चे लज्जित होते हैं। इस तरह की गलतियों को अपने माता-पिता को न बताकर बच्चे बड़ी भूल करते हैं। अपनी गलतियों को अपने माता-पिता से बता देने वाले बच्चे फायदे में रहते हैं। समझदार माता-पिता बच्चों की गलतियों पर डाँटने-फटकारने के बजाय उन्हें प्यार से समझाते हैं। वे उन्हें स्थिति से निपटने का मार्ग बताकर उनकी सहायता करते हैं। ऐसे बच्चे भविष्य में इस तरह की गलतियाँ करने से बचे रहते हैं। माता-पिता सदा बच्चों के हित के बारे में सोचते हैं। इसलिए बच्चों को अपने मन में उत्पन्न किसी तरह की कल्पना के बारे में अपने माता-पिता को बताना चाहिए और उसके बारे में उनकी सलाह के अनुसार कार्य करना चाहिए। उन्हें उनसे डरना नहीं चाहिए।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 68 – 69)

आगे कुछ कहने ..... पर ही निकलती थी।

शब्दार्थ

हिदायत – निर्देश। **दस्तक** – दरवाजा खटखटाने की क्रिया, हाथ का हल्का आघात। **झुँझलाना** – खीजना, चिढ़ना। **बड़बड़ाना** – बकबक करना। **सूझना** – दिखाई देना, ध्यान में आना। **बेध्यानी** – लापरवाही, ध्यान न रहना। **रामकहानी** – (यहाँ अर्थ) घटना। **तर्क** – दलील। **जाहिर** – प्रकट, स्पष्ट।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) लेखक की हिदायत –
- [ ]
- [ ]

(ii) लेखक ने दरवाजा खोला, तो यह हुआ –
- [ ]
- [ ]

(iii) लेखक के परिवार के सदस्य –
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(2) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

(i) लेखक ने दरवाजा खटखटाने वाले को यह समझा .....

(ii) लेखक के पिता ने लेखक को इसके लिए बुलाया .....

उत्तर

(1) (i) लेखक की हिदायत –
- सुबह किसी को कमरे में नहीं भेजना है
- सुबह देर तक सोना है।

(ii) लेखक ने दरवाजा खोला, तो यह हुआ –
- सामने उनके पिता जी खड़े थे
- लेखक ने अपने पिता से माफी माँगी

(iii) लेखक के परिवार के सदस्य –
- पिता लाल बहादुर शास्त्री
- माता
- बड़े भाई अनिल

(2) (i) लेखक ने दरवाजा खटखटाने वाले को यह समझा – नौकर।

(ii) लेखक के पिता ने लेखक को इसके लिए बुलाया – चाय के लिए।

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

गद्यांश में प्रयुक्त गाड़ियों के नाम –
- [ ]
- [ ]

(2) परिणाम लिखिए :

(i) सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे दरवाजा खटखटाने का –

(ii) दरवाजे पर दुबारा दस्तक देने का –

(3) ऐसे दो प्रश्न बनाइए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) खाने पर (ii) इंपाला का।

6414132

उत्तर

(1) गद्यांश में प्रयुक्त गाड़ियों के नाम –
- फिएट
- इंपाला शेवरलेट

(2) (i) सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे दरवाजा खटखटाने का – नींद टूटना और बड़ी तेज आवाज में बोलना।

(ii) दरवाजे पर दुबारा दस्तक देने का – झुँझलाना और जोर से बिगड़ने के मूड में बड़बड़ाना।

(3) (i) लेखक और उनके भाई कहाँ गए थे?

(ii) लेखक के पिताजी किसका बहुत कम उपयोग करते थे?

कृति 3 : (शब्द संपदा)

*** (1) इस वर्ग पहेली से विलोम शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :**

दु	अ	ग	प
सु	बु	स	रा
रु	ख	×	ला
प्र	भ	यो	न्न

(2) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए :

(i) गाड़ी (ii) कमरे (iii) दरवाजा (iv) हम।

उत्तर

(1) (i) दुख × सुख (ii) बुरा × भला

(iii) प्रसन्न × अप्रसन्न (iv) सदुपयोग × दुरुपयोग।

(2) (i) गाड़ी – गाड़ियाँ (ii) कमरे – कमरा

(iii) दरवाजा – दरवाजे (iv) हम – मैं।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

* • **'सादा जीवन उच्च विचार' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे, जो भौतिक सुखों को ही अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। इनके लिए किसी भी तरह धन-दौलत तथा सुख-सुविधा की वस्तुएँ प्राप्त करना अनुचित नहीं होता। दूसरे प्रकार के मनुष्य हर स्थिति में अपने आप को संतुष्ट रखते हैं। ये अपने सीमित साधनों से अपना और अपने परिवार का निर्वाह करते हैं और प्रसन्न रहते हैं। इनका रहन-सहन साधारण ढंग का होता है। विलासितापूर्ण वस्तुएँ इन्हें प्रभावित नहीं कर पातीं। वे केवल जीवनावश्यक वस्तुओं से अपना गुजारा कर लेते हैं, पर ईमानदारी, सच्चरित्रता, सच्चाई, सरलता तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना वे अपने जीवन का आदर्श मानते हैं। हमारे देश के संतों, महात्माओं तथा महापुरुषों का जीवन इसी तरह का रहा है। इन महापुरुषों को जनता आज भी याद करती है और उनका गुणगान करती है। सादा जीवन उच्च विचार को हर युग में हमारे यहाँ मान्यता मिली है और इन्हें अपने जीवन का मूलमंत्र मानकर ही मनुष्य सुखी रह सकता है।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 69 – 70)

तब भी उनकी बात ..... ऊपर से कोट पहन लूँगा न!"

शब्दार्थ

तहत – अंतर्गत। **तनिक** – जरा। **आदर्श** – अनुकरणीय वस्तु। **दुरुपयोग** – बुरा इस्तेमाल। **ओहदा** – पद। **झंझावात** – अंधड़। **हसीन** – सुंदर। **होड़** – लाग-डाट।

कृति 1 : (आकलन)

(1) **परिणाम लिखिए :**

* (i) साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवाने का –

(ii) अलमारी और कमरा ठीक करने का –

(2) **सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) आपसे यह बात ..... के तहत नहीं कर रहा।

(*सम्मान/अभिमान/शान*)

(ii) मेरे बच्चे कहते हैं कि पापा आप हमें ..... से भेजते हैं।

(*बाइक/रिक्शा/साइकिल*)

(iii) दूसरे दिन मैं ..... जाने के लिए तैयार हो रहा था कि बाबू जी ने मुझे बुलाया। (*कार्यालय/बाजार/स्कूल*)

(iv) वे छोटे हैं, उन्हें ..... चीरकर नहीं बता सकता।

(*सीना /कलेजा/हृदय*)

उत्तर

(1) (i) साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवाने का – पिता की यह बात सुनकर दोनों भाई वहाँ रुक नहीं सके। कमरे में जाकर देर तक फूट-फूटकर रोते रहे।

(ii) अलमारी और कमरा ठीक करने का – फटे कुरतों के बारे में पूछताछ की गई।

(2) (i) आपसे यह बात शान के तहत नहीं कर रहा।

(ii) मेरे बच्चे कहते हैं कि पापा आप हमें साइकिल से भेजते हैं।

(iii) दूसरे दिन मैं स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था कि बाबू जी ने मुझे बुलाया।

(iv) वे छोटे हैं, उन्हें कलेजा चीरकर नहीं बता सकता।

कृति 2 : (आकलन)

(1) **आकृति पूर्ण कीजिए :**

(i)

अपने पिता के निजी काम करते समय लेखक की भावना –

(ii)

लेखक के पिता के अनुसार फटे हुए कुरतों का उपयोग –

(iii)

खादी के कपड़ों के बारे में लेखक के पिता का कथन –

641432

*(iv)

कुरते के प्रसंग से शास्त्री जी के इन गुणों (स्वभाव) का पता चलता है –

(2) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(i) इतना जो उनका कहना था कि हम ..... ।

(ii) याद आते हैं बचपन के वे हसीन दिन, ...।

उत्तर

(1) (i)

अपने पिता के निजी काम करते समय लेखक की भावना –

गर्व अनुभव करना	काम की अधिक मात्रा और गुणवत्ता को लेकर दोनो भाइयों में होड़

(ii)

लेखक के पिता के अनुसार फटे हुए कुरतों का उपयोग –

जाड़े के दिनों में कोट के नीचे पहनने के काम में आना	कुरतों के कपड़ों से रुमाल बनाकर काम में लाना

(iii)

खादी के कपड़ों के बारे में लेखक के पिता का कथन –

इन्हें बीनने वाले बड़ी मेहनत से बनाते हैं	इसका एक-एक सूत काम में आना चाहिए

(iv)

कुरते के प्रसंग से शास्त्री जी के इन गुणों (स्वभाव) का पता चलता है –

किफायत से रहना	खादी के कपड़ों से लगाव

(2) (i) इतना जो उनका कहना था कि हम और अनिल भैया वहाँ रुक नहीं सके।

(ii) याद आते हैं बचपन के वे हसीन दिन, वे पल, जो मैंने बाबू जी के साथ बिताए।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) रुलाई (ii) शान (iii) रिक्शा (iv) नींव।

(2) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

(i) बात (ii) कोशिश (iii) साइकिल (iv) महीना।

उत्तर

(1) (i) रुलाई – स्त्रीलिंग (ii) शान – स्त्रीलिंग

(iii) रिक्शा – पुल्लिंग (iv) नींव – स्त्रीलिंग।

(2) (i) बात – बातें (ii) कोशिश – कोशिशें

(iii) साइकिल – साइकिलें (iv) महीना – महीने।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

6414132

- **'जीवन में अनुशासन की आवश्यकता' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : मनुष्य के जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। अनुशासन का पालन करने वाले व्यक्ति के कार्य सुचारु रूप से संपन्न होते हैं और अन्य लोग ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं और उससे प्रेरणा लेते हैं। अनुशासित व्यक्ति ही समाज को नई दिशा दे सकते हैं। रात और दिन का होना, सूर्य और चंद्रमा का अपने नियत समय पर उदय और अस्त होना, फसलों का उगना, बढ़ना और समय पर पकना आदि अनुशासन का ही नतीजा है। अनुशासित व्यक्ति अपने सभी काम समय पर और ईमानदारी से करने में विश्वास रखता है। उसे इस मामले में लापरवाही बर्दाश्त नहीं होती। दूसरों से भी वह ऐसी ही अपेक्षा रखता है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने आप को अनुशासित रखे। इसके लिए अपने ऊपर अंकुश लगाना और अपने आप को नियंत्रण में रखना अनुशासन में रहने का आरंभिक पाठ है। यह प्रक्रिया अपने आप को अनुशासित करने का उत्तम मार्ग है।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 71)

बाबू जी का एक ..... लगा रहता है।''

शब्दार्थ

चढ़ावा – वधू को डाल में दिए जाने वाले गहने। **मुँह दिखाई** – दुल्हन का मुँह देखने की रस्म। **तनिक** – जरा। **हिचकिचाहट** – किसी काम के करने में मन का रुकना। **सुहाग** – सुहागिन होने की अवस्था।

कृति 1 : (आकलन)

- **आकृति पूर्ण कीजिए :**

(i) लेखक की अम्मा को शादी में मिले गहने –
- [ ]
- [ ]

(ii) पाठ में प्रयुक्त गहनों के नाम –
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(iii) लेखक के पिता जी ने पत्नी से यह कहा था –
- [ ]
- [ ]
- उल्टे तुम्हारे बदन के सारे गहने उतरवा लिए

उत्तर

(i) लेखक की अम्मा को शादी में मिले गहने –
- चढ़ावे के पाँच ग्राम के सोने के गहने
- मुँह दिखाई में नाते-रिश्ते वालों से मिले गहने

(ii) पाठ में प्रयुक्त गहनों के नाम –
- चढावे के पाँच ग्राम के सोने के गहने
- टीका
- नथुनी
- बिछिया

(iii) लेखक के पिता जी ने पत्नी से यह कहा था –
- तुम्हारा विवाह बहुत अच्छे सुखी परिवार में हो सकता था
- मैं तुम्हें आराम नहीं दे सका
- उल्टे तुम्हारे बदन के सारे गहने उतरवा लिए

कृति 2 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

दिए गए गहनों के बारे में लेखक की माँ का विचार –
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

लेखक के पिता द्वारा उनकी माँ से गहने माँगने का उद्देश्य –
- [ ]
- [ ]

(3) उत्तर लिखिए :

(i) इन्हें घाटा लगा था – [ ]

(ii) गद्यांश में आया महापुरुष का नाम – [ ]

(iii) गद्यांश में प्रयुक्त एक शहर का नाम – [ ]

(iv) लेखक की माँ विदा होकर यहाँ आई थी – [ ]

(4) दो ऐसे प्रश्न बनाकर लिखिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित हों :

(i) सुहागवाले (ii) सुख-दुख।

6414132

उत्तर

(1)

दिए गहनों के बारे में कोई चिंता नहीं | समय आने पर वे फिर बन जाएँगे

दिए गए गहनों के बारे में लेखक की माँ का विचार –

सदा ऐसे ही दिन नहीं रहेंगे | दुख-सुख सदा ही लगा रहता है

(2)

लेखक के पिता द्वारा उनकी माँ से गहने माँगने का उद्देश्य –

दुनिया की मुसीबतें (दूर करना) | मनुष्य की मजबूरियाँ (खत्म करना)

(3) (i) इन्हें घाटा लगा था – लेखक के पिता जी के चाचा जी को

(ii) गद्यांश में आया महापुरुष का नाम – गाँधी जी

(iii) गद्यांश में प्रयुक्त एक शहर का नाम – मिरजापुर

(iv) लेखक की माँ विदा होकर यहाँ आई थी – रामनगर

(4) (i) लेखक की माँ ने किस तरह के गहने रख लिए थे?

(ii) जीवन में क्या सदा ही लगा रहता है?

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) गद्यांश में आए प्रत्ययुक्त शब्द छाँटकर लिखिए और प्रत्यय तथा शब्द अलग-अलग कीजिए।

(i) ..... (ii) ..... (iii) ..... (iv) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) शादी = ... (ii) जरूरत = ...

(iii) गहना = ... (iv) पीड़ा = ...

(3) (1) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

(i) प्यार × ..... (ii) घाटा × .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के वचन पहचानकर लिखिए :

(i) गहने (ii) घर।

उत्तर

(1) (i) व्यक्तित्व = व्यक्ति + त्व।

(ii) रिश्तेवालो = रिश्ते + वालों।

(iii) जिम्मेदारी = जिम्मेदार + ई।

(iv) हिचकिचाहट = हिचकिच + आहट।

(2) (i) शादी = विवाह (ii) जरूरत = आवश्यकता

(iii) गहना = आभूषण (iv) पीड़ा = कष्ट।

(3) (1) (i) प्यार × नफरत (ii) घाटा × मुनाफा।

(2) (i) गहने – बहुवचन (ii) घर – एकवचन/बहुवचन।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'महिलाओं को गहनों का शौक' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : शृंगार और स्त्रियों का पुराना नाता रहा है। केश-विन्यास, परिधान और मेकअप के साथ-साथ स्त्रियों के शृंगार में आभूषणों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। आभूषण के प्रति स्त्रियों के आकर्षण को ध्यान में रखते हुए आभूषण निर्माता तरह-तरह के सुंदर आभूषणों का निर्माण करते हैं। हमारे देश के अधिकांश हिस्सों में विवाह के समय कन्या को वर पक्ष एवं माता-पिता की ओर से आभूषण देने की प्रथा चली आ रही है। इसके पीछे कन्या को शृंगार के साधन के साथ-साथ जीवन में वक्त-जरूरत के समय काम आने वाली छोटी-मोटी पूँजी देने का उद्देश्य होता है। हमारे पुरखों ने इसी उद्देश्य से आभूषणों को चढ़ावे की रस्म से जोड़ दिया था, जो आज भी हमारे समाज में प्रचलित है। आभूषण शृंगार और पूँजी दोनों के काम आते हैं।

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति

***(1) संजाल पूर्ण कीजिए :**

शास्त्री जी की स्वभावगत विशेषताएँ –

उत्तर :

ईमानदारी | सादगी

शास्त्री जी की स्वभावगत विशेषताएँ –

दूसरों की सहायता करना | सरलता

6441132

* (2) 'पर जो असल गहना है वह तो है' इस वाक्य से अभिप्रेत भाव लिखिए :

उत्तर : स्त्री के सोने-चाँदी, हीरे-मोती के गहने उसके शरीर के बाह्य शृंगारिक गहने होते हैं। ये गहने स्थायी नहीं होते। स्त्री का असली गहना तो उसका पति होता है, जो जीवन भर उसका साथ निभाता है।

*(3) पाठ में प्रयुक्त परिमाणों की सूची तैयार कीजिए :

(i) ----------

(ii) ----------

उत्तर : (i) ग्राम, किलोमीटर, पैसे। साढ़े (पाँच), पौने (छह)।

(ii) पल, मिनट, बजे, सप्ताह, महीना।

* (4) 'पर' शब्द के दो अर्थ लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) **पर–अर्थ :** पक्षी का पंख, डैना।

वाक्य : गिद्ध के पर बहुत बड़े और भारी होते हैं।

(ii) **पर–अर्थ :** लेकिन, परंतु।

वाक्य : सरकार ने किसानों के कर्ज माफ करने की घोषणा कर दी, पर उस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

- **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) गाड़ी लेकर हम चल पड़े

(ii) सोना मूल्यवान धातु है।

उत्तर : (i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) द्रव्यवाचक संज्ञा।

2. अव्यय :

- **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) अंदर (ii) कभी-कभी।

उत्तर : (i) हम दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसे।

(ii) लेखक बच्चों को कभी-कभी अपनी गाड़ी से स्कूल छोड़ देते थे।

3. संधि :

- **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
सूर्यास्त	----------	----------

अथवा

----------	दिक् + अंबर	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
सूर्यास्त	सूर्य + अस्त	स्वर संधि

अथवा

दिगंबर	दिक् + अंबर	व्यंजन संधि

4. सहायक क्रिया :

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रिया पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) मैंने तुम्हारे बदन के सारे गहने उतरवा लिए।

(ii) वह सब मैंने अम्मा को दे दिए हैं।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) लिए	लेना
(ii) हैं	होना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) देखना (ii) दौड़ना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) देखना	दिखाना	दिखवाना
(ii) दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) फूट-फूट कर रोना (ii) देखते रह जाना।

उत्तर :

(i) फूट-फूट कर रोना।

अर्थ : जोर-जोर से रोना।

वाक्य : माँ की नाजुक हालत देखकर बेटा फूट-फूट कर रोने लगा।

(ii) देखते रह जाना।

अर्थ : आश्चर्यचकित होना।

वाक्य : प्लेटफार्म पर पहुँचते-पहुँचते यात्री की गाड़ी छूट गई और वह देखता रह गया।

6414132

(2) अधोरेखांकित वाक्यांशों के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(बाएँ हाथ का खेल, डींग मारना, तौलकर बोलना)

(i) रमेश के लिए तैरकर नदी पार कर लेना बहुत सरल है।

(ii) राघव बहुत समझ-बूझकर बोलता है।

उत्तर :

(i) रमेश के लिए तैरकर नदी पार कर लेना बाएँ हाथ का खेल है।

(ii) राघव बहुत तौलकर बोलता है।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) एक दिन बाबू जी ने कहा, ''सुनील मेरी अलमारी बहुत बेतरतीब हो गई है।''

(ii) मैंने बाबू जी के कपड़ों की तरफ ध्यान देना शुरू किया।

उत्तर : (i) **बाबू जी ने** – कर्ता कारक।

(ii) **बाबू जी के** – संबंध कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) अजी आप इतनी देर से क्यों घर लौटे

(ii) वाह आपने तो गजब कर दिया

उत्तर : (i) अजी, आप इतनी देर से क्यों घर लौटे?

(ii) वाह! आपने तो गजब कर दिया।

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) अब हम उसका प्रयोग कर सकेंगे। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(ii) हम एक जगह खाने पर चले गए थे। *(सामान्य भविष्यकाल)*

उत्तर : (i) अब हम उसका प्रयोग कर रहे हैं।

(ii) हम एक जगह खाने पर चले जाएँगे।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) बाबूजी खुद इंपाला का प्रयोग न के बराबर करते थे और वह किसी स्टेट गेस्ट के आने पर ही निकाली जाती थी।

(ii) संतरी को जैसा कहा गया था, उसने वैसा ही किया।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य (ii) मिश्र वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) हमने बहाना सोच लिया है। *(विस्मयादिबोधक वाक्य)*

(ii) यह बात शान के तहत नहीं कर रहा हूँ। *(विधानवाचक वाक्य)*

(iii) तुम लॉग बुक रखते हो? *(आज्ञावाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) अहा! हमने बहाना सोच लिया।

(ii) यह बात शान के तहत कर रहा हूँ।

(iii) तुम लॉग बुक रखो।

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(i) वह मुसकराया और बोले, ''आप चिंता न करें।''

(ii) बचपन के वह दीन याद आता है।

उत्तर : (i) वे मुसकराए और बोले, ''आप चिंता न करें।''

(ii) बचपन का वह दिन याद आता है।

भाषा बिंदु :

- **वाक्यों को व्याकरण के नियमों के अनुसार शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 73 देखें।)

(यहाँ वाक्य शुद्ध करके अधोरेखांकित किए गए हैं।)

(1) करामत अली गाय अपने घर ले आए।

(2) उसे गाय की पीठ पर डंडे नहीं बरसाने चाहिए थे।

(3) करामत अली ने रमजानी पर गाय की देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी।

(4) आचार्य अपने शिष्यों से मिलना चाहते थे।

(5) घर में तख्ता रखे जाने की आवाज आती है।

(6) लड़के की तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कुछ कहना चाहा।

(7) सिरचन को कोई बाल-बच्चा नहीं था।

(8) लक्ष्मी की एक झब्बेदार पूँछ थी।

(9) कन्हैयालाल मिश्र जी बिड़ला की पुस्तक पढ़ने लगे।

(10) डॉ. महादेव साहा ने बाजार से नई पुस्तक खरीदी।

(11) लेखक गोवा गए और उनके साथ उनके साढ़ू साहब भी थे।

(12) टिळक जी द्वारा एक सज्जन के साथ किया हुआ व्यवहार सही था।

6414137

(13) रंगीन फूलों की माला बहुत सुंदर लग रही थी।

(14) बूढ़े, लड़के और कुछ स्त्रियाँ कुएँ से पानी भर रहे थे।

(15) लड़का, पिताजी और माँ बाजार गए।

(16) बरसों बाद पंडित जी को मित्र के दर्शन हुए।

(17) गोवा के बीच पर घूमने में बड़ा मजा आया।

(18) सामने शेर देखकर यात्री के प्राण मानो मुरझा गए।

(19) करामत अली की आँखों में आँसू उतर आए।

(20) मैं अपने देश को प्यार करता हूँ।

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 69**
  आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही दिखावे की संस्कृति पर अपने विचार लिखिए।
- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 70**
  पुलिस द्वारा नागरी सुरक्षा के लिए किए जाने वाले कार्यों की जानकारी पढ़िए एवं उनकी सूची बनाइए।
- **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 71**
  अनुशासन जीवन का एक अंग है, इसके विभिन्न रूप आपको कहाँ-कहाँ देखने को मिलते हैं, बताइए।

64141132

उपयोजित लेखन

- **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए और उसे उचित शीर्षक दीजिए : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 73)**

गाँव में लड़कियाँ – सभी पढ़ने में होशियार–गाँव में पानी का अभाव – लड़कियों का घर के कामों में सहायता करना – बहुत दूर से पानी लाना – पढ़ाई के लिए कम समय मिलना – लड़कियों का समस्या पर चर्चा करना – समस्या सुलझाने का उपाय खोजना – गाँववालों की सहायता से प्रयोग करना – सफलता पाना – शीर्षक।

उत्तर :

राघोपुर आदिवासियों की आबादीवाला काफी बड़ा गाँव था। यह गाँव कस्बे और शहर से बहुत दूर था। इसलिए इस गाँव में विकास के नाम पर एक सेकेंडरी स्कूल चालू करने के अलावा कुछ भी नहीं किया गया था। गाँव के लड़के-लड़कियाँ इसी स्कूल में पढ़ते थे।

राघोपुर में पीने के पानी का भारी संकट था। इसलिए लोगों को एक किलोमीटर दूर किसनपुर से पानी लाना पड़ता था। किसनपुर के सरपंच ने गाँववालों के सहयोग से एक बड़े कुएँ का निर्माण करवाया था। उस कुएँ में बहुत पानी था। उस कुएँ से दूर-दूर के गाँवों के लोग पीने का पानी ले जाते थे।

राघोपुर की लड़कियाँ घर के काम-काज में तो मदद करती ही थीं, किसनपुर से पीने का पानी लाने का काम भी उन्हींके जिम्मे होता था। इसलिए लड़कियों की पढ़ाई में इससे बाधा पहुँचती थी।

एक दिन किसनपुर का सरपंच अपने गाँव के कुएँ की सफाई करवा रहा था। इसलिए राघोपुर की लड़कियों को कुएँ से पानी लेने में काफी देर हो गई। इसलिए लड़कियाँ उस दिन स्कूल नहीं जा सकीं। सरपंच को इससे बहुत दुख हुआ।

सरपंच ने लड़कियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा,''तुम सब अपने गाँव में कुआँ खोदना शुरू करो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'' यह सुनकर लड़कियों को बहुत खुशी हुई। उन्होंने गाँव में आकर यह बात गाँव के लोगों को बताई। लड़कियों ने उसी दिन से कुआँ खोदने की शुरुआत कर दी। वे पढ़ाई और काम-धाम से बचा समय कुआँ खोदने में लगाने लगीं। उनकी देखादेखी गाँववाले भी इस काम में जुटने लगे।

एक दिन कुआँ खुदकर तैयार हो गया और उसके छोटे से गाँव के लोगों के प्रतिदिन के उपयोग करने भर का पर्याप्त पानी निकल आया। अब गाँव की लड़कियों का समय दूसरे गाँव से पानी लाने में बर्बाद नहीं होता था। वे पूरे समय स्कूल में पढ़ाई करने लगीं। गाँव के लोग भी बहुत प्रसन्न थे।

शीर्षक : सूझबूझ का फल

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कॅन कीजिए।

6 हम उस धरती की संतति हैं (पूरक पठन – पद्य) – *उमाकांत मालवीय*

विषय-प्रवेश : कव्वाली एक लोकप्रिय काव्य विधा है। इसमें दो दल अपनी-अपनी तारीफों अथवा किसी विषय पर अपनी राय को रोचक और तार्किक ढंग से नोक-झोंक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अच्छे कव्वाली गायकों को श्रोता रात-रात भर सुनते रहते हैं। 'हम उस धरती की संतति हैं' कव्वाली के एक दल में लड़के हैं और दूसरे दल में लड़कियाँ हैं। लड़के देश के प्रसिद्ध महापुरुषों और शूरवीर योद्धाओं से अपना संबंध जोड़कर अपने आप को श्रेष्ठ साबित करते हैं, तो लड़कियाँ सीता, सावित्री तथा युद्ध में अपना पराक्रम दिखाने वाली योद्धा नारियों से अपना संबंध जोड़कर अपने आप को श्रेष्ठ बताती हैं। पर बाद में दोनों दलों को अहसास होता है कि उन्हें इस झगड़े से कोई लाभ नहीं है। स्त्री-पुरुष दोनों भारतमाता के रथ के दो पहियों के समान हैं और देश के लिए दोनों आवश्यक हैं।

कविता का सरल अर्थ

[1] हम उस धरती ..... धरती के लड़के हैं... ।

[कविता में लड़कों (पुरुष जाति) को लड़कियों (स्त्रियों) से बढ़-चढ़कर बताते हुए लड़के अपनी प्रशंसा करते हुए कहते हैं –]

"हम उस धरती पर रहने वाले लड़के हैं, जिनकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। यह वही धरती है, जहाँ ध्रुव जैसे महापुरुष का जन्म हुआ था और वे इसी मिट्टी में खेलते थे।

इसी मिट्टी में भक्त प्रह्लाद का जन्म हुआ था। सारी दुनिया को मालूम है कि वे अपनी धुन के कितने सच्चे थे।

यहीं पर भरत जैसे वीर और साहसी महापुरुष का जन्म हुआ था। वे इतने निडर थे कि शेरों के मुँह खुलवाकर उनके दाँत गिना करते थे।

जयमल और पत्ता जैसे वीर इसी मिट्टी में पैदा हुए थे, जो अपने जैसा वीर किसी को समझते ही नहीं थे।

लड़के लड़कियों को नीचा दिखाते हुए कहते हैं कि इन सभी कारणों से हम (लड़के) तुम लोगों (लड़कियों) से बढ़कर हैं। इसलिए तुम सब (लड़कियों) हमारा (पुरुषों का) सामना नहीं कर सकती हो। अतः हमारे सामने तुम सब अपना मुँह बंद रखो। कुछ बोलने की कोशिश मत करो।"

[2] बातों का जनाब ..... हम उस धरती की लड़की हैं।

(लड़कों को अपनी बड़ाई करते हुए सुनकर लड़कियाँ लड़कों को जवाब देती हैं–)

"आप जैसे लोगों को बात करने का ढंग तक मालूम नहीं है। आप अपनी प्रशंसा खुद न कीजिए और चुप रहिए। (सुनिए) हम उस धरती की लड़कियाँ हैं, जिस धरती का कुछ पूछना ही नहीं है। हम उस धरती की लड़कियाँ हैं जिसकी मिट्टी में वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ था।

दुर्गावती और रजिया सुलताना जैसी मर्दानी वीरांगनाएँ जिस मिट्टी में पैदा हुई थीं, जिन्होंने लड़ाई के मैदान में अपना अद्भुत पराक्रम दिखाया था, हम उस धरती की लड़कियाँ हैं।

चाँद बीबी जैसी वीरांगना और जौहर की ज्वाला में हँसते-हँसते कूद जाने वाली महान नारी पद्मिनी का जन्म भी इसी मिट्टी में हुआ था।

यह सीता और सावित्री जैसी महान सन्नारियों की जन्म-स्थली है।

यदि आप (लड़के) अपने श्रेष्ठ होने की बड़ी-बड़ी बातें करेंगे, तो आप लोग हमारे ताने भी सहिए। याद रखिए, हम (लड़कियाँ) इन सन्नारियों की धरती की लड़कियाँ हैं।

[3] यों आप खफा ..... 'धरती की संतति हैं।

(लड़कियों का जवाब सुनकर लड़के समझदारी की बात करते हुए कहते हैं–)

(हमारी बातों पर) आप नाराज क्यों होती हैं? इसमें आपस में झगड़े की कोई बात नहीं है।

इस बात में क्या रखा है कि हमसे आप लोग बढ़कर हैं अथवा आप लोगों से हम लोग बढ़कर हैं।

इस तरह की बातें हमें आपस में उलझाकर रख देंगी और इससे न हमें कोई फायदा होगा और न आपको ही। सच्ची बात तो यह है कि ध्रुव (पुरुष) और रजिया (स्त्री) दोनों ही इसी धरती भारत माँ की संतान हैं। हम लोग भारत माता के रथ के (स्त्री-पुरुष रूपी) दो पहिए हैं। हम सब इसी धरती की संतान हैं।

मुहावरे – अर्थ

(1) **शेखी बघारना** – स्वयं अपनी प्रशंसा करना।

(2) **डींग मारना** – बड़ी-बड़ी बातें करना।

(3) **पते की बात कहना** – रहस्य की बात बताना।

टिप्पणियाँ

(1) **ध्रुव :** राजा उत्तानपाद और रानी सुनीति के पुत्र। महान विष्णु भक्त। विष्णु ने उन्हें आकाश में सप्तर्षि के पास अटल पद दिया था।

(2) **प्रह्लाद :** हिरण्यकशिपु के पुत्र। महान विष्णुभक्त। इनकी रक्षा के लिए विष्णु ने नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु का वध किया था।

(3) **भरत :** दुष्यंत एवं शकुंतला के पुत्र। इनके नाम पर ही हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा।

(4) **सावित्री :** राजा अश्वपति की कन्या। सत्यवान की पत्नी। महान पतिव्रता स्त्री। इन्होंने यम से अपने पति के प्राण छुड़ाए थे।

(5) **सीता :** विदेहाधिपति जनक की कन्या। इन्हें वैदेही, जानकी आदि नामों से भी जाना जाता है। ये जमीन की जोताई करते समय मिली थीं, इसलिए इनका सीता नाम पड़ा। श्रीराम की पत्नी।

(6) **लक्ष्मीबाई :** झाँसी की रानी। महान वीरांगना।

(7) **चाँद बीबी :** अहमदनगर राज परिवार की गुणी स्त्री। मुगलों ने निजामशाही की राजधानी अहमदनगर पर आक्रमण किया था, तो चाँद बीबी ने बड़ी बहादुरी से किले पर उनका सामना किया था। पर सरदारों के षड्यंत्र के कारण वह मारी गई।

(8) **रजिया सुलताना :** दिल्ली के सुलतान अल्तमश की बेटी। अल्तमश ने रजिया सुलताना को अपने उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त किया था। वह सेना का नेतृत्व स्वयं करती थी।

(9) **जयमल-पत्ता :** जयमल और पत्ता दोनों महान शूरवीर योद्धा थे। उन्होंने चित्तौड़ पर अकबर द्वारा किए गए हमले का बहादुरी पूर्वक सामना किया था।

(10) **दुर्गावती :** भारत की वीरांगना। उनका जन्म प्रसिद्ध चंदेल राजा कीरत राय के परिवार में हुआ था। वे गोंडवाना राज्य की रानी थीं।

(11) **पद्मावती :** चित्तौड़ के राजा रतनसिंह की पत्नी। अपनी सुंदरता के लिए विख्यात। दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने उनकी सुंदरता के बारे में सुनकर चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया था। राजपूत बहादुरों ने मरते दम तक उसका सामना किया। अंत में वीरांगना पद्मावती ने अन्य राजपूत स्त्रियों के साथ किले में जौहर कर लिया था।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 3 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

6414132

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 74)

हम उस धरती के लड़के हैं, जिस धरती की बातें
क्या कहिए; अजी क्या कहिए; हाँ क्या कहिए।
यह वह मिट्टी, जिस मिट्टी में खेले थे यहाँ ध्रुव–से बच्चे।
यह मिट्टी, हुए प्रह्लाद जहाँ, जो अपनी लगन के थे सच्चे।
शेरों के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते,
जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी को कुछ गिनते!
इस कारण हम तुमसे बढ़कर, हम सबके आगे चुप रहिए।
अजी चुप रहिए, हाँ चुप रहिए। हम उस धरती के लड़के हैं...
बातों का जनाब, शऊर नहीं, शेखी न बघारें, हाँ चुप रहिए।

शब्दार्थ

क्या कहिए – वाह-वाह (प्रशंसासूचक वाक्य)। **लगन –** धुन, किसी ओर ध्यान लगाने की क्रिया। **जबड़े –** मुँह के ऊपर-नीचे दोनों ओर की हड्डियाँ, जिनमें दाँत जड़े होते हैं। **दतुली –** बच्चे के नए (दूध के) दाँत। **बढ़कर –** किसी से अधिक योग्य होना। **चुप रहिए –** (यहाँ अर्थ) बात करने लायक न होना। **शेखी –** घमंड।

कृति 1 : (आकलन)

(1) **तालिका पूर्ण कीजिए :**

चरित्र	विशेषताएँ
	इस मिट्टी में खेलने वाला
	लगन का सच्चा (सच्ची लगन वाला)
	शेर के जबड़े में दाँत गिनने वाला
	अपने पराक्रम के आगे किसी को न गिनने वाला

(2) **आकृति पूर्ण कीजिए :**

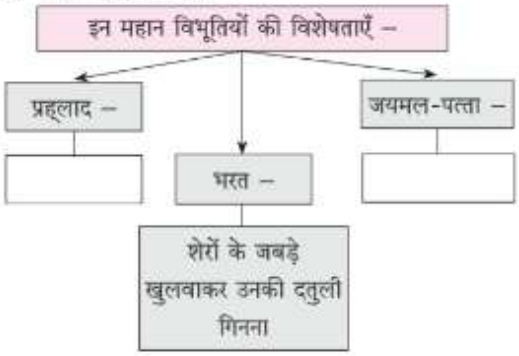

(3) **उत्तर लिखिए :**

(i) पद्यांश में बड़ाई की गई है, इनकी –

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त सौरमंडल का एक प्रसिद्ध ग्रह –

(iii) पद्यांश में आया वह नाम, जिनके नाम पर हमारे देश का नाम पड़ा –

(iv) पद्यांश में आया वन का एक हिंसक पशु –

(4) सूचनानुसार लिखिए : *(मार्च '20)*

(i) ऐसी पंक्ति जिसमें पौराणिक संदर्भ हैं – .....

(ii) ऐसी पंक्ति जिसमें ऐतिहासिक संदर्भ हो – .....

(5) उपर्युक्त पद्यांश से वीरत्व दर्शाने वाली दो पंक्तियाँ ढूँढ़कर लिखिए : *(नवंबर '20)*

(i) .....

(ii) .....

उत्तर

(1)

चरित्र	विशेषताएँ
ध्रुव	इस मिट्टी में खेलने वाला
प्रह्लाद	लगन का सच्चा (सच्ची लगन वाला)
भरत	शेर के जबड़े में दाँत गिनने वाला
जयमल-पत्ता	अपने पराक्रम के आगे किसी को न गिनने वाला

(2)

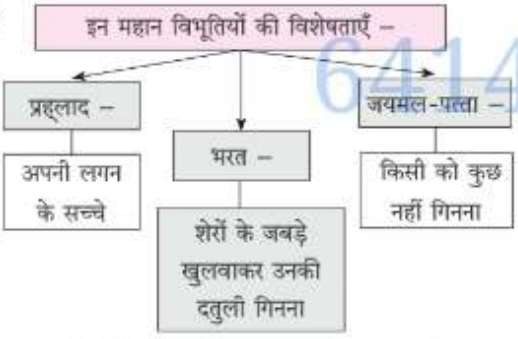

6414132

(3) (i) पद्यांश में बड़ाई की गई है, इनकी – लड़कों की।

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त सौरमंडल का एक प्रसिद्ध ग्रह – धरती।

(iii) पद्यांश में आया वह नाम, जिनके नाम पर हमारे देश का नाम पड़ा – भरत।

(iv) पद्यांश में आया वन का एक हिंसक पशु – शेर।

(4) (i) ऐसी पंक्ति जिसमें पौराणिक संदर्भ हैं –

यह वह मिट्टी, जिस मिट्टी में खेले थे यहाँ ध्रुव-से बच्चे।
यह मिट्टी, हुए प्रह्लाद जहाँ, जो अपनी लगन के थे सच्चे।

(ii) ऐसी पंक्ति जिसमें ऐतिहासिक संदर्भ हो –

शेरों के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते – जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी का कुछ गिनते।

(5) (i) शेरो के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते।

(ii) जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी को कुछ गिनते।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

(1) 'इतिहास हमें प्रेरणा देता है' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। *(मार्च '20)*

उत्तर : इतिहास का अर्थ है अतीत से अब तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखने वाले व्यक्तियों का कालक्रम के अनुसार वर्णन। प्रत्येक देश का इतिहास कुछ गौरवशाली होता है और किन्हीं कारणों से मिली कुछ असफताओं के वर्णनवाला भी होता है। इन दोनों प्रकार की घटनाओं की जानकारी हमें इतिहास से मिलती है। इतिहास हमें अपने देश के वीरों के पराक्रम का गुणगान करने की प्रेरणा देता है तो कुछ गलतियों के कारण प्राप्त असफलताओं को सुधारने की प्रेरणा भी देता है। ताकि भविष्य में इस तरह की गलतियों से हम बच सकें।

इतिहास एक दर्पण की तरह होता है, जिसमें हमारी अच्छाइयों और बुराइयों दोनों का निष्पक्ष कच्चा-चिट्ठा होता है। इससे किसी देश की जनता और सरकार दोनों कों ही प्रेरणा मिलती है।

(2) 'शेखी बघारना बुरी आदत है' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। *(नवंबर '20)*

उत्तर : शेखी बघारने का मतलब है हर किसी के सामने बढ़-चढ़कर अपनी बड़ाई करना। कुछ लोगों को शेखी बघारने की आदत होती है। उनमें कोई काबिलियत हो या न हो, वे हर मिलने-जुलने से अपनी बड़ाई करने से नहीं चूकते। शेखी बघारने वालों से लोग कन्नी काटते हैं, पर उन्हें इसकी परवाह नहीं होती। वे अपनी आदत से बाज नहीं आते। मौका मिलते ही अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से नहीं चूकते। शेखी बघारने की आदत बहुत बुरी है। ऐसी बातें सुनना किसी को अच्छा नहीं लगता। लोग ऐसे लोगों से घृणा करने लगते हैं और उनसे दूरी बना लेते हैं। यह बात शेखी बघारने वाले लोगों को सोचनी चाहिए और शेखी बघारने की अपनी बुरी आदत से बाज आना चाहिए।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 74)

बातों का जनाब, शऊर नहीं, शेखी न बघारें, हाँ चुप रहिए।
हम उस धरती की लड़की हैं, जिस धरती की बातें क्या कहिए।
अजी क्या कहिए, हाँ क्या कहिए।
जिस मिट्टी में लक्ष्मीबाई जी, जन्मी थीं झाँसी की रानी।
रजिया सुलताना, दुर्गावती, जो खूब लड़ी थीं मर्दानी।
जन्मी थी बीबी चाँद जहाँ, पद्मिनी के जौहर की ज्वाला।
सीता, सावित्री की धरती, जन्मी ऐसी-ऐसी बाला।
गर डींग जनाब उड़ाएँगे, तो मजबूरन ताने सहिए, ताने सहिए, ताने सहिए। हम उस धरती की लड़की हैं...

शब्दार्थ

शऊर – काम करने का ढंग। **शेखी** – घमंड। **जन्मना** – पैदा होना। **जौहर** – युद्ध में शत्रु की विजय निश्चित हो जाने पर राजपूत स्त्रियों का दहकती हुई विशाल चिता में एक साथ प्रवेश कर जल मरना। **ज्वाला** – आग की लपट। **बाला** – लड़की, बालिका। **डींग** – लंबी-चौड़ी आत्म प्रशंसा, घमंड। **ताना** – चुटीली बात।

कृति 1 : (आकलन)

*** (1) संजाल पूर्ण कीजिए :**

खूब लड़ने वाली मर्दानी वीरांगनाएँ –
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) लड़कियों का (लड़कों पर) आक्षेप और जवाब –
- [ ]
- [ ]

(ii) पौराणिक काल की दो महान नारियाँ –
- [ ]
- [ ]

(3) उत्तर लिखिए :

(i) पद्यांश में आया चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी का नाम –

(ii) पुराने जमाने में राजपूत रानियों का दहकती हुई विशाल चिता में प्रवेश कर प्राण न्योछावर कर देने से संबंधित शब्द –

(4) परिणाम लिखिए :

गर डींग उड़ाएँगे, तो .....

उत्तर

(1) खूब लड़ने वाली मर्दानी वीरांगनाएँ –
- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
- रजिया सुलताना
- दुर्गावती
- चाँद बीबी

(2) (i) लड़कियों का (लड़कों पर) आक्षेप और जवाब –
- डींग उड़ाया
- ताना सहिए

(ii) पौराणिक काल की दो महान नारियाँ –
- सीता
- सावित्री

(3) (i) पद्यांश में आया चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी का नाम – पद्मिनी।

(ii) पुराने जमाने में राजपूत रानियों का दहकती हुई विशाल चिता में प्रवेश कर प्राण न्योछावर कर देने से संबंधित शब्द – जौहर।

(4) गर डींग उड़ाएँगे, तो मजबूरन ताने सहने होंगे।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• 'नारी सम्मान' के बारे में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : आजकल स्त्रियों के अपमान की अनेक घटनाएँ पढ़ने-सुनने में आती हैं। स्त्रियों पर तरह-तरह के अत्याचार होते हैं। यह बड़े दुख की बात है।

हमारे देश में प्राचीन काल से नारियों का सम्मान करने की परंपरा रही है। हमारे यहाँ नारी को देवी का सम्मान दिया जाता रहा है और उसकी पूजा करने की परंपरा रही है। दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, महाकाली आदि देवियों की हम श्रद्धा और भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं। सीता, सावित्री तथा अनुसूया जैसी महान नारियाँ हमारी आदर्श रही हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता:' अर्थात जहाँ नारियों की पूजा की जाती है वहीं देवता निवास करते हैं। आज हमारे देश में स्त्रियाँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ बराबरी के स्तर पर काम कर रही हैं। आज की नारी पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक हो चुकी है। नारी को सम्मान देने से स्त्रियाँ ही सम्मानित नहीं होंगी, बल्कि उन्हें सम्मान देने वाले खुद भी गौरवान्वित होंगे।

पद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

6414132

पद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 74)

यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में।
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़-चढ़कर क्या रक्खा इसमें।
झगड़े से न कुछ हासिल होगा, रख देंगे बातें उलझा के।
बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रज़िया भारत माँ के।
भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये,
अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये।
हम उस धरती की संतति हैं...

शब्दार्थ

खफा – नाराज, रुष्ट। **टंटा** – झगड़ा, लड़ाई, व्यर्थ का झंझट। **हासिल** – हाथ लगना, मिलना, प्राप्त होना। **उलझाना** – झगड़ा, तकरार करना। **पते की बात** – रहस्य की बात। **संतति** – संतान।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

*(i) भारत माता के रथ के दो पहिये –
- [ ]
- [ ]

(ii) इनसे ये बढ़-चढ़कर नहीं –
- [ ]
- [ ]

(2) इन शब्दों के अर्थवाले शब्द पद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए :

(i) नाराज (ii) झगड़ा (iii) संतान (iv) प्राप्त होना।

(3) परिणाम लिखिए :

झगड़े करेंगे, तो .....

(4) उपर्युक्त पद्यांश में उल्लेखित स्त्री-पुरुष समानता दर्शाने वाली पंक्तियाँ चुनकर लिखिए :

(1) .....

(2) .....

उत्तर

(1) (i) भारत माता के रथ के दो पहिये –
- लड़के (पुरुष)
- लड़कियाँ (स्त्रियाँ)

(ii) इनसे ये बढ़-चढ़कर नहीं –
- लड़कियों से लड़के
- लड़कों से लड़कियाँ

(2) (i) नाराज – खफा (ii) झगड़ा – टंटा
(iii) संतान – संतति (iv) प्राप्त होना – हासिल करना।

(3) • झगड़े करेंगे, तो कुछ हासिल न होगा।

(4) (1) बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के
(2) भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'झगड़े से कुछ हासिल नहीं होता' – अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : किसी बात पर होने वाली कहा-सुनी या विवाद को आमतौर पर झगड़ा कहा जाता है। झगड़े से समस्या सुलझने के बजाय और उलझ जाती है। मुख्य मुद्दा धरा रह जाता है और झगड़ा प्रमुख हो जाता है। कभी-कभी तो झगड़े में लोगों की जान पर भी बन आती है। इसके परिणामस्वरूप लोगों में मारा-मारी और हत्या तक हो जाती है। पर समस्या वैसी की वैसी बनी रहती है, बल्कि उसमें और इजाफा हो जाता है। झगड़े के परिणामस्वरूप पीढ़ी-पीढ़ी तक दुश्मनी बनी रहती है। इसलिए झगड़े को भूलकर आपस में बातचीत के माध्यम से ही किसी समस्या का हल निकालने की बात सोचनी चाहिए। अत: किसी समस्या का हल निकालने का सही मार्ग झगड़ा नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण माहौल में आपस में बातचीत कर समझौता करना है।

6414132

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति

***(1) सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

वर्गीकरण कीजिए :

पद्यांश में उल्लिखित चरित्र

ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, लक्ष्मीबाई, रजिया सुलताना, दुर्गावती, पद्मिनी, सीता, चाँद बीबी, सावित्री, जयमल–पत्ता।

उत्तर :

ऐतिहासिक	पौराणिक
लक्ष्मीबाई, रजिया सुलताना, दुर्गावती, पद्मिनी, चाँद बीबी, जयमल–पत्ता।	ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, सीता, सावित्री।

***(2) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए : उत्तर**

(i) भारत माता के रथ के दो पहिये – लड़के (पुरुष), लड़कियाँ (स्त्रियाँ)।

(ii) खूब लड़ने वाली मर्दानी – लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, रजिया सुलताना।

(iii) अपनी लगन का सच्चा – प्रह्लाद।

(iv) किसी को कुछ न गिनने वाले – जयमल-पत्ता।

***(3) सही/गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके, वाक्य पुनः लिखिए :**

(i) रानी कर्मवती ने अकबर को राखी भेजी थी।

(ii) भरत शेर के दाँत गिनते थे।

(iii) झगड़ने से सब कुछ प्राप्त होता है।

(iv) ध्रुव आकाश में खेल रहे थे।

उत्तर : (i) रानी कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजी थी।

(ii) भरत शेरों की दतुली गिनते थे।

(iii) झगड़ने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

(iv) ध्रुव मिट्टी में खेले थे।

***(4) कविता से प्राप्त संदेश 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : प्रस्तुत कविता कव्वाली के स्वरूप में है। इसमें लड़के जहाँ महापुरुषों और प्रसिद्ध शूरवीरों का हवाला देते हुए अपने आप को लड़कियों से श्रेष्ठ बताने की कोशिश करते हैं, वहीं लड़कियाँ भी सीता, सावित्री, लक्ष्मीबाई तथा युद्ध में अपना पराक्रम दिखाने वाली शूरवीर रानियों को अपनी जमात से जोड़ते हुए लड़कों से अपने आप को कम नहीं बतातीं। पर बाद में लड़के कव्वाली के माध्यम से लड़कियों को जवाब देते हैं कि कोई किसी से बढ़कर नहीं है, सभी बराबर हैं। देश के चाहे महान पुरुष हों या महान स्त्रियाँ सभी भारत माँ की संतान हैं। लड़के-लड़कियाँ दोनों भारत माता के रथ के दो पहियों के समान हैं। रथ के लिए इन दोनों पहियों का होना जरूरी है। इस तरह कविता से यह संदेश मिलता है कि कोई बड़ा या कोई छोटा नहीं है, सभी लोग समान हैं। हमें अपने आप पर निरर्थक गर्व नहीं करना चाहिए।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कॅन कीजिए।

7 महिला आश्रम

– काका कालेलकर

विषय-प्रवेश : प्रसिद्ध गांधीवादी काका कालेलकर की गणना उच्च कोटि के निबंधकारों में की जाती है। प्रस्तुत रचना पत्र के रूप में लिखी गई है। प्रस्तुत पत्रों में लेखक ने आदर्श महिला आश्रम की स्थापना, उसकी व्यवस्था, उसके नियम तथा अनुशासन आदि के बारे में विस्तार से लिखा है।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा 1 (आ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 76)

प्रिय सरोज, जिस आश्रम ..... खुराक दें।

शब्दार्थ

आश्रम – कुटी, मठ (यहाँ) बेसहारा महिलाओं के लिए रहने का स्थान। **कल्पना** – कोई नई बात सोचना। **व्यवस्था** – प्रबंध। **संचालन** – चलाना, नियंत्रण। **सिफारिश** – किसी के पक्ष में किसी दूसरे से कुछ कहना। **चिपकना** – (यहाँ अर्थ) जुड़ा या जोड़े रहना। **सदाचार** – अच्छा आचरण। **स्वावलंबन** – अपना ही भरोसा करना, दूसरे का सहारा न लेना। **आग्रह** – अनुरोध। **उद्योग** – काम-धंधा। **कुढ़न** – खीझ। **बेखटके** – बिना किसी संकोच के, निःसंकोच। **सदुपयोग** – सही उपयोग। **पवित्र** – शुद्ध, निर्मल। **कलह** – विवाद, झगड़ा।

कृति 1 : (आकलन)

*(1) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

आश्रम के नियम–
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(2) संजाल पूर्ण कीजिए :

[ ] [ ]
↑ ↑
आश्रम में आने वाली महिलाओं के लिए आचार-संहिता–
↓ ↓
[ ] [ ]

(3) कारण लिखिए : *(नवंबर '20)*

(i) आश्रम में भक्ति तथा सेवा का वातावरण रहेगा – .....

(ii) संस्था चलाने का भार आने वाली बहनें उठा सकेंगी – .....

(4) उत्तर लिखिए : *(नवंबर '20)*

परेशान महिलाओं को आश्रम से मिलने वाली सुविधाएँ –

(i) .....

(ii) .....

उत्तर

(1)

आश्रम के नियम–
↓
आश्रम की व्यवस्था या संचालन में पुरुष का संबंध नहीं होगा।
↓
आश्रम का विज्ञापन अखबार में नहीं दिया जाएगा।
↓
आश्रम के लिए पैसे माँगने नहीं जाना है।
↓
आश्रम को सभी धर्म मान्य होंगे।

6414132

(2)

आश्रम में आने वाली महिलाओं के लिए आचार-संहिता –

- आश्रम में आने वाली महिला खाने-पीने और वस्त्रों की व्यवस्था स्वयं करेगी
- पहचान और परिचय के बिना किसी को यहाँ दाखिल नहीं किया जाएगा
- दाखिल हुई कोई महिला जब चाहे तब आश्रम छोड़ सकती है
- आश्रम को ठीक न लगने पर नोटिस देकर किसी भी महिला को हटाया जा सकता है

(3) (i) आश्रम में भक्ति तथा सेवा का वातावरण रहेगा – कारण, आश्रम किसी एक धर्म से चिपका नहीं होगा अथवा आश्रम को सभी धर्म मान्य होंगे।

(ii) संस्था चलाने का भार आने वाली बहनें उठा सकेंगी – कारण, उनमें कई तो कुशल होंगी।

(4) परेशान महिलाओं को आश्रम से मिलने वाली सुविधाएँ –

(i) बेखटके अपने खर्च से रह सकेंगी।

(ii) जीवन का सदुपयोग पवित्र सेवा में कर सकेंगी।

6414132

कृति 2 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

आश्रम का वातावरण एवं व्यवस्था –

- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(2) उत्तर लिखिए :

(i) गरीब स्त्री की सिफारिश कर आश्रम में दाखिल कराने वाली स्त्री का खर्च ये देंगे –

(ii) आश्रम में स्वावलंबन की मात्रा –

(iii) आश्रम में ये सिखाए जाएँगे –

(iv) आश्रम यह संस्था नहीं होगी –

उत्तर

(1)

आश्रम का वातावरण एवं व्यवस्था –

- आश्रम में सदाचार, भक्ति और सेवा का वातावरण रहेगा
- सादगी का आग्रह होगा
- आश्रम का वातावरण कलह–कुढ़न से मुक्त और स्वतंत्र होगा
- आश्रम को सभी धर्म मान्य होंगे

(2) (i) गरीब स्त्री की सिफारिश कर आश्रम में दाखिल कराने वाली स्त्री का खर्च ये देंगे – सिफारिश करने वाले लोग।

(ii) आश्रम में स्वावलंबन की मात्रा – यथासंभव।

(iii) आश्रम में ये सिखाए जाएँगे – उपयोगी उद्योग।

(iv) आश्रम यह संस्था नहीं होगी – शिक्षा संस्था।

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) अखबार = ... (ii) व्यवस्था = ...

(iii) बेखटक = ... (iv) बोझ = ...

(2) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

(i) पुरुष × ..... (ii) गरीब × .....

(iii) स्वतंत्र × ..... (iv) मान्य × .....

(3) निम्नलिखित शब्दों का तालिका में दी गई सूचना के अनुसार वर्गीकरण कीजिए : *(नवंबर '20)*

शब्द : सादगी, पढ़ाई, परेशानी, उपयोगी।

तालिका

कृदंत शब्द	तद्धित शब्द

उत्तर

(1) (i) अखबार = समाचारपत्र (ii) व्यवस्था = इंतजाम

(iii) बेखटक = अशंक (iv) बोझ = भार।

(2) (i) पुरुष × स्त्री (ii) गरीब × अमीर
(iii) स्वतंत्र × परतंत्र (iv) मान्य × अमान्य।

(3)

कृदंत शब्द	तद्धित शब्द
पढ़ाई	सादगी
	परेशानी
	उपयोगी

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• वर्तमान समाज में आश्रमों की बढ़ती हुई संख्या के बारे में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए। *(नवंबर '20)*

उत्तर : हमारे देश में आश्रमों की कल्पना बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है। राजा-महाराजा बूढ़े हो जाने पर राज-पाट छोड़कर वानप्रस्थ आश्रम अपना लेते थे और अपना शेष जीवन जंगलों में कुटी बनाकर सामान्य मनुष्य की तरह बिताया करते थे। पर आज वैसा समय नहीं रहा और राजा-महाराजा भी नहीं रहे। अब समाज में नई तरह की समस्याएँ खड़ी हुई हैं। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। पति-पत्नी में संबंध-विच्छेद हो रहे हैं। इसका प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है। ऐसे में बच्चे घर से भागते हैं। वृद्ध माता-पिता बेटे-बहू के लिए भार लगने लगते हैं। इन सब समस्याओं ने आधुनिक ढंग के आश्रमों को जन्म दिया है। इसके परिणामस्वरूप आज देश में वृद्धाश्रम, महिला आश्रम तथा बाल-आश्रम (बाल सुधारगृह) जैसे आश्रमों का निर्माण किया जा रहा है। इन आश्रमों में तिरस्कृत, उपेक्षित और परित्यक्त बच्चों, महिलाओं और वृद्धों को सहारा मिलता है। इन आश्रमों में इन्हें अपना सुरक्षित जीवन जीने का अवसर मिलता है। आश्रम आज के समय की आवश्यकता हैं। यही कारण है कि वर्तमान समाज मे आश्रमों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 76 – 77)
संस्था चलाने का ..... वे टिकते हैं बहुत।

शब्दार्थ

भार – (यहाँ अर्थ) जिम्मेदारी। **अधीन** – अंतर्गत। **मर्यादा** – सीमा, क्षमता। **ख्याल** – अंदाज। **प्रत्यक्ष** – सामने-सामने, कार्य रूप में। **निमित्त** – साधनभूत कारण। **बहार** – (यहाँ अर्थ) फूलों का खिलना।

कृति 1 : (आकलन)

• आकृति पूर्ण कीजिए :

(i)
बहन आश्रम की महिलाओं को देंगी यह खुराक –
[ ] [ ]
प्रेमयुक्त सलाह की

(ii)
आश्रम की आगामी योजना –
[ ] [ ]

(iii)
लेखक को बहन के इन गुणों पर विश्वास है –
[ ] [ ]

(iv)
गद्यांश में उल्लिखित फूलों के नाम –
[ ] [ ]

उत्तर

(i)
बहन आश्रम की महिलाओं को देंगी यह खुराक –
संगीत की | भक्ति की
प्रेमयुक्त सलाह की

(ii)
आश्रम की आगामी योजना –
संस्था की जमीन पर छोटे-छोटे मकान बनाना | संस्था की महिलाओं का दो-दो, चार-चार का परिवार चलाना

(iii)
लेखक को बहन के इन गुणों पर विश्वास है –
उनकी शक्ति | उनकी कुशलता और मर्यादा

6414132

(iv) गद्यांश में उल्लिखित फूलों के नाम –

- गुलदाउदी
- क्रिजेन्थीमम

कृति 2 : (आकलन)

***(1) संजाल पूर्ण कीजिए :**

गुलदाउदी की विशेषताएँ –

(2) उत्तर लिखिए :

गद्यांश से प्राप्त पत्र का उद्देश्य –

उत्तर

(1)

गुलदाउदी की विशेषताएँ –

- सरदी के मौसम में फूलने वाला फूल
- इसकी कलियाँ महीनों तक नहीं खुलतीं
- एक-एक पंखुड़ी करके खिलती है
- ये (फूल) बहुत टिकते हैं

(2) गद्यांश से प्राप्त पत्र का उद्देश्य – → महिला आश्रम के बारे में बहन को सूचनाएँ देना

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए :

(i) बहनें – ..... (ii) संस्था – .....

(iii) मैं – ..... (iv) पंखुड़ी – .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) संगीत – ..... (ii) समाज – .....

(iii) कली – ..... (iv) पंखुड़ी – .....

उत्तर

(1) (i) बहनें – बहन (ii) संस्था – संस्थाएँ

(iii) मैं – हम (iv) पंखुड़ी – पंखुड़ियाँ।

(2) (i) संगीत – पुल्लिंग (ii) समाज – पुल्लिंग

(iii) कली – स्त्रीलिंग (iv) पंखुड़ी – स्त्रीलिंग।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'आश्रमों की व्यवस्था' के बारे में अपना विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : हमारे देश में तरह-तरह के अनेक आश्रम हैं। इन आश्रमों का संचालन कुछ धर्मादा संस्थानों और सरकारी एजेंसियों द्वारा किया जाता है। इन आश्रमों की व्यवस्था संस्थानों अथवा सरकारी एजेंसियों द्वारा नियुक्त व्यक्तियों द्वारा की जाती है। कभी-कभी इन व्यक्तियों द्वारा अनुशासन अथवा अन्य किसी बात को लेकर आश्रमवासियों पर ज्यादती अथवा अत्याचार करने की खबरें भी आती रहती हैं। अच्छा यह हो कि आश्रमों की व्यवस्था का काम आश्रमों में अपना जीवन बिताने वाले कुशल व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति को सौंपा जाए अथवा बारी-बारी से निश्चित समय के लिए आश्रमवासियों में से कुशल व्यक्तियों को यह काम दिया जाए। इससे आश्रम में रहने वाले लोगों को व्यवस्था का कार्य सीखने का मौका मिलेगा और आश्रम में अत्याचार अथवा भ्रष्टाचार की समस्या पर भी अंकुश लगेगा। आश्रमों की समस्याओं से आश्रमवासियों से अधिक कौन परिचित हो सकता है? आश्रमवासियों के हाथ में आश्रम की व्यवस्था का काम देने से आश्रम की समस्याएँ आसानी से सुलझ सकती हैं।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 77)

गुलाब भी खिलने ..... काका का सप्रेम शुभाशीष।

शब्दार्थ

कली – अनखिला फूल। **सिरहाना** – चारपाई में सिर की ओर का भाग। **उत्कटता** – तीव्रता, उग्रता, श्रेष्ठता। **बिदा देना** – (यहाँ अर्थ) हटा देना, फेंक देना।

6414132

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

जिनिया के पौधे के साथ हुई घटनाएँ –

→ _____

→ _____

→ _____

→ _____

***(2) कारण लिखिए :**

(i) काका जी ने कंपास बॉक्स मँगाकर रखा –

(ii) लेखक ने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए –

(3) उत्तर लिखिए :

(i) पूज्य बापू जी क्या चाहते हैं?

(ii) परिच्छेद में आए दो धर्मों के नाम।

उत्तर

(1) जिनिया के पौधे के साथ हुई घटनाएँ –

→ पौधा रास्ते के किनारे था, लोग उसकी कली तोड़ लेते थे

→ लेखक ने उसे वहाँ से हटाकर अपने सिरहाने लगा दिया

→ पौधे ने वहाँ खूब सुंदर-सुंदर फूल दिए

→ दो-एक महीने खूब फूल देकर पौधा सूख गया

(2) (i) काका जी को तारों के नक्शे बनाने थे, इसलिए उन्होंने कंपास बॉक्स मँगा कर रखा।

(ii) काका जी के पासवाले गमलों में लगे फूलों के पौधे सूख गए थे, इसलिए काका जी ने फूलों के गमले अपने पास से निकाल दिए।

(3) (i) हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए उर्दू भाषा सीखना आवश्यक है।

(ii) (अ) हिंदू (ब) मुस्लिम।

कृति 2 : (आकलन)

(1) दो ऐसे प्रश्न बनाकर लिखिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) एक-दो महीने (ii) गुलाब।

(2) एक/दो शब्दों में उत्तर लिखिए :

(i) काका जी द्वारा सरोज को भेजा हुआ संदेश .....

(ii) तबीयत से कमजोर .....

(iii) तारों के नक्शे बनाने के लिए उपयोगी .....

(iv) काका जी ने इन्हें अपने पास से निकाल दिया .....

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

गद्यांश में उल्लेखित व्यक्तियों के नाम –

(4) उत्तर लिखिए :

(i) काका जी ने सरोज को इन तारीखों में पत्र लिखे – .....

(ii) सरोज की तबीयत कमजोर होने तक काका जी को ये पत्र लिखेंगी – .....

(iii) काका जी को सरोज का पत्र इस दिन मिला था – .....

(iv) इस फूल की आँखें उत्कटता से बोलती लगती थीं – .....

(5) निम्नलिखित कथन पढ़कर सत्य अथवा असत्य पहचानकर लिखिए :

(i) पत्र रैहाना को लिखा गया है –

(ii) सरोज की तबीयत कमजोर है –

(iii) काका साहब ने अपने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए हैं –

(iv) काका साहब ने सरोज को पत्र लिखा है –

6414132

उत्तर

(1) (i) जिनिया का पौधा कितने दिन फूल देने के बाद सूख गया?

(ii) अब कौन-सा फूल खिलने लगा है?

(2) (i) उर्दू लिखना सीखो (ii) सरोज

(iii) कंपास बॉक्स (iv) फूल के गमले।

(3)

सरोज

बापू जी — गद्यांश में उल्लेखित व्यक्तियों के नाम – — काका जी

रैहाना

(4) (i) काका जी ने सरोज को इन तारीखों में पत्र लिखे – 1, 9, 15, 21.

(ii) सरोज की तबीयत कमजोर होने तक काका जी को ये पत्र लिखेंगी – चिरंजीव रैहाना।

(iii) काका जी को सरोज का पत्र इस दिन मिला था – गुरुवार, 21 दिसंबर 1944.

(iv) इस फूल की आँखें उत्कटता से बोलती लगती थीं – जिनिया।

(5) (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य।

3. संधि :

• **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
उल्लेख	----------	----------

अथवा

----------	अति + अधिक	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
उल्लेख	उत् + लेख	व्यंजन संधि

अथवा

अत्यधिक	अति + अधिक	स्वर संधि

4. सहायक क्रिया :

• **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(i) तुम पूरा आराम लेकर पूरी तरह ठीक हो जाओ।

(ii) ऐसा कदम सोचकर लेना होगा।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) जाओ	जाना
(ii) होगा	होना

6414132

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

• **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) लिखना (ii) मिलना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) लिखना	लिखाना	लिखवाना
(ii) मिलना	मिलाना	मिलवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) सन्न रह जाना (ii) भार वहन करना।

उत्तर :

(i) सन्न रह जाना।

अर्थ : भौचक रह जाना।

वाक्य : नरेश की लांछन लगाने वाली बातें सुनकर मोहन सन्न रह गया।

(ii) भार वहन करना।

अर्थ : किसी चीज का भार उठाना।

वाक्य : जनता को सरकारी कर का भार वहन करना ही पड़ता है।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांशों के लिए कोष्ठक में दिए गए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(पर्दाफाश करना, खानापूर्ति करना, सिर माथे लेना)

(i) चोर के एक साथी ने पुलिस अधिकारी के सामने मोटर साइकिल चुराने वाले दल का भेद खोल दिया।

(ii) मुंशी जी सेठ जी का आदेश सदा आदर सहित मानते हैं।

उत्तर : (i) चोर के एक साथी ने पुलिस अधिकारी के सामने मोटर साइकिल चुराने वाले दल का पर्दाफाश कर दिया।

(ii) मुंशी जी सेठ जी का आदेश सदा सिर माथे लेते हैं।

7. कारक :

• **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) बहन महिलाओं को संगीत की शिक्षा दें।

(ii) आश्रम का विज्ञापन अखबार में नहीं दिया जाए।

उत्तर : (i) **महिलाओं को** – कर्म कारक।

(ii) **अखबार में** – अधिकरण कारक।

8. विरामचिह्न :

• **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) संस्था की जमीन पर छोटे छोटे मकान बनाए जाएँगे

(ii) फूलों में गुलदाउदी क्रिजेन्थीमम फूल बहार में हैं

उत्तर :

(i) संस्था की जमीन पर छोटे-छोटे मकान बनाए जाएँगे।

(ii) फूलों में गुलदाउदी, क्रिजेन्थीमम फूल बहार में हैं।

9. काल परिवर्तन :

• **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) आश्रम शिक्षा संस्था नहीं होगी। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

(ii) संस्था अपने आप चलेगी। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

उत्तर : (i) आश्रम शिक्षा संस्था नहीं होती है।

(ii) संस्था अपने आप चल रही है।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) आश्रम किसी एक धर्म से चिपका नहीं होगा।

(ii) यहाँ परेशान महिलाएँ बेखटके अपने खर्च से रह सकें और अपने जीवन का सदुपयोग पवित्र सेवा में कर सकें।

(iii) वह यदि गरीब है, तो उसकी सिफारिश करने वाले लोगों को खर्च की पक्की व्यवस्था करनी चाहिए।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य (iii) मिश्र वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i) तुम्हें अपना खयाल रखना चाहिए। *(आज्ञावाचक वाक्य)*

(ii) यहाँ सरदी अच्छी है। *(प्रश्नवाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) तुम अपना खयाल रखो!

(ii) क्या यहाँ सरदी अच्छी है?

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(i) उनके ऊपर अइसा बोज नहीं आएगा, जिससे कि उन्हें परेशानी हो।

(ii) सभी धरम आश्रम को मान होंगे।

उत्तर : (i) उनके ऊपर ऐसा बोझ नहीं आएगा, जिससे कि उन्हें परेशानी हो।

(ii) सभी धर्म आश्रम को मान्य होंगे।

भाषा बिंदु :

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 78 देखें।)

*** (1) जिन्हें 'ता' प्रत्यय लगा हो, ऐसे शब्द पाठ से ढूँढ़कर उन प्रत्यय साधित शब्दों की सूची बनाइए :**

	शब्द	ता	प्रत्यय साधित शब्द
1	मानव	ता	मानवता
2	कुशल	ता	कुशलता
3	उत्कृष्ट	ता	उत्कृष्टता
4	एक	ता	एकता

*** (2) पाठ में प्रयुक्त पर्यायवाची शब्द लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) **घर = मकान।**

घर – वाक्य : मनुष्य को अपने ही घर में सुकून मिलता है।

मकान – वाक्य : महानगरों में रोटी और वस्त्र तो किसी तरह मिल भी जाता है, पर मकान की व्यवस्था बहुत जटिल होती है।

(ii) **बोझ = भार।**

बोझ – वाक्य : गरीब लोगों के लिए गृहस्थी के खर्च का बोझ उठाना आसान नहीं होता।

भार – वाक्य : जिम्मेदार व्यक्ति दिए गए कार्य का भार उठाने में प्रसन्नता महसूस करते हैं।

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 79 देखें।)

- **निम्न शब्दों से बने दो मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(1) आँख :

(i) आँखों से ओझल होना।

अर्थ : अदृश्य हो जाना।

वाक्य : हवाई अड्डे से उड़ान भरने के बाद विमान देखते-देखते आँखों से ओझल हो गया।

(ii) आँखें भर आना।

अर्थ : आँखों में आँसू आ जाना।

वाक्य : बेटी की बिदाई के समय पिता की आँखें भर आईं।

(2) मुँह :

(i) मुँह मोड़ लेना :

अर्थ : बेरुखी करना, ध्यान न देना।

वाक्य : सच्चाई से मुँह मोड़ लेने से सच बात झूठ नहीं हो जाती।

(ii) मुँह की खाना।

अर्थ : बुरी तरह हारना।

वाक्य : करगिल युद्ध में पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी।

(3) दाँत :

(i) दाँत पीसना।

अर्थ : क्रोध में दाँत पर दाँत रगड़ना।

वाक्य : बात-बात पर मुनीम जी की फटकार सुनकर चपरासी दाँत पीसने लगा।

(ii) दाँत काटी रोटी।

अर्थ : गहरी दोस्ती।

वाक्य : नेताजी और उस गुंडे में दाँत काटी रोटी थी।

6414132

(4) हाथ :

(i) हाथ का मैल होना।

अर्थ : बहुत तुच्छ वस्तु।

वाक्य : लाला रूपचंद के लिए छोटा-मोटा चंदा देना हाथ का मैल है।

(ii) हाथ में आना।

अर्थ : काबू या कब्जे में आना।

वाक्य : काफी भाग-दौड़ के बाद अपराधी पुलिस के हाथ में आ गया।

(5) हृदय :

(i) हृदय उछलना।

अर्थ : बहुत प्रसन्नता होना।

वाक्य : छोटे-छोटे बच्चों की देशभक्ति देखकर हृदय आनंद से उछल पड़ता है।

(ii) हृदय पसीजना।

अर्थ : मन में करुणा, दया आदि भावों का संचार होना।

वाक्य : मोबाइल चोर पकड़े जाने पर लोगों से गिड़गिड़ता रहा कि वे उसे पुलिस को न दें, पर लोगों का हृदय नहीं पसीजा।

6414132

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 77**

  मानवतावाद पर विचार सुनिए।

- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 77**

  अंतरिक्ष विज्ञान में ख्याति प्राप्त दो महिलाओं की जानकारी पढ़िए।

- **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 77**

  'अनुशासन स्वयं विकास का प्रथम चरण है', कथन पर चर्चा कीजिए।

उपयोजित लेखन

***(1) 'संदेश वहन के आधुनिक साधनों से लाभ-हानि' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए।**

उत्तर : एक समय ऐसा था, जब संदेश वहन के साधन बहुत सीमित थे। संदेश वहन का सर्वसुलभ और लोकप्रिय साधन पत्र हुआ करता था। तार और टेलीफोन भी संदेश वहन के साधन थे। तार का संकटकाल के समय उपयोग किया जाता था और टेलीफोन सबके लिए उपलब्ध नहीं था।

आज जमाना बदल गया है। आज संदेश वहन के एक-से-बढ़ कर एक साधन उपलब्ध हैं। आप देश के किसी भी कोने में बैठे हों, क्षण भर में मोबाइल फोन पर अपना मनचाहा नंबर डायल करके सामनेवाले से बात कर सकते हैं। अपने मोबाइल फोन पर सामनेवाले को सामने-सामने बात करते हुए देख सकते हैं। वीडियो कांफ्रेंसिंग में अलग-अलग जगहों पर बैठे लोगों से अपने घर में बैठकर सामने-सामने लोग बात कर लेते हैं। व्हाट्सअॅप पर अपने चित्र, डॉक्यूमेंट स्कैन करके क्षण भर में सामनेवाले तक पहुँचा सकते हैं। एस.एम.एस., फेसबुक, ट्विटर से मनचाहा संदेश भेजा जा सकता है।

ई-मेल से पत्र के रूप में लिखित समाचार भेज सकते हैं, जिसे प्रमाण के रूप में रखा जा सकता है।

संदेश वहन के आधुनिक साधनों के कारण जनता को जहाँ इस तरह की सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वहीं लोगों को इनसे अनेक परेशानियाँ भी हो रही हैं। आप इन साधनों के कारण सबसे जुड़े हुए हैं। तरह-तरह के लोग इसका फायदा उठाकर आपको अनावश्यक एस.एम.एस. के द्वारा तंग कर सकते हैं, आपको ठगने की कोशिश कर सकते हैं। एस.एम.एस. के द्वारा झूठी बातें और अफवाए भी फैलाई जा सकती हैं। मोबाइल फोन से अधिकतर लोग चिपके रहते हैं और अपना समय बर्बाद करते रहते हैं।

इस तरह आधुनिक संदेश वहन के साधनों से जहाँ अनेक प्रकार के लाभ हैं, वहीं उनसे कुछ नुकसान भी हैं। पर इससे चिंता करने की जरूरत नहीं है। आधुनिक संदेश वहन साधनों की कमियाँ भी धीरे-धीरे दूर हो जाएँगी, ऐसी उम्मीद हमें रखनी चाहिए।

(2) अपने मित्र/सहेली को जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने के उपलक्ष्य में बधाई देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए।

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 79)

उत्तर :

15 नवंबर 2021

प्रिय नरेश,

खुश रहो।

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि जिला विज्ञान प्रदर्शनी में तुम्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मेरी ओर से तुम्हें बहुत-बहुत बधाई।

जब मैंने तहसील स्तर पर आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में तुम्हारी कृति देखी थी, तभी मुझे विश्वास हो गया था कि तुम्हारी यह कृति एक दिन जिला स्तर की प्रदर्शनी में तुम्हें पुरस्कार अवश्य दिलाएगी। तुम्हारा प्रथम पुरस्कार पाना तुम्हारे शहर के लोगों के लिए गर्व की बात होगी। विज्ञान की कृतियों में तुम्हारी यह लगन एक-न-एक दिन तुम्हें प्रांत स्तर पर अवश्य सफलता दिलाएगी। हमारी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा,

कमल

श्री. विजय पाठक

४५, कृष्णा विला,

महात्मा गांधी रोड,

औरंगाबाद, पिन कोड नं. 431 007

Kamal@abc.com

(3) लेखनीय : किसी सामाजिक संस्था की जानकारी लिखिए। (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 77)

उत्तर : स्वयंसेवी संस्था 'मासूम'

8414132

रात्रिकालीन पाठशालाओं में विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की हर प्रकार की मदद देने के प्रति समर्पित एक स्वयंसेवी संस्था है– 'मासूम'। इस संस्था की स्थापना की है निकिता केतकर ने।

यह संस्था रात्रिकालीन पाठशालाओं में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रतिदिन नाश्ता प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें मुफ्त पाठ्यपुस्तकें, सहायक पुस्तकें, कापियाँ, कंपास बॉक्स तथा अन्य सामग्री प्रदान करती है। इसके अलावा मोबाइल-प्रयोगशाला तथा प्रयोग करने की विभिन्न सामग्री भी मुहैया कराती है। संस्था रात्रिकालीन पाठशालाओं के विद्यार्थियों को आगे की पढ़ाई के लिए स्कॉलरशिप देती है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यह संस्था स्पेशल क्लास और कैरिअर गाइडेन्स की व्यवस्था करती है। इसके अलावा यह रात्रिकालीन पाठशालाओं के मुख्याध्यापकों तथा शिक्षकों की ट्रेनिंग की भी व्यवस्था करती है। मुंबई की 70 रात्रिकालीन पाठशालाओं को ये सारी सुविधाएँ मुफ्त प्रदान की जाती हैं।

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कॅन कीजिए।

8 अपनी गंध नहीं बेचूँगा

– बालकवि बैरागी

विषय-प्रवेश : स्वाभिमान मनुष्य की थाती है। जिस व्यक्ति में स्वाभिमान की भावना नहीं होती, उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। स्वाभिमानी लोग अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपना सब कुछ गँवा देते हैं, पर अपने स्वाभिमान पर आँच नहीं आने देते। प्रस्तुत कविता में कवि ने एक ऐसे ही फूल का वर्णन किया है, जो अपने स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तत्पर है, पर किसी भी हालत में अपना स्वाभिमान छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। कवि ने इस कविता के द्वारा फूल के इस गुण को मनुष्य को भी अपनाने और स्वाभिमानी रहने की प्रेरणा दी है।

कविता का सरल अर्थ

[1] चाहे सभी सुमन ..... सौगंध नहीं बेचूँगा।

स्वाभिमानी फूल अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार है, पर वह किसी भी हालत में अपने स्वाभिमान पर आँच नहीं आने देना चाहता।

वह कहता है कि चाहे सारे फूल बिक जाएँ, केवल फूल ही नहीं चाहे वे उपवन भी बिक जाएँ, जहाँ सारे फूल उत्पन्न होते हैं। सारी बहार क्यों न बिक जाए, पर वह अपनी सुगंध को, जिसे वह अपना स्वाभिमान मानता है, किसी भी हालत में नहीं बेच सकता।

जिस तरह मनुष्य अपने स्वाभिमान के लिए मर मिट जाता है, पर उस पर आँच नहीं आने देता, उसी तरह यह फूल भी अपनी सुगंध की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

फूल कहता है कि पौधे की जिस डाल ने उसे अपनी गोद में खिलाया था, जिन कोंपलों ने उसे लालिमा प्रदान की थी और जिन काँटों ने लक्ष्मणजी की तरह पहरा देकर उसे तोड़े जाने से बचाया था, उन्हें वह कभी भूल नहीं सकता। उनका वह ऋणी है और उस पर पहला अधिकार इन्हीं का है। वे चाहे उसे नोचें या तोड़ें, वह उफ तक नहीं करेगा। वह कहता है कि वे चाहे मुझे तोड़कर किसी मालिन को दे दें, तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है। वह चारों ओर से अपने ऊपर नजरें गड़ाने वालों और उसकी कीमत लगाकर उसे बाजार में बेचने वालों से कहता है कि उसने अपनी सुगंध को न बेचने की जो सौगंध खाई है, वह उसका संस्कार बन गई है और वह उसका सौदा कभी नहीं कर सकता। फूल कहता है कि वह अपनी सुगंध कभी नहीं बेच सकता।

[2] मौसम से क्या लेना ..... अनुबंध नहीं बेचूँगा।

फूल कहता है कि मौसम कैसा भी हो, मौसम का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह हर स्थिति में अपने आप को स्थिर रखने में सक्षम है। उसे किसी से कुछ भी पाने की आकांक्षा नहीं है। वह लाभ या हानि की कोई परवाह नहीं करता। न उस पर किसी चीज का कोई प्रभाव पड़ता है। और न वह किसी चीज से कभी घबराता है। चाहे उसकी कोमल-कोमल पंखुड़ियों पर भौंरों के गुंजन का सरगम सुनाई देता हो अथवा पतझड़ का मौसम हो, और वह मुरझाई हुई दशा में हो या उस पर कृत्रिम फुहारें डालकर उसे सांत्वना दी जाए, उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। वह अपनी बोली लगाने वालों और पल-पल अपनी कीमतें आँकने वालों को संबोधित करते हुए कहता है कि मैंने अपने आप से अपने स्वाभिमान का अनुबंध कर लिया है और यह ठान लिया है कि मैं अपने स्वाभिमान पर कभी आँच नहीं आने दूँगा। मैं उस अनुबंध को किसी भी हालत में दाँव पर नहीं लगा सकता अर्थात मैं उसका कभी सौदा नहीं कर सकता।

फूल कहता है कि वह अपनी सुगंध कभी नहीं बेच सकता।

[3] मुझको मेरा अंत ..... वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।

फूल कहता है कि इस संसार में जिसका भी जन्म होता है, एक-न-एक दिन उसका अंत होना (मरना) निश्चित है। वह कहता है कि यह बात मुझे अच्छी तरह मालूम है कि एक दिन मैं भी पंखुड़ी-पंखुड़ी करके झर जाऊँगा और मेरा अंत हो जाएगा। पर इसके पहले मैं हवा के साथ उड़कर वातावरण में फैलकर एक-एक (फूल) के पास जाऊँगा और मेरी सुगंध उनसे जाने-अनजाने में किए की माफी माँगेगी। फूल कहता है कि उस दिन बाजार और बाजार में खरीद-फरोख्त करने वाले लोगों को यह बात समझ में आएगी कि खुद्दारी अर्थात स्वाभिमान क्या होता है और इसके सम्मान के लिए लोग हर प्रकार का त्याग करने के लिए क्यों तत्पर रहते हैं। फूल कहता है कि किसी के हाथों बिकने से तो अच्छा है कि मैं मर जाऊँ और अपने देश की मिट्टी में मिल जाऊँ। वह कहता है कि मैंने अपनी इच्छा से अपने शरीर पर जो प्रतिबंध लगा लिया है, उस प्रतिबंध को मैं कभी नहीं बेच सकता।

(फूल के इस स्वाभिमान को मनुष्य को भी अपनाना चाहिए और उसे भी किसी लालच में आकर कभी अपना स्वाभिमान बेचना नहीं चाहिए।)

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 80)

चाहे सभी सुमन बिक जाएँ चाहे ये उपवन बिक जाएँ
चाहे सौ फागुन बिक जाएँ पर मैं गंध नही बेचूँगा
अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।
जिस डाली ने गोद खिलाया जिस कोंपल ने दी अरुणाई
लछमन जैसी चौकी देकर जिन काँटों ने जान बचाई
इनको पहिला हक आता है चाहे मुझको नोचें-तोड़ें
चाहे जिस मालिन से मेरी पँखुरियों के रिश्ते जोड़ें
ओ मुझपर मँडराने वालो मेरा मोल लगाने वालो
जो मेरा संस्कार बन गई वो सौगंध नहीं बेचूँगा।
अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।

शब्दार्थ

गंध – फूल की सुगंध। **कोंपल** – पेड़ की नई कोमल पत्ती, कल्ला। **अरुणाई** – लालिमा। **चौकी** – पहरा। **हक** – अधिकार। **नोचना** – झटके से उखाड़ना। **पंखुरी** – फूल की पत्ती, पुष्पदल। **मँडराना** – किसी के आसपास चक्कर काटना। **मोल लगाना** – कीमत लगाना। **संस्कार** – पवित्रीकरण, व्यवस्था, शुद्धि। **सौगंध** – कसम।

6414132

कृति 1 : (आकलन)

***(1) सूची बनाइए :**

इनका फूल से संबंध है –

---

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) फूल को परवाह नहीं है, इनके बिकने की –

[ ] [ ]

सौ फागुनों के

(ii) फूल कृतज्ञ है इनका –

[ ] [ ]

काँटों का

(iii) इन्होंने फूल के लिए यह किया –

डाली ने – [ ]

कोंपल ने – [ ]

(3) जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'ब'
(i) सुमन	पँखुरी
(ii) काँटे	सौगंध
(iii) मालिन	उपवन
(iv) संस्कार	चौकी

(4) उत्तर लिखिए :

(i) फूल 'सौगंध' न बेचने की बात इन्हें संबोधित करते हुए कहता है।

*(ii) फूल के अनुसार उसे तोड़ने का पहला अधिकार इन्हें है –

(5) कारण लिखिए :

*(i) फूल अपनी सौगंध नहीं बेचेगा –

(ii) फूल डाली, कोंपल और काँटों को स्वयं को नोचने-तोड़ने का अधिकार देता है –

(6) उत्तर लिखिए : (पद्यांश में आया –)

(i) एक भारतीय महीने का नाम – .....

(ii) एक प्रसिद्ध पौराणिक चरित्र, जिनके नाम के साथ 'रेखा' शब्द जोड़कर उदाहरण दिया जाता है – .....

(iii) फूलों के बगीचे में फूलों के पौधे लगाने और उनकी सेवा करने वाले व्यक्ति की पत्नी – .....

(iv) फूलों की महक के अर्थ में प्रयुक्त शब्द – .....

(7) एक दो शब्दों में उत्तर लिखिए : *(नवंबर '20)*

(i) अपनी गंध न बेचने वाला – .....

(ii) फूल को अरुणाई देने वाला – .....

(iii) फूल को गोद में खिलाने वाली – .....

(iv) चौकी देकर फूल की जान बचाने वाले – .....

उत्तर

(1) इनका फूल से संबंध है –

(i) उपवन (ii) डाली (iii) कोंपल (iv) काँटे।

(2) (i)

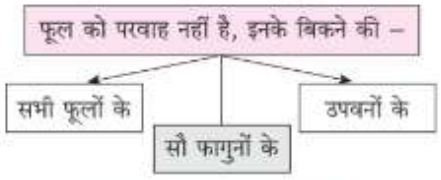

(ii)

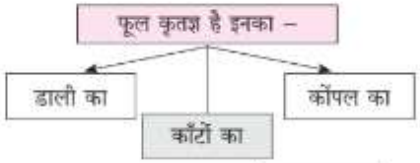

(iii)

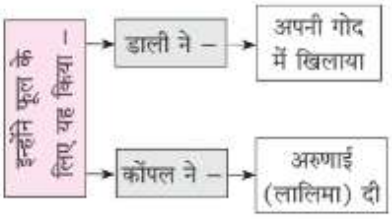

(3)

(i) सुमन – उपवन

(ii) काँटे – चौकी

(iii) मालिन – पँखुरी

(iv) संस्कार – सौगंध

(4) (i) अपने ऊपर मँडराने वालों और अपना मोल लगाने वालों को फूल 'सौगंध' न बेचने की बात संबोधित करते हुए कहता है।

(ii) फूल के अनुसार उसे तोड़ने का पहला अधिकार डाली, कोंपल और काँटों को है।

(5) (i) अपनी गंध न बेचने की सौगंध फूल का संस्कार बन गई है, इसलिए फूल अपनी सौगंध नहीं बेचेगा।

(ii) फूल डाली, कोंपल और काँटों का कृतज्ञ है, इसलिए वह इन्हें अपने आप को नोचने-तोड़ने का अधिकार देता है।

(6) (i) एक भारतीय महीने का नाम – फागुन।

(ii) एक प्रसिद्ध पौराणिक चरित्र, जिनके नाम के साथ 'रेखा' शब्द जोड़कर उदाहरण दिया जाता है–लछमन (लक्ष्मण), लक्ष्मण रेखा।

(iii) फूलों के बगीचे में फूलों के पौधे लगाने और उनकी सेवा करने वाले व्यक्ति की पत्नी – मालिन।

(iv) फूलों की महक के अर्थ में प्रयुक्त शब्द – गंध।

(7) (i) अपनी गंध न बेचने वाला – फूल।

(ii) फूल को अरुणाई देने वाला – कोंपल।

(iii) फूल को गोद में खिलाने वाली – डाली।

(iv) चौकी देकर फूल की जान बचाने वाले – काँटे।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए :

(i) अरुणाई –..... (ii) चौकी –.....

(iii) गंध –..... (iv) सौगंध –.....

(2) निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(i) वृक्ष की नई और कोमल पत्तियाँ = ...

(ii) किसी वस्तु के ऊपर चारों ओर घूमते हुए उड़ना = ...

(3) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचान कर लिखिए : *(नवंबर '20)*

(i) सौगंध –..... (ii) फागुन –.....

(4) निम्नलिखित शब्दों के वचन परिवर्तन करके लिखिए : *(नवंबर '20)*

(i) पंखुरियाँ –..... (ii) रिश्ता –.....

उत्तर

(1) (i) अरुणाई –लालिमा (ii) चौकी –पहरा

(iii) गंध –सुगंध (iv) सौगंध –कसम।

(2) (i) वृक्ष की नई और कोमल पत्तियाँ – कोंपल

(ii) किसी वस्तु के ऊपर चारों ओर घूमते हुए उड़ना – मँडराना।

(3) (i) सौगंध – स्त्रीलिंग (ii) फागुन – पुल्लिंग

(4) (i) पंखुरियाँ – पंखुरी (ii) रिश्ता – रिश्ते।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• **उपर्युक्त पद्यांश की क्रमशः किन्हीं चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।** *(नवंबर '20)*

'जिस डाली ने ..... रिश्ते जोड़े'।

उत्तर : फूल कहता है कि पौधे की जिस डाल ने उसे अपनी गोद में खिलाया था, जिन कोंपलों ने उसे लालिमा प्रदान की थी और जिन काँटों ने लक्ष्मणजी की तरह पहरा देकर उसे तोड़े जाने से बचाया था, उन्हें वह कभी भूल नहीं सकता। उनका वह ऋणी है और उस पर पहला अधिकार इन्हीं का है। वे चाहे उसे नोचें या तोड़ें, वह उफ तक नहीं करेगा। वह कहता है कि वे चाहे मुझे तोड़कर किसी मालिन को दे दें, तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 80)

मौसम से क्या लेना मुझको ये तो आएगा-जाएगा
दाता होगा तो दे देगा खाता होगा तो खाएगा।
कोमल भँवरों के सुर सरगम पतझारों का रोना-धोना
मुझपर क्या अंतर लाएगा पिचकारी का जादू-टोना

64141132

ओ नीलाम लगाने वालो पल-पल दाम बढ़ाने वालो
मैंने जो कर लिया स्वयं से वो अनुबंध नहीं बेचूँगा।
अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।

शब्दार्थ

मौसम – काल, समय, ऋतु। **दाता** – देने वाला। **सुर** – स्वर, आवाज। **पतझारों** – वह ऋतु, जिसमें पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं, शिशिर ऋतु । **पिचकारी** – पोली नली से बना यंत्र जिसके निचले सिरे पर छेद होते हैं और जिसके द्वारा पानी या रंग फेंकते हैं। **नीलाम** – बिक्री का एक ढंग, जिसमें वस्तु उपस्थित खरीदारों में से सबसे अधिक मूल्य देने वाले को बेच दी जाती है। **अनुबंध** – प्रतिज्ञापत्र, समझौता।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i)

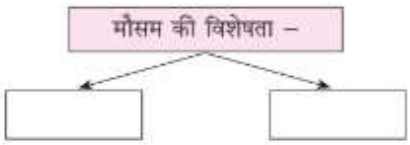

(ii)

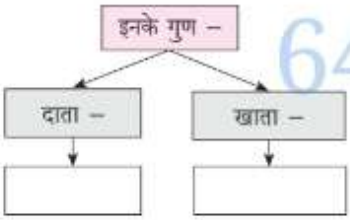

6414132

*** (2) 'दाता होगा तो दे देगा, खाता होगा तो खाएगा' पंक्ति से स्पष्ट होने वाला अर्थ लिखिए।**

(3) कारण लिखिए :

*(i) फूल को मौसम से कुछ लेना-देना नहीं है –

(ii) पिचकारी का जादू-टोना फूल पर कोई अंतर नहीं लाएगा –

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

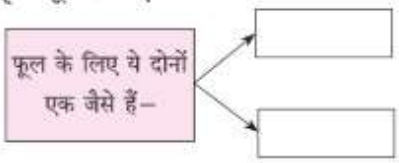

उत्तर

(1) (i)

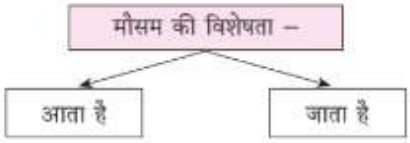

(ii)

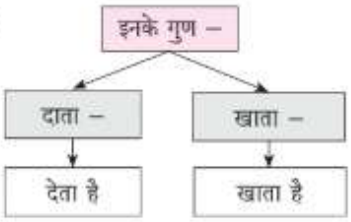

(2) फूल को केवल अपने स्वाभिमान से मतलब है। उसे किसी चीज को पाने अथवा खो जाने की चिंता नहीं है। जो मिलना होगा, मिलेगा और जो नुकसान होगा, होगा। उसे उसकी चिंता नहीं है।

(3) (i) फूल को मौसम से कुछ लेना-देना नहीं है – उसे अपने अस्तित्व के लिए कुछ भी पाने की इच्छा नहीं है। इसलिए कैसा भी मौसम हो, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

(ii) पिचकारी का जादू-टोना फूल पर कोई अंतर नहीं लाएगा – फूल को कृत्रिम फुहारों की कामना नहीं है। इसलिए पिचकारी का जादू-टोना फूल पर कोई अंतर नहीं लाएगा।

(4)

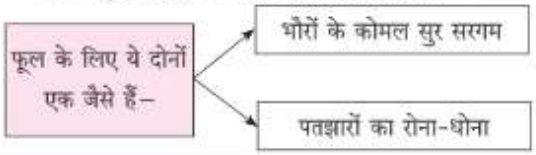

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) पद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) .....

(iii) ..... (iv) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) भौंरा = ... (ii) सुर = ...

(iii) दाम = ... (iv) कोमल = ...

उत्तर

(1) (i) आएगा-जाएगा (ii) रोना-धोना

(iii) जादू-टोना (iv) पल-पल।

(2) (i) भौंरा = भ्रमर (ii) सुर = स्वर

(iii) दाम = मूल्य (iv) कोमल = मुलायम।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• प्रस्तुत पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : चाहे फूल की कोमल-कोमल पंखुड़ियों पर भौंरों के गुंजन का सरगम सुनाई देता हो अथवा पतझड़ का मौसम हो, और वह मुरझाई हुई दशा में हो या उस पर कृत्रिम फुहारें डालकर उसे सांत्वना दी जाए, उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। फूल अपनी बोली लगाने वालों और पल-पल अपनी कीमतें आँकने वालों को संबोधित करते हुए

कहता है कि मैंने अपने आप से अपने स्वाभिमान का अनुबंध कर लिया है और यह ठान लिया है कि मैं अपने स्वाभिमान पर कभी आँच नहीं आने दूँगा। मैं उस अनुबंध को किसी भी हालत में दाँव पर नहीं लगा सकता अर्थात मैं उसका कभी सौदा नहीं कर सकता।

फूल कहता है कि वह अपनी सुगंध कभी नहीं बेच सकता।

पद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 80)

मुझको मेरा अंत पता है पँखुरी-पँखुरी झर जाऊँगा
लेकिन पहिले पवन परी संग एक-एक के घर जाऊँगा
भूल-चूक की माफी लेगी सबसे मेरी गंध कुमारी
उस दिन ये मंडी समझेगी किसको कहते हैं खुद्दारी
बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ
मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।

शब्दार्थ

अंत – मृत्यु। **झरना** – गिर जाना। **भूल-चूक** – गलतियाँ। **मंडी** – बाजार, खरीद-फरोख्त का स्थान। **खुद्दारी** – आत्म-सम्मान, स्वाभिमान। **प्रतिबंध** – रोक।

64141132

कृति 1 : (आकलन)

***(1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

अंत पता होने पर भी फूल की अभिलाषा –

[ ] [ ]

(2) दो ऐसे प्रश्न बनाकर लिखिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) मन ने (ii) पवन के।

(3) लिखिए :

* (i) फूल को बिक जाने से भी बेहतर लगता है .....।

(ii) फूल झर जाना चाहता है .....।

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) फूल इस तरह झर जाएगा – [ ]

(ii) भूल-चूक की माफी यह लेगी – [ ]

(iii) तब मंडी यह समझेगी – [ ]

(iv) इसको इसका अंत पता है – [ ]

उत्तर

(1) अंत पता होने पर भी फूल की अभिलाषा –
- (मरने के पहले) एक-एक के घर जाना
- भूल-चूक के लिए माफी माँगना

(2) (i) तन पर किसने प्रतिबंध लगा दिया?

(ii) फूल एक-एक के घर किसके साथ जाएगा?

(3) (i) फूल को बिक जाने से भी बेहतर लगता है – मर जाना।

(ii) फूल झर जाना चाहता है – अपनी माटी में।

(4) (i) फूल इस तरह झर जाएगा – पंखुरी-पंखुरी गिरकर

(ii) भूल-चूक की माफी यह लेगी – फूल की गंध कुमारी

(iii) तब मंडी यह समझेगी – खुद्दारी किसको कहते हैं

(iv) इसको इसका अंत पता है – फूल को अपना

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) पद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ..... (ii) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) पवन = ... (ii) तन = ...

(iii) घर = ... (iv) दिन = ...

उत्तर

(1) (i) एक-एक (ii) भूल-चूक।

(2) (i) पवन = हवा (ii) तन = शरीर

(iii) घर = मकान (iv) दिन = दिवस।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **प्रस्तुत पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : फूल कहता है कि इस संसार में जिसका भी जन्म होता है, एक-न-एक दिन उसका अंत होना (मरना) निश्चित है। वह कहता है कि यह बात मुझे अच्छी तरह मालूम है कि एक दिन मैं भी पंखुड़ी-पंखुड़ी करके झर जाऊँगा और मेरा अंत हो जाएगा। पर इसके पहले मैं हवा के साथ उड़कर वातावरण में फैलकर एक-एक (फूल) के पास जाऊँगा और मेरी सुगंध उनसे जाने-अनजाने में किए की माफी माँगेगी। फूल कहता है कि उस दिन बाजार और बाजार में खरीद-फरोख्त करने वाले लोगों को यह बात समझ में आएगी कि खुद्दारी अर्थात स्वाभिमान

क्या होता है और इसके सम्मान के लिए लोग हर प्रकार का त्याग करने के लिए क्यों तत्पर रहते हैं।

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति

• **कृति पूर्ण कीजिए :**

फूल बेचना नहीं चाहता –

(1) .....
(2) .....
(3) .....
(4) .....

उत्तर : फूल बेचना नहीं चाहता –

(1) गंध
(2) सौगंध
(3) अनुबंध
(4) प्रतिबंध

पद्य विश्लेषण

सूचना : यह प्रश्नप्रकार कृतिपत्रिका के प्रारूप से हटा दिया गया है। परंतु पाठ्यपुस्तक में होने के कारण विद्यार्थियों के अधिक अभ्यास के लिए इस प्रश्न को यहाँ समाहित किया गया है।

• **प्रस्तुत कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए :**

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 81)

(1) रचनाकार का नाम → बालकवि बैरागी।

(2) रचना की विधा → गीत।

(3) पसंद की पंक्ति → 'चाहे सभी सुमन बिक जाएँ,
चाहे ये उपवन बिक जाएँ
चाहे सौ फागुन बिक जाएँ
पर मैं गंध नहीं बेचूँगा।'

(4) पंक्तियाँ पसंद होने का कारण → इन पंक्तियों में फूल हर हालत में जीवन में अपने स्वाभिमान को सर्वोपरि मानता है। इसके लिए उसे कोई भी त्याग करना पड़े, तो वह इसके लिए तैयार है, पर वह अपने स्वाभिमान को हर हालत में बनाए रखना चाहता है।

(5) रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा → प्रस्तुत रचना से यह संदेश मिलता है कि स्वाभिमान मनुष्य की सबसे बड़ी थाती है। हमें हर हालत में इसकी रक्षा करनी चाहिए। यदि स्वाभिमान की रक्षा के लिए हमें अपना सर्वस्व निछावर कर देना पड़े, तो भी हँसते-हँसते अपना सब कुछ त्याग देना चाहिए। प्रस्तुत पंक्तियों से हमें यही प्रेरणा मिलती है। (विद्यार्थी अपनी पसंदीदा पंक्ति लिखें।)

64141132

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

• **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) फूल की अरुणाई देखने योग्य थी।

(ii) भँवरे फूलों पर मँडराते हैं।

उत्तर : (i) **अरुणाई** – भाववाचक संज्ञा।

(ii) **भँवरे** – जातिवाचक संज्ञा।

2. अव्यय :

• **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) सामने (ii) तरफ।

उत्तर : (i) फूल एक-एक के सामने जाएगा।

(ii) मालिन ने फूल की तरफ देखा।

3. संधि :

• **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	यथा + अर्थ	----------

अथवा

नमस्ते	----------	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
यथार्थ	यथा + अर्थ	**स्वर संधि**

अथवा

नमस्ते	**नमः + ते**	**विसर्ग संधि**

4. सहायक क्रिया :

• **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रिया पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए :**

(i) बिकने से बेहतर है मर जाऊँ। (ii) मन ने तन पर प्रतिबंध लगा दिया।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) जाऊँ	जाना
(ii) दिया	देना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

- **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) रोना (ii) उड़ना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) रोना	रुलाना	रुलवाना
(ii) उड़ना	उड़ाना	उड़वाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) चैन न मिलना (ii) झेंप जाना।

उत्तर :

(i) चैन न मिलना। **अर्थ :** बेचैनी अनुभव करना।

वाक्य : इलाके में चोरी की बढ़ती घटनाओं से पुलिस को चैन नहीं मिल रहा था।

(ii) झेंप जाना। **अर्थ :** लज्जित होना, शरमाना।

वाक्य : हिसाब-किताब में गड़बड़ी पकड़े जाने पर मुंशी जी झेंप गए।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांशों के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(थर-थर काँपना, नजर आना, दृष्टि फेरना)

(i) चोर पुलिस के डर से बहुत अधिक काँप रहा था।

(ii) आगरा के किले की ऊपरी मंजिल से ताजमहल का गुंबद दिखाई देता है।

उत्तर : (i) चोर पुलिस के डर से थर-थर काँप रहा था।

(ii) आगरा के किले की ऊपरी मंजिल से ताजमहल का गुंबद नजर आता है।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) अच्छा हो मर कर अपनी माटी में झर जाऊँ।

(ii) चाहे जिस मालिन से मेरी पंखुरियों के रिश्ते जोड़ें।

उत्तर : (i) **माटी में** – अधिकरण कारक।

(ii) **मालिन से** – करण कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) मौसम से मुझको क्या लेना है वह तो आएगा – जाएगा

(ii) अच्छा तो आप मुझे अपनी गंध बेचने के लिए कह रहे हैं

उत्तर :

(i) मौसम से मुझको क्या लेना है, वह तो आएगा-जाएगा।

(ii) अच्छा! तो आप मुझे अपनी गंध बेचने के लिए कह रहे हैं।

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) मैं गंध नहीं बेचूँगा। *(सामान्य भूतकाल)*

(ii) मुझको मेरा अंत पता है। *(पूर्ण भूतकाल)*

उत्तर : (i) मैंने गंध नहीं बेची।

(ii) मुझको मेरा अंत पता था।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) एक ओर भौंरे का गुंजार है और दूसरी ओर पतझड़।

(ii) मैं वह सौगंध नहीं बेचूँगा, जो मेरा संस्कार बन गई।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य (ii) मिश्र वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

(i) फूल अपनी गंध नहीं बेचेगा। *(विस्मयादिबोधक वाक्य)*

(ii) फूल एक-एक के घर जाएगा। *(संदेहबोधक वाक्य)*

उत्तर : (i) अच्छा! फूल अपनी गंध नहीं बेचेगा!

(ii) फूल शायद एक-एक के घर जाए!

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(i) उस दीन ये मंडी समझेगा।

(ii) तब दूनिया उसके पाँव पर पड़ेगी।

उत्तर : (i) उस दिन ये मंडी समझेगी।

(ii) तब दुनिया उसके पाँव पड़ेगी।

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

6414132

9 जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ

– विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

विषय-प्रवेश : साक्षात्कार साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। साक्षात्कार में प्रश्न उत्तर के माध्यम से किसी व्यक्ति से साक्षात्कारकर्ता उसके कार्यों एवं जीवन के विविध पक्षों के बारे में समुचित जानकारी प्राप्त करता है। साक्षात्कार में व्यक्ति के बारे में हर प्रकार की जानकारी आईने में दिखाई देने वाली तस्वीर की भाँति झलकने लगती है।

प्रस्तुत साक्षात्कार में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने प्रसिद्ध लेखक अमृतलाल नागर से उनके साहित्य-सृजन, साहित्य, उनकी लेखन प्रक्रिया, उनके समकालीन साहित्यकारों, तत्कालीन राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों तथा उनकी कुछ प्रमुख कृतियों के बारे में अनेक प्रश्न पूछे हैं और उन्होंने उनका बेबाक उत्तर दिया है।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (अ) तथा 1 (आ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 82)

नागर जी : लिखने से पहले ..... मुझे बहुत प्रभावित किया।

शब्दार्थ

पितामह – दादा, पिता के पिता। **थीम** – विषय, कथ्य। **बहिष्कार** – त्याग करना, निकाल देना, संबंध न रखना। **लाठीचार्ज** – भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस का लाठी से प्रहार करना। **अपशकुन** – अनिष्टसूचक शकुन। **शैली** – प्रणाली, रीति, तरीका।

6414132

कृति 1 : (आकलन)

***(1) कृति पूर्ण कीजिए :**

अमृतलाल नागर जी के साहित्य – सृजन में सहायक	लेखक	1.	2. .....
	पत्रिकाएँ	1.	2. .....

(2) उत्तर लिखिए :

*(i) नागर जी की पहली कविता को प्रस्फुटित करने वाला अनुभव –

(ii) नागर जी का साइमन कमीशन के बहिष्कार की घटना के बाद राजनीति की ओर न जाना –

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

गद्यांश में उल्लिखित कोई चार रचनाकार –
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(4) नाम लिखिए : *(मार्च '20)*

गद्यांश में उल्लेखित –
- पत्रिकाएँ
  - (1) .....
  - (2) .....
- उपन्यास
  - (1) .....
  - (2) .....

(5) लिखिए : *(मार्च '20)*

(i) लेखक का पहला मित्र – .....

(ii) लेखक की पहली कविता – .....

उत्तर

(1)

अमृतलाल नागर जी के साहित्य – सृजन में सहायक	लेखक	1. सनेही जी	2. अयोध्यासिंह उपाध्याय
	पत्रिकाएँ	1. सरस्वती	2. गृहलक्ष्मी

(2) (i) सन 1928 – 1929 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय किए गए लाठी चार्ज के अनुभव ने नागर जी की पहली कविता को प्रस्फुटित किया।

(ii) नागर जी के पिता सरकारी कर्मचारी थे। सरकारी कर्मचारी के परिवार के किसी सदस्य का सरकार के खिलाफ विद्रोह करने का अर्थ उसका नौकरी से हाथ धोना था। इसलिए नागर जी राजनीति की ओर नहीं गए।

(3)

गद्यांश में उल्लिखित कोई चार रचनाकार –
- प्रेमचंद
- शरतचंद्र
- बंकिमचंद्र
- प्रभातकुमार मुखोपाध्याय

(4) गद्यांश में उल्लेखित –

पत्रिकाएँ	उपन्यास
(1) सरस्वती	(1) आनंदमठ
(2) गृहलक्ष्मी	(2) देवी चौधरानी

(5) (i) लेखक का पहला मित्र – छापे के अक्षर

(ii) लेखक की पहली कविता – कब लौं कहौं लाठी खाय।

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) नागर जी के सामने इनका साहित्य था – [ ]

(ii) नागर जी ने शुरू में इन्हें पढ़ा – [ ]

(iii) नागर जी का पहला मित्र यह था – [ ]

(iv) नागर जी की पहली कविता का शीर्षक यह था – [ ]

(2) ऐसे दो प्रश्न बनाकर लिखिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

(i) 1933 में (ii) चंडीप्रसाद हृदयेश।

6414132

(3) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

रचना	रचनाकार
*(i) देशी और विलायती	(1) बंकिमचंद्र चटर्जी
*(ii) आनंदमठ	(2) प्रभातकुमार मुखोपाध्याय
*(iii) अपशकुन	(3) बंकिमचंद्र चटर्जी
(iv) देवी चौधरानी	(4) अमृतलाल नागर

उत्तर

(1) (i) नागर जी के सामने इनका साहित्य था – प्रेमचंद और कौशिक का

(ii) नागर जी ने शुरू में इन्हें पढ़ा – बंकिम के उपन्यास

(iii) नागर जी का पहला मित्र यह था – छापे का अक्षर

(iv) नागर जी की पहली कविता का शीर्षक यह था – 'कब लौं कहौं लाठी खाय!'

(2) (i) नागर जी की पहली कहानी 'अपशकुन' किस सन में छपी?

(ii) नागर जी को किसकी लेखन शैली ने बहुत प्रभावित किया?

(3)

रचना	रचनाकार
(i) देशी और विलायती	– प्रभातकुमार मुखोपाध्याय
(ii) आनंदमठ	– बंकिमचंद्र चटर्जी
(iii) अपशकुन	– अमृतलाल नागर
(iv) देवी चौधरानी	– बंकिमचंद्र चटर्जी

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन कीजिए :

(i) लेखक – ..... (ii) कवि – .....

(iii) पितामह – ..... (iv) मित्र – .....

(2) उचित उपसर्ग जोड़कर सार्थक शब्द बनाइए :

(अभि, आ, अनु, उप)

(i) ..... शासन (ii) ..... वन

(iii) ..... जीवन (iv) ..... मान

(3) गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए : *(मार्च '20)*

(i) प्रत्यययुक्त शब्द :

(1) ..... (2) .....

(ii) **ऐसे दो शब्द जिनका वचन परिवर्तन नहीं होता : *(मार्च '20)***

(1) ..... (2) .....

उत्तर

(1) (i) लेखक – लेखिका (ii) कवि – कवयित्री

(iii) पितामह – पितामही (iv) मित्र – सहेली।

(2) (i) अनु + शासन = अनुशासन

(ii) उप + वन = उपवन

(iii) आ + जीवन = आजीवन

(iv) अभि + मान = अभिमान।

(3) (i) (1) राजस्थानी – राजस्थान + ई।

(2) विलायती – विलायत + ई।

(ii) (1) घर (2) मित्र।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'पढ़ोगे तो बढ़ोगे' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। *(मार्च '20)***

उत्तर : जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। पढ़ाई-लिखाई से ही बुद्धि का विकास होता है। बड़े-बड़े पदों पर आसीन व्यक्ति पढ़ाई के बल पर ही शीर्ष पर पहुँचे हैं। जीवन में मनुष्य को जीविकोपार्जन के लिए कोई-न-कोई काम करना ही पड़ता है। धंधा-व्यवसाय करना हो,

नौकरी करनी हो या अन्य छोटा-मोटा काम करना हो, शिक्षा प्रत्येक स्थान पर आवश्यक होती है। शिक्षा प्राप्त करने पर ही कोई व्यक्ति एक आदर्श, जागरूक एवं सफल नागरिक बन सकता है और अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों को पूरी तरह निभा सकता है। शिक्षा हर तरह के शोषण से व्यक्ति की रक्षा करती है। शिक्षा से ही मनुष्य में उचित-अनुचित में भेद करना आता है। शिक्षित मनुष्य अपने साथ-साथ दूसरों को भी उन्नति की ओर ले जाता है। आज देश में उत्तम शिक्षा प्रदान करने की सर्वत्र पर्याप्त व्यवस्था की गई है। हमें इसका लाभ उठाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा अवश्य प्राप्त करे और जीवन में आगे बढ़े।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 83)

तिवारी जी : क्या उन दिनों ..... लौटकर इसे लिखा था।

शब्दार्थ

व्यक्तित्व – व्यक्ति की विशेषता, गुण। **आंदोलन** – किसी बात के लिए व्यापक सामूहिक प्रयत्न। **करुणा** – अनुकंपा, दया। **अद्भुत** – विचित्र, अनोखा। **क्रांतिकारी** – स्थिति / व्यवस्था में भारी उलटफेर कर देने वाला।

6414132

कृति 1 : (आकलन)

(1) उत्तर लिखिए :

*(i) नागर जी अपने पिता जी के इस गुण से प्रभावित थे –

(ii) नागर जी के पिता जी ने उन्हें इनमें भाग लेने से रोका –

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) गद्यांश में आए दो महान नेताओं के नाम – [ ]

(ii) नागर जी के लेखन की एक विशेषता – [ ]

(iii) नागर जी की पहली कहानी का नाम – [ ]

(iv) परिच्छेद में उल्लिखित स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण घटना – [ ]

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

मेडिकल कॉलेज में दाखिल रोगी–
- [ ]
- [ ]

उत्तर

(1) (i) किसी के दुख-दर्द में तुरंत पहुँचने का गुण।

(ii) क्रांतिकारी आंदोलनों में

(2) (i) परिच्छेद में आए दो महान नेताओं के नाम – गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू

(ii) नागर जी के लेखन की एक विशेषता – गरीबों के प्रति करुणा का भाव होना

(iii) नागर जी की पहली कहानी का नाम – प्रायश्चित

(iv) परिच्छेद में उल्लिखित स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण घटना – काकोरी बमकांड

(3)

मेडिकल कॉलेज में दाखिल रोगी–
- जवाहरलाल नेहरू की माँ
- नागर जी का छोटा भाई

कृति 2 : (आकलन)

***(1) आकृति पूर्ण कीजिए :**

नागर जी का पहला उपन्यास –
- नाम – [ ]
- प्रकाशन वर्ष – [ ]

(2) दो ऐसे प्रश्न बनाकर लिखिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द-समूह हों :

(i) 1933 में (ii) सामाजिक आंदोलनों में।

उत्तर

(1)

नागर जी का पहला उपन्यास –
- नाम – महाकाल
- प्रकाशन वर्ष – 1944

(2) (i) जवाहरलाल नेहरू से नागर जी की पहली बार किस सन में भेंट हुई थी?

(ii) नागर जी के पिता जी ने उन्हें किस तरह के आंदोलनों में जाने से कभी नहीं रोका?

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) निश्चित × ..... (ii) दुख × .....

(iii) तेज × ..... (iv) पहला × .....

(2) तद्धित शब्दों का मूल शब्द लिखिए :

*(i) साहित्यिक – ..... *(ii) विलायती – .....

(iii) प्रभावित – ..... (iv) सामाजिक – .....

उत्तर

(1) (i) निश्चित × अनिश्चित (ii) दुख × सुख

(iii) तेज × मद्धिम (iv) पहला × अंतिम।

(2) (i) साहित्यिक – साहित्य (ii) विलायती – विलायत

(iii) प्रभावित – प्रभाव (iv) सामाजिक – समाज।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

6414132

* • **'ज्ञान तथा आनंद प्राप्ति का साधन वाचन' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : कहते हैं, पुस्तक मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र होती है। पुस्तकों में ज्ञानभरी बातें होती हैं। किताबों में संचित ज्ञान हमारे लिए सहायक होता है। विभिन्न विचारकों, लेखकों तथा महान व्यक्तियों के विचार पुस्तकों में ही संग्रहित होते हैं। हमारे यहाँ साहित्य, तकनीक, विज्ञान, धर्म, राजनीति आदि सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हैं। आवश्यकता है इन्हें पढ़ने में रुचि रखने की। पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ अद्भुत आनंद की प्राप्ति होती है। कोई भी मनुष्य हर दृष्टि से परिपूर्ण नहीं होता। मनुष्य बहुत सारी बातें देख-सुन और पढ़कर सीखता है। विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों से ज्ञानार्जन करता है। बड़े होने पर इन पुस्तकों से उसका काम नहीं चलता। उसे ज्ञानार्जन के लिए और खुराक की आवश्यकता होती है। वह अपने पसंदवाले विषयों की पुस्तकें पढ़ता है। आई.सी.एस., आई.पी.एस. तथा आई.ए.एस. जैसी बड़ी-बड़ी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए भी वाचन की आवश्यकता होती है। पुस्तकों में क्या नहीं है? इसमें जो जितने गोते लगाता है, उसे उतना ही ज्ञान प्राप्त होता है।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 83 – 84)

तिवारी जी : नागर जी, आप अपने .....

समझने का मौका मिला।

शब्दार्थ

आजानुबाहु – जिस व्यक्ति के हाथ घुटने तक पहुँचते हों। **आदर्श** – नमूना, अनुकरणीय वस्तु। **घुट्टी** – नवजात शिशु को पिलाई जाने वाली एक पाचक-रेचक दवा। **जन्मांध** – जन्म से अंधा व्यक्ति। **माध्यम** – जरिया। **सार्थकता** – उपयोगिता, महत्ता। **परख** – जाँच। **प्रतिक्रिया** – किसी कार्य के परिणाम-स्वरूप उसके विरुद्ध होने वाली क्रिया। **मनोविज्ञान** – मन की चित्तवृत्तियों का विवेचन करने वाला विज्ञान।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) संजाल पूर्ण कीजिए :**

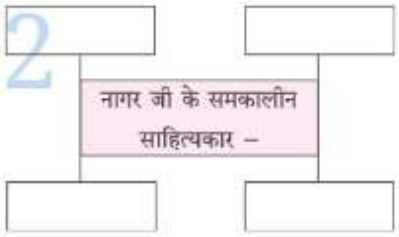

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i)

(ii)

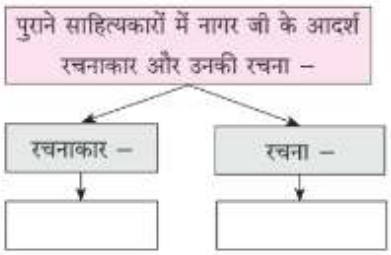

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

लेखक के बाबा जी का शाम का नित्यकर्म –

[ ] [ ]

उत्तर

(1)

नागर जी के समकालीन साहित्यकार –

- जगन्नाथदास रत्नाकर
- शरतचंद्र
- प्रेमचंद
- माधव शुक्ल

(2) (i)

माधव शुक्ल की विशेषता –

- आजानुबाहु
- कुरते की जेब में जलियाँवाला बाग की खूनसनी मिट्टी हमेशा रखना

*(ii) प्राचीन साहित्यकारों में नागर जी के आदर्श रचनाकार और उनकी रचना –

- रचनाकार – तुलसीदास
- रचना – रामचरितमानस

(3)

लेखक के बाबा जी का शाम का नित्यकर्म –

- नागर जी से रामचरित मानस पढ़वाकर सुनना
- नागर जी को जबरदस्ती श्लोक याद करवाना

कृति 2 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) नागर जी ने अपनी इस कृति में सूरदास के चमत्कारों का वर्णन किया है – [ ]

(ii) नेत्रहीनों के चमत्कार के बारे में नागर जी की धारणा – [ ]

(iii) नागर जी सात साल तक प्रतिवर्ष जिस लेखक से एक शहर में मिलते रहे वे – [ ]

*(iv) नागर जी के प्रिय आलोचक – [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) नागर जी के भ्रमण का दायरा –

[ ] [ ]

(ii) नागर जी को देशभर में भ्रमण करने से हुए लाभ –

[ ] [ ]

(3) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(i) तुलसीदास को तो .....।

(ii) सूरपंचशती के अवसर पर काफी विवाद चला था कि .....।

उत्तर

(1) (i) नागर जी ने अपनी इस कृति में सूरदास के चमत्कारों का वर्णन किया है – खंजन नयन

(ii) नेत्रहीनों के चमत्कार के बारे में नागर जी की धारणा – नेत्रहीनों की भविष्य-वाणियाँ कभी-कभी सच होती हैं

(iii) नागर जी सात साल तक प्रतिवर्ष जिस लेखक से एक शहर में मिलते रहे वे – शरतचंद्र

(iv) नागर जी के प्रिय आलोचक – पाठकीय प्रतिक्रियाएँ देने वाले पत्र लेखक

(2) (i)

नागर जी के भ्रमण का दायरा –

- पेशावर से कन्याकुमारी
- बंगाल से कश्मीर

(ii)

नागर जी को देशभर में भ्रमण करने से हुए लाभ –

- अनेक चरित्र (कैरेक्टर) देखने को मिले
- विभिन्न चरित्रों के मनोविज्ञान को समझने का मौका मिला

(3) (i) तुलसीदास को तो मुझे घुट्टी में पिलाया गया है।

(ii) सूरपंचशती के अवसर पर काफी विवाद चला था कि सूर जन्मांध थे या नहीं।

6414132

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) नयन = ... (ii) पुराना = ...

(iii) सच = ... (iv) मौका = ...

(2) निम्नलिखित कृदंत शब्दों के मूल शब्द लिखिए :

*(i) खिंचाव – ..... *(ii) लिखावट – .....

(iii) लगाव – ..... (iv) मिलावट – .....

उत्तर

(1) (i) नयन = नेत्र (ii) पुराना = प्राचीन

(iii) सच = सत्य (iv) मौका = अवसर।

(2) (i) खिंचाव – खिंच + आव (ii) लिखावट – लिख + आवट

(iii) लगाव – लग + आव (iv) मिलावट – मिल + आवट।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'आँख देखने का माध्यम है, देखने वाला मन है' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : प्रत्येक प्राणी की दो आँखें होती हैं, जिनके द्वारा वह इस पृथ्वी की समस्त चीजें देखने में समर्थ होता है। मनोरंजक दृश्य देखकर वह प्रसन्न होता है और दुखद दृश्य देखकर दुखी और बेचैन होता है। यह आँखों से दिखाई देने वाले प्रत्यक्ष दृश्यों पर मनुष्य की प्रतिक्रिया होती है। पर मनुष्य की एक दृष्टि और होती है – उसके मन की यानी उसकी कल्पना की। वह प्रत्यक्ष दृष्टि से भी तेज होती है। जब वह किसी घटित – अघटित दृश्य की कल्पना करता है तो वह दृश्य उसकी कल्पना में उसके सामने दिखाई देने लगता है। किसी व्यक्ति की इच्छित घटित अथवा अघटित घटना फिल्म की रील की तरह उसे दिखाई देती है। यह दृश्य उसकी आँखें नहीं देखती हैं। यह दृश्य देखता है उसका मन। मनुष्य को सपने में दिखाई देने वाले दृश्य भी उसकी आँखें नहीं, उसका मन देखता है। इस प्रकार मनुष्य को क्या देखना है और क्या नहीं, इसका आदेश मनुष्य का मन ही उसे देता है। हाँ, देखने-देखने में अंतर अवश्य है। प्रत्यक्ष दृश्य वास्तविक आँखें देखती हैं, जब कि मन के काल्पनिक दृश्य मन की आँखें देखती हैं।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 84 – 85)

तिवारी जी : अपने समय के .....

मन प्राण से ही सघता है।

शब्दार्थ

संकलन – संग्रह। **व्यवस्थित** – विधिपूर्वक रखा हुआ। **फील्ड वर्क** – क्षेत्र कार्य। **गति** – चाल, रफ्तार। **निर्मल** – शुद्ध, स्वच्छ। **खींचना** – (यहाँ अर्थ) विस्तार करना।

कृति 1 : (आकलन)

(1) उत्तर लिखिए :

*(i) नागर जी के समय के लेखकों में उनकी पसंद के लेखक –

(ii) नागर जी को इस पुस्तक को फिर से पढ़ने की उत्कंठा है –

*(iii) अपनी इस रचना के लिए नागर जी को बहुत लोगों से मिलना पड़ा –

(iv) नागर जी के पास संग्रह है इनका –

***(2) आकृति पूर्ण कीजिए :**

नागर जी के प्रिय विदेशी लेखक –

[ ] [ ]

(3) संजाल पूर्ण कीजिए :

पाठ में साक्षात्कार ले रहे हैं –

ये → [ ]

इनका → [ ]

उत्तर

(1) (i) नागर जी के समय के लेखकों में उनकी पसंद के लेखक – रामविलास शर्मा।

(ii) नागर जी को इस पुस्तक को फिर से पढ़ने की उत्कंठा है – प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का संग्रह 'देशी और विलायती'।

(iii) अपनी इस रचना के लिए नागर जी को बहुत लोगों से मिलना पड़ा – 'गदर के फूल'।

(iv) नागर जी के पास संग्रह है इनका – पत्रों और प्रत्येक जाति के रीति-रिवाजों का।

(2)

नागर जी के प्रिय विदेशी लेखक –

टॉल्स्टॉय | चेखव

641132

(3) पाठ में साक्षात्कार ले रहे हैं –

- ये → विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
- इनका → अमृतलाल नागर का

कृति 2 : (आकलन)

*(1) लिखिए :

कार्य –

- आलोचक – → _____
- रचनाकार – → _____

(2) 'नाच्यो बहुत गोपाल' उपन्यास के लिए किया गया फील्ड वर्क –

- _____
- _____

(3) नागर जी के अनुसार अंतर –

- मन में – → _____
- प्राण में – → _____

उत्तर

(1) कार्य –

- आलोचक – → समीक्षा करना
- रचनाकार – → रचना करना

(2) 'नाच्यो बहुत गोपाल' उपन्यास के लिए किया गया फील्ड वर्क –

- सफाई कर्मियों की बस्तियों में जाना पड़ा
- सफाई कर्मियों के रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा

(3) नागर जी के अनुसार अंतर –

- मन में – → मन की गति आगे तक है
- प्राण में – → प्राण को वहाँ तक खींचना पड़ता है

कृति 3 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए :

(i) बूढ़े – ..... (ii) कहानियों – .....

(iii) जाति – ..... (iv) रचनाएँ – .....

(2) उचित उपसर्ग चुनकर सार्थक शब्द बनाकर लिखिए :

(अव, दुर्, अप, दुर्)

(i) ..... गुण (ii) ..... बल

(iii) ..... मन (iv) ..... भाग्य

उत्तर

(1) (i) बूढ़े – बूढ़ा (ii) कहानियों – कहानी

(iii) जाति – जातियाँ (iv) रचनाएँ – रचना।

(2) (i) गुण – अवगुण (ii) बल – दुर्बल

(iii) मान – अपमान (iv) भाग्य – दुर्भाग्य।

कृति 4 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'लेखन में वास्तविकता लाने के लिए विषय की तह में जाना आवश्यक है' इसके बारे में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : किसी विषय पर लिखने के लिए उस विषय की पूर्ण जानकारी होना जरूरी होता है। लिखने वाले का विषय के बारे में जितना अच्छा गृहकार्य होगा, लेखन उतना ही अच्छा होगा। उदाहरण के लिए समाज के किसी वर्ग के बारे में कुछ लिखना है, तो सबसे पहले उसके बारे में पूरी जानकारी एकत्र करनी चाहिए। उसके रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा मान्यताओं का नजदीकी परिचय प्राप्त करना चाहिए। पूरी जानकारी हो जाने पर ही लिखने की शुरुआत करनी चाहिए। लेखक के पास जितनी अच्छी जानकारी होगी, उतनी ही अच्छी उसकी रचना तैयार होगी। अच्छे लेखक पूरी जानकारी प्राप्त किए बिना किसी कृति की रचना नहीं करते। ऐसे लेखकों की रचनाएँ ही पाठक को बाँधे रखती हैं। उनमें पाठक को वास्तविकता के दर्शन होते हैं।

6414132

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति

* • **कोष्ठक में दी गई नागर जी की साहित्य कृतियों का वर्गीकरण कीजिए :**

(कब लौं कहौं लाठी खाय, खंजन नयन, अपशकुन, नाच्यो बहुत गोपाल, महाकाल, प्रायश्चित, गदर के फूल)

कहानी	उपन्यास	कविता	अन्य
• अपशकुन	• नाच्यो बहुत गोपाल	• कब लौं कहौं लाठी खाय	• गदर के फूल
• प्रायश्चित	• महाकाल		
	• खंजन नयन		

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. शब्द भेद :

• **अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) उस समय नागर जी के सामने प्रेमचंद का साहित्य था।

(ii) मेरा छोटा भाई भी मेडिकल कालेज में दाखिल था।

उत्तर : (i) **प्रेमचंद** – व्यक्तिवाचक संज्ञा।

(ii) **छोटा** – गुणवाचक विशेषण।

2. अव्यय :

• **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) भी (ii) बहुत।

उत्तर : (i) नागर जी ने पत्रों का भी बहुत संकलन किया है।

(ii) चंडीप्रसाद की लेखन शैली ने नागर जी की लेखन शैली को बहुत प्रभावित किया।

3. संधि :

• **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	नदी + ईश	----------

अथवा

----------	सत् + मार्ग	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
नदीश	नदी + ईश	**स्वर संधि**

अथवा

सन्मार्ग	सत् + मार्ग	**व्यंजन संधि**

4. सहायक क्रिया :

• **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए :**

(i) 'देशी और विलायती' संग्रह अगर मिले तो फिर पढ़ना चाहूँगा।

(ii) तुम लोग यह मनाओ कि जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) चाहूँगा	चाहना
(ii) रहूँ	रहना

5. प्रेरणार्थक क्रिया :

• **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) चमकना (ii) लिखना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) चमकना	चमकाना	चमकवाना
(ii) लिखना	लिखाना	लिखवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) फूला न समाना (ii) तिलिस्म टूटना।

उत्तर :

(i) फूला न समाना। **अर्थ** – अत्यधिक प्रसन्न होना

वाक्य : परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होने पर अशोक फूला न समाया।

(ii) तिलिस्म टूटना। **अर्थ :** करामात का भेद खुल जाना

वाक्य : ढोंगी साधु की सच्चाई प्रकट होते ही उसका तिलिस्म टूट गया।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(एकटक देखना, दम भरना, गले मिलना)

(i) दर्शनार्थी मंदिर में देवी जी की मूर्ति को लगातार देख रहे थे।

(ii) किसी काम को करने का दावा करना और उसे कर दिखाना, दोनों में बड़ा अंतर है।

6414132

उत्तर : (i) दर्शनार्थी मंदिर में देवी जी की मूर्ति को एकटक देख रहे थे।

(ii) किसी काम को करने का दम भरना और उसे कर दिखाना, दोनों में बड़ा अंतर है।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) नेत्रहीनों के चमत्कार हमने बहुत देखे हैं।

(ii) लिखने से पहले नागर जी ने पढ़ना शुरू किया था।

उत्तर : (i) **नेत्रहीनों के** – संबंध कारक।

(ii) **नागर जी ने** – कर्ता कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) नहीं कोई आदर्श नहीं

(ii) यहाँ कश्मीरी लोगों को छोड़कर कोई आता जाता नहीं था

उत्तर : (i) नहीं, कोई आदर्श नहीं।

(ii) यहाँ कश्मीरी लोगों को छोड़कर कोई आता-जाता नहीं था।

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन लिखिए :**

(i) नागर जी, आपने भ्रमण तो काफी किया है। *(पूर्ण भूतकाल)*

(ii) मेरे पास बहुत पत्र आते हैं। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

उत्तर : (i) नागर जी, आपने भ्रमण तो काफी किया था।

(ii) मेरे पास बहुत पत्र आ रहे हैं।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

(i) लिखने के पहले मैंने पढ़ना शुरू किया था।

(ii) पत्रों का संग्रह बहुत है, लेकिन यह व्यवस्थित नहीं है।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i) नागर जी के पिता जी सरकारी कर्मचारी थे।

(निषेधवाचक वाक्य)

(ii) नागर जी ने नेहरू जी की माता जी के पास रोज जाते थे।

(प्रश्नवाचक वाक्य)

उत्तर : (i) नागर जी के पिता जी सरकारी कर्मचारी नहीं थे।

(ii) क्या नागर जी नेहरू जी की माता जी के पास रोज जाते थे?

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(i) नेत्रहीनों के भविष्यवाणियाँ कभी-कभी सच होते हैं।

(ii) आपने कभी आपके लिखने की सार्थकता की परख किया है।

उत्तर : (i) नेत्रहीनों की भविष्यवाणियाँ कभी-कभी सच होती हैं।

(ii) आपने कभी अपने लिखने की सार्थकता की परख की है।

भाषा बिंदु :

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 87 देखें।)

(1) निम्न वाक्यों में आई हुई मुख्य और सहायक क्रियाओं को रेखांकित करके दी हुई तालिका में लिखिए :

अ. क्र.	वाक्य	मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया
1.	उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा।	करना-करना	पड़ा-पड़ना
2.	माता-पिता का यह रंग देखकर तो वे बूढ़ी काकी को और सताने लगे।	सताने-सताना	लगे-लगना
3.	उसकी ननद रूठ गई।	रूठ-रूठना	गई-जाना
4.	वे हड़बड़ा उठे।	हड़बड़ा-हड़बड़ाना	उठे-उठना
5.	वे पुस्तक पकड़े न रख सके।	रख-रखना	सके-सकना
6.	उन्होंने पुस्तक लौटा दी।	लौटा-लौटाना	दी-देना
7.	समुद्र स्याह और भयावह दीखने लगा।	दीखने-दीखना	लगा-लगना
8.	मैं गोवा को पूरी तरह नहीं समझ पाया।	समझ-समझना	पाया-पाना
9.	काकी घटनास्थल पर आ पहुँची।	आ-आना	पहुँची-पहुँचना
10.	अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए।	चले-चलना	गए-जाना

6414132

(2) पाठों में प्रयुक्त सहायक क्रियाओंवाले दस वाक्य ढूँढ़कर मुख्य और सहायक क्रियाएँ चुनकर लिखिए :

अ. क्र.	वाक्य	मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया
1.	प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का संग्रह 'देशी और विलायती' अगर मिल जाए तो फिर पढ़ना चाहूँगा।	पढ़ना	चाहूँगा
2.	उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा।	करना	पड़ा
3.	मुझे हर सप्ताह एक पत्र मिलना ही चाहिए।	मिलना	चाहिए
4.	बहन यदि हाँ कहे तो अभी से आगे का विचार करने लगूँगा।	करने	लगूँगा
5.	आश्रम में सादगी का आग्रह होना चाहिए।	होना	चाहिए
6.	उन्होंने कोई तर्क नहीं किया न कुछ जाहिर होने दिया।	होने	दिया
7.	ड्राइवर से कहिए, इंपाला लेकर रेजिडेंस की तरफ आ जाएँ।	आ	जाएँ
8.	उसके लिए हमारे दिल में प्रीति होनी चाहिए।	होनी	चाहिए
9.	चार घंटों के शरीर श्रम से इतना मिल जाए कि उसका निर्वाह चल सके।	चल	सके
10.	सोचा इस लिजलिजे और घुटनभरे मौसम से राहत पाने के लिए कुछ दिन पहाड़ों पर बिता आएँ।	बिता	आएँ

(3) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए तथा संबंधित कारक और कारक चिह्न तालिका में वाक्य के सामने लिखिए :

अ. क्र.	वाक्य	कारक	कारक चिह्न
1.	चाची अपने कमरे से निकल रही थी।	अपादान कारक	से
2.	मैं बंडल को खोलकर देखने लगा।	कर्म कारक	को
3.	आवाज ने मेरा ध्यान बँटाया।	कर्ता कारक	ने
4.	हमारे शहर में एक कवि हैं।	अधिकरण कारक	में
5.	कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं।	संबंध कारक	की
6.	मानू रेल से ससुराल चली गई।	करण कारक	से
7.	उन्हें पुस्तक ले आने के लिए कहा।	संप्रदान कारक	के लिए
8.	पर्यटन से बहुत ही आनंद मिला।	करण कारक	से
9.	शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है।	संप्रदान कारक	के लिए
10.	बस से गोवा घूमने की योजना बनाई।	करण कारक	से
11.	बुद्धिराम स्वभाव के सज्जन थे।	संबंध कारक	के
12.	रूपा घटनास्थल पर आ पहुँची।	अधिकरण कारक	पर
13.	अरे यह बुढ़िया कौन है	संबोधन कारक	अरे

(4) पाठ में प्रयुक्त विभिन्न कारकों का एक-एक वाक्य छाँटकर उनसे कारक और कारक चिह्न चुनकर लिखिए :

अ. क्र.	वाक्य	कारक	कारक चिह्न
1.	पिता जी ने मुझे डाँटा और रोका।	कर्ता कारक	ने
2.	मैंने, शरतचंद्र को बाद में पढ़ा।	कर्म कारक	को
3.	मेरे उपन्यासों के बारे में पाठकों के पत्रों से पाठकीय प्रतिक्रियाओं का पता चलता है।	करण कारक	से
4.	मुझे 'गदर के फूल' के लिए बहुत लोगों से मिलना पड़ा।	संप्रदान कारक	के लिए
5.	प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा।	अपादान कारक	से
6.	पत्नी की मृत्यु के बाद एक टूटन आ गई थी।	संबंध कारक	की
7.	पिता जी ने आंदोलनों में भाग लेने से रोका।	अधिकरण कारक	में
8.	ओह! तो यह बात है!	संबोधन कारक	ओह!

6414132

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 83**
  किसी बुजुर्ग से स्वतंत्रतापूर्व भारत की विस्तृत जानकारी सुनिए और मित्रों को सुनाइए।
- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 84**
  प्रसिद्ध व्यक्तियों के भाषण पढ़िए और चर्चा कीजिए।
- **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 84**
  किसी खिलाड़ी का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नों की सूची बनाइए।

उत्तर : 1. आपको इस खेल में रुचि कैसे हुई? 2. आपने इसे सीखने के लिए क्या-क्या किया? 3. क्या आपने इसके लिए विशेष प्रशिक्षण लिया? किससे? इससे आपको क्या लाभ हुआ? 4. क्या आपने किसी प्रतियोगिता में भाग लिया है? 5. क्या कभी कोई पुरस्कार, प्रशंसा मिला/मिली है? 6. आपका लक्ष्य क्या है? 7. आप अपना आदर्श किसे मानते हैं? 8. आगे चलकर आपकी क्या योजनाएँ है? 9. क्या आप अपने इस प्रयास से संतुष्ट हैं? 10. आप इस खेल से जुड़े खिलाड़ियों को क्या संदेश देना चाहते हैं?

- **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 85**
  'आज के समय में पत्र लेखन की सार्थकता' पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

6414132

उपयोजित लेखन

(1) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर इस पर आधारित ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :
(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 88)

विख्यात गणितज्ञ सी.वी.रमण ने छात्रावस्था में ही विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश में ही नहीं, विदेशों में भी जमा लिया था।

रमण का एक साथी छात्र ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कर रहा था। उसे कुछ कठिनाइयाँ प्रतीत हुईं, संदेह हुए। वह अपने अध्यापक जोन्स साहब के पास गया परंतु वह भी उसका संदेह निवारण न कर सके। रमण को पता चला तो उन्होंने उस समस्या का अध्ययन-मनन किया और इस संबंध में उस समय के प्रसिद्ध लॉर्ड रेले के निबंध पढ़े और उस समस्या का एक नया ही हल खोज निकाला। यह हल पहले हल से सरल और अच्छा था। लॉर्ड रेले को इस बात का पता चला, तो उन्होंने रमण की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अध्यापक जोन्स भी प्रसन्न हुए और उन्होंने रमण से इस प्रयोग के संबंध में लेख लिखने को कहा। रमण ने लेख लिखकर श्री जोन्स को दिया, पर जोन्स उसे जल्दी लौटा न सके। कारण संभवतः यह था कि वह उसे पूरी तरह आत्मसात न कर सके।

प्रश्न : 1. विज्ञान के क्षेत्र में देश में ही नहीं, विदेशों में भी बचपन में अपना सिक्का किसने जमा लिया था?
2. रमण का साथी किसके संबंध में प्रयोग कर रहा था?
3. रमण ने समस्या के संबंध में किसका निबंध पढ़ा?
4. रमण की प्रतिभा की प्रशंसा किसने की?

(2) 'अंतरजाल' से 'मेक इन इंडिया' योजना संबंधी जानकारी प्राप्त करके इसे बढ़ावा देने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए :

उत्तर :

निर्माण क्षेत्र का दिग्गज बनने की राह में भारत
उद्यमशीलता की वृद्धि का मार्ग –

मेक इन इंडिया

के द्वारा

★ कुल 25 क्षेत्रों की पहचान
★ अतीत का घिसा-पिटा और बाधक ढाँचा समाप्त
★ भारत के मूल्यवान क्षेत्र
★ वैश्विक साझेदारी के लिए खुले।
★ उद्योग लगाने वालों को अनेक सुविधाएँ।
★ उद्योग-धंधों के अनुकूल क्षेत्र एवं राज्यों के चुनाव की सुविधा।
★ देश में रोजगार के विपुल अवसर प्रदान करने के साथ-साथ

अनेक लाभ

दुनिया भारत के साथ साझेदारी के लिए इच्छुक

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

10 बूढ़ी काकी (पूरक पठन – गद्य)

– प्रेमचंद

विषय-प्रवेश : 'बूढ़ी काकी' कथा उन दयनीय व्यक्तियों की व्यथा है, जिन्हें परिस्थितिवश मजबूरी में अपनी पूरी संपत्ति किसी अन्य व्यक्ति को सौंपनी पड़ती है और खुद उसकी दया पर जीना पड़ता है। बूढ़ी काकी अपने पति और जवान बेटों की मृत्यु के पश्चात अपने एकमात्र भतीजे बुद्धिराम के वादों पर विश्वास करके अपनी सारी संपत्ति उसके नाम लिख देती हैं। लेकिन थोड़े दिनों के बाद ही ऐसी स्थिति हो जाती है कि उसे पेट भर भोजन मिलना भी मुश्किल हो जाता है। एक बार तो बूढ़ी काकी के जीवन में ऐसी घटना घटती है, जिसके बारे में जानकर दिल दहल उठता है। बुद्धिराम के बेटे के तिलक समारोह में सभी मेहमान और घर के सभी लोग भोजन कर सोने चले जाते हैं, पर बूढ़ी काकी को खाने के लिए कोई नहीं पूछता। भूख से व्याकुल बूढ़ी काकी रात के अँधेरे में कूड़े में फेंकी गई पत्तलों पर छूटे जूठन को बीन-बीनकर खाकर अपना पेट भरती हैं। बुद्धिराम की पत्नी रूपा यह दृश्य देखती है, तो उसकी रूह काँप उठती है और वह इस अधर्म के लिए ईश्वर से क्षमा करने की प्रार्थना करती है और बूढ़ी काकी को परोसकर भरपेट भोजन कराती है और उससे अपनी भूल के लिए बुरा न मानने के लिए कहती है।

मुहावरे – अर्थ

(1) **सब्जबाग दिखाना** – बड़े-बड़े झूठे वादे करना।
(2) **गला फाड़ना** – शोर करना, चिल्लाना।
(3) **लाले पड़ना** – किसी चीज के लिए तरसना।
(4) **उबल पड़ना** – क्रोधित होना।
(5) **पानी उतर जाना** – बेइज्जत होना।
(6) **होंठ चाटना** – कोई स्वादिष्ट पदार्थ अधिक खाने की इच्छा रखना।
(7) **कलेजे में हूक सी उठना** – मन में दुख होना।
(8) **कलेजा पसीजना** – दया आना।
(9) **हृदय सन्न रह जाना** – घोर आश्चर्य में डूब जाना।
(10) **छाती पर सवार होना** – सामने अड़े रहना।
(11) **दम घुटना** – हवा की कमी के कारण या गर्मी की अधिकता से साँस रुकना।

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 3 (अ) के लिए

गद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 89)

बुढ़ापा बहुधा बचपन ..... काकी चीख मारकर रोतीं।

शब्दार्थ

पुनरागमन – वापस आना। **चेष्टा** – कोशिश। **परिमाण** – मात्रा। **सिसकना** – सिसकी मारकर रोना। **स्वर्ग सिधारना** – मर जाना। **कालांतर** – दूसरा समय, अन्य काल (यहाँ) बहुत समय बीत चुकना। **तरुण** – जवान। **सब्जबाग** – झूठे वादे, झूठे सपने। **अर्धांगिनी** – पत्नी। **तीव्र** – तेज, तीक्ष्ण, असह्य। **भलमनसाहत** – सज्जनता, शराफत। **अत्याचार** – अनुचित आचरण, दुराचार। **भला मानुस** – भला आदमी। **विद्वेष** – शत्रुता, वैर।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) बूढ़ी काकी तब रोने लगती थीं –
- [ ]
- [ ]
- जब घरवाले उनकी इच्छा के विरुद्ध बात करते

(ii) बूढ़ी काकी को लड़के इस तरह सताते थे –
- [ ]
- [ ]

(iii) ऐसा था इन दोनों का स्वभाव –
- बुद्धिराम का – [ ]
- रूपा का – [ ]

(iv) बूढ़ी काकी में बची हुई थीं केवल दो बातें –

*(2) **कारण लिखिए :**

बूढ़ी काकी ने भतीजे के नाम सारी संपत्ति लिख दी –

(3) उत्तर लिखिए :

(i) बूढ़ी काकी का शारीरिक स्वास्थ्य –

(ii) बूढ़ी काकी के परिवार में अब बचा एकमात्र सदस्य –

(iii) बुद्धिराम ने इस तरह लिखाई बूढ़ी काकी की संपत्ति –

(iv) बूढ़ी काकी के रोने का ढंग –

(4) आकृति में दिए गए रिक्त स्थानों में उत्तर लिखकर आकृति पूर्ण कीजिए :

गद्यांश में आए रिश्ते–

उत्तर

6414132

(1) (i) बूढ़ी काकी तब रोने लगती थीं –

- जब भोजन का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता
- जब बाजार से आई कोई वस्तु उन्हें न मिलती
- जब घरवाले उनकी इच्छा के विरुद्ध बात करते

(ii) बूढ़ी काकी को लड़के इस तरह सताते थे –

- कोई उन्हें चुटकी काटकर भागता था
- कोई उन पर पानी की कुल्ली कर देता था

(iii) ऐसा था इन दोनों का स्वभाव –

- बुद्धिराम का – देखने में सज्जन, पर तभी तक, जब तक कोष पर आँच न आए।
- रूपा का – तीव्र स्वभाव, पर ईश्वर से डरती थी।

(iv) बूढ़ी काकी में बची हुई थीं केवल दो बातें –

- जिह्वा-स्वाद
- अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने के लिए सिर्फ रोना

(2) बूढ़ी काकी के परिवार में अब एक भतीजे के सिवाय और कोई नहीं था, इसलिए उन्होंने भतीजे के नाम सारी संपत्ति लिख दी।

(3) (i) बूढ़ी काकी के नेत्र, हाथ, पैर आदि सभी अंग जवाब दे चुके थे।

(ii) उनका भतीजा बुद्धिराम।

(iii) खूब लंबे-चौड़े वादे करके।

(iv) बूढ़ी काकी गला-फाड़कर रोती थीं।

(4) गद्यांश में आए रिश्ते–

- पति
- बेटा
- भतीजा
- काकी/अर्धांगिनी

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• 'बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर : कहते हैं, बुढ़ापा बचपन का ही एक रूप है। वृद्धावस्था में मनुष्य की हरकतें बच्चों जैसी हो जाती हैं। इस अवस्था में मनुष्य के अंग-प्रत्यंग कमजोर हो जाते हैं और उन्हें बच्चों की तरह दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। दिमाग कमजोर हो जाता है। दाँत गिर जाते हैं और मनुष्य का मुँह बच्चों की तरह पोपला हो जाता है। इतना ही नहीं, बच्चों की तरह ही वृद्धों को भी मान-अपमान की परवाह नहीं होती। जिस तरह लोग बच्चों की बातों पर ध्यान नहीं देते, उसी तरह वृद्धों की बातों पर भी कोई ध्यान नहीं देता। उनकी इच्छा-अनिच्छा का भी कोई महत्त्व नहीं होता। इस तरह वृद्धावस्था और बचपन की अधिकांश बातों में समानता होती है। इसलिए कहा जा सकता है कि बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।

गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 90)

रात का समय था ..... ठंडाई माँग रहे हैं।'

शब्दार्थ

विस्मय – आश्चर्य। **रसास्वादन** – किसी रस, आनंद या सुख का स्वाद लेना। **प्रतिकूल** – विरुद्ध। **उत्सव** – समारोह। **क्षुधावर्धक** – भूख बढ़ाने वाली। **हूक** – पीड़ा, कसक। **उद्‌विग्न** – चिंताग्रस्त, परेशान।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

(i)
- रात के समय बुद्‌धिराम के द्‌वार का दृश्य –
  - [ ]
  - [ ]
  - [ ]
  - [ ]

(ii)
- तिलक-उत्सव में इस प्रकार हो रही थी भोजन की व्यवस्था –
  - [ ]
  - [ ]
  - [ ]
  - [ ]

(iii)
- कार्य भार से रूपा की भाग-दौड़ –
  - [ ]
  - [ ]
  - [ ]
  - [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

- भोजन की सुगंध आने पर बूढ़ी काकी की प्रतिक्रिया –
  - [ ]
  - [ ]

(3) कारण लिखिए :

(i) अंग्रेजी पढ़े नवयुवक उदासीन थे –

(ii) उत्सव के दिन बूढ़ी काकी को अपनी स्थिति पर रोना आया, पर वे रो नहीं सकीं।

(4) उत्तर लिखिए :

मुखराम के तिलक-उत्सव की तैयारियाँ :

(i) .....

(ii) .....

उत्तर

(1) (i)

- रात के समय बुद्‌धिराम के द्‌वार का दृश्य –
  - शहनाई बज रही थी
  - गाँव के बच्चे गाने का रसास्वादन कर रहे थे
  - चारपाइयों पर मेहमान विश्राम कर रहे थे
  - दो-एक अंग्रेजी पढ़े नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे

(ii)

- तिलक-उत्सव में इस प्रकार हो रही थी भोजन की व्यवस्था –
  - भट्‌ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे
  - एक में पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं
  - दूसरे में अन्य पकवान पक रहे थे
  - एक बड़े हंडे में मसालेदार तरकारी पक रही थी

(iii)

- कार्य भार से रूपा की भाग-दौड़ –
  - कभी इस कोठे में जाना
  - कभी उस कोठे में जाना
  - कभी कड़ाह के पास आना
  - कभी भंडार में जाना

(2)

- भोजन की सुगंध आने पर बूढ़ी काकी की प्रतिक्रिया –
  - आह! कैसी सुगंध है। अब मुझे कौन पूछे?
  - जब रोटियों ही के लाले पड़े हैं तो ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपूर पूड़ियाँ मिलें।

(3) (i) अंग्रेजी पढ़े नवयुवक उदासीन थे, क्योंकि वे गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे।

(ii) उत्सव के दिन बूढ़ी काकी को अपनी स्थिति पर रोना आया, पर वे रो नहीं सकीं, क्योंकि उन्हें रूपा का डर था।

(4) मुखराम के तिलक-उत्सव की तैयारियाँ :

(i) पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं।

(ii) एक बड़े हंडे में मसालेदार तरकारी पक रही थी।

6414132

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : मनुष्य के जीवन की चार अवस्थाएँ होती हैं – बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था और बुढ़ापा। अपने जीवन में मनुष्य की तरह-तरह की कामनाएँ होती हैं और उनकी पूर्ति करने का वह भरसक प्रयास करता है। बचपन से लेकर युवावस्था तक मनुष्य को अपनी कामनाओं की जल्द से जल्द पूरी होने की उतनी चिंता नहीं रहती, जितनी बुढ़ापे में। वृद्धावस्था में मनुष्य के जीवन के गिने-चुने वर्ष ही बचे होते हैं। इसलिए उसका प्रयास यह होता है कि अपने बचे-खुचे दिनों में वह अपनी सारी कामनाएँ पूरी कर ले। ऐसे में उसे किसी भी तरह अपने उद्देश्य को पूरा कर लेना उचित जान पड़ता है। उसके लिए उसे बुरे-भले, मान-अपमान की परवाह नहीं होती। उसका लक्ष्य येन-केन प्रकारेण अपनी इच्छा पूरी करना होता है। इस प्रकार बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है।

गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

8414132

गद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 90 – 91)

इस अवस्था में उसने ..... मजेदार मालूम होंगी।

शब्दार्थ

जलना – कुढ़ना, संतप्त होना। **भस्म होना** – जल जाना। **भला** – कुशल। **पश्चात्ताप** – पछतावा। **प्रतीक्षा** – इंतजार। **मनसूबा** – इरादा, योजना।

कृति 1 : (आकलन)

***(1) कृति पूर्ण कीजिए :**

[ ] [ ]

बूढ़ी काकी को ललचाने वाले व्यंजन –

[ ] [ ]

(2) उत्तर लिखिए :

(i) बूढ़ी काकी को रूपा की चार झिड़कियाँ–
- (i) .....
- (ii) .....
- (iii) .....
- (iv) .....

(ii) बूढ़ी काकी का पश्चात्ताप–
- (i) .....
- (ii) .....
- (iii) .....
- (iv) .....

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

रूपा के बारे में बूढ़ी काकी के मन में आए विचार –

[ ] [ ]

उत्तर

(1)

पूड़ियाँ | मसालेदार तरकारी

बूढ़ी काकी को ललचाने वाले व्यंजन –

कचौड़ियाँ | रायता

(2) (i) बूढ़ी काकी को रूपा की चार झिड़कियाँ–
- (i) ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़?
- (ii) अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका?
- (iii) भला चाहती हो, तो जाकर कोठरी में बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे, तो तुम्हें भी मिलेगा।
- (iv) तुम कोई देवी नहीं हो कि किसी के मुँह में पानी न जाए, परंतु तुम्हारी पूजा पहले हो जाए।

(ii) बूढ़ी काकी का पश्चात्ताप –

- (i) सच ही तो है, जब तक मेहमान लोग भोजन कर न चुकेंगे, घरवाले कैसे खाएँगे।
- (ii) मुझसे इतनी देर भी न रहा गया।
- (iii) सबके सामने पानी उतर गया।
- (iv) अब जब तक कोई बुलाने न आएगा, नहीं जाऊँगी।

(3) रूपा के बारे में बूढ़ी काकी के मन में आए विचार –

- रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए।
- वह सोचती हो कि आप ही आएँगी, वह कोई मेहमान तो नहीं, जो उन्हें बुलाऊँ।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'लड़कों का बूढ़ों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : लड़कों और बूढ़ों के बीच पीढ़ियों का अंतर होता है। लड़कों और बूढ़ों में हर बात को लेकर अंतर होना स्वाभाविक है। अधिकांश बूढ़ों की आदत होती है कि वे हर बात को अपने ढंग से सोचते हैं। वे उसमें अपने जमाने की विचारधारा थोपने की कोशिश करते हैं। इसका कारण यह है कि किसी चीज के बारे में उनकी एक धारणा बनी होती हैं। हर बात को वे अपने पैमाने पर कसने की कोशिश करते हैं। जब कि नई पीढ़ी के लड़कों की सोच अलग ढंग की होती हैं। उन्हें पुराने दकियानूसी विचार पसंद नहीं आते। इसलिए बात-बात पर दोनों के विचारों में टकराव होता है। इस तरह लड़कों और बूढ़ों में स्वाभाविक विद्वेष होता है।

गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 4 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 91 – 92)

मेहमान मंडली अभी ..... मुझे खूब प्यार करेंगी।

शब्दार्थ

चटकारा – स्वादिष्ट वस्तु खाते समय जीभ को तालु से लगने से होने वाली आवाज। **संकोच** – लज्जा। **रेंगना** – धीरे-धीरे चलना। **तिलमिलाना** – बेचैन होना। **निर्दयी** – दयारहित, कठोर हृदयवाला। **भगोड़ा** – भागा हुआ, डरपोक। **कर्जदार** – जिसने कर्ज लिया हो। **टेंटुआ** – गला। **लपकना** – टूट पड़ना, झपटना। **निर्लज्जता** – बेशर्मी । **हतज्ञान** – बेसुध, संज्ञाहीन। **करुणा** – दया, अनुकंपा। **कुढ़ना** – भीतर ही भीतर जलना, चिढ़ना। **झुँझलाना** – खीजना, चिढ़ना। **पिटारी** – बाँस, मूंज आदि से बना डिब्बे की शक्ल का पात्र। **अधीर** – आकुल, उतावला।

कृति 1 : (आकलन)

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

भोजन करने बैठी मेहमान मंडली के हाव-भाव –

- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(2) उत्तर लिखिए :

(i) लेखक ने तुलना की है –

- बुद्धिराम की – ..... से
- बूढ़ी काकी की – ..... से

(ii) बूढ़ी काकी से लाड़ली के प्रेम के दो प्रमाण –

- [ ]
- [ ]

(3) कारण लिखिए :

*(i) बुद्धिराम ने काकी को अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया –

(ii) घरवालों ने भोजन किया, परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने नहीं पूछा –

*(iii) लाडली ने पूड़ियाँ छिपाकर रखीं –

(iv) रात के ग्यारह बज गए थे। लाड़ली की आँखों में नींद न थी –

उत्तर

(1) भोजन करने बैठी मेहमान मंडली के हाव-भाव –

- कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था
- कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं
- कोई इस चिंता में था कि पत्तल पर पूड़ियाँ छूटी जाती हैं
- कोई दही खाकर जीभ चटकारता था परंतु दूसरा दोना माँगते संकोच करता था

G41E132

(2) (i)

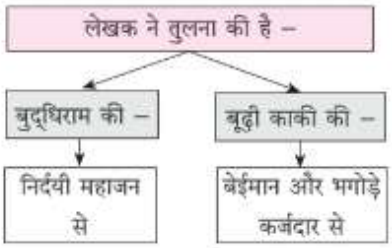

(ii)

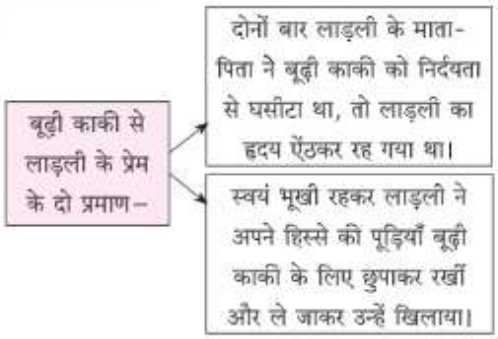

(3) (i) बूढ़ी काकी रेंगती हुई भोजन कर रहे मेहमान मंडली के बीच पहुँच गई थी। इससे कई लोग चौंककर उठ खड़े हुए थे। बुद्धिराम को इससे गुस्सा आया और उसने काकी को वहाँ से उठाकर कोठरी में ले जाकर धम से पटक दिया।

(ii) बुद्धिराम और रूपा दोनों ने ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर लिया था। इसलिए बूढ़ी काकी को किसी ने नहीं पूछा।

(iii) लाड़ली उन पूड़ियों को बूढ़ी काकी के पास ले जाना चाहती थी, ताकि वे उन्हें खा सके।

(iv) बूढ़ी काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी लाड़ली को सोने न देती थी।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

***• 'बुजुर्ग आदर-सम्मान के पात्र हैं, दया के नहीं' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि आज जो व्यक्ति बुजुर्ग है वह हमेशा बूढ़ा और असहाय नहीं था। वह भी पहले युवा था। उसने अपने परिवार का पालन-पोषण और उसकी देखरेख की थी। उसने तरह-तरह की समस्याओं का सामना किया था और उन्हें अपने तरीके से हल किया था। उसे जीवन जीने का अनुभव है। लेकिन वृद्ध हो जाने पर किसी-किसी परिवार में बुजुर्गों को किनारे कर दिया जाता है। उनकी सलाह या सुझाव को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। इस तरह के व्यवहार से बुजुर्गों को अपने सम्मान पर ठेस लगती महसूस होती है। किसी-किसी परिवार में तो बुजुर्गों के खाने-पीने की भी किसी को चिंता नहीं रहती। घर के लोग अपने में मगन रहते हैं और बुजुर्गों का कोई ख्याल नहीं रखता। बुजुर्गों को खाने-पीने के लिए उनका मुँह ताकना पड़ता है। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि हम इन बुजुर्गों की संतान हैं। उनको पर्याप्त सम्मान देना और उनकी हर प्रकार से देखरेख करना हमारा फर्ज है। बुजुर्गों की प्रसन्नता और उनके आशीर्वाद से ही परिवार फूलता-फलता और खुशहाल रहता है। इसलिए बुजुर्गों को हमें सदा आदर-सम्मान देना चाहिए और उनकी देखरेख करनी चाहिए।

गद्यांश क्र. 5

प्रश्न. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

गद्यांश क्र. 5 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 93 – 94)

ठीक उसी समय रूपा, ... आनंद लेने में निमग्न थी।

शब्दार्थ

ताकना – देखना। **जूठे** – खाकर छोड़ा हुआ। **सन्न** – भौचक्का। **बुजुर्ग** – वृद्ध। **टटोलना** – उँगलियों से छूकर पता लगाना। **शोकमय** – शोकपूर्ण। **ग्रास** – निवाला, कौर। **निकृष्ट** – नीच, हीन। **प्रतीत** – जान पड़ना। **आपत्ति** – संकट, मुसीबत। **सम्मुख** – सामने। **अधर्म** – जो धर्म के विरुद्ध हो। **गगन** – आकाश। **सत्यानाश** – सर्वनाश। **प्रत्यक्ष** – जो आँखों के सामने हो। **निर्दयी** – जिसमें दया न हो। **दुर्गति** – दुर्दशा। **चूक** – भूल, गलती। **बदौलत** – सहारे, द्वारा। **असहाय** – बेसहारा, जिसकी कोई सहायता करने वाला न हो। **अपराध** – दोष। **तिरस्कार** – अपमान, अनादर। **सदिच्छाएँ** – शुभ कामनाएँ।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i)

(ii)

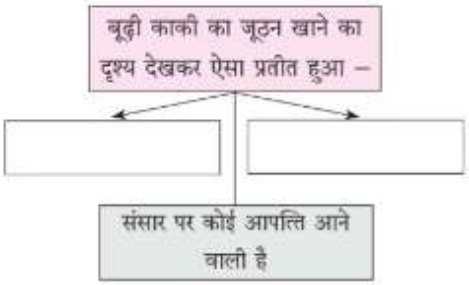

(iii)

रूपा की परमात्मा से क्षमायाचना –

- [ ]
- [ ]

मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो

(iv)

थाली में परोसकर बूढ़ी काकी को भोजन कराते समय रूपा ने बूढ़ी काकी से यह कहा –

- [ ]
- [ ]

परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दे।

(2) कारण लिखिए :

(i) रूपा का हृदय सन्न हो गया –

(ii) रूपा बैठी स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी –

(3) रिश्ता पहचानिए :

(i) बूढ़ी काकी, रूपा की लगती हैं –

(ii) रूपा, बूढ़ी काकी की लगती हैं –

6414132

उत्तर

(1) (i)

रूपा चौंककर जागी, तो उसने यह देखा –

- लाड़ली जूठे पत्तलों के पास खड़ी है
- बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं

(ii)

बूढ़ी काकी का जूठन खाने का दृश्य देखकर ऐसा प्रतीत हुआ –

- जैसे जमीन रुक गई है
- आसमान चक्कर खा रहा है

संसार पर कोई आपत्ति आने वाली है

(iii)

रूपा की परमात्मा से क्षमायाचना –

- परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो
- इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा

मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो

(iv)

थाली में परोसकर बूढ़ी काकी को भोजन कराते समय रूपा ने बूढ़ी काकी से यह कहा –

- काकी उठो, भोजन कर लो
- मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना

परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें

(2) (i) रूपा का हृदय सन्न हो गया, क्योंकि उसने देखा कि बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं।

(ii) रूपा बैठी स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी, क्योंकि बूढ़ी काकी भोले बच्चों की तरह सब कुछ भूलकर बैठी हुई खाना खा रही थीं और उनके एक-एक रोएँ से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं।

(3) (i) बूढ़ी काकी, रूपा की लगती हैं – चचेरी सास।

(ii) रूपा, बूढ़ी काकी की लगती है – बहू।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'शादी-ब्याह अथवा पारिवारिक समारोहों में प्रीतिभोज में अनाप-शनाप खर्च करना कितना उचित' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : हमारे देश में शादी-ब्याह तथा छोटे-मोटे पारिवारिक समारोहों में प्रीतिभोज में लोगों को खिलाने-पिलाने की पुरानी परंपरा चली आ रही है। समर्थ व्यक्तियों को इस तरह का खर्च करना ज्यादा नहीं अखरता, पर आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों के लिए इस तरह के खर्च का भार उठाना मुश्किल होता है। पर सामाजिक बंधनों तथा अपने नाम के लिए ऐसे समारोह आयोजित करना आज एक फैशन हो गया हैं। यह फैशन दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है। कुछ लोग तो अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कर्ज लेकर लोगों को बुलाकर खिलाते-पिलाते हैं। बाद में यह कर्ज चुकाना उनके लिए समस्या बन जाता है और उन्हें अपनी जायदाद तक बेचनी पड़ जाती है। लोगों को इस तरह के उत्सवों

में अनावश्यक रूप से पैसे उड़ाने से बाज आना चाहिए। इस तरह के उत्सवों-समारोहों में अनाप-शनाप खर्च करना अपने ऊपर एक तरह का आर्थिक बोझ लादना है, जिससे कोई लाभ नहीं होता।

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति

*(1)

स्वभाव के आधार पर पात्र का नाम	
1. क्रोधी	
2. लालची	
3. शरारती	
4. स्नेहिल	

उत्तर :

स्वभाव के आधार पर पात्र का नाम	
1. क्रोधी	रूपा
2. लालची	बुद्धिराम
3. शरारती	दोनों लड़के
4. स्नेहिल	लाड़ली

*(2) बुद्धिराम का काकी के प्रति दुर्व्यवहार दर्शाने वाली चार बातें –

(i) .....

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

उत्तर : (i) बूढ़ी काकी की संपत्ति अपने नाम लिखाते समय किए गए लंबे-चौड़े वादों को बुद्धिराम द्वारा न निभाना।

(ii) बूढ़ी काकी को भरपेट भोजन न देना।

(iii) भोजन कर रहे मेहमानों के बीच रेंगती हुई बूढ़ी काकी के पहुँच जाने पर बुद्धिराम द्वारा निर्दयतापूर्वक पकड़कर उनकी कोठरी में ले जाकर पटक देना।

(iv) बूढ़ी काकी के व्यवहार से रुष्ट होने के कारण तिलक-उत्सव में सभी मेहमानों और घरवालों के भोजन कर लेने के बाद भी बुद्धिराम द्वारा उन्हें खाने के लिए न पूछना।

*(3) सूचना के अनुसार शब्द में परिवर्तन कीजिए :

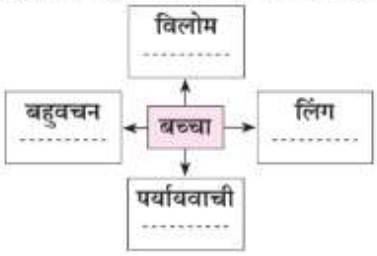

उत्तर :

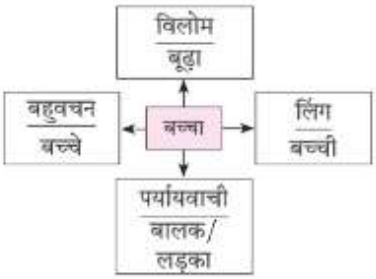

भाषा बिंदु :

(1) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

(प्रश्न के लिए पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 96 देखें।)

क्र.	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
1.	भूलना	भुलाना	भुलवाना
2.	पीसना	पिसाना	पिसवाना
3.	माँगना	मँगाना	मँगवाना
4.	तोड़ना	तुड़ाना	तुड़वाना
5.	बेचना	बेचाना	बेचवाना
6.	कहना	कहाना/कहलाना	कहवाना/कहलवाना
7.	नहाना	नहलाना	नहवाना/नहलवाना
8.	खेलना	खिलाना	खिलवाना
9.	खाना	खिलाना	खिलवाना
10.	फैलना	फैलाना	फैलवाना
11.	बैठना	बैठाना	बैठवाना
12.	लिखना	लिखाना	लिखवाना
13.	जुटना	जुटाना	जुटवाना
14.	दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना
15.	देखना	दिखाना	दिखवाना
16.	जीना	जिलाना	जिलवाना

(2) पठित पाठों से किन्हीं दस मूल क्रियाओं का चयन करके उनके प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप निम्न तालिका में लिखिए :

क्र.	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
1.	चलना	चलाना	चलवाना
2.	देना	दिलाना	दिलवाना
3.	मिलना	मिलाना	मिलवाना
4.	पीना	पिलाना	पिलवाना

6414132

5.	घुसना	घुसाना	घुसवाना
6.	बोलना	बुलाना	बुलवाना
7.	ढूँढ़ना	ढुँढ़ाना	ढुँढ़वाना
8.	रखना	रखाना	रखवाना
9.	लगना	लगाना	लगवाना
10.	करना	कराना	करवाना

उपक्रम/कृति/परियोजना

- **श्रवणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र.90**

  बड़ों से कोई ऐसी कहानी सुनिए जिसके आखिरी हिस्से में कठिन परिस्थितियों से जीतने का संदेश मिल रहा हो।

- **संभाषणीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 91**

  'वृद्धाश्रम' के बारे में जानकारी इकट्ठा करके चर्चा कीजिए।

- **लेखनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 92**

  'भारतीय कुटुंब व्यवस्था' पर भाषण के मुद्दे लिखिए।

उत्तर :

भारतीय कुटुंब व्यवस्था के मुद्दे :

1. कुटुंब किसे कहते हैं?
2. प्राचीन भारतीय कुटुंब।
3. आधुनिक कुटुंब।
4. कुटुंब व्यवस्था में बदलाव के कारण।
5. कुटुंब व्यवस्था के आधार।
6. कुटुंब बनने-टूटने के कारण।
7. कुटुंब की आवश्यकता।
8. संयुक्त कुटुंब एवं एकल कुटुंब से लाभ-हानि।
9. वसुधैव कुटुंबकम्।

- **पठनीय – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 93**

  'चलती-फिरती पाठशाला' उपक्रम के बारे में जानकारी इकट्ठी करके पढ़िए और सुनाइए।

उपयोजित लेखन

- **'मेरा प्रिय वैज्ञानिक' विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध-लेखन कीजिए।**

उत्तर : यों तो दुनिया में एक-से-एक बड़े वैज्ञानिक हैं, पर मेरे प्रिय वैज्ञानिक तो सर जगदीशचंद्र बोस ही हैं।

सर जगदीशचंद्र बोस की बात ही निराली है। उन्होंने यह सिद्ध करके बता दिया कि पेड़-पौधे भी हमारी तरह साँस लेते हैं और उन्हें पानी और भोजन की आवश्यकता होती है। उनमें भी जान होती है। यदि पेड़-पौधों को सताया या कष्ट दिया जाए, तो वे बीमार हो जाते हैं और उनकी प्रकृति के विरुद्ध उन्हें भोजन दिया जाए अथवा जहरीला रसायन दिया जाए, तो वे मर जाते हैं।

वैसे पेड़-पौधों के संपर्क में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मालूम होता है कि पेड़-पौधों को नुकसान पहुँचाने या विषैले पदार्थों के संपर्क में आने से वे क्षतिग्रस्त या मृत हो सकते हैं, पर इस बात को सिद्ध किया था सर जगदीशचंद्र बोस ने।

अपने शोध को सिद्ध करने के लिए उन्होंने खुद चुंबकीय क्रेश्कोग्राफ नामक यंत्र तैयार किया। उन्होंने इस यंत्र की सहायता से सब के सामने अपने प्रयोग से यह सिद्ध कर दिया कि पेड़-पौधों में जीवन होता है और प्राणियों की तरह उनमें भी विभिन्न क्रियाएँ होती हैं। इस प्रकार के सूक्ष्म रहस्य का उद्घाटन करने वाले वे पहले वैज्ञानिक थे। वे सच्चे अर्थों में एक महान वैज्ञानिक थे। ऐसे महान वैज्ञानिक पर हमें गर्व है।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

11 समता की ओर

– मुकुटधर पांडेय

विषय-प्रवेश : शिशिर ऋतु की ठंडक समूचे वातावरण को प्रभावित कर देती है। उसका प्रभाव प्रकृति, पृथ्वी, वनस्पतियों, जीव-जंतुओं, मनुष्यों तथा आकाश में स्थित चाँद-तारों पर भी पड़ता है।

यह ऋतु धनिक वर्ग जैसे सुविधा-संपन्न लोगों के लिए जहाँ आनंददायी होती है, वहीं दीन-दरिद्र जैसे सुविधा-विहीन लोगों के लिए कष्टदायी होती है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड से परेशान प्राणियों तथा साधन-संपन्न एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों के जीवनयापन का सजीव वर्णन किया है। अंत में कवि कहता है कि धनवान और निर्धन दोनों भाई-भाई हैं। इसलिए धनी वर्ग के लोगों को अपने दीन-दरिद्र भाइयों की भलाई के लिए प्रयास करना चाहिए।

कविता का सरल अर्थ

[1] बीत गया हेमंत ..... बार-बार रोते हैं।

कवि कहते हैं कि शिशिर ऋतु के भाई हेमंत का समय बीत गया है। अब शिशिर ऋतु का आगमन हो गया है। शिशिर ऋतु की कँपा देने वाली ठंड के कारण प्रकृति की आभा खत्म हो गई है और वह कांति रहित हो गई है। पृथ्वी पर धुँधलका छा गया है।

ठंड के कारण खूब बर्फ गिर रही है। इससे तालाबों में खिले हुए कमल के फूलों को बहुत कष्ट हो रहा है। कवि कहते हैं कि यह कष्ट कुछ उसी तरह का है, जैसे किसी निर्दयी और अन्यायी राजा के तरह-तरह के दंड़ों से उसके राज्य की प्रजा दुखी होती है।

रात्रि के समय बहुत ठंड होती है। ऐसे समय लोग अपने-अपने घरों में जाकर सो जाते हैं। पर ठंड के मारे बाहर कुत्तों और सियार जैसे जानवरों का बुरा हाल है। ये असहाय प्राणी चिल्ला-चिल्लाकर सारी रात रोते रहते हैं।

[2] अर्द्धरात्रि को घर से ..... और न भाजी।

आधी रात को यदि कोई व्यक्ति घर के आँगन में आकर निर्जन आकाश-मंडल की ओर देखता है, तो वहाँ का दृश्य देखकर उसे डर लगने लगता है।

ठंड भरे इस मौसम में आकाश के तारे भी धुँधले दिखाई देते हैं और चंद्रमा का रंग पीलापन लिए हुए सफेद हो गया है। इन्हें देखकर ऐसा लगता है, जैसे किसी राज्य पर कोई राष्ट्रीय संकट आ गया हो।

कवि कहते हैं कि शिशिर ऋतु की कष्टदायी ठंड में धनी वर्ग के व्यक्तियों को आनंद ही आनंद है। वे रात-दिन मौज-मजा करते हैं और प्रसन्न रहते हैं। लेकिन गरीबों और दरिद्रों के लिए शिशिर ऋतु की ठंड में दुख ही दुख है।

धनिक वर्ग के लोग हलुवा-पूड़ी और ताजी दूध-मलाई खाते हैं और ठंडक का आनंद लेते हैं। लेकिन गरीबों और दरिद्रों को सूखी रोटी और सब्जी भी नसीब नहीं होती (यानी उन्हें उपवास करना पड़ता है)।

[3] वे सुख से रंगीन ..... नहीं क्या होगा।

धनिक वर्ग के लोगों पर ठंड का कोई असर नहीं होता। वे रंगीन और मूल्यवान शाल-दुशाले ओढ़ते हैं इससे उन पर जाड़े का तनिक-भी असर नहीं होता। मगर ऐसे समय गरीबों की बुरी हालत होती है। उन्हें काँपते हुए दिन-रात काटनी पड़ती है और ऊपर से उन्हें ओस और पाले का भी सामना करना पड़ता है।

धनिक वर्ग के पास सुख के तरह-तरह के साधन होते हैं और वे सुंदर-सुंदर घरों में रहते हैं। दूसरी ओर गरीबों और दरिद्रों के घर टूटे-फूटे, झुग्गी-झोपड़ियोंवाले होते हैं और उनमें किसी तरह की कोई सुविधा नहीं होती। वहाँ सदा उदासी का माहौल होता है।

कवि कहते हैं कि पहले सब लोग प्रकृति पर निर्भर करते थे। किसी को पेट भरने यानी क्षुधा-पूर्ति की कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी। प्रकृति से ही सारी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं। वह माता की तरह हमारा पालन-पोषण किया करती थी।

कवि कहते हैं कि मनुष्य-मनुष्य में कोई अंतर नहीं होता। सभी का आपस में भाई-भाई का नाता है। एक भाई का दूसरे भाई पर कुछ-न-कुछ अधिकार होता है। इसलिए हमारे मन में एक-दूसरे का उपकार करने की भावना होनी चाहिए।

मुहावरा – अर्थ

पौ-बारह होना – लाभ का अवसर मिलना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

कृतिपत्रिका के प्रश्न 2 (अ) तथा प्रश्न 2 (आ) के लिए

पद्यांश क्र. 1

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 1 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 97)

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई!
प्रकृति हुई द्युतिहीन, अवनि में कुंझटिका है छाई।

पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते।

निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं,
बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं।

शब्दार्थ

भ्रात – भ्राता, भाई। **द्युतिहीन** – कांतिरहित, चमकरहित। **अवनि** – पृथ्वी। **कुंझटिका** – धुंध। **तुषार** – (यहाँ अर्थ) बर्फ। **पद्मदल** – कमल दल। **ताल** – तालाब। **बिलखाना** – कष्ट पाना। **अन्यायी** – अत्याचारी। **नृप** – राजा। **दंड** – सजा। **यथा** – जैसे। **निशा काल** – रात के समय। **निज** – अपने। **श्वान** – कुत्ते। **स्यार** – गीदड़।

कृति 1 : (आकलन)

(1) कृति पूर्ण कीजिए :

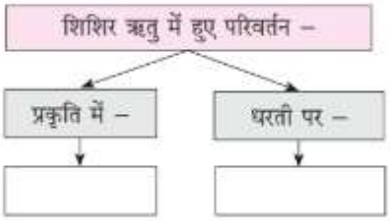

(2) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

(i) पद्यांश में आए एक फूल का नाम –

(ii) श्वेत कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरने वाली हवा में मिली भाप –

(iii) लंबे-चौड़े प्राकृतिक गड्ढे के लिए प्रयुक्त शब्द जिसमें बरसाती पानी जमा होता है –

(iv) शिशिर ऋतु से पहले आने वाली ऋतु –

(3) उचित जोड़ियाँ मिलाकर लिखिए :

'अ'	'आ'
(i) प्रकृति	ताल
(ii) अवनि	द्युतिहीन
(iii) पद्मदल	नृप
(iv) अन्यायी	कुंझटिका
	लोग

(4) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i)

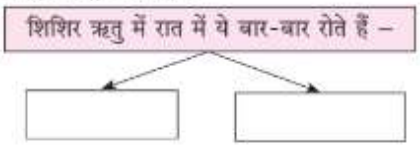

(ii)

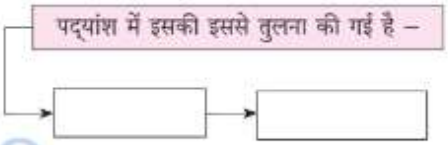

(iii)

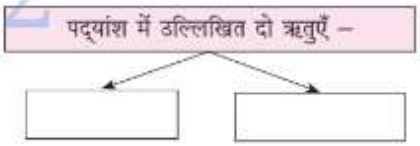

6414132

उत्तर

(1)

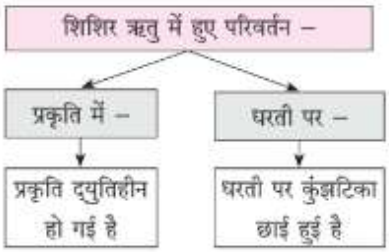

(2) (i) पद्यांश में आए एक फूल का नाम – पद्म (कमल)।

(ii) श्वेत कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरने वाली हवा में मिली भाप – तुषार (बर्फ)।

(iii) लंबे-चौड़े प्राकृतिक गड्ढे के लिए प्रयुक्त शब्द जिसमें बरसाती पानी जमा होता है – ताल।

(iv) शिशिर ऋतु से पहले आने वाली ऋतु – हेमंत ऋतु।

(3) (i) प्रकृति – द्युतिहीन
(ii) अवनि – कुंझटिका
(iii) पद्मदल – ताल
(iv) अन्यायी – नृप

(4) (i) शिशिर ऋतु में रात में ये बार-बार रोते हैं –
- श्वान
- स्यार

(ii) पद्यांश में इसकी इससे तुलना की गई है –
- तुषार की → अन्यायी नृप से

(iii) पद्यांश में उल्लिखित दो ऋतुएँ –
- हेमंत
- शिशिर

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) लिंग पहचानकर लिखिए :

(i) नृप –..... (ii) प्रकृति –.....
(iii) अवनि –..... (iv) निशा –.....

(2) वचन परिवर्तन कीजिए :

(i) ऋतु –.....
(ii) घर –.....

उत्तर

(1) (i) नृप – पुल्लिंग (ii) प्रकृति – स्त्रीलिंग
(iii) अवनि – स्त्रीलिंग (iv) निशा – स्त्रीलिंग।

(2) (i) ऋतु – ऋतुएँ (ii) घर – घर।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• प्रस्तुत पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं। बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं।

कवि कहते हैं कि शिशिर ऋतु के भाई हेमंत का समय बीत गया है। अब शिशिर ऋतु का आगमन हो गया है। शिशिर ऋतु की कँपा देने वाली ठंड के कार प्रकृति की आभा खत्म हो गई है और वह कांति रहित हो गई है। पृथ्वी पर धुँधलका छा गया है।

ठंड के कारण खूब बर्फ गिर रही है। इससे तालाबों में खिले हुए कमल के फूलों को बहुत कष्ट हो रहा है। कवि कहते हैं यह कष्ट कुछ उसी तरह का है, जैसे किसी निर्दयी और अन्यायी राजा के तरह-तरह के दंडों से उसके राज्य की प्रजा दुखी होती है।

पद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 2 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 97)

अर्द्धरात्रि को घर से कोई जो आँगन को आता,
शून्य गगन मंडल को लख यह मन में है भय पाता।
तारे निपट मलीन चंद ने पांडुवर्ण है पाया,
मानो किसी राज्य पर है, राष्ट्रीय कष्ट कुछ आया।
धनियों को है मौज रात-दिन हैं उनके पौ-बारे,
दीन दरिद्रों के मत्थे ही पड़े शिशिर दुख सारे।
वे खाते हैं हलुवा-पूड़ी, दूध-मलाई ताजी,
उन्हें नहीं मिलती पर सूखी रोटी और न भाजी।

शब्दार्थ

अर्द्धरात्रि – आधी रात। **आँगन** – घर के अंदर खुला छोड़ा भाग। **लख** – देख। **निपट** – बिलकुल। **मलीन** – धुँधले। **पांडुवर्ण** – पीलापन लिए हुए रंग। **मौज**–मजा। **पौ-बारे** – (पौ-बारह) लाभ का अवसर मिलना। **दीन** – गरीब। **मत्थे** – (यहाँ) जिम्मे।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) शिशिर ऋतु में रात्रि के समय इनका रूप –
- तारों का – [ ]
- चंद्रमा का – [ ]

(ii) शिशिर ऋतु के चाँद और तारों की तुलना की गई है –
→ ..... से

(2) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

(i) रात के एक हिस्से का नाम –
(ii) घर के भीतर खुला छोड़े गए भाग का नाम –
(iii) देखने के अर्थ में आया हुआ शब्द –
(iv) सौर मंडल के एक उपग्रह का नाम –

6414132

(3) जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ'	'आ'
(i) शून्य गगन	मलीन
(ii) पांडुवर्ण	धनी वर्ग
(iii) तारे	अर्द्ध रात्रि
(iv) पौ-बारह	चाँद

*(4) जीवन-शैली में अंतर स्पष्ट कीजिए :

धनी	दीन-दरिद्र
(i)	.....
(ii)	.....

(5) संजाल पूर्ण कीजिए :

[ ] [ ]

पद्यांश में प्रयुक्त खाद्य-पदार्थ –

[ ] [ ]

उत्तर

6414132

(1) (i) शिशिर ऋतु में रात्रि के समय इनका रूप –

- तारों का – एकदम मटमैला
- चंद्रमा का – सफेद-पीले (पांडु) रंग का

(ii) शिशिर ऋतु के चाँद और तारों की तुलना की गई है –

- किसी राज्य पर आए राष्ट्रीय संकट से

(2) (i) रात के एक हिस्से का नाम – अर्द्धरात्रि।

(ii) घर के भीतर खुला छोड़े गए भाग का नाम – आँगन।

(iii) देखने के अर्थ में आया हुआ शब्द – 'लख'।

(iv) सौर मंडल के एक उपग्रह का नाम – चंद्रमा।

(3) (i) शून्य गगन – अर्द्ध रात्रि

(ii) पांडुवर्ण – चाँद

(iii) तारे – मलीन

(iv) पौ-बारह – धनी वर्ग

(4)

धनी	दीन-दरिद्र
(i) रात दिन मौज, आनंद ही आनंद	शिशिर ऋतु के सारे दुख
(ii) हलुवा-पूड़ी, दूध-मलाई का भोजन	सूखी रोटी और भाजी का भी अभाव।

(5)

- हलुवा-पूड़ी
- दूध-मलाई

पद्यांश में प्रयुक्त खाद्य-पदार्थ –

- रोटी
- भाजी

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) पद्यांश से दो शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए :

(i) ..... (ii) .....

(2) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए :

(i) रोटी (ii) दुशाले।

उत्तर

(1) (i) रात-दिन (ii) दूध-मलाई।

(2) (i) रोटी – रोटियाँ (ii) दुशाले – दुशाला।

कृति 3 : (सरल अर्थ)

• **पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : कवि कहते हैं कि शिशिर ऋतु की कष्टदायी ठंड में धनी वर्ग के व्यक्तियों को आनंद ही आनंद है। वे रात-दिन मौज-मजा करते हैं और प्रसन्न रहते हैं। लेकिन गरीबों और दरिद्रों के लिए शिशिर ऋतु की ठंड में दुख ही दुख है।

धनिक वर्ग के लोग हलुवा-पूड़ी और ताजी दूध-मलाई खाते हैं और ठंडक का आनंद लेते हैं। लेकिन गरीबों और दरिद्रों को सुखी रोटी और सब्जी भी नसीब नहीं होती (यानी उन्हें उपवास करना पड़ता है)।

पद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. 3 : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 97)

वे सुख से रंगीन कीमती ओढ़ें शाल-दुशाले,
पर इनके कंपित बदनों पर गिरते हैं नित पाले।

वे हैं सुख साधन से पूरित सुघर घरों के वासी,
इनके टूटे-फूटे घर में छाई सदा उदासी।

पहले हमें उदर की चिंता थी न कदापि सताती,
माता सम थी प्रकृति हमारी पालन करती जाती।

हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा,
भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा।

शब्दार्थ

कंपित – काँपने वाले। **पाले** – पाला, बर्फ के सूक्ष्म कण, जो जमीन पर जम जाते हैं। **पूरित** – परिपूर्ण। **सुघर** – सुंदर। **वासी** – रहने वाले। **उदर** – पेट। **उपकार** – हित, भलाई।

6414132

कृति 1 : (आकलन)

***(1) जीवन-शैली में अंतर स्पष्ट कीजिए :**

धनी	दीन-दरिद्र
(i)	.....
(ii)	.....

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

भाई-भाई का रिश्ता है इन दोनों में –

[ ] [ ]

(3) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

(i) पहले इन्हें इसकी चिंता नहीं सताती थी –

(ii) यह इनका माता की तरह भरण-पोषण करती थी –

उत्तर

(1)

धनी	दीन-दरिद्र
(i) वे रंगीन कीमती शाल-दुशाले ओढ़ते हैं	इनके काँपते हुए शरीर पर रोज पाला गिरता है
(ii) ये सुविधा-संपन्न मकानों में रहते हैं	ये टूटे-फूटे घरों में रहते हैं, जहाँ हमेशा उदासी छाई रहती हैं

(2) भाई-भाई का रिश्ता है इन दोनों में –

धनवानों में | दीन-दरिद्रों में

(3) (i) पहले इन्हें इसकी चिंता नहीं सताती थी – उदर की।

(ii) यह इनका माता की तरह भरण-पोषण करती थी – प्रकृति।

कृति 2 : (शब्द संपदा)

(1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

(i) उदर = ...

(ii) माता = ...

(2) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(i) सुख × .....

(ii) उपकार × .....

उत्तर

(1) (i) उदर = पेट (ii) माता = माँ

(2) (i) सुख × दुख (ii) उपकार × अपकार

कृति 3 : (सरल अर्थ)

- **पद्यांश की अंतिम दो पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : कवि कहते हैं कि मनुष्य-मनुष्य में कोई अंतर नहीं होता। सभी का आपस में भाई-भाई का नाता है। एक भाई का दूसरे भाई पर कुछ-न-कुछ अधिकार होता है। इसलिए हमारे, मन में एक-दूसरे का उपकार करने की भावना होनी चाहिए।

पद्य विश्लेषण

सूचना : यह प्रश्नप्रकार कृतिपत्रिका के प्रारूप से हटा दिया गया है। लेकिन यह प्रश्न पाठ्यपुस्तक में होने के कारण विद्यार्थियों के अधिक अभ्यास के लिए इसे उत्तर-सहित यहाँ समाहित किया गया है।

* • **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :**

(1) रचनाकार का नाम → मुकुटधर पांडेय।

(2) रचना का प्रकार (विधा) → नई कविता।

(3) पसंद की पंक्तियाँ →

'हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा,
भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा'।

(4) पसंद होने का कारण → जन्म से सभी मनुष्य एक जैसे होते हैं, ऊँच-नीच, बड़ा-छोटा, धनवान-गरीब तो मनुष्य अपनी-अपनी उपलब्धियों से बनता है। मनुष्य का आपस में भाई-भाई का नाता है। प्रस्तुत पंक्तियों में कहा गया है कि मनुष्य में आपस में एक-दूसरे का उपकार करने की भावना होनी चाहिए।

(5) रचना से प्राप्त संदेश → सभी मनुष्य समान होते हैं। कोई अपने को बड़ा या छोटा न समझे। मनुष्य को एक-दूसरे का उपकार करना चाहिए। (विद्यार्थी अपनी पसंद की पंक्ति लिखेंगे।)

संपूर्ण पाठ पर आधारित स्वाध्याय कृति
(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 98)

* • **तालिका पूर्ण कीजिए :**

ऋतुएँ	अंग्रेजी माह	हिंदी माह
1. वसंत	मार्च – अप्रैल	चैत्र – वैशाख
2. ग्रीष्म	मई – जून	ज्येष्ठ – आषाढ़
3. वर्षा	जुलाई – अगस्त	श्रावण – भाद्रपद
4. शरद	सितंबर – अक्तूबर	आश्विन – कार्तिक
5. हेमंत	नवंबर – दिसंबर	मार्गशीर्ष – पौष
6. शिशिर	जनवरी – फरवरी	माघ – फाल्गुन

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्रश्न. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

6414132

1. शब्द भेद :

• **अधोरेखांकित शब्दों के शब्द भेद पहचानकर लिखिए :**

(i) वे हलुवा-पूड़ी और ताजी दूध-मलाई खाते हैं।

(ii) वे कीमती शाल-दुशाले ओढ़ते हैं।

उत्तर : (i) **ताजी** – गुणवाचक विशेषण।

(ii) **वे** – पुरुषवाचक सर्वनाम।

2. अव्यय :

• **निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) रात-दिन (ii) उधर।

उत्तर : (i) वह रात-दिन गरीबों की सेवा में लगा रहता है।

(ii) विधि उधर मत जाओ।

3. संधि :

• **कृति पूर्ण कीजिए :**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
सदैव	----------	----------

अथवा

----------	निः + रज	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
सदैव	सदा + एव	स्वर संधि

अथवा

नीरज	निः + रज	विसर्ग संधि

4. सहायक क्रिया पहचानना :

• **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए :**

(i) अब वह अपने नए मकान में रहने लगा।

(ii) वे शाल-दुशाले ओढ़े रहते हैं।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) लगा	लगना
(ii) हैं	होना

5. प्रेरणार्थक क्रिया का रूप लिखना :

• **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

(i) गिरना (ii) खाना।

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) गिरना	गिराना	गिरवाना
(ii) खाना	खिलाना	खिलवाना

6. मुहावरे :

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) पौ-बारह होना (ii) नाच नचाना।

उत्तर :

(i) पौ-बारह होना।

अर्थ – लाभ का अवसर मिलना।

वाक्य : आई.ए.एस. परीक्षा में यदि वह लड़का पास हो गया, तो उसके पौ-बारह हो जाएँगे।

(ii) नाच नचाना।

अर्थ : खूब परेशान करना।

वाक्य : वह शैतान लड़का अपनी माँ को रात-दिन नाच नचाता रहता है।

(2) अधोरेखांकित वाक्यांशों के लिए कोष्ठक में दिए गए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(जाल बिछाना, राह देखना, भनक पड़ना)

(i) पुलिस ने बदमाश को गिरफ्तार करने के लिए पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी।

(ii) बोर्ड की परीक्षा हो जाने पर विद्यार्थी परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे।

उत्तर : (i) पुलिस ने बदमाश को गिरफ्तार करने के लिए पूरे इलाके में जाल बिछा दिया।

(ii) बोर्ड की परीक्षा हो जाने पर विद्यार्थी परिणाम की राह देखने लगे।

7. कारक :

- **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(i) चंद्रमा ने पांडुवर्ण पाया है।

(ii) वे सुख से अपने घरों में रहते हैं।

उत्तर : (i) **चंद्रमा ने** – कर्ता कारक।

(ii) **सुख से** – करण कारक।

8. विरामचिह्न :

- **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(i) वाह आपने तो कमाल कर दिया

(ii) क्रिकेट खिलाड़ी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा एक दिन तुम देश का नाम रोशन करोगे।

उत्तर : (i) वाह! आपने तो कमाल कर दिया।

(ii) क्रिकेट खिलाड़ी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा, "एक दिन तुम देश का नाम रोशन करोगे।"

9. काल परिवर्तन :

- **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(i) वे सुंदर मकानों में रहते हैं। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(ii) इनके बदन पर नित पाले गिरते हैं। *(सामान्य भविष्यकाल)*

उत्तर : (i) वे सुंदर मकानों में रह रहे हैं।

(ii) इनके बदन पर नित पाले गिरेंगे।

10. वाक्य भेद :

(1) निम्नलिखित वाक्यों का रचना के आधार पर भेद पहचान कर लिखिए :

(i) रात के समय लोग अपने-अपने घरों में सो जाते हैं।

(ii) हेमंत ऋतु बीत गई और शिशिर ऋतु आ गई।

उत्तर : (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य।

(2) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i) उन्हें काँपते हुए रात काटनी पड़ती है। *(निषेधवाचक वाक्य)*

(ii) ठंड भरे मौसम में आकाश के तारे धुँधले से दिखाई देते हैं। *(प्रश्नवाचक वाक्य)*

उत्तर : (i) उन्हें काँपते हुए रात नहीं काटनी पड़ती है।

(ii) क्या ठंड भरे मौसम में आकाश के तारे धुँधले दिखाई देते हैं?

11. वाक्य शुद्धिकरण :

- **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए :**

(i) पहले प्रक्रिति हमारे माता के समान थी।

(ii) इनकी बदन पर पाला गिरती है।

उत्तर : (i) पहले प्रकृति हमारी माता के समान थी।

(ii) इनके बदन पर पाला गिरता है।

64141132

उपयोजित लेखन

• **विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग' इस विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए। (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र.98)**

उत्तर : वैज्ञानिक प्रगति और उपलब्धियों के बल पर आज विश्व सिमटकर बहुत छोटा हो गया है। विभिन्न देशों के लोग आज एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए हैं। किसी भी देश में कोई घटना होती है, तो उससे दूसरे देश भी प्रभावित होते हैं। आज लोगों का एक-दूसरे के देशों में आना-जाना और व्यापार-व्यवहार बहुत सुलभ हो चुका है। लोगों में आपसी प्रेम-भाव भी बहुत है। पर कुछ शक्तियाँ ऐसी हैं, जिनके कारण लोगों के बीच वैसा सौमनस्य स्थापित नहीं हो पा रहा है, जैसा होना चाहिए। इसके कारण कई देशों में अशांति का वातावरण है। आतंकवाद और युद्ध का भय उनमें से एक है। विश्व में लोगों में आपसी भाईचारे के प्रयास पहले भी होते रहे हैं और आज तो बहुत तेजी से जारी हैं। आज के युग में विश्वबंधुता की सबसे अधिक आवश्यकता है। आज विश्व विस्फोटकों के ढेर पर बैठा हुआ है। तरह-तरह के विनाशक अस्त्र-शस्त्रों का भय लोगों को सता रहा है, जिसकी चपेट में सारा विश्व आ सकता है। इसलिए आज सभी देशों के बीच आपसी प्रेम-भाव और सौहार्द्य की अत्यधिक आवश्यकता है। इस बात को अब सभी देश समझने लगे हैं और इस दिशा में प्रयास भी शुरू हो गए हैं। विश्वबंधुता की भावना से ही विश्व में शांति और सौहार्द्य स्थापित हो सकता है।

6414132

क्या आपने **नवनीत मार्गदर्शिका** से इस पाठ/इस कविता का अध्ययन कर लिया? यदि 'हाँ', तो फिर अब अपने अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए पाठ/कविता पर आधारित कसौटी को हल करने का अभ्यास कीजिए। कसौटी तथा उसके आदर्श उत्तरों के लिए यह **QR Code** स्कैन कीजिए।

अपठित विभाग

कृतिपत्रिका के प्रश्न 1 (इ) के लिए

अपठित गद्यांश क्र.1

प्रश्न. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 32)

हर किसी को आत्मरक्षा करनी होगी, हर किसी को अपना कर्तव्य करना होगा। मैं किसी की सहायता की प्रत्याशा नहीं करता। मैं किसी का भी प्रत्याह नहीं करता। इस दुनिया से मदद की प्रार्थना करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। अतीत में जिन लोगों ने मेरी मदद की है या भविष्य में भी जो लोग मेरी मदद करेंगे, मेरे प्रति उन सबकी करुणा मौजूद है, उसका दावा कभी नहीं किया जा सकता। इसलिए मैं सभी लोगों के प्रति चिर कृतज्ञ हूँ। तुम्हारी परिस्थिति इतनी बुरी देखकर मैं बेहद चिंतित हूँ। लेकिन यह जान लो कि– 'तुमसे भी ज्यादा दुखी लोग इस संसार में हैं। मैं तुमसे भी ज्यादा बुरी परिस्थिति में हूँ। इंग्लैंड में सब कुछ के लिए मुझे अपनी ही जेब से खर्च करना पड़ता है। आमदनी कुछ भी नहीं है। लंदन में एक कमरे का किराया हर सप्ताह के लिए तीन पाउंड होता है। ऊपर से अन्य कई खर्च हैं। अपनी तकलीफों के लिए मैं किससे शिकायत करूँ? यह मेरा अपना कर्मफल है, मुझे ही भुगतना होगा।'

(विवेकानंद की आत्मकथा से)

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) कमरे का किराया –
- [ ]
- [ ]

(ii) लेखक इनके प्रति कृतज्ञ हैं –
- [ ]
- [ ]

उत्तर

(1) (i) कमरे का किराया –
- तीन पाउंड
- प्रति सप्ताह

(ii) लेखक इनके प्रति कृतज्ञ हैं –
- अतीत में जिन लोगों ने लेखक की मदद की है
- भविष्य में जो लोग उनकी मदद करेंगे

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **कृतज्ञता के संबंध में अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : कृतज्ञता एक महान गुण है। कृतज्ञता का अर्थ है अपने प्रति की गई सहायता के लिए श्रद्धावान होकर सहायता करने वाले व्यक्ति के समक्ष सम्मान प्रदर्शन करना। कृतज्ञता मानवता की सर्वोत्कृष्ट विशेषता है। यह हमें आभास कराती है प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी रूप में और कभी भी यदि किसी व्यक्ति ने कोई सहयोग या सहायता प्रदान की है, उसके लिए हम यदि कुछ न कर सकें, तो हृदय से आभार अवश्य प्रकट करें। कृतज्ञता दिव्य प्रकाश है। यह दी हुई सहायता के प्रति आभार प्रकट करने का भाव है। जो दिया है, हम उसके ऋणी हैं, इसकी अभिव्यक्ति ही कृतज्ञता है। सुअवसर मिलने पर उसे समुचित रूप से लौटा देना इस भाव का मूल मंत्र है। इस गुण के बल पर समाज और इन्सान में एक सहज संबंध विकसित हो सकता है। भावना और संवेदना का जीवंत वातावरण निर्मित हो सकता है। जो दे, उससे लाभ लेकर उसको भी बदले में यथासंभव दें।

अपठित गद्यांश क्र. 2

प्रश्न. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

केरल से करगिल घाटी (काश्मीर) और गुवाहाटी से चौपाटी तक विस्तीर्ण इस भूमि पर जन्मे सभी धर्माचार्यों ने और उनके द्वारा रचित संपूर्ण साहित्य ने राष्ट्रीय एकता का उद्घोष किया है। इसी भावधारा के कारण भारत पर आक्रमण करने वाली शक, हूण और कुषाण जैसी जातियाँ भारतीय संस्कृति में घुल-मिल गईं। भाषावार प्रांतों के नाम पर भाषाई दंगे प्रारंभ हुए, क्षेत्रीयता का विकास हुआ और आर्थिक विषमता के नाम पर देश से अलग होने की माँग की जाने लगी। राजनीतिक दलों ने मैदानों व नदियों को कठघरों में खड़ा कर दिया। लोग मानसिक रूप से टूटने लगे व धीरे-धीरे एकता के प्रति जनता की संवेदनशीलता समाप्त हो गई। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वतंत्रता के 72 वर्ष पश्चात भी सरकार को अपनी बहुमूल्य शक्ति राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में व्यय करनी पड़ती है, जिसका उपयोग विकास कार्यों में होना चाहिए।

6441132

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) भारत पर हमले किए थे इन जातियों ने – [ ]

(ii) सरकार को अपनी शक्ति व्यय करनी पड़ती है इसमें – [ ]

(2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(i) संप्रदाय/क्षेत्रीयता/धर्म के नाम पर देश के अलग होने की माँग की जाने लगी।

(ii) सामाजिक/आर्थिक/राजनीतिक दलों ने मैदानों व नदियों को कठघरों में खड़ा कर दिया।

उत्तर

(1) (i) भारत पर हमले किए थे इन जातियों ने – शक, हूण और कुषाण

(ii) सरकार को अपनी शक्ति व्यय करनी पड़ती है इसमें – राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में

(2) (i) क्षेत्रीयता के नाम पर देश के अलग होने की माँग की जाने लगी।

(ii) राजनीतिक दलों ने मैदानों व नदियों को कठघरों में खड़ा कर दिया।

6414132

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• राष्ट्रीय एकता विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय है, संपूर्ण देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक एकता। हमारे खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, पूजा-पाठ, कर्मकांड में अंतर हो सकता है, परंतु हम एक ही देश भारत के निवासी हैं। हम सब एक हैं। किसी भी राष्ट्र की आंतरिक शक्ति, सुव्यवस्था और बाह्य सुरक्षा की दृष्टि से राष्ट्रीय एकता परम आवश्यक होती है। यदि भारतवासियों में जरा-सी भी फूट पड़ेगी तो अनेक देश हमारी स्वतंत्रता को हड़पने को तैयार बैठे हैं। इतिहास साक्षी है कि जब-जब हम असंगठित हुए, राजनीतिक रूप से इसकी कीमत चुकानी पड़ी है। अत: देश की स्वतंत्रता की रक्षा और राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें देश के प्रति वफादार होना चाहिए। मिल-जुलकर किसी कार्य को करना ही एकता कहलाता है। एकता में अपार बल होता है। देश का हित व्यक्तिगत हित से पहले है, हमें यह सदैव याद रखना चाहिए। देश ने हमारे लिए क्या किया के स्थान पर यह भावना मन में रखनी चाहिए कि हम देश के लिए क्या कर सकते हैं।

अपठित गद्यांश क्र. 3

प्रश्न. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

राजकुमार का घोड़ा बेदम हो गया था। संन्यासी ने मृग के मृत शरीर को कंधे पर ऐसे उठा लिया मानो घास का गट्ठर हो। राजकुमार संन्यासी के पीछे चला। उसे संन्यासी के शारीरिक बल पर अचंभा हो रहा था। आधे घंटे तक दोनों चुपचाप चलते रहे। इसके बाद ढालू भूमि मिलनी शुरू हुई। वहीं कदंब-कुंज की घनी छाया में, जहाँ सर्वदा मृगों की सभा सुशोभित रहती, नदी की तरंगों का मधुर स्वर सर्वदा सुनाई दिया करता, जहाँ हरियाली पर मयूर थिरकता, कपोतादि पक्षी मस्त होकर झूमते, लता-द्रुमादि से सुशोभित संन्यासी की एक छोटी-सी कुटी थी। वह कुटी हरे-भरे वृक्षों के नीचे सरलता और संतोष का चित्र बना रही थी। राजकुमार की अवस्था वहाँ पहुँचते ही बदल गई। यहाँ की शीतल वायु का प्रभाव उस पर ऐसा पड़ा जैसा मुरझाते हुए वृक्षों पर वर्षा का। उसे आज विदित हुआ कि तृप्ति केवल कुछ स्वादिष्ट व्यंजनों पर ही निर्भर नहीं है और न निद्रा को सुनहरे तकियों की ही आवश्यकता है।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

संन्यासी के लिए इन दोनों में कोई अंतर नहीं था –

[ ] [ ]

(2) आकृति पूर्ण कीजिए :

गद्यांश में इन दो व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है –

[ ] [ ]

उत्तर

(1) संन्यासी के लिए इन दोनों में कोई अंतर नहीं था –

मृत मृग का शरीर | घास का गट्ठर

(2) गद्यांश में इन दो व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है –

संन्यासी | राजकुमार

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'वनों का महत्त्व' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में व्यक्त कीजिए।**

उत्तर : वन ईश्वर द्वारा दिए गए प्राकृतिक संसाधनों में अति महत्त्वपूर्ण हैं। ये हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। वन वातावरण में व्याप्त विषैली वायु को ग्रहण कर उसे स्वास्थ्यप्रद प्राणवायु में बदल देते हैं। इसलिए इन्हें पृथ्वी का फेफड़ा कहा जाता है। वन वर्षा लाने में सहायक होते हैं। वनों के कारण भूमिगत जल स्तर में वृद्धि होती है। वन प्रकृति की अनुपम सौगात तो हैं ही, ये हमें विभिन्न प्रकार के संसाधन भी प्रदान करते हैं। वन हमें अनेक प्रकार के फल-फूल, औषधि, इमारती लकड़ी, ईंधन आदि देते हैं। वनों से प्राप्त लकड़ी से ही पेपर तथा खेलों की सामग्री बनाई जाती है। वनों से हमें खनिज और पशुओं के लिए चारा भी मिलता है। वन अनेकानेक प्राणियों का निवास स्थान है। ये वन्य जीव वनों की शोभा होते हैं।

अपठित गद्यांश क्र. 4

प्रश्न. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

64141 32

पलाश बबूल के समान गोंद उत्पन्न करने वाला वृक्ष है। इसके गोंद को लाख या कमरकस भी कहते हैं। इस बहुपयोगी वृक्ष के विभिन्न अंगों का उपयोग औषधि निर्माण के साथ-साथ अन्य कार्यों में भी किया जाता है। पलाश की लकड़ी से छोटे-छोटे तख्ते, कुएँ के चाक आदि बनाए जाते हैं। इसका तना बेडौल होता है। अत: इसका उपयोग बड़े कामों में नहीं किया जाता। पलाश की लकड़ी जलाने के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है। इसका कोयला शीघ्र आग पकड़ लेता है। इसका उपयोग गनपावडर के रूप में किया जाता है। पलाश के फूल पानी में घुलकर केसरिया रंग देते हैं। फूलों को रातभर पानी में भिगोकर अगले दिन उबालकर छान लेते हैं। यह पानी त्वचा को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाता क्योंकि इसमें रसायन नहीं होते। गाँवों-कस्बों में आज भी होली के समय पलाश के फूलों से तैयार किए गए रंग से ही होली खेली जाती है। दक्षिण भारत में स्त्रियाँ पलाश के फूलों से शृंगार करना पसंद करती हैं। पलाश के पत्ते हाथियों का प्रिय आहार है।

कृति 1 : (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

पलाश की लकड़ी से बनाई जाने वाली वस्तुएँ –

[ ] [ ]

(2) गद्यांश में दिए गए गोंद उत्पन्न करने वाले दो वृक्ष।

(i) ..... (ii) .....

उत्तर

(1) पलाश की लकड़ी से बनाई जाने वाली वस्तुएँ –

- छोटे-छोटे तख्ते
- कुएँ के चाक

(2) (i) बबूल (ii) पलाश।

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'होली के रंगों में रसायनों का प्रयोग' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में व्यक्त कीजिए।**

उत्तर : होली भारतवर्ष के प्रमुख त्योहारों में एक है। रंगों का त्योहार होली, जिसका इंतजार बच्चों, बूढ़ों और युवाओं को महीनों पहले से होने लगता है, आज अपना स्वरूप बदल रहा है। बदलते परिवेश में होली का नजारा भी विकृत होता जा रहा है। एक समय था, जब होली के दिनों में चारों ओर अबीर-गुलाल उड़ते दिखाई देते थे। पलाश (टेसू) के फूलों से निर्मित रंग एक-दूसरे के ऊपर डाला जाता था। इस रंग में अनेक औषधीय गुण होते हैं, जो वसंत ऋतु में होने वाले त्वचा संबंधी रोगों से हमें बचाते थे। परंतु आज उनका स्थान कीचड़, गंदगी और रासायनिक रंगों ने ले लिया है। इन रसायनयुक्त रंगों के उपयोग से त्वचा संबंधी अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। रंग लगे हुए स्थानों पर खुजली व लाल दाने हो जाते हैं। यह रंग यदि आँखों में गिर जाए तो बहुत हानिकारक साबित होता है। आँखों की रोशनी तक समाप्त हो सकती है। रंग लगाने वालों की तो एक-दो मिनट की मस्ती होती है, परंतु रासायनिक रंगों के शिकार को न जाने कितने दिनों तक परेशानी भुगतनी पड़ जाती है। अत: हम सभी को होली खेलते समय इन रासायनिक रंगों के प्रयोग से बचना चाहिए।

अपठित गद्यांश क्र. 5

प्रश्न. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

मनुष्य का जीवन संसार के छोटे-बड़े प्राणियों और पदार्थों में श्रेष्ठ माना गया है। वह इसलिए कि मनुष्य बड़ा बुद्धिमान और कल्पनाशील प्राणी है। अपने विचारों के बल पर ही वह जो चाहे कर सकता है और बहुत ऊँचा उठ सकता है। परंतु विचार सच्चे, सादे और पवित्र होने के साथ-साथ मनुष्य के व्यावहारिक जीवन से संबंध रखने वाले होने चाहिए। इन्हीं बातों को आधार बनवाकर 'सादा जीवन, उच्च विचार' को मानव-जीवन की सफलता की सीढ़ी माना गया है। सादगी मनुष्य के पहनावे से नहीं बल्कि उसके प्रत्येक हाव-भाव, विचार तथा जीवन के ढंग से टपकनी चाहिए। यही वास्तविक सादगी है, जो विचारों को भी उच्च बनाकर सब प्रकार की उन्नति और विकास का कारण बनती है।

कृति 1 : (आकलन)

- उत्तर लिखिए :

मनुष्य के विचार ऐसे होने चाहिए –

↓

.....

↓

.....

↓

.....

↓

.....

6414132

उत्तर

मनुष्य के विचार ऐसे होने चाहिए –

↓

सच्चे

↓

सादे

↓

पवित्र

↓

व्यावहारिक जीवन से संबंधित

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

- **'सादा जीवन, उच्च विचार' विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे जो वैभवसंपन्न लोग होते हैं और अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए, दिखावे के लिए आडंबरपूर्ण जीवन जीते हैं। वे प्रदर्शनप्रिय होते हैं। दूसरे वे जो सादगीपूर्ण जीवन जीते हैं, पर उनके विचार बहुत ऊँचे होते हैं। सादगी एक दुर्लभ गुण है। सादगीपूर्ण जीवन जीने वाला व्यक्ति अपने आप में संयम का विकास कर सकता है। इससे उसमें अनेक सद्गुण अपने आप आ जाते हैं। सादा जीवन जीने वाला व्यक्ति एक संत की भाँति जीता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सादा जीवन और उच्च विचार के जीते-जागते मिसाल हैं। उनके शरीर पर एक धोती के अलावा अन्य कोई वस्त्र नहीं रहता था। वे अपने सभी काम स्वयं करते थे। किंतु उनके विचार बहुत ऊँचे थे। आज सारा विश्व गांधी जी की सादगी और उनके उच्च विचारों का कायल है। जो व्यक्ति 'सादा जीवन, उच्च विचार' वाले दुर्लभ गुण को अपने जीवन में उतार लेता है, वह प्रशंसनीय एवं दूसरों का आदर्श बन जाता है।

सूचना : पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ क्र. 26 पर अपठित पद्यांश की कृति दी गई है लेकिन कृतिपत्रिका के नवीन प्रारूप में अपठित पद्यांश की कृति हटा दी गई है। इसलिए अपठित पद्यांश की कृति यहाँ नहीं दी गई है।

अपठित गद्यांश क्र. 6

प्रश्न. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सन 1897 में भारत में महामारी का प्रकोप हुआ। स्वामी विवेकानंद ने देश सेवा-व्रती संन्यासियों की एक छोटी-सी मंडली बनाई। यह मंडली तन-मन से दीन-दुखियों की सेवा करने लगी। ढाका, कोलकाता, चेन्नई आदि में सेवाश्रम खोले गए। वेदांत के प्रचार के लिए जगह-जगह विद्यालय स्थापित किए गए। कई अनाथालय भी खोल दिए गए।

ये सभी कार्य स्वामी जी के निरीक्षण में हो रहे थे। उनका स्वास्थ्य काफी बिगड़ गया था, फिर भी वह स्वयं घर-घर घूमकर पीड़ितों को आश्वासन तथा आवश्यक सहायता देते रहते थे। जिन मरीजों को देखकर डॉक्टर भी भाग जाते थे, उनकी सहायता करने में स्वामी जी और उनके अनुयायी कभी पीछे नहीं हटे।

कृति 1 : (आकलन)

• **तालिका पूर्ण किजिए :**

गद्यांश में वर्णित स्वामी विवेकानंद के कार्य
→ ----------
→ ----------
→ ----------
→ ----------

उत्तर

गद्यांश में वर्णित स्वामी विवेकानंद के कार्य
→ सेवाव्रती संन्यासियों की मंडली बनाई।
→ दीन-दुखियों की सेवा की।
→ सेवाश्रम खोल दिए।
→ अनाथालय खोल दिए।

6414132

कृति 2 : (स्वमत अभिव्यक्ति)

• **'सेवाभाव का महत्त्व' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : दुनिया में ऐसे असंख्य लोग हैं, जो तरह-तरह के असाध्य रोगों एवं दिल दहला देने वाले कष्टों से पीड़ित हैं। इनमें से अनेक लोग ऐसे हैं, जिनका कोई सहारा नहीं है। जिनके पास डॉक्टर भी फटकने की हिम्मत नहीं करते। समाज इन्हें भगवान के भरोसे छोड़ देता है। पर ऐसे में भी कुछ ऐसी महान विभूतियाँ होती हैं, जिनसे इन प्राणियों का कष्ट देखा नहीं जाता और वे इन बेसहारा लोगों को सहारा देने दौड़ पड़ते है। ये जी-जान से उनकी सेवा में जुट जाते हैं और उस सेवा को ही अपना एकमात्र लक्ष्य बना लेते हैं। ऐसे दयालु सेवकों की सेवा से असाध्य रोगों से तड़पते हुए लोगों के जीवन में नवीन आशा का संचार होता है। ये सेवाभावी लोग बेसहारा दीन-दुखियों के जीवन में फरिश्ता बन कर अवतरित होते हैं। ये लोग दूसरों को जीवन देने के लिए अपना जीवन होम कर देते हैं। बाबा आमटे, स्वामी विवेकानंद, गाडगे महाराज, मदर टेरेसा आदि ऐसे ही फरिश्ते हैं। मानव जीवन का उद्देश्य दूसरों की मदद करना है। दीन-दुखियों की सेवा ईश्वर की सेवा करने के समान माना गया है।

संकट या आपदा के समय एक देश दूसरे देश की मदद के लिए आ खड़े होते हैं। इस विचारधारा में भी सेवा भावना ही प्रमुख है।

इस तरह सेवा भावना का बहुत महत्त्व है।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

सूचना : हिंदी लोकभारती – कक्षा दसवीं के नवीन पाठ्यक्रम में व्याकरण संबंधी निम्नलिखित विषयों का समावेश किया गया है। इनका विवरण इस प्रकार है :

(1) **शब्द भेद** – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पहचानना। 1

(2) **अव्यय** – दो अव्यय शब्दों में से किसी एक शब्द का वाक्य में प्रयोग करना। 1

(3) **संधि** – दो में से कोई एक पहचानना, विच्छेद करना, संधि शब्द बनाना। 1

(4) **सहायक क्रिया** – दो में से कोई एक सहायक क्रिया पहचानना तथा उसका मूल रूप लिखना। 1

(5) **प्रेरणार्थक क्रिया** – दो में से किसी एक प्रेरणार्थक क्रिया का प्रथम तथा द्वितीय रूप लिखना। 1

(6) **मुहावरे** – मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करना अथवा मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखना। 1

(7) **कारक** – कारक पहचानना और उसका भेद लिखना। 1

(8) **विरामचिह्न** – वाक्य में उचित विरामचिह्न का उपयोग करना। 1

(9) **काल परिवर्तन** – तीन में से दो वाक्यों का काल परिवर्तन करना। 2

(10) **वाक्य के भेद** – 2

(i) रचना के आधार पर वाक्य का भेद पहचानना।

(ii) अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन करना।

(11) **वाक्य शुद्ध करना** – दो वाक्य, प्रत्येक वाक्य में दो अशुद्धियाँ। 2

- कृतिपत्रिका में भाषा अध्ययन (व्याकरण) विभाग के लिए **कुल 14 अंक** हैं।

1. शब्द भेद

6414132

ध्यान में रखें :

शब्द भेद के अंतर्गत एक वाक्य दिया जाएगा। उसमें अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानकर लिखना होगा। इसके लिए **1 अंक** है।

(1) संज्ञा :

जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि के नाम का ज्ञान होता है, उसे **संज्ञा** कहते हैं।

जैसे – भारत, गाय, गोवा, उपहार आदि।

- **संज्ञा के भेद :** संज्ञा के पाँच भेद हैं :

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा : किसी विशेष प्राणी, स्थान या वस्तु के नाम को **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं।

जैसे – लक्ष्मी, दिल्ली, मुंबई, उमा, विवेकानंद आदि।

(2) जातिवाचक संज्ञा : जो संज्ञा शब्द किसी प्राणी, स्थान या वस्तु की पूरी जाति का बोध कराते हैं, उन्हें **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं।

जैसे – देश, हार, भिक्षु, साथी, नदी, पुस्तक आदि।

(3) भाववाचक संज्ञा : किसी भाव, गुण, अवस्था या दशा का बोध कराने वाले शब्द को **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं।

जैसे – महँगाई, दया, अभिमान, साहस, बचपन, अच्छाई आदि।

(4) द्रव्यवाचक संज्ञा : जिस संज्ञा शब्द से किसी धातु, द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है, उसे **द्रव्यवाचक संज्ञा** कहते हैं।

जैसे – घी, तेल, दूध, पानी, सोना, गेहूँ, चारा आदि।

(5) समूहवाचक संज्ञा : जो संज्ञा शब्द किसी समूह या समुदाय का बोध कराते हैं, उन्हें **समूहवाचक संज्ञा** कहते हैं।

जैसे – झुंड, गुच्छा, दल, भीड़ आदि।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

- **निम्नलिखित संज्ञा शब्दों को पहचानकर उचित खानों में लिखिए :**

अलमारी	शंकर	सेना	आलोक	करामत
कक्षा	मिट्टी	लड़का	गर्व	तेल
स्वर्ण	सिंहल	टोली	चढ़ाई	बिस्तर
ऋतु	दान	लोहा	सम्राट	भीड़
आश्रम				

उत्तर :

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	द्रव्यवाचक संज्ञा	समूहवाचक संज्ञा
शंकर	लड़का	आलोक	मिट्टी	सेना
करामत	बिस्तर	गर्व	लोहा	कक्षा
सिंहल	सम्राट	चढ़ाई	तेल	भीड़
ऋतु	अलमारी	दान	स्वर्ण	टोली
	आश्रम			

(2) सर्वनाम :

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा शब्दों के स्थान पर किया जाता है, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं। सर्वनाम संज्ञा की पुनरावृत्ति को रोकते हैं।

■ **सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं :**

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम : जो शब्द बोलने वाले, सुनने वाले तथा जिसके विषय में बात की जाए, उन पुरुषों का बोध कराते हैं, वे **पुरुषवाचक सर्वनाम** कहलाते हैं। **जैसे –**

(क) **बोलने वाले** – मैं, मुझे, हम, हमें।

(ख) **सुनने वाले** – तू, तुम, तुमको, तुमसे, आप।

(ग) **जिसके विषय में बात की जाए** – वह, वे, यह, ये, उसे, उससे, उनको, उनके लिए।

उदाहरण : (क) मैं प्रतिदिन प्रातः टहलता हूँ।

(ख) तुम कल कहाँ थे?

(ग) वे मेरे मित्र हैं।

यहाँ मैं, तुम और वे पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम : जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उसे **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं। **जैसे –**

(क) यह नईम की गाय है।

(ख) तुम्हारी पुस्तक वह है।

यहाँ यह और वह निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम : जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध न हो, उन्हें **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं। **जैसे –**

(क) बाहर कोई है।

(ख) माँ कुछ खाने को दो।

यहाँ कोई और कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

(4) निजवाचक सर्वनाम : जो सर्वनाम शब्द अपनेपन का बोध कराते हैं, उन्हें **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं। **जैसे –**

(क) मैं अपने आप खाना ले लूँगा।

(ख) तुम्हें अपना काम स्वयं करना चाहिए।

यहाँ आप और स्वयं निजवाचक सर्वनाम हैं।

(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम : जो सर्वनाम शब्द किसी प्रश्न का बोध कराते हैं, उन्हें **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहते हैं। **जैसे –**

(क) अंदर कौन है?

(ख) प्रेमा, क्या कर रही हो?

यहाँ कौन और क्या प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

(6) संबंधवाचक सर्वनाम : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ संबंध स्पष्ट करते हैं, उन्हें **संबंधवाचक सर्वनाम** कहते हैं। **जैसे –**

(क) जो जीतेगा, उसे इनाम मिलेगा।

(ख) जो जैसा करेगा वह वैसा भरेगा।

यहाँ जो और उसे तथा जो और वह संबंधवाचक सर्वनाम हैं।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

• **वाक्यों में प्रयुक्त सर्वनामों को छाँटकर उनके नाम लिखिए :**

(1) करामत आया। उसने गाय को चारा दिया।

(2) लक्ष्मी ने बताया कोई आया था।

(3) वह वीर है।

(4) छत पर कौन दौड़ रहा है?

(5) यही मेरा पेन है।

(6) अपना काम स्वयं करो।

(7) जो मेहनत करेगा, वह सफल होगा।

(8) तुम अब घर जाओ।

(9) अब आप ठीक हो जाएँगे।

उत्तर : (1) उसने – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

(2) कोई – अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(3) वह – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

(4) कौन – प्रश्नवाचक सर्वनाम

(5) यही – निश्चयवाचक सर्वनाम

(6) स्वयं – निजवाचक सर्वनाम

(7) जो, वह – संबंधवाचक सर्वनाम

(8) तुम – मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

(9) आप – मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

(3) विशेषण :

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता अर्थात उनके गुण, दोष, रूप, आकार, संख्या आदि का बोध कराते हैं, उन्हें **विशेषण** कहते हैं।

जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाए, उसे **विशेष्य** कहते हैं। **जैसे –**

(क) विमल वाणी ने वीणा ली। (विमल विशेषण, वाणी विशेष्य)

(ख) तब मधुर संगीत पैदा हुआ। (मधुर विशेषण, संगीत विशेष्य)

(ग) रमजानी कुछ क्षण खड़ी रही। (कुछ विशेषण, क्षण विशेष्य)

■ **विशेषण चार प्रकार के होते हैं :**

(1) गुणवाचक विशेषण : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रूप, रंग, आकार आदि का बोध कराते हैं, उन्हें **गुणवाचक विशेषण** कहते हैं। **जैसे –** काला, गोरा, लंबा, कायर, वीर आदि।

(1) गोवा में खूबसूरत सागर तट हैं।

6414132

(2) रावण बहुत ज्ञानी थे।

(2) संख्यावाचक विशेषण : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें **संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं। **जैसे –** दो कौए, सात पक्षी।

(1) लक्ष्मी ने दो दिन से दूध नहीं दिया।

(2) घर में कितने रुपए हैं?

(3) परिमाणवाचक विशेषण : जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा (नाप-तौल) का बोध कराते हैं, उन्हें **परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं। **जैसे –** दो मीटर कपड़ा, चार किलो चीनी।

(1) आपकी चाय में कितनी चीनी डालूँ?

(2) डिब्बे में एक किलो दाल है।

(4) सार्वनामिक विशेषण : जो सर्वनाम शब्द वाक्य में विशेषण का कार्य करते हैं, उन्हें **सार्वनामिक विशेषण** कहते हैं। **जैसे –** वह घर, यह लड़की।

(1) यह गाय क्या आप लोगों की है।

(2) यह हमारी गाय का सारा चारा खा गई।

■ **विशेषण शब्दों की रचना :**

संज्ञा व क्रिया शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाए जाते हैं। **जैसे –**

(1) आ – प्यारा, ठंडा।

(2) ई – दोषी, रोगी, खोजी, दानी।

(3) इक – मासिक, दैनिक, तामसिक, पाक्षिक।

(4) इत – फलित, अंकित, संचित, घृणित।

(5) आलु – ईर्ष्यालु, दयालु, कृपालु, शंकालु।

(6) ईन – रंगीन, शौकीन, युगीन, प्रात:कालीन।

(7) ईय – पर्वतीय, जातीय, आत्मीय, शासकीय।

(8) ईला – जोशीला, बर्फीला, जहरीला, चमकीला।

(9) शाली – गौरवशाली, भाग्यशाली, बलशाली, वैभवशाली।

(10) वान – क्षमावान, शीलवान, धनवान, ज्ञानवान।

(11) मान – आयुष्मान, श्रीमान।

(12) मय – जलमय, पापमय, सुखमय, आनंदमय।

(13) नि – निडर, निकम्मा।

(14) नि: – निर्बल, निर्गुण।

(15) दु: – दुर्बल, दुर्लभ।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

(1) निम्नलिखित विशेषणों का उचित वर्गीकरण कीजिए :

दस	हल्का	हमारे	मीटर	थोड़ा	अनेक
वीर	कम	उसकी	अधिक	प्रसन्न	मेरी
सात	पहला	उदास	ज्यादा	तुम्हारा	एक
थोड़े	किलोग्राम	बहुत	कितने	लीटर	प्यारा

झाड़ी के पास बौना आदमी खड़ा था।

उत्तर :

गुणवाचक विशेषण : प्यारा, वीर, उदास, हल्का, प्रसन्न, बौना।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण : सात, एक, पहला, दस।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : अनेक, कितने, थोड़े।

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण : किलोग्राम, मीटर, लीटर।

अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण : अधिक, कम, बहुत, ज्यादा, थोड़ा।

सार्वनामिक विशेषण : उसकी, हमारे, मेरी, तुम्हारा।

(2) निम्नलिखित विशेषण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(1) पुराना (2) बहुत (3) यह (4) दो (5) आलीशान।

उत्तर : (1) रोहन का पुराना घर गिर गया।

(2) राजस्थान के कुएँ बहुत गहरे होते हैं।

(3) यह कार कब से यहाँ पड़ी है।

(4) मनीष दो पुस्तकें ले आया।

(5) गणेश के मामा के पास आलीशान मकान है।

(3) अधोरेखांकित शब्दों का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :

(1) ज्ञानसिंह को मवेशी पालने का शौक था।

(2) बाहर कोई है।

(3) तुम अब घर जाओ।

(4) गाय को थोड़ा चारा डाल दो।

(5) भारत में सम्राट भिक्षु के समान रहते थे।

(6) अगले दिन हमने बस से गोवा घूमने की योजना बनाई।

(7) दो घंटे बाद सोनाबाई चली गई।

(8) गोवा में खूबसूरत सागर तट है।

(9) लक्ष्मी ने दो दिन से दूध नहीं दिया।

(10) कोई तिरछे नेत्रों से देखता था।

(11) करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं।

(12) उस आश्रम का विज्ञापन अखबार में नहीं दिया जाए।

(13) मेरी पाठशाला सामने ही है।

(14) अब मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

(15) हमारे पास ये छोटी गाड़ी नहीं बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए।

(16) श्रमजीवियों की मजदूरी एवं आमदनी कम है। ***(मार्च '20)***

(17) उन्होंने टूटी अलमारी खोली। ***(नवंबर '20)***

उत्तर : (1) ज्ञानसिंह – संज्ञा (2) कोई – सर्वनाम (3) तुम– सर्वनाम (4) थोड़ा – विशेषण (5) भिक्षु – संज्ञा (6) हमने – सर्वनाम (7) दो – विशेषण (8) खूबसूरत – विशेषण (9) दूध – संज्ञा (10) तिरछे – विशेषण (11) उसकी – सर्वनाम (12) आश्रम – संज्ञा (13) पाठशाला – संज्ञा (14) मैं – सर्वनाम (15) छोटी – विशेषण। (16) कम – विशेषण (17) टूटी – विशेषण।

6414132

2. अव्यय

ध्यान में रखें :

अव्यय के अंतर्गत एक प्रश्न दिया जाएगा। इसमें दो अव्यय शब्द दिए जाएँगे। इनमें से किसी एक **अव्यय का** अपने वाक्य में प्रयोग करना होगा। इसके लिए **1 अंक** है।

वाक्य पढ़िए : (1) यह अच्छा लड़का नहीं है।

(2) ये अच्छे लड़के नहीं हैं।

यहाँ पहले वाक्य के सभी शब्द दूसरे वाक्य में बदल गए हैं। केवल नहीं शब्द अपरिवर्तित है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया में लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार विकार या परिवर्तन होता है। अत: ये **विकारी शब्द** हैं। परंतु नहीं जैसे कुछ शब्दों में विकार (परिवर्तन) नहीं होता। ये **अविकारी शब्द** हैं।

इन्हें **अव्यय** भी कहते हैं। **अव्यय** का अर्थ है – जिनमें व्यय अर्थात परिवर्तन न हो।

निम्नलिखित वाक्य पढ़िए और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए :

(1) रहमान ने गाय को मारा, क्योंकि उसने दूध नहीं दिया था।

(2) रमजानी चुपचाप खड़ी देख रही थी।

(3) करामत गाय को लेकर गऊशाला की ओर चल पड़ा।

(4) अरे लक्ष्मी, चल, गऊशाला पास ही है।

इन वाक्यों में क्योंकि, चुपचाप, की ओर और अरे शब्द अव्यय हैं।

6414132

■ **अव्यय के भेद :**

(1) क्रियाविशेषण अव्यय :

जो अव्यय क्रियाओं की विशेषता बताते हैं, उन्हें **क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं।

उदाहरण : (1) लक्ष्मी तू वहाँ इत्मीनान से रहना।

(2) आजकल लोग ठीक से बताते भी तो नहीं।

(3) मैंने धीरे-धीरे आँखें खोली।

(2) समुच्चयबोधक अव्यय :

जो अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य से, एक शब्द-समूह को दूसरे शब्द-समूह से या एक शब्द को दूसरे शब्द से जोड़ते हैं, उन्हें **समुच्चयबोधक अव्यय** कहते हैं।

उदाहरण : (1) गोवा में उमस थी लेकिन मुंबई जितनी नहीं।

(2) मित्र प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब मेरी टाँग टूटे।

(3) पाँव इधर-उधर गया तो मोच आ जाएगी।

(3) संबंधबोधक अव्यय :

जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उस संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जोड़ते हैं, उन्हें **संबंधबोधक अव्यय** कहते हैं।

उदाहरण : (1) पणजी मांडवी नदी के किनारे स्थित है।

(2) मैं अपने परिवार के साथ इंदौर से गोवा पहुँचा।

(3) हमारे घर के पीछे नदी बहती है।

(4) विस्मयादिबोधक अव्यय :

जिन अव्ययों का संबंध वाक्य के किसी पद से नहीं होता, बल्कि जो अव्यय केवल वक्ता के आनंद, हर्ष, भय, शोक, तिरस्कार, घृणा आदि भाव सूचित करते हैं, उन्हें **विस्मयादिबोधक अव्यय** कहते हैं।

उदाहरण : (1) अबे! धीरे-धीरे चल।

(2) ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।

(3) हे भगवान! बचाओ इस मुसीबत से।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

(1) निम्नलिखित अव्ययों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) की ओर (2) और (3) के साथ (4) तुरंत।

उत्तर :

(1) रामू ने लड़की की ओर इशारा कर कहा।

(2) आज जनता और शासन को एक साथ कार्य करने की आवश्यकता है।

(3) मंगल की शाम को मैं पत्नी के साथ डबली बाबू के घर गया।

(4) राम मेरे दिल की बात तुरंत समझ गया।

---

(2) (1) राम! राम! (2) जरूर (3) एकाएक (4) धीरे-धीरे।

उत्तर :

(1) राम! राम! इस दुश्मनी से कब छुटकारा मिलेगा?

(2) जरूर चले आइए।

(3) एकाएक पैर ठिठक गए।

(4) रतन धीरे-धीरे चल।

---

(3) (1) तेज (2) के पीछे (3) और (4) ओह।

उत्तर :

(1) अरुण गाड़ी बहुत तेज़ चलाता है।

(2) हमारे घर के पीछे स्कूल है।

(3) धनेंद्र और हेमेंद्र भाई हैं।

(4) ओह! कितना बड़ा साँप है।

---

(4) (1) कम (2) परंतु (3) के लिए (4) लेकिन।

उत्तर :

(1) उषा कम खाती है।

(2) रावण बहुत ज्ञानी था परंतु अहंकारी था।

(3) पिताजी अपनी बेटी के लिए रंगों का बक्सा ले आए।

(4) हम बाहर जाने वाले थे, लेकिन नहीं गए।

(5) (1) की ओर (2) हौले-हौले (3) काश (4) के पास।

उत्तर :

(1) मदन बगीचे की ओर गया है।

(2) हवा हौले-हौले चल रही थी।

(3) काश! मोहित आ जाता।

(4) गाड़ी के पास कोई खड़ा था।

(6) (1) जल्दी-जल्दी (2) के साथ (3) शायद (4) इधर।

उत्तर :

(1) रमेश जल्दी-जल्दी चलता है।

(2) करण मनीष के साथ बाजार गया।

(3) आज शायद तूफान आए।

(4) दिलीप इधर आ रहा है।

(7) (1) वाह ***(मार्च '20)*** (2) के साथ ***(मार्च '20)***

(3) प्रायः ***(नवंबर '20)*** (4) अरे! ***(नवंबर '20)***

उत्तर :

(1) वाह! क्या बात कही है आपने।

(2) रतन अपने भाई के साथ पुणे गया।

(3) रोहित कक्षा में प्रायः गैरहाजिर रहता है।

(4) अरे! आप अब तक यहीं हैं।

3. संधि

ध्यान में रखें :

संधि के अंतर्गत कृति पूर्ण करने के लिए कहा जाएगा। इसके अंतर्गत

- एक शब्द का संधि विच्छेद कर उसका भेद लिखना होगा। ***अथवा***
- एक संधि विच्छेद की संधि कर उसका भेद लिखना होगा।

इसके लिए **कुल 1 अंक** है।

6414132

संधि का शाब्दिक अर्थ है मेल या जोड़ना। जब दो निकटवर्ती ध्वनियाँ आपस में मिलती हैं, उसे **संधि** कहते हैं। **जैसे –**

दया + आनंद = दयानंद

धर्म + अर्थ = धर्मार्थ।

■ **संधि तीन प्रकार की होती है :**

(i) स्वर संधि (ii) व्यंजन संधि और (iii) विसर्ग संधि।

(1) स्वर संधि : पास-पास आने पर दो स्वरों में आने वाले परिवर्तन को **स्वर संधि** कहते हैं।

स्वर संधि के भेद :

(1) **दीर्घ संधि :**

अ + अ = आ	शब्द	+	अर्थ	शब्दार्थ
आ + आ = आ	हिम	+	आलय	हिमालय
इ + इ = ई	रवि	+	इंद्र	रवींद्र
इ + ई = ई	कपि	+	ईश	कपीश

(2) **गुण संधि :**

अ + इ = ए	सुर	+	इंद्र	सुरेंद्र
अ + ई = ए	गण	+	ईश	गणेश
आ + उ = ओ	महा	+	उत्सव	महोत्सव
आ + ऋ = अर्	महा	+	ऋषि	महर्षि

(3) **वृद्धि संधि :**

आ + ए = ऐ	सदा	+	एव	सदैव
अ + औ = औ	वन	+	औषधि	वनौषधि
अ + ए = ऐ	लोक	+	एषणा	लोकैषणा
आ + ओ = औ	महा	+	ओज	महौज

(4) **यण संधि :**

उ + अ = व	सु	+	अच्छ	स्वच्छ
इ + अ = य	यदि	+	अपि	यद्यपि
ई + आ = या	नदी	+	आगम	नद्यागम
उ + आ = वा	सु	+	आगत	स्वागत

(5) **अयादि संधि :**

ए + अ = अय्	शे	+	अन	शयन
ऐ + अ = अय्	गै	+	अक	गायक
ओ + अ = अव्	पो	+	अन	पवन
औ + अ = आव	भौ	+	उक	भावुक

(2) व्यंजन संधि : व्यंजन और स्वर अथवा व्यंजन और व्यंजन के योग से होने वाले परिवर्तन को **व्यंजन संधि** कहते हैं।

उदाहरण :

(1) **व्यंजन + स्वर**

दिक्	+	गज	=	दिग्गज
चित्	+	आनंद	=	चिदानंद
अच्	+	आदि	=	अजादि

(2) **व्यंजन + व्यंजन**

सत्	+	जन	=	सज्जन
सम्	+	चार	=	संचार
वाक्	+	जाल	=	वाग्जाल
तत्	+	लीन	=	तल्लीन
निर्	+	रोग	=	नीरोग

(3) विसर्ग संधि : विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं।

उदाहरण :

निः	+	चय	=	निश्चय
दुः	+	गति	=	दुर्गति
तपः	+	बल	=	तपोबल
मनः	+	योग	=	मनोयोग

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

• **कृति पूर्ण कीजिए :**

(1)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
दिग्विजय	------ + ------	----------

अथवा

----------	गुरु + उपदेश	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
दिग्विजय	**दिक् + विजय**	**व्यंजन संधि**

अथवा

गुरूपदेश	गुरु + उपदेश	**स्वर संधि**

(2)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	दुः + दिन	----------

अथवा

अधिकांश	----- + -----	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
दुर्दिन	दुः + दिन	**विसर्ग संधि**

अथवा

अधिकांश	**अधिक + अंश**	**स्वर संधि**

(3)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
अत्याचार	----- + -----	----------

अथवा

----------	निः + जीव	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
अत्याचार	**अति + आचार**	**स्वर संधि**

अथवा

निर्जीव	निः + जीव	**विसर्ग संधि**

(4)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
सूर्योदय	---- + ----	----------

अथवा

----------	दुः + जन	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
सूर्योदय	**सूर्य + उदय**	**स्वर संधि**

अथवा

दुर्जन	दुः + जन	**विसर्ग संधि**

(5)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निष्कपट	----- + -----	----------

अथवा

----------	सत् + भावना	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निष्कपट	**निः + कपट**	**विसर्ग संधि**

अथवा

सद्भावना	सत् + भावना	**व्यंजन संधि**

6414132

(6)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निर्भय	----- + -----	----------

अथवा

----------	विद्या + अर्थी	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निर्भय	**निः + भय**	**विसर्ग संधि**

अथवा

विद्यार्थी	विद्या + अर्थी	**स्वर संधि**

(7)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	दुः + लभ	----------

अथवा

दिग्गज	----- + -----	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
दुर्लभ	दुः + लभ	**विसर्ग संधि**

अथवा

दिग्गज	**दिक् + गज**	**व्यंजन संधि**

(8) *(मार्च '20)*

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
----------	अंतः + चेतना	----------

अथवा

सज्जन	----- + -----	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
अतश्चेतना	**अंतः + चेतना**	**विसर्ग संधि**

अथवा

सज्जन	सत् + जन	**व्यंजन संधि**

(9) *(नवंबर '20)*

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निस्संदेह	----- + -----	----------

अथवा

----------	भानु + उदय	----------

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
निस्संदेह	निः + संदेह	**विसर्ग संधि**

अथवा

भानूदय	भानु + उदय	**स्वर संधि**

64141132

4. सहायक क्रिया

ध्यान में रखें :

सहायक क्रिया के अंतर्गत दो वाक्य दिए जाएँगे। इन वाक्यों में से किसी एक सहायक क्रिया को पहचानकर उसका मूल रूप लिखना होगा। इसके लिए **1 अंक** है।

- **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित क्रियाओं को देखिए :**

(1) सार्वजनिक अस्पताल का नाम सुनकर मैं काँप उठा।

(2) गोवा का नाम सुनते ही मन प्रसन्न हो गया।

(3) अब समुद्र भयावह दिखने लगा था।

इन वाक्यों में काँप उठा, हो गया, तथा दिखने लगा था संयुक्त क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं में काँपना, होना तथा दिखना मुख्य क्रियाएँ हैं जबकि उठना, जाना, तथा लगना सहायक क्रियाएँ हैं।

सहायक क्रियाएँ कुछ विशेष भाव या अर्थ व्यक्त करने के लिए मुख्य क्रियाओं की सहायता करती हैं। वे निम्नानुसार विशेष भावों को दर्शाती हैं :

(1) कुत्ते जल पक्षियों को देखकर दौड़ने लगे। (यहाँ लगना क्रिया का प्रयोग कार्य का आरंभ सूचित करता है।)

(2) मुझे दस दिन अस्पताल में रहना पड़ेगा। (पड़ना क्रिया आवश्यकता या मजबूरी सूचित करता है।)

(3) गाय को चारा देना चाहिए। (चाहना क्रिया कर्तव्यबोधक है।)

(4) सिरचन ऐसी शीतलपाटी तुम ही बना सकते हो। (यहाँ सकना क्रिया सामर्थ्य का बोध कराती है।)

(5) काकी, मैं कलेवा कर चुका हूँ। (यहाँ चुकना क्रिया का प्रयोग पूर्णताबोधक है।)

(6) खूबसूरत समंदर देखते ही मैं उससे लिपट गया। (जाना क्रिया आकस्मिक भाव का बोध कराती है।)

(7) रोज सवेरे घूमा करो। (**करना** क्रिया **अभ्यासबोधक** है।)

(8) मैं बड़ी कठिनाई से सिरचन को मना पाया। (पाना क्रिया प्राप्तिबोधक है।)

(9) मँझली भाभी का मुँह फूला रहेगा। (रहना क्रिया सातत्यबोधक है।)

इस प्रकार लगना, पड़ना, चाहना, सकना, चुकना, जाना, करना, पाना, रहना आदि क्रियाओं का प्रयोग संयुक्त क्रियाओं में सहायक क्रियाओं के रूप में होता है। ऊपर यह बताया गया है कि ये क्रियाएँ कौन-से भाव प्रकट करती हैं।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रियाएँ पहचानकर उनका मूल रूप लिखिए :**

(1) टैक्सी सड़क पर तेजी से दौड़ पड़ी।

(2) करामत लक्ष्मी को सड़क पर ले आया।

(3) बच्चे रेत का घर बनाने में जुट गए।

(4) लक्ष्मी को बेच दो।

(5) बच्चे कुर्सी-मेज पर चढ़कर खेलने लगे।

(6) लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

(7) रहमान ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।

(8) इसके बाद हम लोग दिन भर पणजी शहर देखते रहे।

(9) उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया।

(10) गरम-गरम भून कर मसाला लगा कर दूँगा।

(11) उसका निर्वाह चल सके।

(12) खयाल आते ही मैं काँप उठा।

(13) उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा।

(14) (i) एक टैक्सी कमरे के सामने आकर रुकी।

(ii) मैं आपके बारे में ही सोचता रहा।

(15) (i) मैं यह घर छोड़कर कहीं चली जाऊँगी।

(ii) वह धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठी।

(16) (i) रमजानी चुप खड़ी आगंतुक की बातें सुनती रही।

(ii) रूपा का हृदय सन्न हो गया।

(17) (i) टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी।

(ii) यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी गईं। ***(मार्च '20)***

(18) (i) मैं गोवा को पूरी तरह नही समझ पाया।

(ii) काकी घटनास्थल पर आ पहुँची। ***(नवंबर '20)***

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल रूप
1. पड़ी –	पड़ना
2. आया –	आना
3. गए –	जाना
4. दो –	देना
5. लगे –	लगना
6. लीजिए –	लेना
7. है –	होना
8. रहे –	रहना
9. लिया –	लेना
10. दूँगा –	देना
11. सके –	सकना
12. उठा –	उठना
13. पड़ा –	पड़ना
14. (i) रुकी –	रुकना
(ii) रहा –	रहना
15. (i) जाऊँगी –	जाना
(ii) बैठी –	बैठना
16. (i) रही –	रहना
(ii) गया –	जाना
17. (i) पड़ी –	पड़ना
(ii) गईं –	जाना
18. (i) पाया –	पाना
(ii) पहुँची –	पहुँचना

6414132

5. प्रेरणार्थक क्रिया

ध्यान में रखें :

प्रेरणार्थक क्रिया के अंतर्गत दो क्रियाएँ दी जाएँगी। उनमें से किसी एक क्रिया का प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखना होगा। इसके लिए **1 अंक** है।

- **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ देखिए :**

(1) गोपाल कहानी लिखता है। पिता जी गोपाल से कहानी लिखाते हैं। पिता जी शिक्षक द्वारा गोपाल से कहानी लिखवाते हैं।

(2) सुमन सेब खाती है। माँ सुमन को सेब **खिलाती है।** माँ नौकरानी द्वारा सुमन को सेब खिलवाती है।

इन वाक्यों में 'लिखना' और 'खाना' क्रियाओं के दो-दो रूप हैं। मूल क्रियाएँ 'लिखना' और 'खाना' हैं। उन्हीं से दूसरे रूप 'लिखाना' तथा 'लिखवाना' और 'खिलाना' तथा 'खिलवाना' बने हैं।

यहाँ 'लिखाना' तथा 'खिलाना' प्रथम प्रेरणार्थक रूप हैं और 'लिखवाना' तथा 'खिलवाना' द्वितीय प्रेरणार्थक रूप हैं।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाने के नियम नीचे दिए गए हैं :

प्रथम प्रेरणार्थक में कर्ता क्रिया करने में भागीदार होता है। द्वितीय प्रेरणार्थक में यह भागीदारी केवल प्रेरणा रूप में होती है।

जिस क्रिया से यह मालूम हो कि कर्ता दूसरे के लिए काम कर रहा है, उसे **प्रेरणार्थक क्रिया** कहते हैं।

(1) मूल क्रिया के अंत में **आ** जोड़ने से **प्रथम प्रेरणार्थक** और **वा** जोड़ने से **द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनता है।**

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
चलना	चलाना	चलवाना
चमकना	चमकाना	चमकवाना
मचना	मचाना	मचवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
कहना	कहना, कहलाना	कहवाना, कहलवाना
डरना	डराना	डरवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
लगना	लगाना	लगवाना

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
उठना	उठाना	उठवाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
फैलना	फैलाना	फैलवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना
छिपना	छिपाना	छिपवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना

6414132

(2) दो अक्षरों की क्रिया में **ए** अथवा **ओ** को छोड़कर आदि का अन्य दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है।

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
जागना	जगाना	जगवाना
जीतना	जिताना	जितवाना
डूबना	डुबाना	डुबवाना

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
लेटना	लिटाना	लिटवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना
भीगना	भिगाना	भिगवाना

(3) एक अक्षरवाली क्रिया के अंत में **ला** और **लवा** लगाने से एवं दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर देने से प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनते हैं।

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
खाना	खिलाना	खिलवाना
छूना	छुलाना	छुलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
पीना	पिलाना	पिलवाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना
जीना	जिलाना	जिलवाना

(4) कुछ क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक रूप **ला** अथवा **आ लगाने से बनते हैं,** परंतु द्वितीय प्रेरणार्थक में **वा** लगाया जाता है।

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
दिखना	दिखाना, दिखलाना	दिखवाना
कहना	कहाना, कहलाना	कहलवाना
सीखना	सिखाना, सिखलाना	सिखवाना
सूखना	सुखाना, सुखलाना	सुखवाना
बैठना	बिठाना, बैठाना	बैठवाना

(5) कुछ क्रियाओं से बने हुए दोनों प्रेरणार्थक रूप समानार्थी होते हैं।

उदाहरण :

काटना – कटाना अथवा कटवाना
खुलना – खुलाना अथवा खुलवाना
गड़ना – गड़ाना अथवा गड़वाना
देना – दिलाना अथवा दिलवाना
बाँधना – बँधाना अथवा बँधवाना
रखना – रखाना अथवा रखवाना
सिलना – सिलाना अथवा सिलवाना।

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

• **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :** (**सूचना** : उत्तर क्रियाओं के साथ दिए गए हैं।)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(1) रीझना	रिझाना	रिझवाना
(2) लेटना	लिटाना	लिटवाना
(3) उतरना	उतराना	उतरवाना
(4) फँसना	फँसाना	फँसवाना
(5) रोना	रुलाना	रुलवाना
(6) जीना	जिलाना	जिलवाना
(7) जलना	जलाना	जलवाना
(8) उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
(9) भूलना	भुलाना	भुलवाना ***(नवंबर '20)***
(10) काटना	कटाना	कटवाना
(11) बाँधना	बँधाना	बँधवाना
(12) सीना	सिलाना	सिलवाना
(13) छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना
(14) लौटना	लौटाना	लौटवाना
(15) जीना	जिलाना	जिलवाना
(16) लूटना	लुटाना	लुटवाना
(17) उठना	उठाना	उठवाना
(18) सुखना	सुखाना	सुखवाना
(19) देना	दिलाना	दिलवाना
(20) फैलना	फैलाना	फैलवाना ***(मार्च '20; नवंबर '20)***
(21) लिखना	लिखाना	लिखवाना ***(मार्च '20)***

6. मुहावरे

ध्यान में रखें :

मुहावरे के अंतर्गत निम्नलिखित दो प्रश्न होंगे।

- मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करना *अथवा*
- अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखना : इसके लिए **1 अंक** है।

मुहावरों का जन्म लोकजीवन में होने वाली आम बातचीत से हुआ है। कभी-कभी हम किसी बात को लाक्षणिक भाषा में कहते हैं। यही बात धीरे-धीरे मुहावरे का रूप धारण कर लेती है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आ जाती है। एक मुहावरा उतना कह जाता है, जितना हम लंबी-चौड़ी भूमिका बाँधकर भी नहीं कह सकते।

- **निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :**

(1) गोपाल प्रसाद बड़े चालाक हैं, जब देखो स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं।
गोपाल प्रसाद बड़े चालाक हैं, जब देखो अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।

(2) जो व्यक्ति दूसरों के लिए बाधा उत्पन्न करता है, उसका कभी भला नहीं हो सकता।
जो व्यक्ति दूसरों के लिए काँटे बिछाता है, उसका कभी भला नहीं हो सकता।

(3) तिलक व सुभाष के नारों ने निराश भारतीयों के शरीर में जान डाल दी।
तिलक व सुभाष के नारों ने निराश भारतीयों के शरीर में प्राण फूँक दिए।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

(1) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) **कान के परदे फाड़ना।**
अर्थ : बहुत शोर करना।
वाक्य : लाउड स्पीकर की आवाज कान के परदे फाड़ रही थी।

(2) **धावा बोलना।**
अर्थ : चढ़ाई करना।
वाक्य : भारतीय जवानों ने पाकिस्तानी घुसपैठियों पर धावा बोल दिया।

(3) **चकमा देना।**
अर्थ : धोखे में डालना।
वाक्य : चोर पुलिस को चकमा देकर भाग निकला।

(4) **दो पाटों के बीच आना।**
अर्थ : बुरी तरह फँस जाना।
वाक्य : एक ओर गाँववाले तथा दूसरी ओर पुलिस, डाकू दो पाटों के बीच आ गए।

(5) **अपनी हाँके जाना।**
अर्थ : अपनी ही बात कहे जाना।
वाक्य : रमन की आदत है बस अपनी ही हाँके जाता है, दूसरों की सुनता ही नहीं।

(6) **खून का घूँट पीना।**
अर्थ : मन मसोसकर रह जाना।
वाक्य : जमींदार की गालियाँ सुनकर सिरचन को गुस्सा तो बहुत आया, पर वह खून का घूँट पीकर रह गया।

(7) **भाग्य जागना।**
अर्थ : स्थिति में सुधार होना।
वाक्य : दर-दर की ठोकरें खाने के बाद नईम के भाग्य जागे और उसे एक कारखाने में अच्छी नौकरी मिल गई।

(8) **फूट-फूटकर रोना।**
अर्थ : जोर-जोर से रोना।
वाक्य : खिलौना टूटने पर बच्चा फूट-फूटकर रो पड़ा।

(9) **टाँग अड़ाना।**
अर्थ : रुकावट/बाधा उत्पन्न करना।
वाक्य : मेरे पड़ोसी की मेरे हर काम में टाँग अड़ाने की आदत है।

(10) **ठेस लगना।** ***(नवंबर '20)***
अर्थ : मानसिक आघात लगना।
वाक्य : ईमानदार मुनीम जी को सेठ जी के बेटे ने ख्वाहमख्वाह चोर कह दिया, तो मुनीम जी को भारी ठेस लगी।

(11) **शेखी बघारना।** ***(मार्च '20)***
अर्थ : आत्मप्रशंसा करना।
वाक्य : कुछ लोगों को शेखी बघारने की आदत होती है।

(12) **गला फाड़ना।**
अर्थ : शोर करना, चिल्लाना।
वाक्य : चोट लगने पर बच्चा गला फाड़कर रोने लगा।

(13) **मुँह लटकाना।**
अर्थ : निराश होना।
वाक्य : मनचाहा खिलौना न मिलने पर छोटी राधा मुँह लटकाकर बैठ गई।

6414132

(14) **कलेजे में हूक उठना।** ***(नवंबर '20)***

अर्थ : मन में वेदना उत्पन्न होना।

वाक्य : बाढ़ में फँसे हुए लोगों की हालत देखकर कलेजे में हूक उठ गई।

(15) **निछावर करना।** ***(मार्च '20)***

अर्थ : त्यागना।

वाक्य : चंद्रशेखर आज़ाद ने स्वतंत्रता संग्राम में जान निछावर कर दी।

(2) रेखांकित वाक्यांशों के स्थान पर उचित मुहावरों का प्रयोग कीजिए :

[**मुहावरे :** *मुँह फुलाना, मुँह लटकाना, दाल में कुछ काला होना, पत्थर की लकीर, तिल का ताड़ बनाना, बाएँ हाथ का खेल, दाद देना, बोलबाला होना* ***(मार्च '20; नवंबर '20)****, प्रशंसा करना* ***(नवंबर '20)****, टाँग अड़ाना, दुम हिलाना।* ***(मार्च '20)***]

वाक्य-प्रयोग :

(1) उमा आज सुबह से ही नाराज है।

(2) आजकल नवनीत किसी से बात ही नहीं करता। अवश्य कुछ संदेह की बात है।

(3) हमारे पिता जी की प्रत्येक बात हम भाई-बहनों के लिए पक्की बात होती है।

(4) शुभजीत की बात का विश्वास मत करना, उसकी तो बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहने की आदत है।

(5) सलिल के लिए मेडिकल की प्रवेश परीक्षा बहुत आसान काम है।

(6) माँ की डाँट खाकर अनीश उदास हो गया।

(7) कलाकार की बनाई उस सुंदर मूर्ति की देखने वाले तारीफ करते थे।

(8) आशा को अपनी शेखी बघारना पसंद है।

(9) कुछ लोग अच्छे कामों में बाधा डालते हैं।

(10) सिरचन को बुलाओ, चापलूसी करता हुआ हाजिर हो जाएगा।

(11) आजकल मोबाइल का प्रभाव है।

उत्तर : (1) उमा आज सुबह से ही मुँह फुलाए बैठी है।

(2) आजकल नवनीत किसी से बात ही नहीं करता। अवश्य दाल में कुछ काला है।

(3) हमारे पिता जी की प्रत्येक बात हम भाई-बहनों के लिए पत्थर की लकीर होती है।

(4) शुभजीत की बात का विश्वास मत करना, उसकी तो तिल का ताड़ बनाने की आदत है।

(5) सलिल के लिए मेडिकल की प्रवेश परीक्षा बाएँ हाथ का खेल है।

(6) माँ की डाँट खाकर अनीश ने मुँह लटका लिया।

(7) कलाकार की बनाई उस सुंदर मूर्ति की देखने वाले दाद देते थे।

(8) आशा को अपनी प्रशंसा करना पसंद है।

(9) कुछ लोग अच्छे कामों में टाँग अड़ाते हैं।

(10) सिरचन को बुलाओ, दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा।

(11) आजकल मोबाइल का बोलबाला है।

6414132

7. कारक

ध्यान में रखें :

कारक के अंतर्गत दो वाक्य दिए जाएँगे, जिनमें से कोई एक कारक पहचानकर उसका भेद लिखना है। इसके लिए **1 अंक** है।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध दिखाया जाए, उसे **कारक** कहते हैं। कारक को **परसर्ग** या **विभक्ति** भी कहते हैं।

■ **कारक के आठ भेद होते हैं :**

(1) कर्ता कारक : क्रिया (कार्य) करने वाला। **जैसे** – रहमान ने गाय को मारा।

(2) कर्म कारक : जिस पर क्रिया (कार्य) का प्रभाव पड़े। **जैसे** – मानू ने सिरचन को पान दिया।

(3) करण कारक : जिसकी सहायता से क्रिया (कार्य) हो। **जैसे** – सिरचन ने कुश से आसनी बनाई।

(4) संप्रदान कारक : जिसके लिए क्रिया (कार्य) की जाए। **जैसे** – करामत गाय के लिए सानी तैयार करने लगा।

(5) अपादान कारक : जिससे किसी वस्तु के दूर हटने या अलग होने का बोध हो। **जैसे** – गऊशाला घर से दो किलोमीटर दूर है।

(6) संबंध कारक : जिससे संज्ञा का किसी अन्य संज्ञा से संबंध प्रकट हो। **जैसे** – लक्ष्मी ज्ञान सिंह की निशानी थी।

(7) अधिकरण कारक : जिस शब्द से क्रिया (कार्य) के आधार का बोध हो। **जैसे** –

(अ) करामत अली ने लक्ष्मी की पीठ पर दवा लगाई।

(ब) दिल्ली शहर में एक घर ढूँढ़ रहा हूँ।

(8) संबोधन कारक : जिस शब्द के द्वारा किसी को पुकारा जाए। **जैसे** – अरे प्रेमा! जरा पान भिजवाना।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

• **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :**

(1) लक्ष्मी ने चारा खा लिया है।

(2) सिरचन छत पर गया है।

(3) मानू का दूल्हा इधर आ रहा है।

(4) अखबार में यह समाचार छपा है।

(5) माँ ने सिरचन को खाना दिया।

(6) इंदौर से हम गोवा गए।

(7) करामत ने गाय के लिए सानी तैयार की।

(8) उमा ने यह पेंटिंग बनाई है।

(9) सोनाबाई का लड़का मेज पर चढ़ गया।

(10) रमजानी ने लक्ष्मी की पीठ सहलाई।

(11) मैं ड्राइवर को बुला लाया।

(12) घर में दो पत्रिकाएँ मँगाते थे मेरे पितामह।

(13) उसे हल करने के लिए अनेक घनघोर युद्ध हुए।

(14) चाची अपने कमरे से निकल रही थी।

(15) दूध में कोई मिठाई न मिले, तो कोई बात नहीं।

(16) जीवन निर्वाह या धन कमाने के लिए अनेक व्यवसाय चल रहे हैं।

(17) दिल में ठेस लगी है।

(18) करामत अली ने हौका भरते हुए कहा। ***(मार्च '20)***

(19) पर्यटन में बहुत ही आनंद मिला। ***(मार्च '20)***

(20) हमारे शहर में एक कवि हैं। ***(नवंबर '20)***

(21) उन्हें पुस्तक ले आने के लिए कहा। ***(नवंबर '20)***

उत्तर :

(1) लक्ष्मी ने – कर्ता कारक।

(2) छत पर – अधिकरण कारक।

(3) मानू का – संबंध कारक।

(4) अखबार में – अधिकरण कारक।

(5) माँ ने – कर्ता कारक।

(6) इंदौर से – अपादान कारक।

(7) गाय के लिए – संप्रदान कारक।

(8) उमा ने – कर्ता कारक।

(9) मेज पर – अधिकरण कारक।

(10) रमजानी ने – कर्ता कारक।

(11) ड्राइवर को – कर्म कारक।

(12) घर में – अधिकरण कारक।
मेरे पितामह – कर्ता कारक।

(13) के लिए – संप्रदान कारक।

(14) कमरे से – अपादान कारक।

(15) दूध में – अधिकरण कारक।

(16) के लिए – संप्रदान कारक।

(17) में – अधिकरण कारक।

(18) ने – कर्ता कारक।

(19) में – अधिकरण कारक।

(20) में – अधिकरण कारक।

(21) के लिए – संप्रदान कारक।

6114132

8. विराम-चिह्न

ध्यान में रखें :

विराम-चिह्न के अंतर्गत विराम-चिह्न रहित कोई वाक्य दिया जाएगा। इसमें यथास्थान उचित विराम-चिह्न लगाने होंगे। इसके लिए **1 अंक** है।

विराम का अर्थ है रुकना या विश्राम लेना। हम बातचीत करते समय अपनी बात पर बल देने के लिए या समझाने के लिए थोड़ी देर रुकते हैं। रुकने की इस प्रक्रिया को विराम कहते हैं। लिखते समय इस प्रक्रिया के लिए कुछ निश्चित चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें **विराम-चिह्न** कहा जाता है।

जैसे – घोड़े को रोको, मत जाने दो।

घोड़े को रोको मत, जाने दो।

इन दोनों वाक्यों में अलग-अलग स्थान पर विरामचिह्न लगाने से इनका भाव एक जैसा नहीं रहा।

■ **विराम-चिह्नों के अनेक प्रकार होते हैं :**

(1) पूर्ण विराम (।) : इसका प्रयोग वाक्य के पूर्ण होने पर किया जाता है। **जैसे** – दूध बेचना ज्ञान सिंह का धंधा नहीं था।

(2) अल्प विराम (,) : पढ़ते अथवा लिखते समय थोड़ी देर रुकने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे – अरे हाँ, देखो, उमा से कह देना जरा करीने से आए।

(3) अर्ध विराम (;) : जहाँ अल्प विराम से कुछ अधिक देर रुकना हो, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है। **जैसे** – सभा-सोसायटियों में जाते हैं; मगर चाहते हैं कि लड़की ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

(4) प्रश्नसूचक चिह्न (?) : जिस वाक्य में कोई प्रश्न आदि हो, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे – यह गाय क्या आप लोगों की है?

(5) योजक चिह्न (-) : दो शब्दों को जोड़ने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे – खुद पढ़े-लिखे हैं, सभा-सोसायटियों में जाते हैं।

(6) विस्मयसूचक चिह्न (!) : हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय, भय आदि भावों को व्यक्त करते हैं, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे – ऐसा रोमांचक दृश्य पहली बार देखा। सचमुच अद्भुत! आनंद आ गया।

(7) इकहरा उद्धरण चिह्न (' ') : किसी व्यक्ति का नाम, उपनाम या किसी पुस्तक का नाम लिखते समय इसका प्रयोग किया जाता है। **जैसे** – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' मुक्त छंद के प्रवर्तक थे।

(8) दोहरा उद्धरण चिह्न ("") : जब किसी के कथन को ज्यों का त्यों लिखना हो, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है। **जैसे** – "मैं पहले ही पूछ लेता, "भोग क्या-क्या लगेगा।"

(9) विवरण चिह्न (:-) : जब किसी वाक्यांश के बारे में कुछ विस्तार से कहना हो या किसी पद की व्याख्या करनी हो तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे – विशेषण के निम्नलिखित भेद होते हैं : – गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक और सार्वनामिक।

(10) कोष्ठक चिह्न [()] : किसी पद का अर्थ प्रकट करने के लिए अथवा नाटकों में पात्र के भाव व्यक्त करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे : रामस्वरूप : (चौंककर) बिजनेस? (समझकर) ओह, अच्छा, अच्छा।

(11) लाघव चिह्न (.) : जो शब्द बहुत प्रसिद्ध हो या जिसे बार-बार लिखने की आवश्यकता पड़े, उसका पहला अक्षर लिखकर आगे लाघव चिह्न लगा देते हैं।

जैसे – पंडित के स्थान पर पं., जिला के स्थान पर जि., डॉक्टर के स्थान पर डॉ. लिख देते हैं।

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

• **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(1) लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन सी दौड़ गई

(2) तो दूध न देने की सजा उसे लाठियों से दी गई

(3) सिरचन ने मुस्कराकर कहा, यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी

(4) जाने दे बेटी जी छोटा न कर

(5) ऐसी कारीगरी ऐसी बारीकी ऐसा काम पहली बार देख रहा था

(6) प्रिय प्रवास खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है

(7) हम आपस में कितना भी लड़ें, टकराएँ बाहरी शत्रु के लिए एक ही हैं

(8) गोपाल प्रसाद उमा से तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी सीखी है

(9) "जी हाँ मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ"

(10) देखा एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेट कर वह सोच रहा है

(11) काकी ने पूछा–क्या तुम्हारी अम्मा ने दी है

(12) घूम फिर कर शाम को हम कलिंगवुड बीच पर पहुँचे

(13) मैंने कराहते हुए पूछा "मैं कहाँ हूँ" ***(मार्च '20; नवंबर '20)***

(14) वाह वाह खूब सोचा आपने

उत्तर : (1) लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।

(2) "तो दूध न देने की सजा उसे लाठियों से दी गई?"

(3) सिरचन ने मुस्कराकर कहा, "यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी।"

(4) जाने दे बेटी! जी छोटा न कर!

(5) ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, ऐसा काम पहली बार देख रहा था।

(6) 'प्रिय प्रवास' खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है।

(7) हम आपस में कितना भी लड़ें, टकराएँ; बाहरी शत्रु के लिए एक ही हैं।

(8) गोपाल प्रसाद (उमा से) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी सीखी है?

(9) "जी हाँ! मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ।"

(10) देखा, एक फटी हुई शीतल पाटी पर लेट कर वह सोच रहा है।

(11) काकी ने पूछा–"क्या तुम्हारी अम्मा ने दी है?"

(12) घूम-फिर कर शाम को हम कलिंगवुड बीच पर पहुँचे।

(13) मैंने कराहते हुए पूछा, "मैं कहाँ हूँ?"

(14) वाह, वाह! खूब सोचा आपने।

9. काल परिवर्तन

ध्यान में रखें :

काल परिवर्तन के अंतर्गत एक प्रश्न दिया जाएगा। इसमें तीन वाक्य दिए जाएँगे। इनमें से किन्हीं दो वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कर वाक्य फिर से लिखना है।

इसके लिए **कुल 2 अंक** हैं।

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के करने या होने के समय का बोध होता है, उसे **काल** कहते हैं।

जैसे – गाता है, गाया, गाएगा आदि।

(अ) सामान्य वर्तमानकाल, सामान्य भूतकाल, सामान्य भविष्यकाल

(1) सामान्य वर्तमानकाल : क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य बोलते या लिखते समय होता है, उसे **सामान्य वर्तमानकाल** कहते हैं। क्रिया के इस रूप से यह पता नहीं चलता कि क्रिया पूर्ण हुई अथवा अपूर्ण रही है। **जैसे** –

(1) करामत लक्ष्मी को चारा **देता है।**

(2) मुहल्लेवाले फुरसत से **आते हैं।**

(2) सामान्य भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य बोलते या लिखते समय समाप्त हुआ, उसे **सामान्य भूतकाल** कहते हैं। क्रिया के इस रूप से यह पता नहीं चलता कि क्रिया पूर्ण हुई अथवा अपूर्ण रही है। **जैसे** –

(1) ऑफिस के बड़े बाबू **आए।** (2) बच्चे खेलने **लगे।**

(3) सामान्य भविष्य काल : क्रिया के जिस रूप से यह मालूम होता है कि कार्य आने वाले समय में होगा, उसे **सामान्य भविष्यकाल** कहते हैं। **जैसे** –

(1) आज फिर कोई दुर्घटना **होगी।**

(2) लक्ष्मी को कुछ लोग **खरीद लेंगे।**

6414132

सामान्य कालों के रूप इस प्रकार होते हैं :

काल	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
1. सामान्य वर्तमानकाल	मैं फल **खाता हूँ।** तू फल **खाता है।** वह फल **खाता है।**	हम फल **खाते हैं।** * तुम फल **खाते हो।** * आप फल **खाते हैं।** वे फल **खाते हैं।**	मैं फल **खाती हूँ।** तू फल **खाती है।** वह फल **खाती है।**	हम फल **खाती हैं।** तुम फल **खाती हो।** आप फल **खाती हैं।** वे फल **खाती हैं।**
2. सामान्य भूतकाल	मैंने फल **खाया।** तूने फल **खाया।** उसने फल **खाया।**	हमने फल **खाया।** तुमने फल **खाया।** आपने फल **खाया।** उन्होंने फल **खाया।**	मैंने फल **खाया।** तूने फल **खाया।** उसने फल **खाया।**	हमने फल **खाया।** तुमने फल **खाया।** आपने फल **खाया।** उन्होंने फल **खाया।**

3. सामान्य भविष्यकाल	मैं फल **खाऊँगा।** तू फल **खाएगा।** वह फल **खाएगा।**	हम फल **खाएँगे।** तुम फल **खाओगे।** आप फल **खाएँगे।** वे फल **खाएँगे।**	मैं फल **खाऊँगी।** तू फल **खाएगी।** वह फल **खाएगी।**	हम फल **खाएँगी।** तुम फल **खाओगी।** आप फल **खाएँगी।** वे फल **खाएँगी।**

*** बहुत्व को स्पष्ट करने के लिए द्वितीय पुरुष बहुवचन के रूपों के साथ 'लोग' शब्द का भी प्रयोग होता है। जैसे –**

(1) तुम लोग फल खाते हो। (2) आप लोग फल खाते हैं।

(ब) अपूर्ण वर्तमानकाल और अपूर्ण भूतकाल

(1) अपूर्ण वर्तमानकाल : क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया वर्तमानकाल में चल रही है, पूर्ण नहीं हुई है, उसे **अपूर्ण वर्तमान-काल** की क्रिया कहते हैं। **जैसे –**

(1) आप इतनी देर से नाप-तौल **कर रहे हैं।** (2) सोनाबाई का लड़का बॉक्सिंग की प्रैक्टिस **कर रहा है।**

(2) अपूर्ण भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया भूतकाल में आरंभ हुई, पर बोलते या लिखते समय पूर्ण नहीं हुई है, उसे **अपूर्ण भूतकाल** की क्रिया कहते हैं। **जैसे –**

(1) मानू फूट-फूटकर **रो रही थी।** (2) सोनाबाई की लड़की कथकली **कर रही थी।**

• **अपूर्ण वर्तमानकाल और अपूर्ण भूतकाल के रूप इस प्रकार होते हैं :**

काल	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
1. अपूर्ण वर्तमानकाल	मैं फल **खा रहा हूँ।** तू फल **खा रहा है।** वह फल **खा रहा है।**	हम फल **खा रहे हैं।** तुम फल **खा रहे हो।** आप फल **खा रहे हैं।** वे फल **खा रहे हैं।**	मैं फल **खा रही हूँ।** तू फल **खा रही है।** वह फल **खा रही है।**	हम फल **खा रही हैं।** तुम फल **खा रही हो।** आप फल **खा रही हैं।** वे फल **खा रही हैं।**
2. अपूर्ण भूतकाल	मैं फल **खा रहा था।** तू फल **खा रहा था।** वह फल **खा रहा था।**	हम फल **खा रहे थे।** तुम फल **खा रहे थे।** आप फल **खा रहे थे।** वे फल **खा रहे थे।**	मैं फल **खा रही थी।** तू फल **खा रही थी।** वह फल **खा रही थी।**	हम फल **खा रही थीं।** तुम फल **खा रही थीं।** आप फल **खा रही थीं।** वे फल **खा रही थीं।**
3. अपूर्ण भविष्यकाल	मैं फल **खाता रहूँगा।** तू फल **खाता रहेगा।** वह फल **खाता रहेगा।**	हम फल **खाते रहेंगे।** तुम फल **खाते रहोगे।** आप फल **खाते रहेंगे।** वे फल **खाते रहेंगे।**	मैं फल **खाती रहूँगी।** तू फल **खाती रहेगी।** वह फल **खाती रहेगी।**	हम फल **खाती रहेंगी।** तुम फल **खाती रहोगी।** आप फल **खाती रहेंगी।** वे फल **खाती रहेंगी।**

6414132

(क) पूर्ण वर्तमानकाल और पूर्ण भूतकाल

(1) पूर्ण वर्तमानकाल : क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि भूतकाल में आरंभ हुआ कार्य वर्तमानकाल में समाप्त हो गया है, उसे **पूर्ण वर्तमानकाल** की क्रिया कहते हैं। **जैसे –**

(1) बड़े भैया की चिट्ठी **आई है।** (2) तुम्हारी भाभी ने ऐसी कढ़ी बनाना कहाँ से **सीखा है?**

(2) पूर्ण भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया बहुत पहले समाप्त हो चुकी है, निकट भूतकाल में नहीं, उसे **पूर्ण भूतकाल** की क्रिया कहते हैं। **जैसे –**

(1) लेखक सिरचन को मनाने **गया था।** (2) शंकर मुँह छिपाकर लड़कियों के होस्टल से **भागे थे।**

• पूर्ण वर्तमानकाल और पूर्ण भूतकाल के रूप इस प्रकार होते हैं :

काल	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
1. पूर्ण वर्तमानकाल	मैं पैसे **लाया हूँ।** तू पैसे **लाया है।** वह पैसे **लाया है।**	हम पैसे **लाए हैं।** तुम पैसे **लाए हो।** आप पैसे **लाए हैं।** वे पैसे **लाए हैं।**	मैं पैसे **लाई हूँ।** तू पैसे **लाई है।** वह पैसे **लाई है।**	हम पैसे **लाई हैं।** तुम पैसे **लाई हो।** आप पैसे **लाई हैं।** वे पैसे **लाई हैं।**
2. पूर्ण भूतकाल	मैं पैसे **लाया था।** तू पैसे **लाया था।** वह पैसे **लाया था।**	हम पैसे **लाए थे।** तुम पैसे **लाए थे।** आप पैसे **लाए थे।** वे पैसे **लाए थे।**	मैं पैसे **लाई थी।** तू पैसे **लाई थी।** वह पैसे **लाई थी।**	हम पैसे **लाई थीं।** तुम पैसे **लाई थीं।** आप पैसे **लाई थीं।** वे पैसे **लाई थीं।**
3. पूर्ण भविष्यकाल	मैं पैसे ला **चुका हूँगा।** तू पैसे ला **चुका होगा।** वह पैसे ला **चुका होगा।**	हम पैसे ला **चुके होंगे।** तुम पैसे ला **चुके होगे।** आप पैसे ला **चुके होंगे।** वे पैसे ला **चुके होंगे।**	मैं पैसे ला **चुकी हूँगी।** तू पैसे ला **चुकी होगी।** वह पैसे ला **चुकी होगी।**	हम पैसे ला **चुकी होंगी।** तुम पैसे ला **चुकी होगी।** आप पैसे ला **चुकी होंगी।** वे पैसे ला **चुकी होंगी।**

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

• **निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :**

(1) सिरचन चिक बनाने आता है। *(पूर्ण भूतकाल)*

(2) मानू चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

(3) पाँच किस्म के लोग पाँच तरह की बात करते हैं। *(भविष्यकाल)*

(4) घटनाएँ एक-एक करके सामने आती हैं। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(5) सामने से एक कार आई। *(अपूर्ण भूतकाल)*

(6) एक कंप्यूटर चालीस हजार रुपयों में खरीदा था। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

(7) पिछले महीने उमा की आँखें दुखने लगीं। *(पूर्ण भूतकाल)*

(8) मानू पान सजाकर बैठकखाने में भेजेगी। *(अपूर्ण भूतकाल)*

(9) मैं एकाध साल का मार्जिन रखूँगा। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

(10) लोग समय-असमय मरीज का हाल पूछने आते हैं। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(11) वे बाजार से नई पुस्तकें खरीदते हैं। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(12) जूलिया रो रही है। *(सामान्य भूतकाल)*

(13) दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ता हूँ। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(14) प्राण को मन से अलग करना पड़ता है। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(15) रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)*

(16) महाराज ठंडई माँग रहे हैं। *(सामान्य भूतकाल)*

(17) वह पुस्तक पढ़ता है। *(पूर्ण भविष्यकाल)*

(18) मनीष विद्यालय जाता है। *(अपूर्ण भविष्यकाल)*

(19) शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल गया था। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

(20) वह मुझे बहुत प्रभावित कर रहा है। *(पूर्ण भूतकाल)*

(21) वे हमारे सुहागवाले गहने होते हैं। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(22) वह भारी कदमों से आगे बढ़ा। *(अपूर्ण भूतकाल)*

(23) वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

(24) छापामारों ने कवि से क्षमा माँगी थी। *(सामान्य भूतकाल)*

(25) दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ रहा हूँ। *(अपूर्ण भूतकाल)*

(26) सातों तारे मंद पड़ गए। *(पूर्ण वर्तमानकाल)* ***(मार्च '20)***

(27) रूपा दौड़ते-दौड़ते व्याकुल होती है। *(अपूर्ण भूतकाल)* ***(मार्च '20)***

(28) हम अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देते हैं। *(सामान्य भविष्यकाल)* ***(मार्च '20)***

(29) हमारे शहर में तो दो रुपये में मिलता है। *(अपूर्ण वर्तमानकाल)* ***(नवंबर '20)***

(30) मुझे जीवन को सहज और खुले ढंग से जीना है। *(पूर्ण भूतकाल)* ***(नवंबर '20)***

(31) मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाता हूँ। *(सामान्य भविष्यकाल)* ***(नवंबर '20)***

उत्तर : (1) सिरचन चिक बनाने आया था।

(2) मानू चुपचाप अधूरी चिक को देखती है।

(3) पाँच किस्म के लोग पाँच तरह की बात करेंगे।

(4) घटनाएँ एक-एक करके सामने आ रही हैं।

(5) सामने से एक कार आ रही थी।

(6) एक कंप्यूटर चालीस हजार रुपयों में खरीदा है।

(7) पिछले महीने उमा की आँखें दुखने लग गई थीं।

6414132

(8) मानू पान सजाकर बैठकखाने में भेज रही थी।
(9) मैं एकाध साल का मार्जिन रखता हूँ।
(10) लोग समय-असमय मरीज का हाल पूछने आएँगे।
(11) वे बाजार से नई पुस्तकें खरीद रहे हैं।
(12) जूलिया रोई।
(13) दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ रहा हूँ।
(14) प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा।
(15) रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बना रहा है।
(16) महाराज ने ठंडई माँगी।
(17) वह पुस्तक पढ़ चुकेगा।
(18) मनीष विद्यालय जाता रहेगा।
(19) शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है।
(20) उसने मुझे बहुत प्रभावित किया था।
(21) वे हमारे सुहागवाले गहने होंगे।
(22) वह भारी कदमों से आगे बढ़ रहा था।
(23) वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आता है।
(24) छापामारों ने कवि से क्षमा माँगी।
(25) दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ रहा था।
(26) सातों तारे मंद पड़ गए हैं।
(27) रूपा दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी।
(28) हम अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देंगे।
(29) हमारे शहर में तो दो रुपये में मिल रहा है।
(30) मैंने जीवन को सहज और खुले ढंग से जिया था।
(31) मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाऊँगा।

10. वाक्य के भेद

ध्यान में रखें :

- **वाक्य के प्रकार के अंतर्गत दो प्रश्न होंगे। दोनों के लिए कुल 2 अंक हैं।**

(i) **रचना के आधार पर :**

- इसमें एक वाक्य दिया जाएगा। उस वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखना होगा। इसके लिए **1 अंक** है।

(ii) **अर्थ के आधार पर :**

- इसमें दो वाक्य दिए जाएँगे। इनमें से किसी एक वाक्य को अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तित करके लिखना होगा। इसके लिए **1 अंक** है।

6414132

शब्दों के ऐसे सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं, जिससे किसी विचार की पूर्णता प्रकट हो। **जैसे –**

(1) भारत एक महान देश है।
(2) समय बहुत बलवान है।
(3) सदा सत्य बोलो।

वाक्य के भेद :

वाक्य के दो भेद होते हैं : रचना की दृष्टि से और अर्थ की दृष्टि से।

(1) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं :

(1) सरल वाक्य : जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे **सरल वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।
(2) मुहल्लेवाले अपनी फुरसत से आते हैं।
(3) एक दिन लपकानंद बगल में झोला दबाए आ पहुँचे।

(2) संयुक्त वाक्य : संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य समुच्चयबोधकों (और, परंतु, तथा, या आदि) से जुड़े रहते हैं। **जैसे –**

(1) करामत ने हौले से गाय को पुचकारा और उसके शरीर पर हाथ फेरा।
(2) हम टैक्सी में बैठे और टैक्सी दौड़ गई।
(3) मांडवी काफी बड़ी नदी है तथा वर्ष भर पानी से भरी रहती है।

(3) मिश्र वाक्य : जिस वाक्य में एक प्रधान और शेष आश्रित उपवाक्य हों, उसे **मिश्र वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) अब गाय ने दूध देना बंद कर दिया है, क्योंकि वह बूढ़ी हो गई है।
(2) मैं सोचने लगा कि पर्यटन का अलग ही आनंद है।
(3) मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

(2) अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते हैं :

(1) विधानार्थक/विधानवाचक वाक्य : जिस वाक्य में किसी क्रिया के होने या करने की सूचना हो, उसे **विधानार्थक /विधानवाचक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं। (2) करामत ड्यूटी पर जाने की तैयारी में था। (3) मैं भीतर तक काँप गया।

(2) निषेधार्थक/निषेधवाचक वाक्य : जिस वाक्य में किसी बात के न होने या न करने का बोध होता हो, उसे **निषेधार्थक/निषेधवाचक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) हम अपना विस्तार नहीं करते।

(2) मेरी गली में एक भी पेड़ नहीं है।

(3) लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया।

(3) प्रश्नार्थक/प्रश्नवाचक वाक्य : जिस वाक्य में किसी प्रकार का प्रश्न किया गया हो, उसे **प्रश्नार्थक/प्रश्नवाचक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) आपका कोर्स खत्म होने में कितना वक्त बचा है?

(2) मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

(3) आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

(4) आज्ञार्थक/आज्ञावाचक वाक्य : जिस वाक्य में किसी भी प्रकार की आज्ञा या प्रार्थना का बोध होता हो, उसे **आज्ञार्थक/आज्ञावाचक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) करामत अली अपना ध्यान रखो।

(2) गाय को खुला छोड़ दो। (3) भैया, मिठाई बाँटो।

(5) इच्छार्थक/इच्छावाचक वाक्य : जिस वाक्य में इच्छा, कामना, आशीर्वाद आदि का बोध होता है, उसे **इच्छार्थक / इच्छावाचक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) ऐसा काम करो कि देखने वाले देखते ही रह जाएँ।

(2) मानू दीदी, आप सदा सुखी रहें।

(3) प्रभु आपकी कामना पूरी करें।

(6) संदेहार्थक/संदेहवाचक वाक्य : जिस वाक्य में संदेह या शंका का बोध होता है, उसे **संदेहार्थक/संदेहवाचक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) रहमान कह रहा था शायद कुछ लोग लक्ष्मी को खरीद लेंगे।

(2) शायद अब कोई मिलने वाला तंग नहीं करेगा।

(3) मानू के ससुरालवाले चिक व शीतलपाटी की प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

(7) संकेतार्थक/संकेतवाचक वाक्य : जिस वाक्य में संकेत या अपेक्षा का बोध होता है, उसे **संकेतार्थक/संकेतवाचक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) अगर गाय दूध नहीं देगी तो इसका क्या करेंगे?

(2) चुपचाप पड़ा रहूँगा तो कोई मिलने वाला तंग नहीं करेगा।

(3) अगर अच्छा काम करोगे तो मोहर छापवाली धोती दूँगी।

(8) विस्मयार्थक/विस्मयादिबोधक वाक्य : जिस वाक्य में हर्ष, शोक, विस्मय, घृणा आदि का बोध होता है, उसे **विस्मयार्थक/विस्मयादिबोधक वाक्य** कहते हैं। **जैसे –**

(1) ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।

(2) मानू कुछ नहीं बोली। बेचारी!

(3) मेरा कलेजा धड़क उठा ..... हो गया सत्यानाश!

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

(1) रचना के आधार पर वाक्यों के भेद पहचानकर लिखिए :

(1) मँझली भाभी मुट्ठी भर बुँदिया सूप में फेंककर चली गई।

(2) इतने मकान कि लगता है मकान पर मकान लदे हैं।

(3) चिड़ियाँ दिखती हैं लेकिन पेड़ों पर बैठी या आसमान में उड़ती हुई नहीं।

(4) गाय सबको मारने की कोशिश करती या फिर उछलती-कूदती।

(5) आज जब नेनू मथ रही थी तो तुम्हारी याद आई।

(6) मैंने गाड़ी का दरवाजा खोल दिया।

(7) रोगन ने अच्छा काम किया था और चोट के दाग कुछ हल्के पड़ गए थे।

(8) यही जीवन का सत्य भी है।

(9) यदि तुम इन्सान बनना चाहती हो, तो जल्दी बताओ।

(10) तुम दोनों की मर्जी होती, तो गाय को अब तक चारा मिल चुका होता।

(11) हमदर्दी जताने वालों में वे लोग जरूर आएँगे, जिनकी हम सूरत भी नहीं देखना चाहते।

(12) नेत्रहिनों के चमत्कार हमने बहुत देखे हैं।

(13) हमने गहने पहनने छोड़ दिए थे।

(14) काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थी कि मैं वह काम कर रही हूँ। ***(मार्च '20)***

(15) हमारी सामाजिक विचारधारा में एक बड़ा भारी दोष है।

(नवंबर '20)

उत्तर : (1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य (4) संयुक्त वाक्य (5) मिश्र वाक्य (6) सरल वाक्य (7) संयुक्त वाक्य (8) साधारण वाक्य (9) मिश्र वाक्य (10) मिश्र वाक्य (11) मिश्र वाक्य (12) सरल वाक्य (13) सरल वाक्य। (14) मिश्र वाक्य (15) सरल वाक्य।

(2) अर्थ के आधार पर वाक्यों के नाम लिखिए :

(1) रमजानी चुप खड़ी आगंतुक की बातें सुनती रही।

(2) मेरी मानो तो गाय को बेच दो।

(3) क्या लक्ष्मी ने अभी तक दूध नहीं दिया?

(4) बूढ़ी गाय है, दूध नहीं देती।

(5) आपकी यात्रा मंगलमय हो!

(6) वाह! कितनी सुंदर चिक है।

(7) अब शायद सिरचन न आए।

(8) लड़की पसंद आ गई तो शादी हो जाएगी।

उत्तर : (1) विधानार्थक (2) आज्ञार्थक (3) प्रश्नार्थक (4) निषेधार्थक (5) इच्छार्थक (6) विस्मयार्थक (7) संदेहार्थक (8) संकेतार्थक।

6414132

(3) अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(1) क्या बुद्धि का उपयोग विषम व्यवस्था को कायम रखकर पैसे कमाने के लिए करना उचित है? *(विधानार्थक वाक्य)*

(2) बुद्धिजीवियों का जीवन श्रमजीवियों पर आधारित है। *(निषेधार्थक वाक्य)*

(3) पाँच रुपए का एक भुट्टा। *(विस्मयार्थक वाक्य)*

(4) वहाँ बड़ी भीषण गर्मी पड़ रही थी। *(प्रश्नार्थक वाक्य)*

(5) आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना होगा। *(संदेहार्थक वाक्य)*

(6) तुम्हें अपना काम खुद करना चाहिए। *(आज्ञार्थक वाक्य)*

(7) अब मुझे कौन पूछता है? *(विधानार्थक वाक्य)*

(8) यही जीवन का सत्य भी है। *(विस्मयार्थक वाक्य)*

(9) क्या! उस गली में पेड़ भी हैं। *(निषेधार्थक वाक्य)*

(10) शाम को वह तुमसे मिलने आएगी। *(प्रश्नार्थक वाक्य)*

(11) गाय ने दूध देना बंद कर दिया। *(विस्मयार्थक वाक्य)*

(12) तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए। *(आज्ञार्थक वाक्य)* ***(मार्च '20)***

(13) मानू इतना ही बोल सकी। *(प्रश्नार्थक वाक्य)* ***(मार्च '20)***

(14) कितनी निर्दयी हूँ मैं। *(विस्मयार्थक वाक्य)* ***(नवंबर '20)***

(15) सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया। *(प्रश्नार्थक वाक्य)* ***(नवंबर '20)***

उत्तर : (1) बुद्धि का उपयोग विषम व्यवस्था को कायम रख कर पैसे कमाने के लिए उचित है।

(2) बुद्धिजीवियों का जीवन श्रमजीवियों पर आधारित नहीं है।

(3) अरे! पाँच रुपए का एक भुट्टा।

(4) क्या वहाँ भीषण गर्मी पड़ रही थी?

(5) शायद आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना होगा।

(6) तुम अपना काम खुद करो।

(7) अब मुझे सब पूछते हैं।

(8) अहा! यही जीवन का सत्य भी है।

(9) क्या! उस गली में पेड़ भी नहीं हैं।

(10) क्या शाम को वह तुमसे मिलने आएगा?

(11) अरे! गाय ने दूध देना बंद कर दिया।

(12) तुम अपना ख्याल रखो।

(13) क्या मानू इतना ही बोल सकी?

(14) अरे रे ! कितनी निर्दयी हूँ मैं।

(15) क्या सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया?

6414132

11. वाक्य शुद्ध करना

ध्यान में रखें :

वाक्य शुद्ध करने के अंतर्गत तीन अशुद्ध वाक्य दिए जाएँगे। प्रत्येक वाक्य में दो अशुद्धियाँ होंगी। इनमें से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखना होगा।

इसके लिए **कुल 2 अंक** हैं।

वाक्य लिखते समय विद्यार्थी प्राय: सर्वनाम, लिंग, वचन तथा कारक संबंधी अनेक गलतियाँ करते हैं, जिससे वाक्य अशुद्ध हो जाता है। नीचे वाक्य संबंधी कुछ सामान्य अशुद्धियाँ व उनका शुद्ध रूप दिया गया है :

सर्वनाम का गलत प्रयोग

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) मैं मेरा काम करता है।	(1) मैं अपना काम करता हूँ।
(2) हमारे को भी वो बात बताओ।	(2) मुझे भी वह बात बताओ।
(3) तुम तुम्हारे घर जाव।	(3) तुम अपने घर जाओ।

विशेषण का गलत प्रयोग

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) इस मंदिर में अनेकों गणेश के मूर्तियाँ हैं।	(1) इस मंदिर में गणेश की अनेक मूर्तियाँ हैं।
(2) सारे गाँव का लोग इमानदार हैं।	(2) गाँव के सारे लोग ईमानदार हैं।
(3) हमारे यहाँ शुद्ध गाय की दूध मिलता है।	(3) हमारे यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
(4) हमें पक्का ईश्वर का विश्वास है।	(4) हमें ईश्वर में पक्का विश्वास है।

वचन के प्रयोग में होने वाली अशुद्धियाँ

(1) गोवा समुद्र तट पर अनेकों लोग था।	(1) गोवा समुद्र तट पर अनेक लोग थे।
(2) पुस्तक के ढेर देखकर माँ दंग रह गई।	(2) पुस्तकों का ढेर देखकर माँ दंग रह गई।

वाक्य-रचना दोष

(1) मुझको केवल मात्र दस रुपये चाहिए।	(1) मुझे केवल दस रुपये चाहिए।
(2) सिरचन को चटोर भी समझता हैं लोग।	(2) सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं।
(3) रावण बहोत ग्यानी व्यक्ति था।	(3) रावण बहुत ज्ञानी था।
(4) मैं तुमको धन्यवाद करता हूँ।	(4) मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।
(5) लड़कियों को अधिक जरूरत नहीं है पढ़ने का।	(5) लड़कियों को अधिक पढ़ने की जरूरत नहीं है।

6414132

कृति-स्वाध्याय एवं उत्तर

• **अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(1) करामत ने गाय की माथे पर आगे बढ़कर हाथ फेरा।
(2) मैं अपने टाँगों के ओर देखता हूँ।
(3) तीन बरस पहले ज्ञान सिंह ने एक जर्सी गाय खरीदा था।
(4) गोवा में कई फिल्मों की हिट शुटिंग हुई है।
(5) मैं मानू की साथ जाएगा।
(6) माँ को मँझली भाभी दुलारी बहू है।
(7) लक्ष्मी ने आज भी नई दिया दूध।
(8) सिरचन जाता-जाता रूक गया।
(9) लड़कियों को अधिक जरूरत नहीं है पढ़ने की।
(10) बच्चों के कारण हम बस से मुनासिब समझा जाना।
(11) (i) हम लोक वापस आते है अभी।
(ii) इस बार नयी धोति दूँगी।
(12) (i) बरसों बाद पंडित जी को मित्र का दर्शन हुआ।
(ii) गोवा के बीच पर घूमने में बड़ी मजा आई।
(13) (i) उसका लिए आप चिता न करे।
(ii) बैंड पथक का सुरीला धुन सुनाई दी।
(14) (i) उन्नोंने पुस्तक लौटा दिया।
(ii) हमारी सामाजिक विचारधारा से बड़ी भारी दोष है।
(15) अब हर चीज का दरजनों गुलाम होता हैं।
(16) करामत अली के आँखों में आँसू उतर आई।
(17) सिरचन को कोई लड़का-बाला नहीं थे।
(18) तख्त के रखे जाने का आवाज आता है।
(19) उस दिन शाम का वक्त झील किनारे टहल रहें थे।
(20) इस बार मेरी सबसे छोटि बहन पहली बार ससूराल जा रही थी। ***(मार्च '२०)***
(21) आपने भ्रमन तो काफी की हैं। ***(मार्च '२०)***
(22) व्यवस्थापकों और पुँजी लगाने वालों को हजारो-लाखो का मिलना गलत नहीं माना जाता। ***(मार्च '२०)***
(23) रंगीन फूल की माला बहोत सुंदर लग रही थी। ***(नवंबर '२०)***
(24) लड़के के तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कोई कहना चाहा। ***(नवंबर '२०)***
(25) कन्हैयालाल मिश्रा जी बिड़ला के पुस्तक पड़ने लगे। ***(नवंबर '२०)***

उत्तर :

(1) करामत ने आगे बढ़कर गाय के माथे पर हाथ फेरा।
(2) मैं अपनी टाँगों की ओर देखता हूँ।
(3) तीन बरस पहले ज्ञान सिंह ने एक जर्सी गाय खरीदी थी।
(4) गोवा में कई हिट फिल्मों की शूटिंग हुई है।
(5) मैं मानू के साथ जाऊँगा।
(6) मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है।
(7) लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया।
(8) सिरचन जाते-जाते रुक गया।
(9) लड़कियों को अधिक पढ़ने की जरूरत नहीं है।
(10) बच्चों के कारण हमने बस से जाना मुनासिब समझा।
(11) (i) हम लोग वापस आते हैं अभी।
(ii) इस बार नई धोती दूँगी।
(12) (i) बरसों बाद पंडित जी को मित्र के दर्शन हुए।
(ii) गोवा के बीच पर घूमने में बड़ा मजा आया।
(13) (i) उसके लिए आप चिंता न करें।
(ii) बैंड पथक की सुरीली धुन सुनाई दी।
(14) (i) उन्होंने पुस्तक लौटा दी।
(ii) हमारी सामाजिक विचारधारा में बड़ा भारी दोष है।
(15) अब हर चीज के दरजनों गुलाम होते हैं।
(16) करामत अली की आँखों में आँसू उतर आए।
(17) सिरचन के कोई लड़के-बाला नहीं थे।
(18) तख्त के रखे जाने की आवाज आती है।
(19) उस दिन शाम के वक्त झील किनारे टहल रहे थे।
(20) इस बार मेरी सबसे छोटी बहन पहली बार ससुराल जा रही थी।
(21) आपने भ्रमण तो काफी की है।
(22) व्यवस्थापकों और पूँजी लगाने वालों को हजारों-लाखों का मिलना गलत नहीं माना जाता।
(23) रंगीन फूलों की माला बहुत सुंदर लग रही थी।
(24) लड़के की तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कुछ कहना चाहा।
(25) कन्हैयालाल मिश्र जी बिड़ला की पुस्तक पढ़ने लगे।

6414132

उपयोजित लेखन

उपयोजित लेखन विभाग में प्रश्न 5 (अ), प्रश्न 5 (आ) तथा 5 (इ) तीन प्रश्न हैं।

- प्रश्न 5 (अ) (1) पत्र-लेखन का प्रश्न होगा। इसके लिए 5 अंक हैं।
- प्रश्न 5 (अ) (2) मद्य आकलन का प्रश्न होगा। इसके लिए 4 अंक हैं।
- प्रश्न 5 (आ) (1) में वृत्तांत-लेखन अथवा कहानी-लेखन का प्रश्न होगा। इसके लिए 5 अंक हैं।
- प्रश्न 5 (आ) (2) विज्ञापन लेखन का प्रश्न होगा। इसके लिए 5 अंक हैं।
- प्रश्न 5 (इ) निबंध-लेखन का प्रश्न है। इसमें दिए गए तीन निबंधों में से किसी एक पर 80 से 100 शब्दों का निबंध लिखना है। इसके लिए 7 अंक हैं।
- कृतिपत्रिका में उपयोजित लेखन विभाग के लिए कुल **26 अंक** हैं।

1. पत्र-लेखन | 5 अंक

ध्यान में रखें :

- **प्रश्न 5 (अ) (1)** में पत्र लिखने के लिए दो विषय दिए जाएँगे। एक विषय अनौपचारिक पत्र से संबंधित होगा और दूसरा औपचारिक पत्र से। साथ ही यह सूचना होगी कि पत्र कौन किसे लिख रहा है और पत्र का विषय क्या है। दोनों पत्रों में से कोई एक पत्र लिखना है। इसके लिए **5 अंक** हैं।

पत्र के द्वारा हम अपनी भावनाओं और अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से लिखित रूप में किसी व्यक्ति तक पहुँचाते हैं। आज अपनी भावनाओं और विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए तीव्र गति वाले उपकरणों का प्रचार बहुत तेजी से हो रहा है। ऐसी हालत में पहले की अपेक्षा आजकल पत्र लिखने की आवश्यकता बहुत कम पड़ती है। फिर भी अपने खास व्यक्तियों, संबंधियों, मित्रों तथा सरकारी कामकाज के लिए पत्र लिखने की आवश्यकता होती ही है।

पत्र-लेखन एक कला है। अपने विचारों को संक्षेप में प्रभावकारी ढंग से विषय के अनुरूप भाषा का प्रयोग कर पहुँचाना एक प्रकार का हुनर है। अब तक हम पत्र भेजने के लिए लिफाफे का प्रयोग करते थे और उस पर पत्र भेजने वाले का नाम और पता लिखते थे। अब ई-मेल से भेजे जाने वाले पत्रों में लिफाफों की आवश्यकता नहीं रही। इसलिए पत्र में ही पत्र भेजने वाले तथा पाने वाले का नाम, पता और ई-मेल आईडी लिखना होता है। अब आपको ई-मेल भेजने के तरीके से परिचित होना है। अत: आपको ई-मेल के प्रारूप के अनुरूप पत्र-लेखन की पद्धति अपनाना अपेक्षित है।

पत्र-लेखन के प्रकार :

पत्र-लेखन के दो प्रकार हैं। पहला अनौपचारिक और दूसरा औपचारिक।

(1) अनौपचारिक पत्र :

व्यक्ति के रिश्तों और आयु के अनुसार संबोधन तथा अभिवादन लिखना चाहिए। शुरू में पत्र पाने वाले का कुशल-क्षेम पूछना चाहिए। अनौपचारिक पत्र में विषय विवेचन की जरूरत नहीं होती। अपने उद्देश्य के अनुसार लेखन स्नेह/सम्मानसहित प्रभावी शब्दों में होना चाहिए। पत्र को समाप्त करते समय नीचे बाईं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, नाम तथा पता लिखना चाहिए। साथ में ई-मेल आईडी लिखना चाहिए।

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

दिनांक : ----------।

संबोधन : ----------।

अभिवादन : ----------।

प्रारंभ : ----------।

विषय विवेचन : ----------।

समापन : ----------।

हस्ताक्षर : ----------।

नाम : ----------।

पता : ----------।

ई-मेल आईडी :

xyz@abc.com

(2) औपचारिक पत्र :

प्रति लिखने के बाद पत्र पाने वाले का पद और पता लिखना चाहिए। फिर पत्र में विषय तथा संदर्भ का उल्लेख करना चाहिए। पत्र प्राप्त करने वाले के प्रति आदर प्रकट करने के लिए उसे महोदय/महोदया संबोधन से संबोधित करना चाहिए। इसके बाद पत्र में विषय के अनुसार कुछ परिच्छेदों में अपना आशय प्रकट करना चाहिए। फिर पत्र को समाप्त करते समय नीचे बाईं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, उसका नाम और पता लिखना चाहिए। साथ में ई-मेल आईडी भी देना चाहिए।

औपचारिक पत्र का प्रारूप

दिनांक : ----------।

प्रति : ----------।

विषय : ----------।

संदर्भ : ----------।

महोदय,

विषय विवेचन : ----------।

भवदीय / भवदीया : ----------।

हस्ताक्षर : ----------।

नाम : ----------।

पता : ----------।

ई-मेल आईडी :

xyz@abc.com

पत्र-लेखन के नमूने

(1) अनौपचारिक पत्र :

(1) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :

शिर्डी का अपूर्व/अपूर्वा कठाले हाईस्कूल परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई देते हुए अपने मित्र/सहेली उदय/उदया को पत्र लिखता/लिखती है।

6414182

8 जून, 2021

प्रिय उदय,

सप्रेम नमस्ते।

हम सब लोग यहाँ कुशलपूर्वक हैं और ईश्वर से तुम सबकी कुशलता की कामना करते हैं। आज ही समाचारपत्र में तुम्हारा परीक्षा-परिणाम देखा, जिससे ज्ञात हुआ कि तुमने सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करते हुए कक्षा दसवीं में पूरे प्रांत में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मित्र, यह जानकर मुझे असीम आनंद हुआ।

अपनी इस विशेष उपलब्धि पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। तुम्हारे परिश्रम और प्रतिभा को देखकर हमें आशा थी कि तुम अवश्य कोई कीर्तिमान स्थापित करोगे। मैं परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार सफलता तुम्हारे कदम चूमे।

अपनी माता जी तथा पिता जी को सादर प्रणाम कहना। नन्ही बुलबुल को मधुर प्यार।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

अपूर्व कठाले

103, सलिल विला,

टैगोर पार्क,

शिर्डी, नाशिक – 423 109

ई-मेल आईडी : ap.8le@yyy.com

(2) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :

अनुराग छात्रावास, महात्मा गांधी मार्ग, नागपुर से विजय/विजया भालेराव अपने जीवन स्वप्न का वर्णन करते हुए अपने पिता जी को पत्र लिखता/लिखती है।

11 अक्तूबर, 2021

आदरणीय पिता जी,

सादर चरण स्पर्श।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ मेरा मन लग गया है। नए परिवेश में प्रारंभ में तो घर की बहुत याद आती थी, पर अब मेरे कई मित्र बन गए हैं।

पिता जी, आपने अपने पत्र में मुझसे पूछा है कि मैं भविष्य में क्या बनना चाहता हूँ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? जब से आपका पत्र मिला, मैं इसी सोच-विचार में हूँ कि मुझे क्या बनना चाहिए? या मैं क्या बनना चाहता हूँ? पिता जी, बार-बार विचार करने पर मुझे समझ आया कि मुझे डॉक्टर बनना चाहिए। आप जानते ही हैं कि हमारा देश स्वास्थ्य सेवा की दृष्टि से कितना पिछड़ा हुआ है। प्रतिवर्ष न जाने कितने व्यक्ति चिकित्सा के अभाव में काल का शिकार बन जाते हैं। मुझे सेवा-भाव से ओत-प्रोत यह व्यवसाय बचपन से ही आकर्षित करता रहा है। इसी पेशे को अपनाकर मैं समाज की बहुत अच्छी तरह सेवा कर पाऊँगा, साथ ही एक सम्मानित जीवन भी व्यतीत कर पाऊँगा।

माता जी को सादर प्रणाम कहिए। पत्र दीजिए।

6414132

आपका पुत्र,

विजय भालेराव

अनुराग छात्रावास,

महात्मा गाँधी मार्ग,

नागपुर – 440 005

ई-मेल आईडी : vijaybhalerao@yyy.co.in

(3) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :

रंजन/रंजना मांजरेकर, हेमेंद्र कुटीर, सुभाषचंद्र मार्ग, ठाणे से नागपुर में पढ़ रहे अपने छोटे भाई नीरज को परीक्षा की तैयारी हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

12 नवंबर, 2021

प्रिय भाई नीरज,

मधुर प्यार।

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। क्या कारण है? आशा है परीक्षा की तैयारी में लगे होंगे। नीरज, तुम स्वयं समझदार हो, फिर भी मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता/चाहती हूँ। घर के सभी सदस्यों को तुमसे बहुत आशाएँ हैं। अर्धवार्षिक परीक्षा में तुम्हारा रिजल्ट अच्छा नहीं रहा। इससे माता जी-पिता जी को बड़ा दुख पहुँचा। वे न जाने अपनी कितनी आवश्यकताओं को सीमित करके तुम्हें घर से इतनी दूर रखकर पढ़ा रहे हैं। तुम्हें अपना बहुमूल्य समय मित्रों के साथ इधर-उधर घूमने में व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। तुम अच्छी तरह जानते हो कि गया वक्त हाथ नहीं आता।

भाई, तुम्हें एक समय-सारणी बनाकर उसके अनुसार पढ़ना चाहिए। मित्रों के साथ गप-शप करना और यहाँ-वहाँ भटकना जीवन में किसी काम नहीं आएगा। अपना एक लक्ष्य बनाओ और उसे प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करो।

माता जी और पिता जी की ओर से शुभाशीष। पत्र लिखना।

तुम्हारा बड़ा भाई/तुम्हारी बड़ी बहन

रंजन मांजरेकर/रंजना मांजरेकर

हेमेंद्र कुटीर,

सुभाषचंद्र मार्ग,

ठाणे – 400 010

ई-मेल आईडी : ran.man@yyy. mail

6414132

(2) औपचारिक पत्र :

(1) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :

A-92, दिव्य लोक, सुभाष चौक, तिलकनगर, पुणे से साहिल देशपांडे पेड़-पौधों की अनियंत्रित रूप से कटाई के लिए जिलाधीश महोदय, पुणे को पत्र लिखता है।

8 जुलाई, 2021

सेवा में ,

जिलाधीश महोदय,

पुणे – 411 003

(महाराष्ट्र)

विषय : पेड़-पौधों की अनियंत्रित कटाई।

श्रीमान जी,

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान पेड़-पौधों की अनियंत्रित कटाई की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

अत्यंत दुख व खेद का विषय है कि आज जब चारों ओर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की बात की जा रही है, कुछ ऐसे स्वार्थी लोग भी हैं जो अपने प्रभाव के द्वारा सफाई के नाम पर वृक्षों को कटवा रहे हैं।

नगर में सड़कों के दोनों ओर सरकार द्वारा जो वृक्ष लगवाए गए थे, उनमें से अधिकांश कटवाए जा चुके हैं। कुछ समाजसेवी संस्थाओं ने इसे रोकने का प्रयास किया तो उनके साथ मारपीट की गई।

64141132

मान्यवर, यदि यह कटाई इसी प्रकार चलती रही तो शीघ्र ही यह क्षेत्र वृक्षों से खाली हो जाएगा। आप से अनुरोध है कि पुलिस तथा सतर्कता विभाग को इस स्थिति से निपटने के आदेश दें।

धन्यवाद सहित,

प्रार्थी,

साहिल देशपांडे

A-92, दिव्य लोक,

सुभाष चौक, तिलकनगर,

पुणे – 411 006

ई-मेल आईडी : sahil-Desh123@yyy.com

(2) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :

अरुण पाठक, महामंत्री, न्यू आवास विकास समिति, अरुण विला, नाशिक से स्वास्थ्य अधिकारी, नगर निगम, नाशिक को आवास में पेयजल की समस्या संबंधी पत्र लिखता है।

9 अगस्त, 2021

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,

नगर निगम,

नाशिक – 411 005

विषय : पेयजल की समस्या हल करना।

श्रीमान जी,

हम न्यू आवास विकास के निवासी हैं। इस पत्र के माध्यम से हम अपने क्षेत्र की पेयजल की समस्या आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। यहाँ पेयजल का भारी संकट है।

दिन भर में केवल एक घंटे के लिए नलों में पानी आता है और वह भी इतने कम दबाव के साथ कि इमारत की पहली मंजिल पर भी पानी नहीं चढ़ पाता। हालत यह है कि दैनिक जरूरतों के लिए भी पर्याप्त जल नहीं मिल पा रहा है।

आपसे अनुरोध है कि इस विपत्ति से छुटकारा दिलाने के लिए पानी का दबाव तथा समयावधि बढ़ाने के लिए संबंधित अधिकारियों को तुरंत निर्देश दें।

6414132

धन्यवाद सहित,

भवदीय,

अरुण पाठक

महामंत्री

न्यू आवास विकास समिति, अरुण विला,

नाशिक

ई-मेल आईडी : pathakarun124@yyy.com

(3) **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :**

आदित्य बोरकर, आदित्य सदन, इंदिरा नगर, कस्तूरबा गांधी मार्ग, औरंगाबाद से पुलिस इंस्पेक्टर, पुलिस स्टेशन, शिवाजी नगर, औरंगाबाद – 431 001 को लाउड स्पीकरों के शोर से होने वाली परेशानियों की शिकायत करते हुए पत्र लिखता है।

16 सितंबर, 2021

सेवा में,

पुलिस इंस्पेक्टर,

पुलिस स्टेशन, शिवाजी नगर,

औरंगाबाद – 431 001

विषय : लाउड स्पीकरों के शोर से होने वाली परेशानियाँ।

मान्यवर,

आजकल नागरिक जीवन में लाउड स्पीकर का मनमाना प्रयोग एक आम बात हो गई है। यद्यपि लाउड स्पीकर के प्रयोग से संबंधित कुछ नियम हैं, लेकिन लोग इन नियमों की ओर ध्यान दिए बिना अपनी सुविधानुसार देर रात तक लाउड स्पीकरों का प्रयोग करते रहते हैं। हमारे इंदिरा नगर इलाके में गणेशोत्सव का कार्यक्रम चल रहा है। इसमें देर रात तक लाउड स्पीकर से गाने बजाए जा रहे हैं। इससे इलाके के लोगों की नींद हराम हो गई है।

महोदय, एक जागरूक नागरिक होने के नाते मैं यह आशा करता हूँ कि आप इस दिशा में शीघ्र कदम उठाएँगे।

धन्यवाद सहित,

6414132

प्रार्थी,

आदित्य बोरकर

आदित्य सदन, इंदिरा नगर,

कस्तूरबा गांधी मार्ग,

औरंगाबाद – 430 001

ई-मेल आईडी : aditya458@yyy.co.in

कृति-स्वाध्याय

- **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :**

(1) कार्तिक/कीर्ति पाटील, रामनगर, दापोली, जिला – रत्नागिरी से संपादक, दैनिक टाइम्स, नेताजी रोड, दापोली को पत्र लिखता/लिखती है, जिसमें वह अपने क्षेत्र में व्याप्त गुंडागर्दी की शिकायत करता/करती है।

(2) 5, रतन विला, देसाई पाड़ा, कोल्हापुर से नमित/नमिता गायकवाड अपने मित्र रंजन/रंजना पेंडसे, 3, रामनगर, सामंत रोड, कोल्हापुर को उसकी बरसगाँठ के उपलक्ष्य में बधाई-पत्र भेजता/भेजती है।

(3) शकील/शकीला खान, 10, आशियाना, टिळक नगर, लातूर से अपने मामा सलीम पठान, 3/37, मीरा मंजिल, क्रांति चौक, औरंगाबाद को पत्र लिखकर उनके द्वारा दी गई सूचनाओं के अनुसार पढ़ाई जारी रखने के संदर्भ में पत्र लिखता/लिखती है।

(4) अमित/अमिता पाटील, तेजस सोसाइटी, आंबेडकर रोड, अमरावती से अपनी सोसाइटी के अध्यक्ष को पत्र लिखकर गाड़ियाँ धोने के लिए टंकी के जिस जल का उपयोग किया जा रहा है, उस जल का पुन:उपयोग करने हेतु निवेदन करता/करती है।

(5) मोहन/मोहना जोशी, 5, सुमन स्मृति, डेक्कन जिमखाना, पुणे से अभ्युदय नगर, अंधेरी, मुंबई में अपने मित्र/सहेली को अपने दादा जी के 'अमृत महोत्सव' (75 वीं वर्षगाँठ) के उपलक्ष्य में निमंत्रण देने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

(6) श्याम/श्यामा पांडेय, गजानन सोसाइटी, तिलक नगर, कोल्हापुर से अपने मित्र/सहेली अमित/अमिता शर्मा, 10/37, मीरा सोसाइटी, नाशिक को कथाकथन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने के उपलक्ष्य में बधाई देते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

(7) अनय/अनया पाटील, 'गीतांजलि, गुलमोहर रोड, अहमदनगर से अपनी छोटी बहन अमिता पाटील, 3, 'श्री कृपा', शिवाजी रोड, नेवासा को राज्यस्तरीय कबड्डी संघ में चयन होने के उपलक्ष्य में अभिनंदन करने हेतु पत्र लिखता/लिखती है। ***अथवा***

अर्चित/अर्चिता भोसले, 54, शांतिनगर, नाशिक से अपने परिसर के उद्यान की दुर्दशा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए आयुक्त, महानगर परिषद, नाशिक को पत्र लिखता/लिखती है।

(8) नरेश/निशा जाधव, 22, गांधी चौक, साबरमती से अपने मित्र/सहेली उत्तम/उषा पाटील, शाहुपुरी, कोल्हापुर को जन्म-दिन के कार्यक्रम में शामिल होने हेतु पत्र लिखता/लिखती है। ***अथवा***

शरद/शारदा पाटील, 24, विश्वास नगर, अकोला–32 से अनमोल प्रकाशन, पुणे – 11 को पत्र लिखकर अपने लिए निम्नलिखित पुस्तकों की माँग करता/करती है।

(1) मानसरोवर – भाग 1 (लेखक – प्रेमचंद।)

(2) चंद्रगुप्त (नाटक) (लेखक – जयशंकर प्रसाद।)

(3) अच्छे आदमी (कथा संग्रह) (लेखक – फणीश्वरनाथ 'रेणु'।)

(9) अमेय/अमेया साठे, डोंगरे वस्ती गृह, नाशिक से अपने छोटे भाई सुमेध साठे, 3/37, जैन कालोनी, जलगाँव को पढ़ाई का महत्त्व समझाते हुए पत्र लिखता/लिखती है। ***अथवा***

राधा/राधेय पाटील, आदर्श विद्यालय, क्रीडा प्रतिनिधि, कोल्हापुर से मा. व्यवस्थापक, शक्ति स्पोर्ट्स, लक्ष्मी रोड, पुणे को पत्र लिखकर अपने विद्यालय के लिए खेल सामग्री/साहित्य की माँग करती/करता है।

(10) राधेय/राधा चौगुले, रामेश्वर नगर, वर्धा से दोहा प्रतियोगिता में प्रथम क्रमांक प्राप्त करने के कारण अभिनंदन करते हुए अपने मित्र/सहेली किशोर/किशोरी पाटील, स्टेशन रोड, जालना को पत्र लिखता/लिखती है। ***(मार्च '20)***

(11) अशोक/आशा मगदुम, लक्ष्मी नगर, नागपुर से व्यवस्थापक कौस्तुभ पुस्तक भंडार, सदर बाजार, नागपुर को प्राप्त पुस्तकों संबंधी शिकायत करते हुए पत्र लिखता/लिखती है। ***(मार्च '20)***

(12) राज/राजश्री अगरवाल, 20, वरद सोसायटी, सायन (पूर्व), मुंबई से अपने दादा जी रमेश अगरवाल, राधा निवास, आदर्श कालोनी, संगमनेर को 75 वे जन्मदिन पर बधाई देते हुए पत्र लिखता/लिखती है। ***(नवंबर '20)***

(13) मयुरा/मयुर त्रिवेदी, 12, मॉडल कॉलोनी, शास्त्री नगर, नारायणगाँव से व्यवस्थापक, विजय पुस्तकालय, म. गांधी पथ, राजगुरू नगर को सूचीनुसार पुस्तकें प्राप्त न होने की शिकायत करते हुए पत्र लिखती/लिखता है। ***(नवंबर '20)***

6414132

2. गद्य-आकलन | 4 अंक

ध्यान में रखें :

- कृतिपत्रिका के **प्रश्न 5 (अ) (2)** में गद्य-आकलन के लिए लगभग 100 से 120 शब्दों का एक अपठित गद्यांश दिया जाता है।
- उस गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित चार प्रश्न तैयार करने के लिए कहा जाता है।
- प्रश्न संक्षिप्त और स्पष्ट होने चाहिए और उनके उत्तर गद्यांश में उपलब्ध हों। इसके लिए **4 अंक** हैं।

गद्य-आकलन के नमूने

प्रश्न. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हों :

(1)

पुस्तक का मानव-जीवन में बहुत महत्त्व है। मानव ने सर्वप्रथम पुस्तक का आरंभ अपने अनुभूत ज्ञान को विस्मृति से बचाने के लिए किया था। विकास के आदिकाल में पत्ते, ताड़पत्र, ताम्रपत्र आदि साधन इस ज्ञान-संग्रह के सहायक रहे हैं, ऐसा पुस्तक का इतिहास स्वयं बताता है। पुस्तकें मानव को अपना अनुभव विस्तृत करने में सहायक होती हैं, साथ ही इन्होंने हमारे पूर्वजों के सभी प्रकार के कृत्यों को जीवित रखने की जिम्मेदारी भी सँभाली हुई है। आज के युग में प्राचीन वीरों, धार्मिक महात्माओं, ऋषियों, नाटककारों, कवियों आदि का पता हम इन्हीं पुस्तकों के सहारे पाते हैं। पुस्तकें ही अंतरराष्ट्रीय विचारक्षेत्र में विभिन्न देशों के दृष्टिकोणों को एक आधार पर सोचने के लिए बाध्य करती हैं।

उत्तर : तैयार किए हुए प्रश्न :

(1) मानव ने पुस्तक का आरंभ किसलिए किया था?

(2) पुस्तकें मानव की किस तरह सहायक हैं ?

(3) पुस्तकों से हमें किनकी जानकारी मिलती है?

(4) अंतरराष्ट्रीय विचार-क्षेत्र में पुस्तकों का क्या योगदान है?

(2)

धन्य है वह ईंट, जो जमीन के सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई और इमारत की पहली ईंट बनी। क्योंकि इसी पहली ईंट पर, उसकी मजबूती और पुख्तेपन पर सारी इमारत की अस्ति-नास्ति निर्भर करती है। उस ईंट को हिला दीजिए, कंगूरा बेतहाशा जमीन पर आ रहेगा। कंगूरे के गीत गाने वाले हम आइए, अब नींव के गीत गाएँ। वह ईंट, जो सब ईंटों से ज्यादा पक्की थी, यदि ऊपर लगी होती, तो कंगूरे की शोभा सौ गुनी कर देती। किंतु इमारत की पायदारी उसकी नींव पर मुनहसिर होती है, इसलिए उसने अपने को नींव में अर्पित कर दिया। सुंदर सृष्टि हमेशा ही बलिदान खोजती है। बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का। सुंदर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की-पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है। सुंदर समाज बने, इसलिए कुछ तपे-तपाए लोगों को मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।

उत्तर : तैयार किए हुए प्रश्न :

(1) लेखक के अनुसार कौन-सी ईंट धन्य है और क्यों?

(2) नींव की ईंट को हिला देने से इमारत पर क्या असर पड़ेगा?

(3) इमारत की मजबूती का आधार क्या है?

(4) सुंदर सृष्टि क्या खोजती है?

6414132

(3)

प्रेम एक ऐसी अलौकिक शक्ति है, जिससे मनुष्य को अनंत लाभ होते हैं, प्रेम से मानसिक विकार दूर होते हैं, विचारों में कोमलता आती है, सद्‌गुणों की सृष्टि होती है, दुखों का नाश और सुखों की वृद्‌धि होती है और यहाँ तक कि मनुष्य की आयु भी बढ़ती है। प्रेम ही मनुष्य को साहसी, धीर और सहनशील बनाता है। माता अपने बच्चों के लिए अनंत कष्ट सहती है और स्वयं सब प्रकार के दुख भोगकर उसे सुख देती है। माताओं को बहुधा ऐसी अवस्था में रहना पड़ता है, जिसमें यदि प्रेम का सहारा न हो, तो वे बहुत शीघ्र बीमार हो जाएँ, पर यह प्रेम उन्हें रोगी होने से बचाता है। उलटे शुद्‌ध प्रेम उन्हें बलिष्ठ और सुंदर बनाता है। बिना प्रेम के अच्छी सुख-सामग्री हमें तनिक भी प्रसन्न नहीं कर सकती, पर प्रेम की सहायता से हम बिना किसी सुख-सामग्री के भी परम सुखी हो सकते हैं। अंतः प्रत्येक मनुष्य को अपना स्वभाव मिलनसार और प्रेमपूर्ण बनाना चाहिए।

उत्तर : तैयार किए हुए प्रश्न :

(1) प्रेम से क्या-क्या लाभ होते हैं ?

(2) प्रेम से मनुष्य कैसा बनता है ?

(3) माता बच्चों के लिए क्या सहती है ?

(4) मनुष्य का स्वभाव कैसा होना चाहिए ?

64141132

कृति-स्वाध्याय

प्रश्न. निम्नलिखित प्रत्येक गद्‌यांश पर आधारित चार प्रश्न तैयार कीजिए :

(1)

गीता जीवन की कला सिखाती है। जब मैं देखता हूँ कि हमारा समाज आज हमारी संस्कृति के मौलिक सिद्‌धांतों की अवहेलना करता है, तब मेरा हृदय फटता है। आप चाहे जहाँ जाएँ, परंतु संस्कृति के मौलिक सिद्‌धांतों को सदैव साथ रखें। संसार के सारे सुख क्षणभंगुर एवं अस्थायी होते हैं। वास्तविक सुख हमारी आत्मा में ही है। चरित्र नष्ट होने से मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता है। संसार के राज्य पर विजयी होने पर भी आत्मा की हार सबसे बड़ी हार है। यही है हमारी संस्कृति का सार, जो अभ्यास द्‌वारा सुगम बनाकर कार्यरूप में परिणत किया जा सकता है।

(2)

उन्नति के पथ पर चलने वाला छात्र प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ही उठ बैठता है। नित्य कर्म से निवृत्त होकर वह स्नान करता है। तत्पश्चात् भगवान से प्रार्थना करता है कि वह सदा उसका पथ-प्रदर्शक रहे। पूजन के बाद व्यायाम करना उत्तम छात्र के लिए आवश्यक है। इसके बिना शरीर सबल, सुंदर और सुगठित नहीं हो सकता। जिस मंदिर में सुंदरता न हो, उसमें बैठने वाली मूर्ति सुंदर नहीं हो सकती। व्यायाम के बाद थोड़ा जलपान करना अत्यंत हितकर होता है। उसके बाद दैनिक समाचारपत्र भी देखना चाहिए, ताकि संसार, देश, नगर तथा पड़ोस की गतिविधि का परिचय हो जाए। इसका ज्ञान न होने से कभी-कभी बड़ी हानि होती है। समाचार-पठन के पश्चात् विद्‌यार्थी अपने पाठ्य विषयों का अध्ययन करता है, उस पर विचार तथा नवीन अभ्यास का प्रयत्न करता है।

3. वृत्तांत-लेखन | 5 अंक

ध्यान में रखें :

- कृतिपत्रिका के **प्रश्न 5 (आ) (1)** में वृत्तांत-लेखन का प्रश्न होता है। इस कृति में एक विषय तथा स्थान का नाम दिया जाता है। उस पर 70 से 80 शब्दों में वृत्तांत तैयार करना होता है। वृत्तांत के लिए आयोजित किए जाने वाले शिविर, वृक्षारोपण कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, साक्षरता प्रसार कार्यक्रम आदि विषय दिए जा सकते हैं। वृत्तांत लेखन में स्थल, काल, घटना का लिखना अनिवार्य है। इसके अलावा वृत्तांत का शीर्षक भी देना चाहिए। इसके लिए **5 अंक** हैं।

वृत्तांत-लेखन

वृत्तांत-लेखन का अर्थ है किसी को सूचना देने के लिए किया गया किसी घटना का विस्तृत वर्णन।

वृत्तांत में किसी सत्य घटना का वर्णन किया जाता है। यह वर्णन क्रमबद्ध होता है। अर्थात जिस क्रम से पूरी घटना हुई हो, उसी क्रम के अनुसार उसका वर्णन किया जाता है। घटना के प्रसंगों में उलट-फेर नहीं किया जाता। इसके अतिरिक्त वर्णन इतना सजीव होता है कि पाठक के सामने पूरा चित्र साकार हो जाता है।

वृत्तांत समाचारपत्र और सामयिक पत्रिकाओं के लिए तैयार किए जाते हैं। विशेष घटना या प्रसंग, शैक्षणिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम, सम्मेलन या समारोह, नेताओं की सभा, दुर्घटना आदि के वृत्तांत हम समाचारपत्रों में देखते हैं।

6414132

वृत्तांत लिखते समय ध्यान में रखने योग्य बातें :

(1) वृत्तांत के लिए दिए गए विषय को भली-भाँति समझ लीजिए। उसके आधार पर कच्ची रूपरेखा तैयार कीजिए। इसके बाद घटना-क्रम के अनुसार वृत्तांत लिखिए।

(2) वृत्तांत में केवल महत्त्व की बातों का ही समावेश करना चाहिए। गौण बातें छोड़ देनी चाहिए। घटना के वर्णन में एकसूत्रता होनी चाहिए।

(3) वृत्तांत में दिनांक, समय, स्थान, व्यक्ति-विशेष आदि का स्पष्ट निर्देश होना चाहिए।

(4) वृत्तांत में घटना का सुंदर और सजीव वर्णन करना चाहिए। कहीं भी अस्वाभाविकता या अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए।

(5) वृत्तांत घटना-क्रम के अनुसार अनुच्छेद में लिखना चाहिए।

(6) वृत्तांत को एक छोटा और आकर्षक शीर्षक देना चाहिए।

वृत्तांत-लेखन के नमूने

(1) प्र. स्वराज्य विद्यालय, पुणे में 2 अक्तूबर 2021 को मनाए गए स्वच्छता अभियान का 70 से 80 शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए।

(वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख होना अनिवार्य है।)

उत्तर : वृत्तांत

स्वराज्य विद्यालय में स्वच्छता अभियान संपन्न

(कार्यालय प्रतिनिधि द्वारा)

पुणे, 3 अक्तूबर, 2021. कल 2 अक्तूबर, 2021 को गांधी जयंती के अवसर पर स्थानीय स्वराज्य विद्यालय की ओर से स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने विद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों को साफ किया। रंग-रोगन से विद्यालय के परिसर और वर्ग के कमरों को सजाया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रांगण में एक समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह के अध्यक्ष स्थानीय पार्षद श्री दीनानाथ भटकर थे। इस अवसर पर छात्रों एवं अध्यापकों के अतिरिक्त विद्यार्थियों के अभिभावक भी उपस्थित थे।

विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री जतिन देसाई ने अध्यक्ष महोदय का स्वागत किया और उनका परिचय दिया। अध्यक्ष महोदय ने स्वच्छता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

अंत में विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक श्री राणे ने उपस्थित महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

(2) महात्मा गांधी स्मारक हाईस्कूल, रत्नागिरी में मनाए गए शिक्षक दिवस समारोह का 70 से 80 शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए।

उत्तर :

शिक्षक दिवस पर शिक्षकों के महत्त्व पर प्रकाश

(कार्यालय प्रतिनिधि)

रत्नागिरी, 6 सितंबर 2021.

रत्नागिरी के महात्मा गांधी स्मारक हाईस्कूल के प्रांगण में कल 5 सितंबर को शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य रत्नेश पाटील ने की।

समारोह का प्रारंभ सरस्वती वंदना से हुआ। इसके बाद प्राचार्य महोदय ने मंच पर रखे हुए डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण किया। उन्होंने डॉ. राधाकृष्णन का परिचय दिया और बताया कि अध्यापक दिवस उनके जन्मदिन 5 सितंबर को मनाया जाता है। विद्यालय के उपप्राचार्य दत्ताराम चव्हाण ने अध्यक्ष महोदय का शॉल, श्रीफल तथा पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। उन्होंने अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने शिक्षकों के महत्त्व के बारे में बताया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने एक नृत्य नाटिका का मंचन किया।

विद्यार्थियों की ओर से विद्यालय के प्रत्येक शिक्षक को पुष्पगुच्छ भेंट किया गया। उपप्राचार्य ने आमंत्रित व्यक्तियों एवं अध्यक्ष महोदय का आभार व्यक्त किया।

अंत में राष्ट्रगान के साथ समारोह की समाप्ति हुई।

(3) निम्नलिखित विषय से संबंधित वृत्तांत तैयार कीजिए :

- **गाला विद्यालय, नाशिक – 422 002 के प्रांगण में मनाए गए 'बाल दिवस' का 70 से 80 शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए।**

उत्तर :

बाल दिवस का शानदार समारोह

नाशिक के गाला विद्यालय प्रांगण में 14 नवंबर, 2021 को धूमधाम से बाल दिवस मनाया गया। विद्यालय के प्रवेश द्वार को फूलों से सजाया गया था। मंच पर बच्चों के प्यारे चाचा जवाहरलाल नेहरू का बड़ा-सा चित्र रखा गया था। चित्र को लाल गुलाब के फूलों का हार पहनाया गया था।

समारोह की अध्यक्षता शहर के प्रसिद्ध कवि रामभाऊ पाटील ने की। कार्यक्रम की शुरुआत 'सरस्वती वंदना' से हुई। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया। अध्यक्ष जी ने बच्चों के प्रति नेहरू जी के प्यार से संबंधित कई घटनाएँ सुनाई। उन्होंने बच्चों से नेहरू जी के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए कहा। इस अवसर पर कुछ बच्चों ने नेहरू जी के बारे में अपनी रचनाएँ भी सुनाई। विद्यालय के कला मंडल ने नेहरू चित्रावली तथा रंगोली को आयोजन किया।

विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक विशाल देशमुख ने अध्यक्ष महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

6414132

कृति-स्वाध्याय

प्रश्न. निम्नलिखित विषयों से संबंधित 70 से 80 शब्दों में वृत्तांत तैयार कीजिए :
(वृत्तांत में स्थान, समय, घटना का उल्लेख आवश्यक है।)

(1) आजाद भारत विद्यालय, कोल्हापुर में संपन्न वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह।
(2) सरदार पटेल इंटर कालेज, रत्नागिरी में मनाए गए स्वतंत्रता दिवस समारोह।
(3) जनता विद्यालय, अकोला में मनाए गए गणतंत्र दिवस समारोह।
(4) जवाहर विद्यालय, यवतमाल में संपन्न वृक्षारोपण समारोह।
(5) जयप्रकाश नारायण हाईस्कूल, औरंगाबाद में दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के विदाई समारोह।
(6) आदर्श पाठशाला, अमरावती में संपन्न वाचन प्रेरणा दिन समारोह।
(7) प्रगति विद्यालय, अमरावती में मनाए गए 'हिंदी दिवस समारोह'।
(8) विवेकानंद विद्यालय, सोलापुर में संपन्न 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान का रोचक वृत्तांत-लेखन 60 से 80 शब्दों में लिखिए। (वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख होना अनिवार्य है।) ***(मार्च '20)***
(9) प्रगति विद्यालय, वर्धा में मनाए गए 'बालिका दिवस' समारोह का 60 से 80 शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए। ***(नवंबर '20)***

4. कहानी-लेखन | 5 अंक

ध्यान में रखें :

- **प्रश्न 5 (आ) (1)** में 'वृत्तांत-लेखन' के विकल्प में 'कहानी-लेखन' का प्रश्न होता है। इस प्रश्न के उत्तर में मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में कोई कहानी लिखनी होगी। शब्दों अथवा सुवचनों के आधार पर भी कहानी लिखने के लिए कहा जा सकता है। कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक देना होता है तथा सीख भी लिखनी होती है।
- **कहानी लिखते समय ध्यान में रखने योग्य बातें :**
  (1) सबसे पहले कहानी की रूपरेखा को अच्छी तरह समझ लीजिए।
  (2) कहानी के प्रत्येक संकेत को क्रम से विस्तार दीजिए।
  (3) कहानी के स्थान, पात्र आदि के नाम दीजिए। घटना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
  (4) कहानी भूतकाल में लिखिए।
  (5) पूरी कहानी को 3 – 4 परिच्छेदों में बाँटकर लिखिए। विरामचिह्नों का उचित प्रयोग कीजिए।
  (6) कहानी की लिखावट स्वच्छ और सुंदर होनी चाहिए। लिखने के बाद पूरी कहानी एक बार पढ़ लेनी चाहिए।
  (7) कहानी का उचित शीर्षक और सीख अवश्य लिखें।
- कहानी-लेखन के लिए **5 अंक** है।

कहानियों के नमूने

प्रश्न. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में रोचक कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :

(1) एक सुंदर वन – इंद्र का आगमन – वन का सौंदर्य देखना – सूखे पेड़ पर तोते को देखना – सवाल पूछना – तोते का जवाब – इंद्र का वरदान – सीख।

उत्तर : **सच्चा मित्र** *अथवा* **कृतज्ञता**

एक बहुत सुंदर वन था। उसमें फलों और फूलों से लदे हुए तरह-तरह के वृक्ष थे। उन वृक्षों पर कई तरह के पक्षी रहते थे।

एक दिन उस वन में इंद्र देवता आए। वन का सौंदर्य देखकर वे प्रसन्न हुए। घूमते-घूमते उन्होंने एक सूखा हुआ पेड़ देखा। उस पर एक दुखी तोता बैठा था। इंद्र ने तोते से ऐसे वृक्ष पर बैठने का कारण पूछा।

तोते ने कहा, ''एक समय यह वृक्ष फलों-फूलों से संपन्न था। इसने बरसों तक मुझे आश्रय दिया, मुझे मीठे फल खिलाए और आँधी-पानी में सुरक्षा दी। अब बुरे दिनों में मैं इस वृक्ष का साथ कैसे छोड़ दूँ?''

तोते का जवाब सुनकर इंद्र बहुत खुश हुए। उन्होंने सूखे पेड़ को फिर से हरा-भरा कर दिया। अब वह पेड़ फल-पुष्पों से लद गया। यह देखकर तोते की खुशी का ठिकाना न रहा।

सीख : मानव का आचरण कृतज्ञतापूर्ण होना चाहिए। ••

(2) एक लालची आदमी – कड़ी तपस्या करना – देवता का प्रसन्न होना – वरदान – दौड़कर जितनी जमीन घेरोगे, उतनी तुम्हारी – दौड़ते रहना – थककर गिरना – मृत्यु – सीख।

उत्तर : **अत्यधिक लालच का परिणाम** *अथवा* **लालच बुरी बला**

एक गाँव में एक संपन्न आदमी रहता था। उसका नाम रामेश्वर था। उसके पास काफी खेत थे। लेकिन वह बहुत लालची था। वह अधिक-से-अधिक जमीन पाने के लिए अधीर रहता था।

एक बार उसने अपनी इस इच्छा के बारे में एक साधु से चर्चा की। साधु ने रामेश्वर को एक मंत्र बताया और उससे कहा, ''इस मंत्र का जाप करने से तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी।''

रामेश्वर ने साधु के बताए अनुसार जाप करना शुरू कर दिया। एक दिन उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर देवता उसके सामने प्रकट होकर बोले, ''वत्स, तुम्हारी तपस्या से मैं प्रसन्न हूँ। क्या चाहिए तुम्हें?'' रामेश्वर ने कहा, ''प्रभु, मुझे वरदान दीजिए कि गाँव में मेरे पास सबसे अधिक जमीन हो जाए।''

देवता ने कहा, ''तथास्तु! बेटा, सूर्यास्त होने के पहले दौड़कर तुम जितनी जमीन घेर लोगे, उतनी जमीन तुम्हारी हो जाएगी।'' फिर देवता अंतर्धान हो गए।

रामेश्वर ने दौड़ना शुरू किया। वह दौड़ता ही रहा। आखिरकार वह बेहोश होकर गिर पड़ा। लोगों ने दौड़कर उसे उठाया, किंतु उसके हृदय की गति रुक चुकी थी। जमीन के लालच में रामेश्वर ने जान गँवा दी।

सीख : लालच का फल अच्छा नहीं होता। ••

6414132

(3) दो मित्र – नौका पर सवार – तूफान में नौका फँसना – नाव पलटना –दोनों का पानी में बहना – लकड़ी का तख्ता मिलना – दोनों का उसे पकड़ना – दोनों का भार सँभालने लायक नहीं – एक का त्याग – दूसरे का बचना – सीख।

सच्चे मित्र

रघु और मधु का घर समुद्र के किनारे था। दोनों मछलियाँ पकड़ने का धंधा करते थे। दोनों में बड़ी दोस्ती थी। रघु के बाल-बच्चे थे और मधु की शादी अभी नहीं हुई थी। उसके परिवार में केवल उसकी माँ थी।

एक बार दोनों एक ही नाव में सवार होकर मछली पकड़ने गए। धीरे-धीरे वे बहुत गहरे समुद्र में चले गए। उन्हें काफी मछलियाँ हाथ लगीं। लेकिन तभी आसमान में काले-काले बादल घिर आए और जोरदार बरसात शुरू हो गई। समुद्र तूफानी हो गया और ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगीं। दोनों दोस्तों की नाव लहरों का सामना नहीं कर पाई। एक लहर से टकराकर वह पलट गई।

रघु और मधु समुद्र में बहने लगे। तभी दूर बहता हुआ एक तख्ता उधर आया। दोनों ने उसे पकड़ लिया। लेकिन वह दोनों का भार सँभालने लायक नहीं था। मधु ने रघु से कहा,''दोस्त, मैं चला। तुम इस तख्ते के सहारे किसी तरह किनारे पहुँचो। तुम्हारे बाल-बच्चे हैं। मैं ठहरा अकेला। पर दोस्त, मेरी माँ की जिम्मेदारी अब तुम पर रही।''

यह कहकर मधु ने तख्ता छोड़ दिया और समुद्र के अथाह जल में समा गया। रघु तख्ते के सहारे किसी तरह समुद्र के किनारे पहुँचने में सफल हो गया।

सीख : सच्ची मित्रता नि:स्वार्थ और त्यागपूर्ण होती है।

कृति-स्वाध्याय

प्रश्न. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 70 से 80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :

(1) एक बूढ़ा किसान – चार बेटे – बेटों का आपस में लड़ना-झगड़ना – किसान मृत्यु शय्या पर – बेटों की चिंता – बेटों को बुलाना – लकड़ियों का गट्ठर तोड़ने के लिए कहना – तोड़ न पाना – गट्ठर की लकड़ियाँ अलग करना – प्रत्येक बेटे को एक-एक लकड़ी देना – तोड़ने के लिए कहना – आसानी से तोड़ना – सीख।

(2) एक राजा – लड़ाई में हारना – गुफा में छिपना – दीवार पर मकड़ी – चढ़ना-गिरना – अंत में सफलता – राजा के मन में साहस का संचार – फिर से चढ़ाई करना – राज्य वापस लेना – सीख।

(3) बारहसिंगा का पानी पीने जाना – पानी में अपनी छाया देखना – सुंदर सींगों पर अभिमान – पतले पैरों पर दुख – शिकारी का आना – बारहसिंगे का भागना – झाड़ी में सींगों का फँसना – परिणाम – सीख।

(4) किसान के घर में चोर – घबराना – पत्नी की युक्ति – जोर से कहना – रुपए-गहने पिछवाड़े बंजर जमीन में छिपा दिए हैं – चोरों का बंजर जमीन खोदना – कुछ न मिलना – किसान को आनंद – सीख।

(5) राघव और माता-पिता – सुखी परिवार – राघव हमेशा मोबाइल पर – कान में इयरफोन – माता-पिता का मना करना – राघव का ध्यान न देना – सड़क पार करना – कान में इयरफोन – दुर्घटना – सीख।

(6) एक लड़का – रोज निश्चित समय पर घर से निकलना – देर से वापस आना – माँ का परेशान होना – सच्चाई का पता चलना – गर्व अनुभव होना – सीख।

(7) भिखारी – भीख माँगना – एक व्यक्ति का रोज देखना – फूलों का गुच्छा देना – भिखारी का फूल बेचना – मंदिर के सामने दुकान खोलना – सीख।

(8) एक गाँव – गाडगे बाबा का प्रवेश – अस्वच्छता देख दुख – अकेले स्वच्छता करने में लगना – रोज आकर स्वच्छता – धीरे-धीरे लोगों का हाथ में झाड़ू उठाना – रोज एक घंटा स्वच्छता अभियान में – गाँव में स्वच्छता – लोगों का स्वच्छता के महत्त्व को समझना – बाबा का दूसरे गाँव जाना – लोगों का स्वच्छता अभियान जारी – सीख।

(9) एक लड़की – अपना जन्मदिन अलग तरीके से मनाकर अपने लिए कुछ न लेना – दूसरों को बाँटना – खुशी का अनुभव करना – सीख।

(10) लोमड़ी सारस में मित्रता – लोमड़ी का सारस को मूर्ख बनाने का विचार – दावत पर बुलाना – थाली में खीर परोसना – लंबी चोंच – सारस का भूखा रहना – सारस का बदला – लोमड़ी को निमंत्रण – सुराही में खीर परोसना – लोमड़ी का भूखा रहना – सीख।

(11) एक गाँव – अस्वच्छता के कारण लोगों का बीमार होना – गाँव के युवा दल द्वारा कूड़ा-कचरा एकत्रित करना – नई योजना बनाना – खाद तैयार करके लोगों में बाँटना – गाँव का रूप बदलना – गाँव को पुरस्कार प्राप्त होना।

(नवंबर '20)

6414132

5. विज्ञापन – लेखन | 5 अंक

ध्यान में रखें :

- कृतिपत्रिका के **प्रश्न 5 (आ) (2)** में विज्ञापन लेखन का एक प्रश्न होता है।

विज्ञापन तैयार करना एक कला है। यह कला काफी अनुभव के बाद ही आती है। अच्छे विज्ञापन में विज्ञापन बनाने वाले व्यक्ति की बुद्धिमत्ता, जीवन के बारे में उसके अनुभव, संबंधित वस्तु के बारे में विज्ञापन बनाने वाले व्यक्ति की जानकारी तथा विज्ञापन प्रस्तुत करने की उसकी कला आदि का परिचय मिलता है।

विज्ञापन तैयार करते समय प्रभावशाली शीर्षक, कोई सुभाषित अथवा सुवचन आदि का प्रयोग विज्ञापन में रंग ला देता है। विज्ञापन की भाषा सीधी-सादी होनी चाहिए। आम बोलचाल की भाषा भी विज्ञापन में प्रयुक्त हो सकती है। भाषा ऐसी हो, जो ग्राहक को वस्तु खरीदने के लिए प्रेरित कर सके।

- इसके लिए **5 अंक** हैं।

विज्ञापन क्या है? किसी वस्तु आदि का किसी माध्यम के द्वारा लोगों में प्रचार करना विज्ञापन कहलाता है। विज्ञापन प्राय: **तीन प्रकार** के होते हैं : (1) वस्तु संबंधी (2) व्यक्ति संबंधी (3) स्थान संबंधी।

वस्तु संबंधी विज्ञापन में किसी विक्रय योग्य वस्तु के बारे में आकर्षक जानकारी देकर उसे खरीदने के लिए लोगों को ललचाया जाता है। ऐसे विज्ञापन, अखबार में छपते और रेडियो और दूरदर्शन पर प्रसारित होते हैं। इनमें केश-तेल, साबुन, पावडर, शैंपू तथा खाद्य पदार्थों आदि के विज्ञापनों का समावेश होता है।

व्यक्ति संबंधी विज्ञापनों का उद्देश्य किसी कार्य या किसी पद पर नियुक्ति के लिए योग्य व्यक्ति की खोज करना होता है।

ऐसे विज्ञापन घर-नौकर, चौकीदार, सेल्समैन, रसोइया, शिक्षक, मैनेजर आदि के बारे में होते हैं। ये विज्ञापन प्राय: अखबारों में दिए जाते हैं। विज्ञापन में व्यक्ति की योग्यता, वेतन आदि से संबंधित जानकारी होती है।

64141132

स्थान संबंधी विज्ञापनों में निवास स्थान, दुकान अथवा जमीन आदि की उपलब्धता अथवा खरीद-बिक्री से संबंधित विज्ञापन दिए जाते हैं।

विज्ञापन के नमूने

प्रश्न. निम्नलिखित जानकारियों के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :

(1)

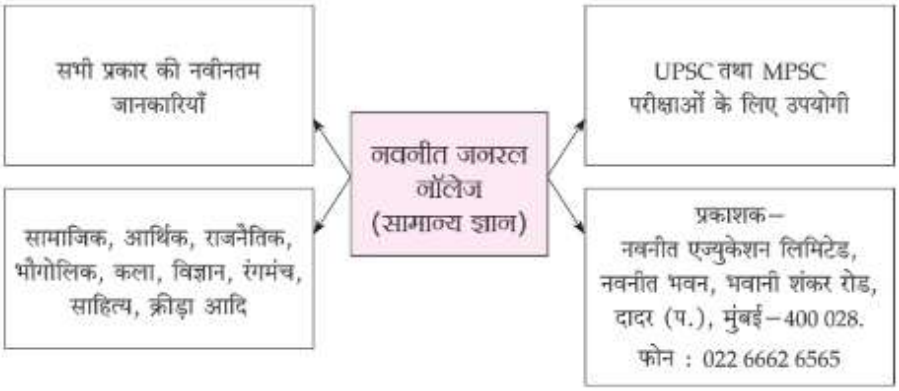

उत्तर :

प्रतियोगिता में सफलता दिलाने वाली एकमात्र पुस्तक

नवनीत जनरल नॉलेज

(सामान्य ज्ञान)

नवीनतम जानकारियों से भरपूर

भारत और विश्व के भूगोल, इतिहास, अर्थव्यवस्था, समाज, राजनीति, पर्यावरण, रंगमंच, संगीत, फिल्म, साहित्य, पुराणकथा, चित्रकला, शिल्पकला, वास्तुकला, नृत्य, विज्ञान प्रौद्योगिकी, क्रीड़ा तथा पुरस्कार और सम्मान के संबंध में सब कुछ है इस ग्रंथ में–

UPSC तथा MPSC

परीक्षाओं के लिए सफलता दिलाने वाली

नवनीत जनरल नॉलेज

NAVNEET®

6414132

नवनीत एज्युकेशन लिमिटेड

नवनीत भवन, भवानी शंकर रोड, दादर (प.), मुंबई–400 028.

फोन– 022–6662 6565

(2)

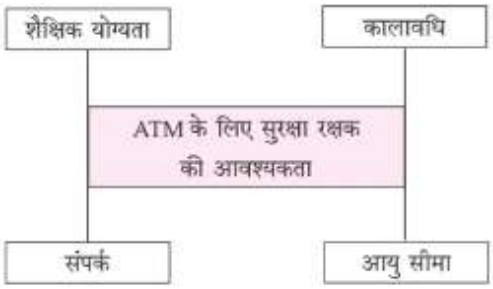

उत्तर :

चाहिए

ATM के लिए

चाहिए एक हट्टा कट्टा–स्वस्थ

सुरक्षा रक्षक

जिसकी आयु **25** से **30** वर्ष के बीच हो!

शैक्षिक योग्यता

ग्रेज्युएट

कार्य का समय : सुबह 10.00 बजे से शाम 6.00 बजे तक

संपर्क करें

H ATM SERVICE

Mob. 121221××××

e-mail : H atm@xyz.com

(3)

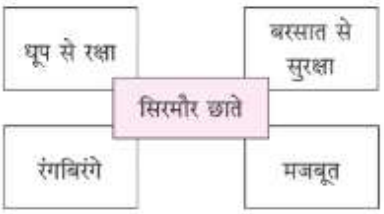

उत्तर :

धूप न सताए! बरसात से बचाए!

सिर पर सवार रहे! 'छत्र' बन जाए!

छतरी भी कहलाए और

छाता भी कहलाए।

इस छाते को लगाकर सभी इतराएँ!

सुंदर, रंगबिरंगे, मजबूत और सदाबहार

छाते

सर्वत्र उपलब्ध

वाजिब दाम : चोखा काम

कृति-स्वाध्याय

प्रश्न. निम्नलिखित जानकारियों के आधार पर 50 से 60 शब्दो में विज्ञापन तैयार कीजिए :

(1)

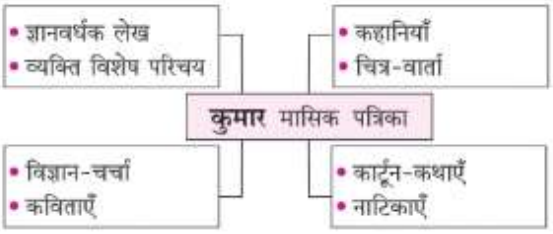

(2) निम्नलिखित जानकारियों के आधार पर 50 से 60 शब्दो में विज्ञापन तैयार कीजिए :

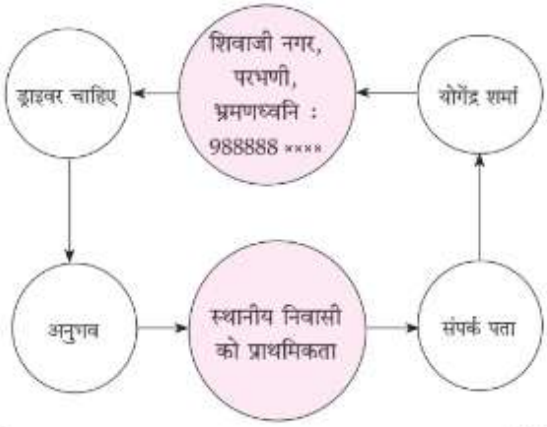

6414132

(3) निम्नलिखित जानकारियों के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :

ग्रेज्युएट
हिंदी, मराठी बोलने में
कुशल, अंग्रेजी बोलने में सक्षम

हमारे डिपार्टमेंटल स्टोर के लिए
चाहिए दो युवा
सैल्समैन

वेतन : 8,000 से 12,000 तक
ड्यूटी समय : 11 बजे से 7 बजे तक

संपर्क –
शर्मा फर्निशिंग स्टोर, टैंक रोड, अमरनगर, अमरावती – 444 603

(4) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर जलगाँव में स्थित समता विद्यालय में आयोजित नाट्याभिनय शिविर का लगभग 50 से 60 शब्दों में आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए :

स्थान | संपर्क | तज्ज्ञ मार्गदर्शक | समय | उपलब्धियाँ

(5) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर नागपुर के एकता विद्यालय में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी का लगभग 50 से 60 शब्दों में आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए :

स्थान | तिथि, समय | मॉडल के प्रकार | विशेषता

(6) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 50 से 60 शब्दों में आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए :

वसुंधरा नर्सरी, सातारा | विशेषताएँ | संपर्क – पता

(7) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर लगभग 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :

6414132

सचिन स्पोर्ट्स् सेंटर, नं. 4, सोलापुर | संपर्क – पता

सभी प्रकार की खेल – सामग्री | समय | भारी छूट लकी ड्रा

(8) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर लगभग 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :

सुमंगल यात्रा कंपनी | संपर्क

विशेषताएँ | ई-मेल

(9) निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर 50 से 60 शब्दों में साबुन का विज्ञापन तैयार कीजिए :

कपड़ों की मैल हटाना | पीलापन दूर करना | चमक लाना | झकाझक बनाना

(10) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :

अपनी मदद आप | विशेषज्ञों का मार्गदर्शन | निर्भय बनिए | अलग-अलग वेल्ट का प्रशिक्षण

(11) **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :**

- स्कूल बस के लिए ड्राइवर चाहिए : ***(मार्च '20)***

शैक्षिक अर्हता	अनुभव	व्यावसायिक अर्हता	वेतन	संपर्क : महात्मा हिंदी विद्यालय पुणे। मो.नं. 2332422409

(12) **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :** ***(नवंबर '20)***

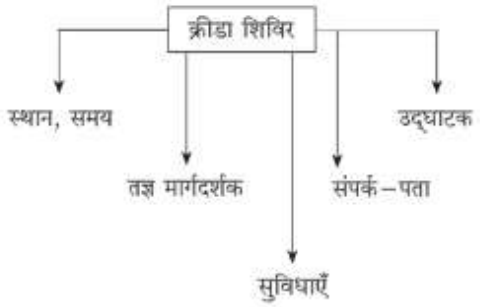

6414132

6. निबंध-लेखन | 7 अंक

ध्यान में रखें :

(1) हिंदी की कृतिपत्रिका में प्रश्न 5 **(इ)** में निबंध-लेखन के लिए तीन विषय दिए जाते हैं। उनमें से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में एक निबंध लिखने के लिए कहा जाता है।

पाठ्यक्रम में निबंध के पाँच प्रकार हैं :

(1) वर्णनात्मक (2) विवरणात्मक (3) विचारात्मक (वैचारिक) (4) कल्पनाप्रधान (5) आत्मकथनात्मक।

कृतिपत्रिका में इनमें से तीन प्रकार के निबंध पूछे जाएँगे। विद्यार्थियों को केवल एक निबंध लिखना है।

इसके लिए **7 अंक** हैं।

निबंध लिखते समय ध्यान में रखने योग्य बातें :

(1) सबसे पहले निबंध के विषय पर विचार करके उसकी **रूपरेखा** तैयार करनी चाहिए। रूपरेखा से निबंध की लंबाई का अंदाजा लग जाएगा। यदि वह अधिक लंबा जान पड़े, तो कम महत्त्व के मुद्दों को निकाल दें।

(2) **निबंध का प्रारंभ** आकर्षक और स्वाभाविक होना चाहिए। विषय की व्याख्या देकर प्रारंभ करने से निबंध नीरस प्रतीत होता है। किसी उदाहरण, चुटकुले या कविता की पंक्ति से निबंध का प्रारंभ किया जा सकता है।

(3) निबंध के **मध्य भाग के मुद्दों** को ऐसे ढंग से रखना चाहिए, जिससे पूरे **विषय का प्रतिपादन** हो सके। निबंध में प्रस्तुत **विचार** स्पष्ट और सुलझे हुए हों। निबंध को **विषयांतर और पुनरुक्ति दोष से बचाएँ।**

(4) निबंध का **अंत** आकर्षक, स्पष्ट, संक्षिप्त और भावपूर्ण होना चाहिए।

(5) निबंध के भिन्न-भिन्न मुद्दों के लिए **अलग-अलग परिच्छेद** होने चाहिए।

(6) अलंकार, मुहावरे, कहावतें, तुलना आदि के प्रयोगों से निबंध का सौंदर्य बढ़ाया जा सकता है। इनका प्रयोग उचित स्थान पर और उचित ढंग से होना चाहिए।

(7) **वाक्य छोटे, स्पष्ट और अर्थपूर्ण होने चाहिए।** शब्दों की **वर्तनी (Spelling)** शुद्ध होनी चाहिए। **विरामचिह्नों का यथा स्थान प्रयोग** करना जरूरी है। **भाषा व्याकरण शुद्ध** होनी चाहिए। **लेखन-शैली** विषय के **अनुरूप, सरल** और **प्रवाहमयी** हो।

निबंध के नमूने

प्रश्न. निम्नलिखित विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए :

1. बीता हुआ समय कभी नहीं लौटता (विचारात्मक)

जिस प्रकार कमान से छूटा तीर, मुँह से निकली बात, डाल से टूटा पुष्प कभी अपने स्थान पर नहीं आता, उसी प्रकार बीता हुआ समय कभी नहीं लौटता। किसी ने ठीक ही कहा है समय तथा समुद्र की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं। इस संसार में सबसे अमूल्य वस्तु है समय। जो इसे नष्ट करता है, वह स्वयं नष्ट हो जाता है। संसार की हर चीज को घटाया-बढ़ाया जा सकता है, पर समय को नहीं। समय किसी के अधीन नहीं रहता।

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।

संत कवि कबीरदास जी की उक्ति उचित ही है। समय अबाध गति से चलता रहता है। समय बहुत मूल्यवान है। गया हुआ वैभव वापस मिल सकता है, पर बीता हुआ समय कभी वापस लौटकर नहीं आता। इसलिए समय धन से भी अधिक मूल्यवान है। जो इसका सदुपयोग कर लेता है, वही जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता है। समझदार लोग सदैव समय का सदुपयोग करते हैं। समय को व्यर्थ गँवाना उचित नहीं।

इतिहास साक्षी है जो व्यक्ति समय को पहचानकर इसका सदुपयोग करता रहा, उसने बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त कीं। वह उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ता गया। मैडम क्यूरी ने बीस-बीस घंटे प्रयोगशाला में परिश्रम किया, तब वे रेडियम की खोज कर पाईं। हम गाँधी, नेहरू, लिंकन, लेनिन आदि महापुरुषों का आदर करते हैं। ये सभी अपने कर्तव्य में लगे रहते थे। इन्होंने समय का मूल्य समझा और रात-दिन कार्य किया। समय का सदुपयोग करके ही ये महान नेता बन सके। समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति भविष्य में एक सफल नागरिक बनता है। अत: जो भी समय मिले उसका सदुपयोग करना चाहिए। जैसे समय पर बोया गया बीज उचित फल देता है, वैसे ही समय पर किया गया कार्य भी उचित फल अवश्य प्रदान करता है। ••

6414132

2. पुस्तकालय के लाभ (वर्णनात्मक)

ज्ञान का क्षेत्र असीम है। युगों से मानव अपने ज्ञान तथा अनुभव को समय-समय पर लिपिबद्ध कर सुरक्षित करता रहा है। आज विश्व में विभिन्न भाषाओं में विभिन्न विषयों की पुस्तकों का अथाह भंडार है। ज्ञानराशि के इस भंडार को ही पुस्तकालय कहा जाता है।

पुस्तकालय विभिन्न प्रकार के होते हैं। व्यक्तिगत तौर पर अपने घर में पुस्तकें एकत्र करके निजी पुस्तकालय बनाए जाते हैं। दूसरी ओर विद्यालय, महाविद्यालय, कार्यालय आदि के स्तर पर सार्वजनिक पुस्तकालय होते हैं। मनुष्य के मानसिक व बौद्धिक विकास में पुस्तकालय का विशिष्ट योगदान है। सीमित साधनों के कारण प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न विषयों की पुस्तकें, समाचारपत्र आदि नहीं खरीद पाता। पुस्तकालय में एक ही समय में व्यक्ति देश-विदेश की कला, संस्कृति तथा इतिहास से परिचित होता है। पाठक बिना धन व्यय किए विभिन्न प्रकार की कथा, नाटक, कविता, निबंध आदि का रसास्वादन कर सकता है।

पुस्तकालय से धर्म, इतिहास, विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि की पुस्तकें तथा लेखकों के चिंतन तथा जीवन दर्शन का ज्ञान प्राप्त होता है।

पुस्तकालय ज्ञान देने का उत्तम साधन तो है ही, स्वस्थ मनोरंजन का भी साधन है। पुस्तकालय जाकर पढ़ने से समस्त तनावों से मुक्ति मिलती है तथा मन व मस्तिष्क का परिष्कार होता है। यह समय का सदुपयोग करने का उत्कृष्ट साधन है।

पुस्तकालय की पुस्तकें सबकी संपत्ति होती हैं। अतः पुस्तकालय को स्वच्छ रखना, पुस्तकों को सही स्थान पर रखना प्रत्येक पाठक का कर्तव्य है। ••

3. नदी की आत्मकथा (आत्मकथनात्मक)

पर्वत से निकलकर कल-कल ध्वनि करती बहती पर्वतराज हिमालय की पुत्री मैं गंगा नदी हूँ। लोग मुझे अत्यंत पावन मानते हैं। बाल्यकाल में मैं बहुत नटखट थी। मेरा बचपन पर्वत के घने जंगलों तथा हरी-भरी घाटियों में बीता। वहीं मैं बड़ी हुई। चैन से बैठना मेरा स्वभाव ही नहीं है। नए-नए स्थान देखने का मेरा शौक मुझे अपने पिता की प्यार भरी गोद से दूर मैदानों में ले आया। उस समय मेरा जल दर्पण के समान स्वच्छ था।

पर्वत से नीचे उतरकर अथाह जलराशि के कारण मेरा विस्तार बढ़ा, परंतु मेरी गति धीमी हो गई। धीरे-धीरे समय बीतता गया, मेरे किनारों पर गाँव और नगर बसने लगे। इलाहाबाद, बनारस, कोलकाता आदि नगर मेरे कारण ही विशेष माने जाते हैं। लोग मेरा जल पीने, खाना बनाने, नहाने-धोने और खेतों की सिंचाई आदि विभिन्न कामों में लाते हैं। पशु-पक्षी भी मुझसे जल प्राप्त करते हैं। समय के साथ-साथ गाँवों और नगरों की उन्नति हुई। वहाँ अनेक परिवर्तन हुए। मेरे तटों पर घाट बनाए गए। नए-नए उद्योग-धंधे विकसित होने लगे। मुझ पर बाँध बाँधे गए। मुझसे नहरें निकाली गईं।

लोक कल्याण करना ही मेरे जीवन का उद्देश्य है। परंतु जब कभी बहुत अधिक वर्षा होती है, तब मेरा जल-स्तर बढ़ जाने से मुझमें बाढ़ आ जाती है। मेरे किनारे बसे हुए गाँव और नगर, खेत और पशु सब बाढ़ में बह जाते हैं। मुझे तब बहुत दुख होता है। परंतु प्रकृति के आगे मैं विवश हूँ।

मेरी जलधारा सदैव बहती रहती है। प्रत्येक जीव-जंतु को सुखी बनाती हुई, मैदानों को उपजाऊ बनाते हुए, हजारों, लाखों लोगों को एकता के सूत्र में बाँधकर लगभग ढाई हजार किलोमीटर की यात्रा करके अंत में मैं सागर में विलीन हो जाती हूँ। ••

4. यदि मैं अध्यापक होता... (कल्पनाप्रधान)

राष्ट्रनिर्माण में अध्यापक का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। अध्यापक समाज के निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। यह विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है। हमारे देश में आदि काल से ही गुरू-शिष्य की विशिष्ट परंपरा रही है।

प्राचीन काल में अध्यापक अपने विद्यार्थियों को निःस्वार्थ भाव से ज्ञान प्रदान करके उन्हें सत्य का मार्ग दिखाता था। परंतु आज सारी मान्यताएँ ही बदल गई हैं। आज का अध्यापक पूर्णरूप से व्यवसायी बन गया है। सेवा-भाव उससे कोसों दूर जा चुका है।

मेरा ऐसा मानना है कि बालकों के विकास में माता-पिता के साथ-साथ उनके अध्यापकों का भी योगदान होता है। यदि मैं अध्यापक होता तो मैं अपने विषय की अधिक से अधिक तथा नवीनतम जानकारी प्राप्त करता। मैं यथासंभव प्रयास करता कि मेरे पाठ रोचक हों तभी मेरे विद्यार्थी मेरी कक्षा में मन लगाकर पढ़ते। अपने विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय ज्ञान देकर ही संतोष न कर लेता। मैं प्रयास करता कि प्रत्येक विद्यार्थी पर समुचित ध्यान देकर उनके भीतर छिपी प्रतिभा को प्रकाश में लाऊँ।

मैं स्वयं नियमों का पालन करता और अपने विद्यार्थियों को भी नियम पालन के लिए प्रेरित करता। मैं उन्हें अनुशासन से होने वाले लाभों के विषय में बताता। मैं नैतिक मूल्यों तथा उच्च आदर्शों का पालन करते हुए उनमें अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करता। मैं जानता हूँ कि अध्यापक विद्यार्थियों के आदर्श होते हैं। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अध्यापकों के चरित्र, आचार-विचार व व्यवहार का प्रभाव विद्यार्थियों पर अवश्य पड़ता है।

मैं अध्यापक होता, तो अपने विद्यार्थियों को परिवार, समाज तथा अपनी मातृभूमि के प्रति उनके कर्तव्यों का बोध कराता। अनेक महापुरुषों के उदाहरण उनके सामने रखकर उनमें त्याग और बलिदान की भावना का विकास करता ताकि वे आगे चलकर देश के विकास में सहायक हों। ••

6414132

5. मेरा प्रिय हिंदी कवि (चरित्रात्मक)

हिंदी काव्य-साहित्य अत्यंत विशाल एवं समृद्ध है। अनेक कवियों ने अपनी सुंदर रचनाओं से हिंदी को पुष्पित और पल्लवित किया है। इन कवियों में से किसी एक कवि को अपना 'प्रिय' बताना बहुत मुश्किल है। फिर भी मैं राष्ट्रकवि स्वर्गीय 'मैथिलीशरण गुप्त' को अपना प्रिय कवि मानता हूँ।

मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति और भारतीय जनता के सच्चे प्रतिनिधि थे। उनका हृदय देशभक्ति से भरा हुआ था। उनका स्वदेश प्रेम उनके काव्यों में स्पष्ट झलकता है। भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं समाज का उनके काव्यों में वास्तविक चित्रण हुआ है। गुप्त जी हिंदी भाषा और साहित्य के शिल्पी थे। सरल-सुगम हिंदी उनकी कविता का प्रधान गुण है।

प्राचीनता के पुजारी होते हुए भी गुप्त जी नवीनता का स्वागत करने में किसी से पीछे नहीं रहे। 'भारत-भारती' में उन्होंने भारत की तत्कालीन दशा का जो मार्मिक चित्र खींचा है, उसमें उनका उद्देश्य भारतीयों को देश के प्रति जागृत करना था। 'साकेत' में गुप्त जी ने राम का जो रूप प्रस्तुत किया है, वह उनकी राष्ट्रीय भावना के अनुरूप है। यशोधरा, जयद्रथ-वध, पंचवटी, नहुष, अनघ आदि गुप्त जी की अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। गुप्त जी की सहानुभूति उन पात्रों को भी मिली है, जो कवियों द्वारा प्रायः उपेक्षित रहे हैं और जिनकी महिमा कोई परख नहीं सका। उर्मिला और यशोधरा भारतीय नारी-जीवन की ऐसी ही करुण एवं उपेक्षित प्रतिमाएँ हैं। वास्तव में गुप्त जी का काव्य लोककल्याण की भावना से युक्त है।

गुप्त जी राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रतिनिधि और लोकप्रिय कवि थे। उन्होंने लगभग ६० साल तक लगातार हिंदी साहित्य को सँवारा-सजाया और अनेक काव्य रत्नों से उसे समृद्ध किया। उनकी कविता में नारी-जीवन की करुणा, देश की दुर्दशा, अस्पृश्यता-निवारण, प्रकृति एवं मानव-जीवन की भिन्न-भिन्न झाँकियाँ मिलती हैं। गुप्त जी हिंदी के ही नहीं, भारतीय साहित्य के गौरव हैं। उन्होंने देश की जनता के हृदय-सिंहासन पर अपना स्थान बना लिया था। भारतीय संस्कृति और मानवता के ऐसे महान गायक और सबके 'दद्दा' गुप्त जी मेरे प्रिय कवि क्यों न हों?

कृति-स्वाध्याय

प्रश्न. निम्नलिखित विषयों पर 80 ते 100 शब्दों में निबंध लिखिए :

(1) बरसात का एक दिन
(2) मेरा प्रिय नेता
(3) विज्ञान के चमत्कार
(4) एक किसान की आत्मकथा
(5) यदि सूरज न होता...
(6) जीवन में गुरु का महत्त्व
(7) मेरा प्रिय खेल
(8) ऐतिहासिक गढ़ की मेरी सैर
(9) मैं सैनिक बोल रहा हूँ!
(10) मैं श्यामपट्ट बोल रहा हूँ!
(11) यदि मेरा घर चंद्रमा पर होता...
(12) विज्ञान प्रदर्शनी में एक घंटा
(13) मेरे सपनों का भारत
(14) मैं सड़क बोल रही हूँ...
(15) 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'
(16) यदि मोबाइल न होता तो....
(17) मेरे प्रिय लेखक
(18) टेलीफोन की आत्मकथा
(19) मेरा प्रिय वैज्ञानिक
(20) भ्रष्टाचार
(21) मेरा भारत देश ***(मार्च '20)***
(22) पर्यावरण संतुलन ***(मार्च '20)***
(23) पुस्तक की आत्मकथा ***(मार्च '20)***
(24) मैं पृथ्वी बोल रही हूँ.. ***(नवंबर '20)***
(25) काश! बचपन लौट आता.... ***(नवंबर '20)***
(26) अनुशासन का महत्त्व ***(नवंबर '20)***

6414132

बोर्ड की कृतिपत्रिका

मार्च 2020

समय : 3 घंटे] **[कुल अंक : 80**

सूचना : *(1) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य, पूरक पठन, भाषा अध्ययन (व्याकरण) की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।*

(2) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग कीजिए।

(3) रचना विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।

(4) शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1 : गद्य : 20 अंक

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **8 अंक**

नागर जी : लिखने से पहले तो मैंने पढ़ना शुरू किया था। आरंभ में कवियों को ही अधिक पढ़ता था। सनेही जी, अयोध्यासिंह उपाध्याय की कविताएँ ज्यादा पढ़ीं। छापे का अक्षर मेरा पहला मित्र था। घर में दो पत्रिकाएँ मँगाते थे मेरे पितामह। एक 'सरस्वती' और दूसरी 'गृहलक्ष्मी'। उस समय हमारे सामने प्रेमचंद का साहित्य था, कौशिक का था। आरंभ में बंकिम के उपन्यास पढ़े। शरतचंद्र को बाद में। प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का कहानी संग्रह 'देशी और विलायती' 1930 के आसपास पढ़ा। उपन्यासों में बंकिम के उपन्यास 1930 में हीं पढ़ डाले। 'आनंदमठ', देवी चौधरानी' और एक राजस्थानी थीम पर लिखा हुआ उपन्यास, उसी समय पढ़ा था।

तिवारी जी : क्या यही लेखक आपके लेखन के आदर्श रहे?

नागर जी : नहीं, कोई आदर्श नहीं। केवल आनंद था पढ़ने का। सबसे पहले कविता फूटी साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय 1928-1929 में। लाठीचार्ज हुआ था। इस अनुभव से ही पहली कविता फूटी– 'कब लौं कहौं लाठी खाय!' इसे ही लेखन का आरंभ मानिए।

644132

(1) नाम लिखिए : ***[दूसरी इकाई, पाठ 9, गद्यांश 1, कृति 1 (4)]*** **2**

गद्यांश में उल्लेखित

- पत्रिकाएँ–
  - (1) ---------
  - (2) ---------
- उपन्यास–
  - (1) ---------
  - (2) ---------

(2) लिखिए : ***[दूसरी इकाई, पाठ 9, गद्यांश 1, कृति 1 (5)]*** **2**

(i) लेखक का पहला मित्र – ----------

(ii) लेखक की पहली कविता – ----------

(3) गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए : *[दूसरी इकाई, पाठ 9, गद्यांश 1, कृति 3 (3)]* 2

(i) प्रत्ययुक्त शब्द :

(1) ..... (2) .....

उत्तर : (i) (1) राजस्थानी – राजस्थान + ई।

(2) विलायती – विलायत + ई।

(ii) ऐसे दो शब्द जिनका वचन परिवर्तन नहीं होता : *[दूसरी इकाई, पाठ 9, गद्यांश 1, कृति 3 (5)]*

(1) ..... (2) .....

उत्तर : (1) घर (2) मित्र।

(4) स्वमत अभिव्यक्ति :

- 'पढ़ोगे तो बढ़ोगे' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। 2

[दूसरी इकाई, पाठ 9, गद्यांश 1, कृति 4]

प्र. 1. (आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 8 अंक

कुछ देर बाद हमारी टैक्सी मडगाँव से पाँच किमी दूर दक्षिण में स्थित कस्बा बेनालियम के एक रिसॉर्ट में आकर रुक गई। यह रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया था। इसलिए औपचारिक खानापूर्ति कर हम आराम करने के इरादे से अपने-अपने स्यूट में चले गए। इससे पहले कि हम कमरों से बाहर निकलें, मैं आपको गोवा की कुछ खास बाते बता दूँ। दरअसल, गोवा राज्य दो भागों में बँटा हुआ है। दक्षिण गोवा जिला तथा उत्तर गोवा जिला। इसकी राजधानी पणजी मांडवी नदी के किनारे स्थित है। यह नदी काफी बड़ी है तथा वर्ष भर पानी से भरी रहती है। फिर भी समुद्री इलाका होने के कारण यहाँ मौसम में प्राय: उमस तथा हवा में नमी बनी रहती है। शरीर चिपचिपाता रहता है लेकिन मुंबई जितना नहीं, क्योंकि यहाँ का क्षेत्र हरीतिमा से भरपूर है फिर भी धूप तो तीखी ही होती है।

यों तो गोवा अपने खूबसूरत सफेद रेतीले तटों, महँगे होटलों तथा खास जीवनशैली के लिए जाना जाता है लेकिन इन सबके बावजूद यह अपने में एक सांस्कृतिक विरासत भी समेटे हुए है।

6414132

(1) आकृति पूर्ण कीजिए : *[पहली इकाई, पाठ 5, गद्यांश 1, कृति 2 (2)]* 2

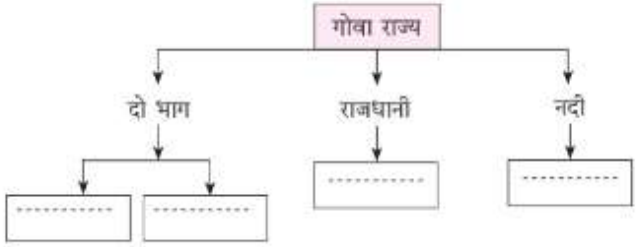

(2) उत्तर लिखिए : *[पहली इकाई, पाठ 5, गद्यांश 1, कृति 2 (4)]* 2

गद्यांश में उल्लेखित नदी की विशेषताएँ –

(i) .....

(ii) .....

(3) (i) निम्नलिखित शब्दों के लिए गद्यांश में प्रयुक्त विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए : 1

[पहली इकाई, पाठ 5, गद्यांश 1, कृति 3 (3) (i)]

(1) अनौपचारिक × .....

(2) छाँव × .....

उत्तर : (1) अनौपचारिक × औपचारिक।

(2) छाँव × धूप।

(ii) गद्यांश से अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखिए : *[पहली इकाई, पाठ 5, गद्यांश 1, कृति 3 (3) (ii)]* 1

(1) ----------

(2) ----------

उत्तर : (1) रिसार्ट (2) स्यूट।

(4) स्वमत अभिव्यक्ति : *[पहली इकाई, पाठ 5, गद्यांश 1, कृति 4]*

- **'पर्यटन ज्ञान वृद्धि का साधन' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।** 2

प्र. 1. (इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 4 अंक

जापानी और चीनी वैज्ञानिकों ने भूकंप आने के कुछ दिन पूर्व जीव-जंतुओं की गतिविधियों के आधार पर चेतावनी देने का प्रयत्न किया है। वास्तव में 4 फरवरी, 1975 को चीन के हाइचेंग क्षेत्र में आए भूकंप का पूर्वानुमान चीनी वैज्ञानिकों ने भूकंप आने के कुछ दिन पूर्व से मेढकों व साँपों के अपने बिलों से एकाएक बाहर निकल आने, मुर्गियों की बेचैनी और अपने दरबों से दूर भागने तथा कुत्तों के भौंकने और लगातार इधर-उधर भागने के आधार पर, काफी सफलतापूर्वक किया; परंतु वही वैज्ञानिक सन 1976 के विध्वंसक भूकंप की पूर्वसूचना नहीं दे सके। महाराष्ट्र के भूकंप के पूर्व भी वहाँ के निवासियों ने ऐसा दावा किया है कि पालतू पशु विचित्र व्यवहार कर रहे थे। जीव-जंतुओं के विचित्र व्यवहार के अतिरिक्त, भूकंप पूर्व मिलने वाले कुछ मुख्य संकेत, जिनपर वैज्ञानिक बिरादरी एकमत हैं।

(1) उत्तर लिखिए : 2

चिनी वैज्ञानिकों द्वारा भूकंप आने के पूर्वानुमान लगाने के आधार –

(i) ----------

(ii) ----------

6414132

उत्तर : (i) भूकंप आने के कुछ दिन पूर्व से मेढकों व साँपों का अपने बिलों से एकायक बाहर निकल आना।

(ii) मुर्गियों की बेचैनी और अपने दरबों से दूर भागने तथा कुत्तों का भौंकना और लगातार इधर-उधर भागना।

(2) स्वमत अभिव्यक्ति :

- **'भूकंप से होने वाली हानि से बचने के उपाय' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।** 2

उत्तर : भूकंप एक भयानक आपदा है। उसे टाला नहीं जा सकता है, पर कुछ सावधानियाँ बरतने पर इससे होने वाली क्षति से थोड़ा-बहुत बचाव अवश्य किया जा सकता है।

भूकंप आने पर सबसे पहले जल्द से जल्द घर या कार्यालय के बाहर भाग कर खुले स्थान में चला जाना चाहिए। किसी भवन या घर के आसपास नहीं खड़ा होना चाहिए। इससे भूकंप आने पर मकान का कोई हिस्सा टूटकर ऊपर गिरने का अंदेशा होता है। ऊँची बिल्डिंगों से बाहर निकलने के लिए हमेशा सीढ़ियों का उपयोग करना चाहिए। लिफ्ट का भूल कर भी उपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि भूकंप से बिजली खंडित होने पर लिफ्ट में फँस जाने का खतरा होता है। घर की खिड़कियाँ और दरवाजे खुले रखने चाहिए। घर से बाहर जाते समय घर के बिजली के सभी स्विच बंद कर देने चाहिए। ऊँची इमारतों में जल्दी मकान के बाहर जाना संभव नहीं होता। ऐसी हालत में घर में मेज या अन्य किसी फर्नीचर के नीचे बैठ जाना चाहिए, ताकि छत से कोई चीज गिरे, तो उस से बचाव हो सके। आवश्यक होने पर मोबाइल के लाइट का उपयोग करना चाहिए। इस तरह भूकंप से होने वाली हानि से कुछ बचाव हो सकता है।

विभाग 2 : पद्य : 12 अंक

प्र. 2. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **6 अंक**

मैं लरजकर बोला,
मुद्राएँ आप मेरे मुख पर देख लीजिए,
वे खड़े होकर कुछ सोचने लगे
फिर शयनकक्ष में घुस गए
और फटे हुए तकिये की रूई नोचने लगे
उन्होंने टूटी अलमारी को खोला
रसोई की खाली पीपियों को टटोला
बच्चों की गुल्लक तक देख डाली
पर सब में मिला एक ही तत्त्व खाली...
कनस्तरों को, मटकों को ढूँढ़ा सब में मिला शून्य-ब्रह्मांड।

(1) संजाल पूर्ण कीजिए : ***[दूसरी इकाई, कविता 4, पद्यांश 2, कृति 1 (1)]*** **2**

6414132

(2) पद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए :

(i) ऐसे शब्द जिनका अर्थ निम्न शब्द हो : ***[दूसरी इकाई, कविता 4, पद्यांश 2, कृति 2 (2)]*** **1**

(1) टीन का पीपा – ..... (2) कमरा – .....

उत्तर : (i) (1) टीन का पीपा – कनस्तर

(2) कमरा – शयनकक्ष।

(ii) वचन परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए : ***[दूसरी इकाई, कविता 4, पद्यांश 2, कृति 2 (3)]*** **1**

उन्होंने टूटी अलमारी को खोला।

उत्तर : उन्होंने टूटी अलमारियों को खोला।

(3) सरल अर्थ :

- **पद्यांश की 'रसोई की खाली ..... मिला शून्य–ब्रह्मांड, पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।** **2**

[दूसरी इकाई, पाठ 4, पद्यांश 1, कृति 3]

प्र. 2. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 6 अंक

एक जुगनू ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ हूँ,
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो।

एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते,
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखो।

डर जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली,
तुम ना खिलते फूल पर तितली के टूटे पर दिखो।

कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में,
मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो।

(1) पद्यांश के आधार पर संबंध जोड़कर उचित वाक्य तैयार कीजिए : *[पहली इकाई, कविता 8, पद्यांश 2, कृति 1 (7)]* 2

(i) जुगनू धुंध

(ii) रोशनी तितली

मैं

(1) .....

(2) .....

(2) (i) निम्नलिखित के लिए पद्यांश से शब्द ढूँढ़कर लिखिए : *[पहली इकाई, कविता 8, पद्यांश 2, कृति 2 (2) (i)]* 1

(1) लोगों का समूह – .....

(2) सीप में बनने वाला रत्न – .....

उत्तर : (1) भीड़

(2) मोती।

(ii) पद्यांश में आए 'पर' शब्द के अलग-अलग अर्थ लिखिए। *[पहली इकाई, कविता 8, पद्यांश 2, कृति 2 (2) (ii)]* 1

(1) .....

(2) .....

उत्तर : (1) किंतु, लेकिन

(2) पंख।

(3) सरल अर्थ :

- अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए। *[पहली इकाई, कविता 8, पद्यांश 2, कृति 1 (3)]* 2

विभाग 3 : पूरक पठन : 8 अंक

प्र. 3. (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 4 अंक

जिस गली में आजकल रहता हूँ – वहाँ एक आसमान भी है लेकिन दिखाई नहीं देता। उस गली में पेड़ भी नहीं हैं, न ही पेड़ लगाने की गुंजाइश ही है। मकान ही मकान हैं। इतने मकान कि लगता है मकान पर मकान लदे हैं। लंद-फंद मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़, जो एक सँकरी गली में फँस गई और बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। जिस मकान में रहता हूँ, उसके बाहर झाँकने से 'बाहर' नहीं सिर्फ दूसरे मकान और एक गंदी व तंग गली दिखाई देती है। चिड़ियाँ दिखती हैं, लेकिन पेड़ों पर बैठीं या आसमान में उड़ती हुई नहीं। बिजली या टेलिफोन के तारों पर बैठी, मगर बातचीत करतीं या घरों के अंदर यहाँ-वहाँ घोंसले बनाती नहीं दिखतीं।

6414132

(1) लिखिए : *[पहली इकाई, पाठ 7, गद्यांश 1, कृति 1 (5)]* 2

गद्यांश में उल्लेखित चिड़ियों की विशेषताएँ –

(i) .....

(ii) .....

(2) स्वमत अभिव्यक्ति :

- 'पक्षियों की घटती संख्या' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। 2

[पहली इकाई, पाठ 7, गद्यांश 1, कृति 2]

प्र. 3. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 4 अंक

हम उस धरती के लड़के हैं, जिस धरती की बातें
क्या कहिए; अजी क्या कहिए; हाँ क्या कहिए।
यह वह मिट्टी, जिस मिट्टी में खेले थे यहाँ ध्रुव-से बच्चे।
यह मिट्टी, हुए प्रहलाद जहाँ, जो अपनी लगन के थे सच्चे।
शेरों के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते,
जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी को कुछ गिनते।
इस कारण हम तुमसे बढ़कर, हम सबके आगे चुप रहिए।
अजी चुप रहिए, हाँ चुप रहिए। हम उस धरती के लड़के हैं.....

(1) सूचनानुसार लिखिए : *[दूसरी इकाई, कविता 6, पद्यांश 1, कृति 1 (4)]* 2

(i) ऐसी पंक्ति जिसमें पौराणिक संदर्भ है – .....

(ii) ऐसी पंक्ति जिसमें ऐतिहासिक संदर्भ हो – .....

6414132

(2) स्वमत अभिव्यक्ति :

- 'इतिहास हमें प्रेरणा देता है' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। 2

[दूसरी इकाई, कविता 6, पद्यांश 1, कृति 2 (1)]

विभाग 4 : भाषा अध्ययन (व्याकरण) : 14 अंक

प्र. 4. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 14 अंक

(1) निम्नलिखित वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्द भेद पहचानकर लिखिए :

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 1, शब्द भेद, विशेषण, कृति-स्वाध्याय 3 (16)] 1

श्रमजीवियों की मजदूरी एवं आमदनी कम है।

(2) निम्नलिखित अव्ययों में से किसी एक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 2, अव्यय, कृति-स्वाध्याय 7 (1) (2)] 1

(i) वाह ! (ii) के साथ।

(3) कृति पूर्ण कीजिए : *(दो में से कोई एक)* [भाषा अध्ययन (व्याकरण) 3, संधि, कृति-स्वाध्याय 1 (8)] 1

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि प्रकार
.....	अंत: + चेतना	.....

अथवा

सज्जन	..... + ...	.....

(4) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य की सहायक क्रिया पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए : 1

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 4, सहायक क्रिया, कृति-स्वाध्याय (17) (i) (ii)]

(i) टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी।

(ii) यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी गईं।

सहायक क्रिया	मूल क्रिया
.....	.....

(5) निम्नलिखित में से किसी एक क्रिया का 'प्रथम' तथा 'द्वितीय' प्रेरणार्थक रूप लिखिए : 1

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 5, प्रेरणार्थक क्रिया, कृति-स्वाध्याय (20) (21)]

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) फैलना	.....	.....
(ii) लिखना	.....	.....

(6) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए : 1

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 6, मुहावरे, कृति-स्वाध्याय 1 (11) (15)]

(i) शेखी बघारना – (ii) निछावर करना –

अथवा

- अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए कोष्ठक में दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 6, मुहावरे, कृति-स्वाध्याय (2) (10) (11)]

(बोलबाला होना, दुम हिलाना)

सिरचन को बुलाओ, चापलूसी करता हुआ हाजिर हो जाएगा।

6414132

(7) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त कारक चिह्न पहचानकर उसका भेद लिखिए : 1

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 7, कारक, कृति-स्वाध्याय (18) (19)]

(i) करामत अली ने हौका भरते हुए कहा।

(ii) पर्यटन में बहुत ही आनंद मिला।

(8) निम्नलिखित वाक्य में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए : 1

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 8, विरामचिह्न, कृति-स्वाध्याय (13)]

मैंने कराहते हुए पूछा ''मैं कहाँ हूँ''

(9) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों का कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए : 2

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 9, काल परिवर्तन, कृति-स्वाध्याय (26) (27) (28)]

(i) सातों तारे मंद पड़ गए। ***(पूर्ण वर्तमानकाल)***

(ii) रूपा दौड़ते-दौड़ते व्याकुल होती है। ***(अपूर्ण भूतकाल)***

(iii) हम अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देते हैं। ***(सामान्य भविष्यकाल)***

(10) (i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए : 1

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 10, वाक्य के भेद, कृति-स्वाध्याय (1) (14)]

काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थी कि मैं वह काम कर रही हूँ।

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचनानुसार परिवर्तन कीजिए : 1

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 10, वाक्य के भेद, कृति-स्वाध्याय 3 (12) (13)]

(1) तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए। *(आज्ञार्थक वाक्य)*

(2) मानू इतना ही बोल सकी। *(प्रश्नार्थक वाक्य)*

(11) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए : 2

[भाषा अध्ययन (व्याकरण) 11, वाक्य शुद्ध करना, कृति-स्वाध्याय (20) (21) (22)]

(i) इस बार मेरी सबसे छोटि बहन पहली बार ससूराल जा रही थी।

(ii) आपने भ्रमन तो काफी की हैं।

(iii) व्यवस्थापकों और पुँजी लगाने वालों को हजारो-लाखो का मिलना गलत नहीं माना जाता।

विभाग 5 : रचना विभाग (उपयोजित लेखन) : 26 अंक

सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है।

प्र. 5. सूचनाओं के अनुसार लेखन कीजिए : 26 अंक

(अ) (1) पत्र-लेखन : 5 अंक

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :

राधेय/राधा चौगुले, रामेश्वरनगर, वर्धा से दोहा प्रतियोगिता में प्रथम क्रमांक प्राप्त करने के कारण अभिनंदन करते हुए अपने मित्र/सहेली किशोर/किशोरी पाटील, स्टेशन रोड, जालना को पत्र लिखता/लिखती है।

अथवा

अशोक/आशा मगदुम, लक्ष्मीनगर, नागपुर से व्यवस्थापक, कौस्तुभ पुस्तक भंडार, सदर बाजार, नागपुर को प्राप्त पुस्तकों संबंधी शिकायत करते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

(2) गद्य आकलन :

6414132

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हों : 4 अंक

स्वाधीन भारत में अभी तक अंग्रेजी हवाओं में कुछ लोग यह कहते मिलेंगे – जब तक विज्ञान और तकनीकी ग्रंथ हिंदी में न हो तब तक कैसे हिंदी में शिक्षा दी जाए। जब कि स्वामी श्रद्धानंद स्वाधीनता से भी चालीस साल पहले गुरुकुल काँगड़ी में हिंदी के माध्यम से विज्ञान जैसे गहन विषयों की शिक्षा दे रहे थे। ग्रंथ भी हिंदी में थे और पढ़ाने वाले भी हिंदी के थे। जहाँ चाह होती है वहीं राह निकलती है। एक लंबे अरसे तक अंग्रेज गुरुकुल काँगड़ी को भी राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग मानते रहे। इसमें कोई संदेह भी नहीं कि गुरुकुल के स्नातकों में स्वाधीनता की अजीब तड़प थी। स्वामी श्रद्धानंद जैसा राष्ट्रीय नेता जिस गुरुकुल का संस्थापक हो और हिंदी शिक्षा का माध्यम हो; वहीं राष्ट्रीयता नहीं पनपेगी तो कहाँ पनपेगी। स्वामी जी से मिलने देश के प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी गुरुकुल आते रहते थे।

प्र. 5. (आ)

(1) वृत्तांत-लेखन : 5 अंक

विवेकानंद विद्यालय, सोलापुर में संपन्न 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान का रोचक वृत्तांत-लेखन 60 से 80 शब्दों में लिखिए। (वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख होना अनिवार्य है।)

अथवा

कहानी-लेखन :

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :

एक गाँव – पीने के पानी की समस्या – दूर-दूर से पानी लाना – सभी लोग परेशान – सभा का आयोजन – मिलकर श्रमदान का निर्णय – दूसरे दिन से – केवल एक आदमी – काम में जुटना – धीरे-धीरे एक-एक का आना – सारा गाँव श्रमदान में – गाँव के तालाब की सफाई – कीचड़, प्लास्टिक निकालना – बरसात में तालाब का स्वच्छ पानी से भरना।

(2) विज्ञापन-लेखन :

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए : **5 अंक**

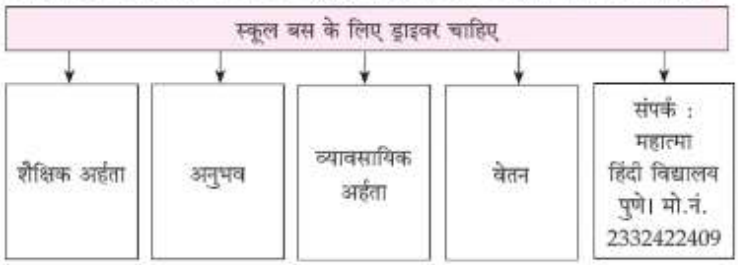

प्र. 5. (ड) निबंध-लेखन : **7 अंक**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए :

(1) मेरा भारत देश। (2) पर्यावरण संतुलन। (3) पुस्तक की आत्मकथा।

6414132

हिंदी लोकभारती (द्वितीय भाषा) के पाठ्यक्रम,
पाठ्यपुस्तक तथा कृतिपत्रिका के प्रारूप पर आधारित

नवनीत
हिंदी (LL)
व्याकरण और भाषा अध्ययन
कक्षा दसवीं

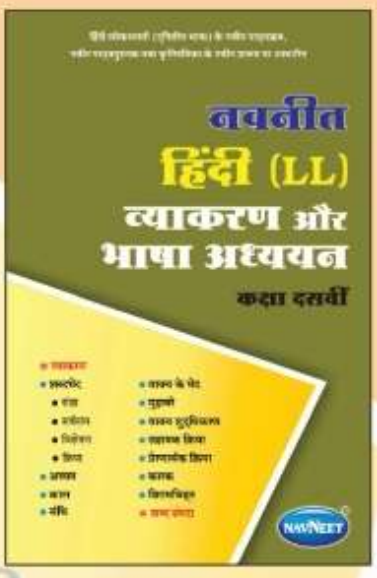

6414132

• प्रमुख विशेषताएँ :

1. कृतिपत्रिका के अनुसार व्याकरण तथा शब्दसंपदा के संपूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश।
2. व्याकरण विभाग के सभी घटकों के नियमों का सरल और रोचक शैली में स्पष्टीकरण।
3. विविध प्रकार के कृति-स्वाध्याय और उनके उत्तर लिखने के लिए पर्याप्त रिक्त स्थान।
4. कृति-स्वाध्याय के प्रश्नों का संपूर्ण हल।

सभी पुस्तक-विक्रेताओं के यहाँ उपलब्ध

NAVNEET®

नवनीत एज्युकेशन लिमिटेड

MW10v